जून '९६

मासिक प्रकाशन

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका



रहस्य-रोमांच विशेषांक

पये

टाइम्स प्रकाशन


Hamdard
अहा! क्या ताज़गी
शरबत
रूह अफ़ज़ा
कुछ चीजें कभी नहीं बदलती

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी । उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए, और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए । इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा ।

● ज्ञानेन्दु

१. **सचकित**— क. सशंकित, ख. आश्चर्यजनक, ग. आश्चर्य में पड़ा हुआ, घ. संदेहयुक्त ।

२. **निरस्त**— क. परित्यक्त, ख. निशाना साधा हुआ, ग. लुप्त, घ. दूर हटाया हुआ ।

३. **अभिनव**— क. नाटक खेलना, ख. बिलकुल नया, ग. स्वागत, घ. आनंद ।

४. **अधोगति**— क. नीचे की ओर, ख. धीमा, ग. पतन, घ. नीचे का भाग ।

५. **दुःखातीत**— क. दुःखों से युक्त, ख. अतीत का दुःख, ग. पीड़ा, घ. कष्टदायक ।

६. **संहारक**— क. खूनी, ख. विघ्नकारक, ग. नाश करनेवाला, घ. षड्यंत्र ।

७. **दुःसंग**— क. बुरी लत, ख. बुरी सोहबत, ग. दुष्कर्म, घ. बुरा सहचर ।

८. **कपटाचार**— क. षड्यंत्र, ख. द्वेष, ग. छलपूर्ण व्यवहार, घ. शत्रुता ।

९. **अनूप**— क. आश्चर्य, ख. बेजोड़, ग. अत्यधिक, घ. श्रेष्ठ ।

१०. **इहलौकिक**— क. वर्तमान काल में, ख. भौतिक, ग. इस लोक-संबंधी, घ. मर्त्यलोक-संबंधी ।

११. **भावाभास**— क. काल्पनिक, ख. जो मन में आया हो, ग. बनावटी भाव, घ. विकार ।

१२. **इतिवृत्तात्मक**— क. वर्णनात्मक, ख. इतिहास-संबंधी, ग. विस्तार से, घ. अंतिम रूप से ।

१३. **क्रांतदर्शी**— क. क्रांतिकारी, ख. भविष्यवक्ता, ग. अतींद्रिय विषयों को जाननेवाला, घ. दूरदर्शी ।

१४. **अनुशीलन**— क. खोज, ख. मनन तथा गंभीर अध्ययन, ग. अभ्यास, घ. योग ।

१५. **तफ़्तीश**— क. परीक्षा, ख. छानबीन, ग. सर्वेक्षण, घ. विवरण ।

उत्तर

१. ग. आश्चर्य में पड़ा हुआ, विस्मित । उसके अप्रत्याशित आगमन से सभी **सचकित** रह गये । स+चकित (व्युत्.—चक्)

२. घ. दूर हटाया हुआ, अस्वीकृत (अंग-रिपील) उच्च न्यायालय ने शासन का आदेश **निरस्त** कर दिया । (व्युत्.—निर्+अस्)

३. ख. बिलकुल नया । यह चित्र **अभिनव** कला का नमूना है । (अभि+नव)

४. ग. पतन, अवनति । भ्रष्ट नेतृत्व से समाज **अधोगति** को पहुंच जाता है । (अधः+गति)

५. क. दुःखों से मुक्त । ऐसा मनुष्य बिरला ही होता है जो **दुःखातीत** हो । (दुःख+अतीत)

६. ग. नाश करनेवाला । अब युद्ध अतिशय **संहारक** होते हैं । (व्युत्.—सम्+हृ)

७. ख. बुरी सोहबत । इनसान प्रायः **दुःसंग** में पड़कर अपराधी बनता है । (दुः+संग)

. ग. छलपूर्ण व्यवहार । राजनीति जब कपटाचार में परिणत हो जाती है तब समाज ष्ट हो जाता है । (कपट+आचार)

. ख. बेजोड़, उपमारहित । इस उद्यान का नूप प्राकृतिक सौंदर्य है । व्युत्.—अनु+अप्)

०. ग. इस लोक-संबंधी । मनुष्य को हलौकिक परंपराओं से अवगत होना ाहिए । (इह+लौकिक)

१. ग. बनावटी भाव । अभिनेता द्वारा दर्शाया या भावाभास ही था (भाव+आभास)

२. क. वर्णनात्मक, घटनाप्रधान । यह कृति तिवृत्तात्मक है । (इति+वृत्तात्मक)

३. ग. अतींद्रिय विषयों को जाननेवाला, र्वज्ञ । ऋषि-मुनि क्रांतदर्शी होते हैं । क्रांत+दर्शी)

१४. ख. मनन तथा गंभीर अध्ययन । जो छात्र **अनुशीलन** में व्यस्त रहते हैं वे प्रगति करते हैं । (व्युत्.—अनु+शील्)

१५. ख. छानबीन, जांच-पड़ताल । घटना की पुलिस द्वारा **तफ़्तीश** हो रही है । (अरबी)

पारिभाषिक शब्द

Ultra-Violet =पराबैंगनी
Ultra-Sonic =पराश्राव्य
Nuclear Reactor=परमाणु-भट्टी
Cognizance =संज्ञान/विचाराधिकार
Prerogative =परमाधिकार
Surveillance=निगरानी
Affirmative=स्वीकारात्मक
Negative =निषेधात्मक
Illegality =अवैधता
Ignorant =अनभिज्ञ

ज्ञान गंगा

कस्मिन् पादपे यद्वच्छकुनानां समागमः ।
द्वत् समीहितं कर्म कुरुते पूर्व भावित : ।।

(पद्मपुराण १/३१/६)

— जैसे एक ही वृक्ष पर अनेक पक्षियों का मागम होता है, इसी तरह अनेक विचारों के हापोह से किसी एक इच्छित कर्म को करना ाहिए ।

क्तिवैकतन्व्यप्रस्म तृणस्य च समागतिः ।

(किरातार्जुनीयम् ·११/५९)

— शक्ति के अभाव में झुके हुए व्यक्ति और ण की एकजैसी गति होती है ।

ुजे वीर्यं निवसति, न वाचि ।

(हर्षचरितम्, पृष्ठ १२५)

— वीरता बाहुबल में रहती है, वचन में नहीं ।

ततः परतरो नास्ति य आपत्सूप्रतिष्ठते ।

(कामंदकीयनीतिसार ५/४८)

— जो विपत्ति में विचलित नहीं होता उससे बड़ा कोई नहीं है ।

उदयो दैवप्रभवः प्रयत्नमात्रे वयं सदैव प्रभवः ।

(युधिष्ठिविजयम् ६/८०)

— कार्य-सिद्धि तो दैवाधीन है, हम तो केवल प्रयत्न ही कर सकते हैं ।

न्यायोपात्तं हि वित्तमुभयलोकहितायेति ।

(धर्मबिंदु १/४)

— न्याय से उपार्जित धन ही इस लोक और परलोक के हित के लिए होता है ।

—प्रस्तुति : महर्षि कुमार पांडेय

मासिक प्रकाशन

कादम्बिनी

वर्ष ३६, अंक ८,
जून, १९९६

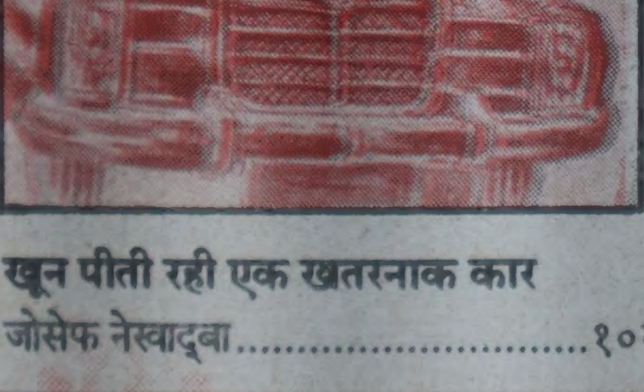
आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

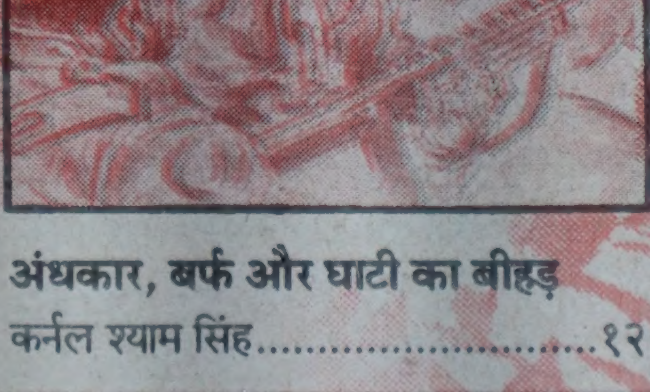
निबंध एवं लेख





कार्यकारी अध्यक्ष	संपादक
नरेश मोहन	राजेन्द्र अवस्थी





कहानियां एवं व्यंग्य

कविताएं

स्थायी स्तंभ

संपादकीय परिवार

मुख्य उप-संपादक : **भगवती प्रसाद डोभाल**
वरिष्ठ उप-संपादक : **प्रभा भारद्वाज, सुरेश नीरव**
उप-संपादक : **डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, धनंजय सिंह, सुजीत वाजपेयी**
प्रूफ-रीडर : **प्रदीप कुमार**
कला विभाग-प्रमुख : **सुकुमार चटर्जी** चित्रकार : **भुपेन मंडल**
संपादकीय पता : **'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ ।**
फोन : **३३१८२०१/२८६, टेलेक्स : ३१-६६३२७, फैक्स : ०११-३३२११८९**
आवरण (चित्र) : **योगेश**

'कादम्बिनी' : चंदे की दरें

अर्द्धवार्षिक ६० रुपये; वार्षिक : ११५ रुपये, द्विवार्षिक : २२५ रुपये; विदेशों में : **पाकिस्तान, नेपाल एवं भूटान : अर्द्धवार्षिक : १८५ रु. (अमरीकी डॉलर-७, पौंड-४), वार्षिक : ३६५ रु. (अमरीकी डॉलर-१३.५०, पौंड-७.५०)**
अन्य सभी देशों के लिए : **अर्द्धवार्षिक २७५ रुपये (१०.५० डॉलर, पौंड ६); वार्षिक : ५३५ रुपये (२०.५० डॉलर, पौंड ११.५०) ।**
शुल्क भेजने का पता : **प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि. १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ ।**



पुरस्कृत पत्र

एक ज्वालामुखी—नाम हवाला में आपने लिखा है कि "शनि ग्रह पूरे भारत में वक्री है। सब पढ़ने-लिखनेवालों को गुरु ग्रह की परम आराधना करनी चाहिए कि वह वक्री न हो।" गुरु ग्रह तो वक्री हो ही गये हैं अन्यथा जिन साधु-संतों को, अपनी मेधा और प्रज्ञा से शासकों का मार्गदर्शन करना चाहिए था, दुष्प्रवृत्तियों और सत्तालोलुपता पर अंकुश लगाना चाहिए था, वे शासकों को आशीर्वाद दे रहे हैं, उनके साथ फोटो खिंचवाकर गर्व अनुभव कर रहे हैं। आश्रम के मुख्य स्थान पर उन फोटो का प्रदर्शन कर रहे हैं। साधु-संतों का आशीर्वाद राजनेताओं को सदैव उपलब्ध रहा है। उनके आशीर्वादों के बावजूद देश की दुर्दशा होती रही है। नारायणदत्त तिवारी और इंदिरा गांधी देवरहा बाबा से, जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी धीरेन्द्र ब्रह्मचारी से, नरसिंह राव चंद्रास्वामी से, राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री सत्य साईं बाबा से आशीर्वाद लेते रहे हैं। जब गायत्री परिवार हरिद्वारवालों ने लालू यादव से अश्वमेध यज्ञ का उद्घाटन कराया तब तो हद हो गयी, गायत्री मंत्र का अर्थ है—हे परमात्मन् मुझमें श्रेष्ठ सद्बुद्धि धारण करो। गायत्री परिवारवालों की सद्बुद्धि में यह आना चाहिए था कि राजनेताओं से तो बेहतर संगीतकार, कलाकार, साहित्यकार, कवि, वैज्ञानिक, विचारक या समाजसेवी हैं। कम से कम सुलभ इंटरनेशनल के संस्थापक पटना के बिंदेश्वरी पाठक ने तो फिर भी समाज में एक स्वस्थ परंपरा कायम की है।

समाज में अंगुलिमाल और रत्नाकर डाकुओं की इतनी बाढ़ आ गयी है, इतने रूपों में, इतने क्षेत्रों में कि एक बुद्ध या एक ऋषि से सुधार होने की संभावना नहीं है। आपने तो थोड़ा परिहास में कहा है कि सभी पढ़ने-लिखनेवालों को गुरु ग्रह की परम आराधना करनी चाहिए, किंतु यही आत्यंतिक सत्य भी है। इसके बिना उपदेश में कोई बल नहीं रह जाता। अब तो समाज में बहुत-सी प्रबल चेतनाओं और प्रज्ञा-पुरुषों की आवश्यकता है, जिनके शब्दों के पीछे आत्मबल भी हो। कोई आशा नहीं दिखती कि संपादकीय से, कला से, काव्य से, कटाक्ष से अंगुलिमालों का हृदय परिवर्तन किया जा सके। जब तक अचेतन और अर्धचेतन में दमित कुटिल मनोवृत्तियों की निर्जरा नहीं हो जाती तब तक समाज में सत्यम् शिवम् की स्थापना नहीं हो सकती। फ्रायड के अनुसार अचेतन की मूढ़ आकांक्षाएं हमारे व्यवहार को संचालित करती हैं और जब तक अचेतन मन का शुद्धिकरण नहीं हो जाता तब तक अंधकारमय प्रवृत्तियां प्रबल पड़ती हैं।

काश ! पढ़ने-लिखनेवाले आपकी सलाह को गंभीरतापूर्वक लेते । राजनेताओं, धर्मनेताओं ने तो बुरी तरह निराश किया है । अब तो बुद्धिजीवियों और संवेदनशील साहित्यकारों से ही आशा है कि वे समाज को अपनी प्रतिभा से मार्ग दिखाएंगे । इस देश में जे. कृष्णमूर्ति और ओशो, दो विचारवान् पुरुष थे जिनका विचार-दर्शन देश को ऊंचाइयों पर ले जा सकता था लेकिन शासकों ने धीरेन्द्र ब्रह्मचारी और चंद्रास्वामी आदि से अपनी स्वार्थ-साधना तो की, समाजोत्थान और वैचारिक क्रांति की जरा भी परवाह नहीं की । न्यायपालिका ने यद्यपि शासकों पर अंकुश लगा रखा है, फिर भी बुद्धिजीवी, समाजसेवी और साहित्यकार चूंकि जन-सामान्य के भाग होते हैं अतः वे लोक-मानस को शिक्षित करने का कार्य सुंदर ढंग से कर सकते हैं । वरना् बकौल एहतराम इसलाम—

सबने पढ़ रखा था, सच की जीत होती है मगर
था भरोसा किसको सच पर, सच को सच कहता
तो कौन ?

आदमी तो खैर से, बस्ती में मिलते ही न थे,
देवता थे, सो थे पत्थर, सच को सच कहता तो
कौन ?

नित रहा प्यासा का प्यासा, बांझ ही ठहरी सलीब,
कोई ईसा था, न शंकर, सच को सच कहता तो
कौन ?

सहस्रों बुद्ध, सहस्रों ईसा, सहस्रों शंकर चाहिए समाज को—सत्यं शिवं सुंदरम की स्थापना के लिए । यही गुरु की परम आराधना होगी ।

—स्वामी आनंद ध्रुव
सुदर्शन भवन, सूर्यकुंड
इलाहाबाद—२११००१

प्रोत्साहन पुरस्कार

कादम्बिनी का अंक पढ़ा । 'आखिर कब तक' (राजेन्द्र अवस्थी) में संकलित (लेख नेपाल और हिंदी) लेखक के विचार से मैं पूरी तरह सहमत हूं कि 'इस देश में वोट मांगने की भाषा भले ही हिंदी या क्षेत्रीय भाषाएं हों लेकिन चुनाव जीतते ही अंगरेजी यहां की राष्ट्रभाषा हो जाती है ।"

आजादी के बाद लगभग पचास वर्षों में न जाने कितनी कोशिश की गयी कि हमारी कोई राष्ट्रभाषा हो । एक राष्ट्रभाषा के रूप में हमने हिंदी की वकालत तो खूब की, लेकिन इस दिशा में प्रतिबद्धता के साथ कोई कदम नहीं उठाया । इतना तो हम समझ ही चुके हैं कि किसी राष्ट्र के राष्ट्रीय भावना के विकास और संचार के लिए एक राष्ट्रभाषा का होना कितना आवश्यक है । यही वजह भी है कि जब स्वतंत्रता आंदोलन में राष्ट्रीय भावना को व्यक्त करने की समस्या सामने आयी तब हिंदी को प्रचारित करने की दिशा में अहिंदीभाषी क्षेत्रों ने भी काफी सराहनीय प्रयास किया था ।

विदेशी भाषा सीखना तो अच्छी बात है । आप एक नहीं चार-चार विदेशी भाषा सीखें । पर यह क्या, कि एक विदेशी भाषा को तवज्जो देने की कोशिश में अपनी ही भाषा की तिलांजलि दे दी जाए । आज हिंदी पूरी तरह से तिरस्कृत है । अंगरेजों से हमें भले ही मुक्ति मिल गयी हो पर अंगरेजी के हम आज भी गुलाम हैं और रवैया यही रहा तो इसकी गुलामी से छुटकारे का आगे भी कोई उपाय नजर नहीं आता है ।

कहते हैं कि जब तक कमरे के अंदर

शीतल, मंद सुगंध पवन आ रही हो तब तक कमरे की खिड़की खुली रखने में कोई हर्ज नहीं है लेकिन अगर हवा तूफानी रुख ले ले, तो कमरे की खिड़की बंद कर देने में ही बुद्धिमानी है। आज अंगरेजी ने तूफानी रुख धारण कर लिया है और हमारे देश में पूरी तरह अपनी जड़ जमा चुकी है। इसके कारण हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का कद दिन-प्रतिदिन बौना होता जा रहा है।

क्या इस स्थिति के लिए हम खुद जिम्मेदार नहीं हैं ? आज हम भारतीयों का एक बड़ा वर्ग अंगरेजी भाषा का इतना हिमायती हो चुका है कि उन्हें अपनी भाषा में काम करने में, अपनी भाषा बोलने में शर्म आती है। अंगरेजी बोलना यहां 'स्मार्ट' होने का पर्याय होता जा रहा है। स्कूल, कॉलेज, दफ़्तर, आरक्षण कार्यालय कहीं भी चले जाएं—हर जगह प्राथमिकता अंगरेजी बोलनेवालों को ही दी जाती है। हिंदी भाषा/क्षेत्रीय भाषा बोलना देहाती होने का पर्याय होता जा रहा है।

भारत की अनेक प्रतिष्ठित हिंदी पत्र-पत्रिका बंद होती जा रही हैं। पाठक वर्ग हिंदी की सामग्री पढ़ना नहीं चाहता। हिंदी के लिए दस पांच रुपये खर्च करना तौहीन लगता है लोगों को। यह अगर अंगरेजी संस्कृति का असर नहीं तो और क्या है ?

अगर यही हाल रहा तो वह दिन दूर नहीं जब किसी हिंदी पत्र-पत्रिका को देखने के लिए हमारी भावी पीढ़ी को म्यूजियम जाना पड़े और वहां रखी पत्रिका के नीचे लिखा होगा—

ध्यान से देखो, तुम्हारे पूर्वज पढ़ा करते थे।

इन हालात में अगर हमारे पड़ोसी देश नेपाल ने शुद्ध हिंदी के प्रचार-प्रसार का संकल्प किया है तो उनका यह कदम सर्वथा प्रशंसनीय है। लेकिन उनकी प्रशंसा कर देने मात्र से ही हमारा काम पूरा नहीं हो जाता, जरूरत है इससे प्रेरणा लेने की और गंभीरता से इस ओर ध्यान देने की।

—मीता मिश्रा
कमाडेंट आवास के. ए. पी. कैंप,
रामवरमापूरम त्रिचूर (केरल)

साधुवाद

वर्तमान में हिंदी साहित्य अपने पतन के दौर से गुजर रहा है। फूहड़ व दोयम दरजे की साहित्य सामग्री प्रसिद्धि पाने लगी है। ऐसे समय में पाठकों को 'कादम्बिनी' के माध्यम से श्रेष्ठ साहित्य का सुलभ होना सराहनीय है। साथ ही स्तरीय लेख, कहानियां, व्यंग्य एवं ज्वलंत सामाजिक मुद्दों पर संपादक की बेबाक टिप्पणी पत्रिका को प्रतिष्ठित करती है। आशा है, सु-साहित्य की यह गंगा निर्बाध बहती रहेगी। साधुवाद !

—धर्मेन्द्र जोशी
जलोद संजर (म. प्र.)

गलत जानकारी

सुंदरलाल बहुगुणा के "धरती का पेट फाड़ डाला" (अप्रैल-९६) लेख में सुश्री लता मंगेशकर का जन्म गोवा के मंगेश गांव में बताया गया है, जो तथ्यात्मक रूप से त्रुटिपूर्ण है। दरअसल गोवा के मंगेश गांव में लताजी के पिताश्री श्री दीनानाथ जी बस गये थे और इसी वजह से उनका नाम 'मंगेश्कर' पड़ा। वैसे लताजी का मूल सरनेम 'राणे' है। श्री दीनानाथ महाराष्ट्र के 'थालनेर' कस्बे के जमींदार श्री

हरिदास रामदास गुजराथी की पुत्री 'नर्मदाबाई' से इंदौर में विवाह सूत्र में बंधे थे लेकिन नर्मदाबाई का निधन प्रसूति के वक्त हो गया था, उसके बाद नर्मदा बाई की ही छोटी बहन 'शुद्धमति' के साथ दूसरा विवाह भी इंदौर में संपन्न हुआ था। लताजी के वक्त श्रीमती शुद्धमति जिन्हें सब स्नेह से 'माई' कहते थे इंदौर आयी हुई थी और वहीं सन् १९२९ में लताजी का जन्म हुआ। इसलिए लताजी का जन्म स्थान इंदौर ही कहा जाएगा 'मंगेश' गांव नहीं ?

—अविनाश वावीकर
सेन्धवा (मध्य प्रदेश)

उर्दू बनाम हिंदी गजल

अप्रैल अंक में प्रकाशित आलेख ''उर्दू गजल से बहुत पीछे है हिंदी गजल'' पढ़ा। मैं भी इस संबंध में अपने विचार व्यक्त करना चाहता हूं। सर्वप्रथम तो यह कि जैसा सर्वविदित है गजल मूलरूप से फारसी उर्दू भाषा की विद्या है। इन भाषाओं के शब्दों की लोच ने गजल को लोकप्रिय बनाने में भरपूर योगदान दिया है। जैसे गजल में 'जहान' को आवश्यकतानुसार 'जहां में' बदल सकते हैं वैसे ही 'यहां' को 'यां' तथा 'बयान' को 'बयां' में इत्यादि। यह 'स्वतंत्रता' हिंदी भाषा में प्राप्त नहीं है। जिससे अनेक प्रकार की दुश्वारी होती है। यह कहना तर्कसंगत नहीं होगा कि हिंदी गजल के लिए केवल हिंदी शब्द ही लिए जाएं।

प्रत्येक भाषा ने किसी न किसी अन्य भाषा के शब्दों को अपनाकर और ज्यादा [illegible] प्राप्त किया है। अगर अंगरेजी भाषा में [illegible] शब्दों की बहुतायत है तो उर्दू में फारसी की।

जहां तक हिंदी गजलकारों के बहर के लिहाज से गलत होने की बात है, इसका गजल की लोकप्रियता से कोई लेना-देना नहीं है क्योंकि आम श्रोता या पाठक जब गजल सुनता या पढ़ता हैं तब वह बहर, रदीफ, काफिये या तुक पर नहीं शायर की कही बात पर ज्यादा तव्वजुह देता है। दुष्यंत कुमार की असमय मौत ने यद्यपि हिंदी गजल को कुछ झटका अवश्य दिया था परंतु यह कहना कि हिंदी गजल उर्दू से बहुत पीछे है सटीक नहीं होगा।

—जितेंद्र सिंह परिहार
जी ओ वन सरिता होम्स
ई ८/४५ त्रिलोचन नगर
भोपाल-४६२०१६

इस लेख के संदर्भ में हमें इन पाठकों के भी पत्र मिले हैं—ज्ञानेन्द्र (मुंगेर), प्रकाश सूना (मुजफ्फरनगर), डॉ. नरेन्द्र प्रताप सिंह (इलाहाबाद)।

विचार कल्पवृक्ष हैं

कादम्बिनी का हर पृष्ठ अपने आप में बेजोड़ है, इसे मेरे साथ अन्य भी महसूस करते होंगे, खासकर 'काल चिंतन' का पृष्ठ,जो अपने आप में गागर में सागर की उक्ति सिद्ध करता है। कालचिंतन पढ़ते ही मस्तिष्क हल्की-फुल्की बातों से ऊपर उठ आत्मचिंतन करने पर मजबूर हो जाता है। हमारा जीवन और उससे जुड़े तरह-तरह के विचार, जिसके फलस्वरूप कभी [illegible], कभी दुःख, कभी क्रोध, कभी मुसकान का जन्म होता है। अपने विविध विचारों नो

ग्रस्त आज प्रत्येक मानव एक अलग जिंदगी जीने पर बेबस है ।

कहीं पढ़ा था 'तपती दोपहरी में गरमी से व्याकुल पथिक एक घने वृक्ष की छांव में विश्राम करने बैठ गया । ठंडी हवा के झोंकों से जब थके-हारे मन को तृप्ति मिली, तो स्वभावतः ही इच्छा जाग्रत हुई, 'अगर अभी सुस्वादु भोजन मिल जाए और पीने को ठंडा पानी, तो कितना आनंद आएगा ।' वह वृक्ष कल्पवृक्ष था । तत्काल ही उस पथिक के सामने दोनों मनोवांछित चीजें आ गयीं ।

पर वह तो देखकर डर गया । उसके मन में भय व्याप्त हो गया, 'जाने किस अशुभ शक्ति का प्रभाव है यहां पर, कहीं प्राणों पर न आ बने ।' अविलंब ही उसकी यह इच्छा भी पूरी हुई—वह मृत्यु को प्राप्त हुआ ।

"वस्तुतः विचारों में बड़ी शक्ति है । हमारे विचार ही हमारे निर्माण अथवा विनाश का कारण बनते हैं । विचार वह कल्पवृक्ष है, जो हमारे संसार की सृष्टि करता है—यह तो स्वयं हम पर है कि, हम अपने लिए स्वर्ग सुख का निर्माण करें अथवा नरक की असह्य यातना का ।"

—माला वर्मा

हुकुम चंद जूट मिल

हाजीनगर, २४ परगना (उत्तर) प. बंगाल

कादम्बिनी की पाठिका सुनीता रावत ने अपनी बीमारी के संबंध में संपादक के नाम पत्र लिखा है । जिसमें पता नहीं लिखा है । भविष्य में पत्र-व्यवहार करते समय अपना पूरा नाम व पता अवश्य लिखें ।—सं.

काल-चिंतन

कुरसी की लड़ाई किसी एक देश या व्यक्ति तक सीमित नहीं है । हर कमजोर अवसर पर वह उभरती है । पहले दो बार हम इसे लिख चुके हैं । फिर प्रस्तुत है पाठकों के मस्तिष्क को ताजा करने के लिए— कुरसी ।

— अक्सर देखा गया है, कुरसी जाते ही आदमी दया का पात्र बन जाता है और अवकाश प्राप्त करते ही वह टूट जाता है, बहुत चिंतन के बाद इसका सूत्र नहीं मिल रहा !

●

— चूंकि स्थिति सामान्य नहीं है, इसलिए सूत्र आसानी से नहीं मिल सकता ।
— कुरसी का अर्थ सत्ता है ।
— सत्ता क्रूर और निर्मम होती है । वह अपने आस-पास के घेरों को काटती चलती है । यदि वह उन्हें न काटे तो वे सत्ता को काट देंगे ।
— चाणक्य ने नंदवंश का विनाश सहज ही नहीं कर दिया था । वह भय से आक्रांत था ।
— इतिहास की समूची काल-सूची स्वर्णमंडित कुरसियों की लोलुप आकांक्षा से भरी पड़ी है ।
— अपने भाई कौरवों की लाशों पर पांडवों ने विजय-पर्व मनाया था !
— इतिहास के स्वर्ण-युग के नियंता सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने अपने अग्रज रामगुप्त के प्राण लेकर उसकी नववधू ध्रुवदेवी का अपहरण किया था ।
— सम्राट अशोक ने अपने भाइयों को मौत के घाट उतारा था ।
— शिशुनाग ने उज्जैन के प्रद्योत वंश को धराशायी किया ।
— बुद्ध और महावीर के युग में अजातशत्रु ने अपने पिता बिंबसार को बंदी बनाकर स्वयं अपना राजतिलक किया था ।
— अनिरुद्ध, मुंड, नागदासक पितृहंता थे ।



— मुगलवंश की संपूर्ण इतिहास-यात्रा कुरसियों को खाली करने और खाली कुरसियों पर नयी सल्तनत के झंडे गाड़ने का क्रम रही है— शाहजहां और औरंगजेब ने अपने भाइयों को एक-एक कर मौत के घाट उतारा है और क्रूर औरंगजेब ने अपने कलाप्रेमी पिता शाहजहां को बंदी बनाकर एक-एक बूंद पानी के लिए तरसाया है ।

— मर्यादा पुरुषोत्तम और भारतीय सामाजिक चेतना के प्रतीक राम के समय भी संभवतः यह परंपरा अज्ञात नहीं थी । विवश और भस्मासुर की तरह अरक्षित समझने वाले सम्राट दशरथ ने स्वयं राम को सलाह दी थी—वन जाने की अपेक्षा वे सत्ता छीनकर दशरथ को कैद कर लें—बाल्मीकि इसके प्रमाण हैं :

उवाच राजा सम्प्रेक्ष्य वनवासाय राघवम्
अहं राघव कैकेय्या वरदानेन मोहितः
अयोध्यायां त्वमेवाद्य भव राजा निगृह्य माम् ।

(वा. रामायण—२, ३४, २५,२६)

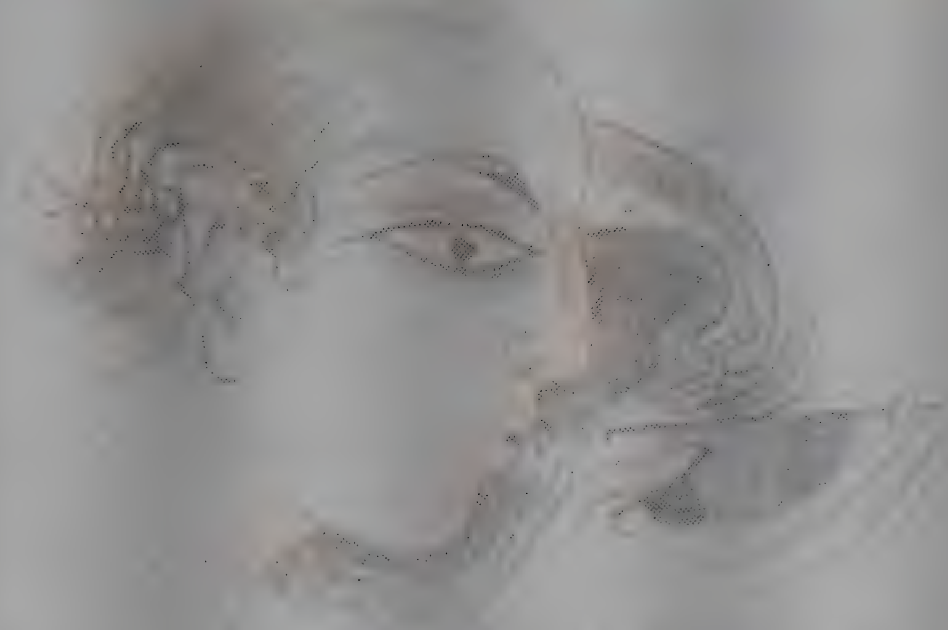
— यह दूसरी बात है कि राम ने यह घृणित कार्य नहीं स्वीकारा और उन्होंने वन जाकर जीवन की करुणा को भाग्य की स्वर-लहरियों में ढालकर संगीत का सुख लिया और वे विश्व-जन-चेतना के प्रतीक बने !

— लेकिन राम बनने की सामर्थ्य कितनों में है ?

•

— कुरसी की आत्मा भय से आक्रांत है ।

— इसीलिए सेवक स्वामी बन जाते हैं और द्वार-रक्षक प्रतिहार-शासक बनते हैं ।



— कुरसी का जादू स्वर्ण-प्रासादों के खंडहरों में भूतों के नर्तन का इतिहास रहा है ।
— ऐसे विक्रमादित्य कभी, किसी युग में पैदा होते हैं जो इतिहास को अपनी मुट्ठी में पकड़कर बंद कर लेते हैं, जो अपने आसपास के बैतालों को वश में कर रुद्र के समान उन्हें अपने सहायक और अनुशासित गण बनाकर अंगुलियों पर नचाते हैं ।
— लेकिन कब तक— यह भी तो एक प्रश्न है ? आखिर काल के हाथों वह मुट्ठी भी स्थिर नहीं रही और इतिहास को फिर एहसास करने का अवसर उसने दिया ।
— आज के संदर्भ में भी कुरसी राजसत्ता का प्रतीक है : वह कुरसी चाहे शासकीय कार्यालय की हो अथवा मजदूरों का नेतृत्व करनेवाले 'बड़े मजूदर' की हो ।
— कुरसी के साथ भय छिपा है, उसके भीतर स्प्रिंग के तार नहीं, भय की ऊर्जा भरी होती है ।
— एक-दूसरे से बदला लेने और प्रतिहिंसा तथा प्रतिरोध की भावना इतिहास से विरासत में मिली है ।
— राज-प्रासादों और राज-सत्ता के अंत के बावजूद भटकती हुई वे सारी आत्माएं निरंतर क्रियाशील हैं ।

●

— आज का आदमी एक कुरसी पर बैठते ही अपने को सबसे काट लेता है ।
— इसलिए उसके छूटते ही वह टूटा और बेजान हो जाता है ।

— जिंदगी-भर वह एक सूत्र में जिया है : अपना झंडा उठाइए और दूसरों को काटिए ।

दूसरों को काटने में अपने को भी चोट पहुंचती है ।

— सामर्थ्यवान व्यक्ति वह है जो बड़ी कुरसी पर बैठकर भी अपने सह-कर्मियों को बड़ा कहता है ।

— वह हीन भावना से ग्रसित नहीं होता । धूप से चमकती लहरों की तरह उसका मन प्रकाशवान होता है ।

— वह जीवन की सार्थकता को स्वीकारता हुआ मृत्यु के द्वार का अभिनंदन करने के लिए प्रतिक्षण प्रतीक्षारत है ।

— उस वर्तमान को वह अंतरंग रूप से पहचानता है जो हर पल भूत बनता जाता है ।

— उसके मन में न भय है और न हीन भावना ! ऐसा व्यक्ति अवकाश के क्षणों को दोनों हाथों में समेटकर गंगाजल की तरह पीता है ।

— वह न कभी दया का पात्र बनता और न ही टूटता !

●

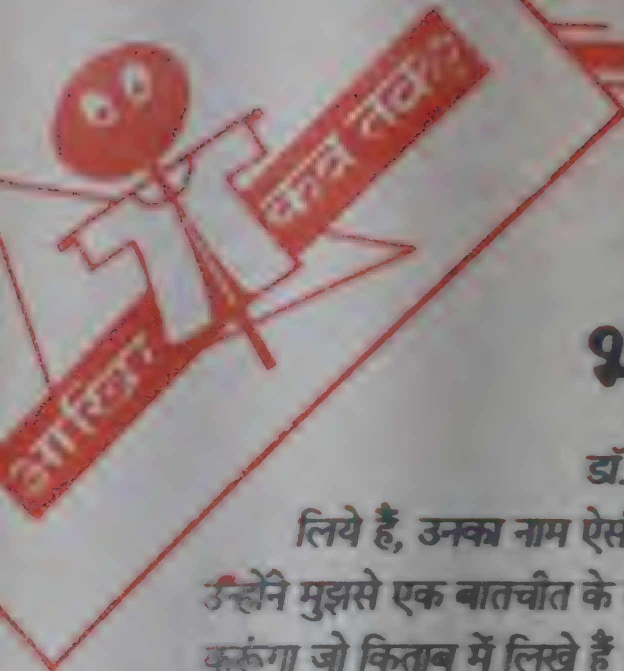
— निष्कर्ष : जो व्यक्ति अपनी कुरसी को राज-सत्ता की तरह स्वीकार कर अन्य कुरसियों के प्रति हीनता की दृष्टि रखता है, वह अपने हाथों टूटन, घुटन और दर्द का इतिहास लिख रहा है ।

— अपने लिखे को मेटने की सामर्थ्य आप पैदा भी कर लें तो आपसे अधिक सामर्थ्यवान यह अधिकार आपसे छीन लेगा ।

— कुरसी की लड़ाई सदियों से चली आयी है, चलती रहेगी । यह लड़ाई धर्म-संप्रदाय, दल और व्यक्ति इन सबसे अधिक प्रबल है ।

●

— देखें कब तक चलता है कुरसी-युद्ध— कितनी बार, कितने समय, कब तक !



राष्ट्रपति की भूमिका

भारत का संविधान कई जगह अधूरा है और बहुत कुछ राष्ट्रपति के विवेक पर छोड़ दिया गया है । राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने जितनी निष्पक्षता से अपने निर्णय लिये हैं, उनका नाम ऐसी हारी स्थिति में हमेशा सम्मान के साथ लिया जाएगा । उन्होंने मुझसे एक बातचीत के दौरान कहा था, "अवस्थीजी मैं तो सारे निर्णय वही करूंगा जो किताब में लिखे हैं ।" किताब एक अजीब चीज है, जो कानून की परीक्षा देने के लिए जाते हैं उन्हें कानून की पुस्तकें देखकर उत्तर लिखने का अधिकार है । सवाल तो यह है कि जिसने पढ़ा ही नहीं होगा वह भारी-भरकम कानून की पुस्तकें निर्धारित समय में कैसे देखेगा ? डॉ. शर्मा कानून के विशेषज्ञ हैं और उन्होंने लॉ की सर्वोच्च डिग्री हासिल की है । मुझे उनकी तारीफ इसलिए करनी चाहिए कि कानून की किताबों के पन्ने उन्हें भली-भांति याद हैं । जो हो—

जीना तेरी गली में ।
मरना तेरी गली में ।

और यह गली है प्रजातंत्र की । जहां का प्रथम नागरिक राष्ट्रपति भले ही हो, अधिकार तो प्रधानमंत्री के पास हैं । मैं फिर दोहराना चाहूंगा— देख लीजिए अपना चेहरा ।

चलिए नये सांसदों से मिलें

अंगरेजी सत्ता जाने के बाद जवाहरलाल नेहरू ने प्रजातंत्र का सपना देखा था । वह सपना तो साकार हुआ लेकिन धीरे-धीरे राजनीतिक माहौल इस स्तर तक आ जाएगा, शायद किसी ने नहीं सोचा था । पिछले अंक में हमने गत एक दशक का नक्शा प्रस्तुत कर दिया था । परोक्ष रूप से जहां हम पहुंचे थे, सब-कुछ वही हुआ ।

प्रजातंत्र के नाटक का दूसरा दृश्य और भी दिलचस्प और मजेदार है । विस्तार से लिखने की जरूरत नहीं है, सारा खेल कुरसी का है । कुरसी सारे सिद्धांतों और सदाचारों को निगल रही है । एक बना नहीं कि पुच्छल तारे की तरह टूटा । दूसरा बना तो कब तक रहेगा और किन संगतियों और विसंगतियों में पलेगा— खुदा हाफिज । जवाहरलाल नेहरू के साथ आरंभ हुए समय से लेकर छियालीस वर्षों में जहां हमें और मजबूत ऊंचाइयों में पहुंचना था, वहां हम पैरों से खेली जानेवाली गेंद की तरह लुढ़क गये हैं । ऐसी हालत में हमारे द्वारा ही चुने गये सांसदों को कहां किसकी फिक्र । पिछले

अंक में हमने शीर्षक दिया था— लोकसभा के आइने में अपना चेहरा देखें— तब देख लीजिए अपना चेहरा । अभी हिसाब लगाने का समय नहीं आया वरना हम गणित की वह पहेली भी सुलझा लेते कि हमारे चेहरे में कितने दाग हैं । यानी कौन कहां तक पढ़ा-लिखा है । किसने आजादी की लड़ाई लड़ी, किसने समाज सेवा की, कितने हैं जिन्होंने राजनीति के पान के पत्तों के बीड़े बनाकर अपनी दुकान चलायी और कमाल यह कि तीन 'वरेण्य' महिला सांसद एकदम निरक्षर हैं । वे शपथ ग्रहण का परचा नहीं पढ़ पायीं । पढ़ा दूसरों ने, लेकिन वाचाल तो वही हुईं । बुरा न मानिए हमारे देश में ही नहीं दुनियाभर में सबसे अधिक वाचाल औरतें होती हैं । मुझे प्रसन्नता एक बात की है इनमें से किसी ने अंगूठा नहीं लगाया । कम-से-कम हस्ताक्षर तो कर दिये । प्रजातंत्र महान है । उस पर हमारी आस्था है । इसलिए उसका जयगान करना हमारा कर्तव्य है । राजीव ने नारा दिया था, 'मेरा भारत महान ।'

एक मजे की बात मैं जरूर लिखना चाहूंगा कि इस चुनाव में कई दिग्गज पराजित हो गये । फूलन देवी ने आत्मसमर्पण किया था— अर्जुन सिंह के सामने । फूलन देवी तो जीत गयी लेकिन हमारे 'महान' नेता अर्जुन सिंह बुरी तरह हार गये । इसको संयोग कहें या विवशता । जो भी हो इससे मानसिक भोजन तो मिलेगा ही ।

ज्योतिषी कहां रहे ?

हर धार्मिक समारोह में ज्योतिषियों की पूछ अवश्य होती है । यहां तक कि मृत्यु के बाद भी ज्योतिषियों से पूछा जाता है कि मारकेश योग यदि लगा था तो आपने बताया क्यों नहीं ? जो भी हो मैं अजय भाम्बी का नाम पहले लिखना चाहूंगा । उन्होंने नवम्बर, ९५ में ही लिखा था कि भ्रष्टाचार के आरोपों से कई राष्ट्रीय नेताओं की छवि धूमिल होगी । कांग्रेस पार्टी आपसी वैमनस्य के कारण चौराहे पर खड़ी मिलेगी । जयललिता अधोगति में पहुंचेंगीं । आंध्र में वीभत्स दृश्य देखने को मिलेगा । केंद्र में जो भी सरकार बनेगी, कुछ ही महीनों की मेहमान होगी ।

यह सुयोग या दुर्योग कहिए कि एक कापालिक महाकाल भैरवानंद सरस्वती से मेरी अचानक भेंट हुई थी । उन्होंने लिखकर दिया था कि अगले प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी होंगे । लेकिन इन्हीं कापालिक मर्मज्ञ ने यह भी कहा था कि आखिर कितने दिन ? आजकल कापालिक महोदय दिल्ली में विराजमान हैं । वे दूसरे प्रधानमंत्री का नाम तो नहीं बता सके लेकिन आखिर कितने दिन कहकर बहुत कुछ स्पष्ट कर दिया । कानपुर के ज्योतिषी श्री तिवारी ने तो मुझसे फोन पर कहा था कि यदि आप पर किसी और ज्योतिषी का प्रभाव नहीं है तो मेरी बात भी छाप दीजिए । अच्छा

हुआ हमने उनकी बात नहीं छापी । वरना उनका नुकसान हो जाता । इस तरह एक नहीं अनेक ज्योतिषियों से मेरा पाला पड़ा । संसद के सच्चे चेहरे को सामने रखनेवाले अंगुलियों पर गिनने लायक हैं ।

आदमी से भला है कुत्ता

सैलिसबरी ब्रिटेन की घटना है । लेबेडोर नस्ल के दो कुत्तों राकी और आर्ची ने अपनी मालकिन की अनुपस्थिति में घर में अफरातफरी मचा दी । उन्होंने बुक शेल्फ से दर्जनों किताबें खींचकर नीचे गिरा दीं और पूरा घर अस्त-व्यस्त कर दिया । फिर टेलीफोन को टेबल से खींचकर दोनों कुत्ते उसे मालकिन केरोल गालिपन के बेडरूम में उसके बिस्तर पर ले गये और ब्रिटेन में आपात सेवा के लिए निर्धारित टेलिफोन नंबर ९९९ पर फोन कर दिया ।

आपात सेवा में ड्यूटी पर तैनात महिलाओं ने फोन पर गुर्राहट और हांफने की आवाजें सुनीं और उन्हें संदेह हुआ कि घर में किसी की मौत हो गयी है । इस संदेह के कारण पुलिस ने चिकित्सा सचिव के पद पर कार्यरत सुश्री गाल्पिन के कार्यालय में उनसे संपर्क किया । सुश्री गाल्पिन ने पुलिस को बताया कि घर में उनके कुत्तों के अलावा कोई भी नहीं है ।

इस बीच एक गश्ती पुलिसकर्मी आदेश पाकर सुश्री गाल्पिन के घर पहुंचा और उसने लैटर बॉक्स के अंदर झांककर देखा तो पाया कि वहां सभी चीजें बेतरतीब बिखरी थीं । उसे लगा घर में लूटपाट हुई है । खबर पाकर गृहस्वामिनी जब घर पहुंची तो उसने सभी चीजें सलामत पायीं । यद्यपि लगभग सब चीजें अपने स्थान से इधर-उधर थीं ।

कुत्तों ने सब कुछ इधर-उधर करने के बाद शायद अपराध बोध के कारण आपात सेवा को फोन कर दिया । सुश्री गाल्पिन ने बताया कि उनके घर फोन में त्वरित डॉयल सुविधा नहीं है, इसलिए निश्चय ही दोनों कुत्तों ने स्वयं ही ९९९ फोन नंबर डायल किया होगा ।

अंत में...

लड़कियां आखिर बेबस ही रहेंगी

मैं एक लंबे अंतराल के बाद हिम के आंचल प्रदेश में अपने गांव में गया, जो कि प्राकृतिक सौंदर्य में अपनी मिसाल खुद है, जहां लोग हर साल हजारों-लाखों रुपये

खर्च कर देश-विदेश से आते हैं, जहां के लोग अपने भोलेपन, निष्कपटता के लिए जाने जाते हैं । पश्चिम की भयावह आंधी अब अंचलों पर अपना राज करने जा रही है । शिष्टाचार और शर्मोहया के नाम पर सिर्फ बड़े-बूढ़ों का एकाधिकार रह गया है ।

इस बार मां ने कहा कि वह (मेरी) बहन को कॉलेज नहीं भेजेगी । उन्होंने पूरी बात बतायी तो दुःख तो हुआ ही गुस्सा भी आया । खैर, लड़की का भाई होना आज अभिशाप से कम नहीं, समझ-बूझ से काम लेते हुए लड़के के माता-पिता से बात की । लेकिन वह पुत्रमोह में अपना विवेक खो चुके हैं । जिसे उन्होंने लाख मन्नतें मांगने के बाद पाया । उस पर तो आंख उठाकर भी नहीं देख सकते । इसी कारण कई बार हत्या तक की घिनौनी हरकतें सामने आ रही हैं । उल्टा लड़कीवालों को दोषी ठहराया जाता है कि तुम अपनी बेटी को समझाओ । आखिर लड़की का कसूर तो बताओ ?

इस दौरान मैंने आठवीं कक्षा की बच्ची को पढ़ाया । एक दिन अचानक उसकी किताब से एक पत्र मिला । पत्र उसी के लिए था, लेकिन किसका, वह खुद नहीं जानती थी । उसने बहुत ही सनसनीखेज बात बतायी कि उसे लगभग सभी लड़के 'ब' शब्द से चिढ़ाते हैं । जाहिर है किसी लड़के के नाम का प्रथम अक्षर है लेकिन पूरा नाम कोई नहीं बताता । यहां तक कि गांव के लड़के भी नहीं । लड़कों ने अध्यापकों से मार सह ली लेकिन जुबान नहीं खोली । ऐसे ही पुलिस की धमकी भी बंदर घुड़की मात्र रह गयी है । पुलिस भी इन मामलों में नाकाम हो चुकी है ।

जिसे आज प्यार कहा जा रहा है वह इस पवित्र शब्द का सरासर अपमान है । हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अमर प्यार हमारी सभ्यता में भी हुए हैं लेकिन वह कभी एकतरफा नहीं थे । उसमें सौंदर्य का आकर्षण नहीं आत्मिक प्यार था और कहां आज तो 'यूज एंड थ्रो' जैसी सभ्यता पनप चुकी है । इस बदअसूली ने कितने घर तबाह किये बताना मुश्किल ही नहीं असंभव भी है । फिर भी कुछ बातों की चर्चा करना बहुत आवश्यक है । **(उदाहरण नाम देकर लिखा गया है इसलिए हम नाम नहीं छाप रहे)** ।

लड़की की शादी १०वीं कक्षा में पहुंचने तक ही या इससे भी पहले कर दी जाती है । लड़कीवाले मनमाना दहेज देने के लिए तैयार हैं लेकिन अपनी इज्जत को सलामत रखने के लिए लड़की को १८ साल की होने तक इंतजार नहीं कर सकते । पत्र को खतम करने से पहले फिर वही प्रश्न— 'आखिर कब तक ?'

—संजीव परमार
(करोलबाग, नयी दिल्ली द्वारा)

●

— राजेन्द्र अवस्थी

कीकर और बेर के जादुई पेड़

• आधार : सर्वेक्षण

मनुष्य ने जंतु जगत से अपने को धीरे-धीरे अलग करते हुए विकास की सीढ़ियां चढ़ी हैं । क्रूर हिंसक जंतुओं से ऊपर उठा है । इस विकास में अपनी शारीरिक बनावट को विकसित करते हुए चार पांव वाले जानवर से आदम युग तक पहुंचा । इस युग में भी वह अपने बुद्धि कौशल से अलग होते-होते जंगली समाज से उठकर सभ्य समाज तक आ पहुंचा ।

जब आदमी जंगली था

इस सभ्य समाज को बनाये रखने के लिए उसने कितनी ही विधियों का आविष्कार किया । बर्बर समाज से मुक्ति पाने के लिए कानून बनाये । कानून का पालन करने के लिए राज्य का निर्माण किया । कबीला संस्कृति उसकी प्राथमिक आवश्यकता थी । उससे भी ऊपर उठकर राज्य में विभिन्न प्रणालियों का प्रयोग किया । सभ्यता के इस विकास में राजतंत्र को पार करता हुआ अभी लोकतंत्र की छत के नीचे वह अपने को सुरक्षित पाता है । लोकतंत्र की पहली शर्त है कि वह जनता द्वारा जनता के लिए शासन हो । यानी क्रूर और बर्बर समाज को सभ्य करने के लिए कार्यपालिका, विधायिका, न्यायपालिका की व्यवस्था हो । इन संस्थाओं को जनता ने अपने अधिकार हस्तांतरित किये । यह हस्तांतरण भी अपनी सुरक्षा के लिए ही किया । व्यक्ति की सुरक्षा राज्य में, वह भी लोकतांत्रिक समाज में ही उचित लगी । इन संस्थाओं को इस प्रकार से बनाया कि वह एक-दूसरे पर अंकुश रख सके । कोई भी संस्था निरंकुश न हो । इसकी भूमिका को सुगम बनाने के लिए फिर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को महत्त्व दिया । अभिव्यक्ति को मूल अधिकार में रखा । इस मूलाधिकार का प्रयोग स्वतंत्र प्रेस और अन्य संचार साधनों के पास है ।

अब तक हुए संस्थाओं के विकास में मुख्य विचार यही रहा कि व्यक्ति की व्यक्तिगत आजादी पर प्रहार न हो । चाहे वह शारीरिक प्रहार हो या आर्थिक, आज हम यदि पीछे मुड़कर देखें तो बहुत से रोचक प्रसंग इतिहास में हमें मिलेंगे, जहां अपराध को रोकने के लिए समाज ने विभिन्न नियम बनाये और उन नियमों का आविष्कार भी उस समय के साधनों के आधार पर हुआ । विज्ञान की एक कहावत भी है—'आवश्यकता आविष्कार की जननी

जिस काल में अशिक्षा का बोलबाला था, उस काल में अपराधियों के अंगूठे के निशान को पहले मिट्टी की कच्ची पट्टियों में ले लेते थे, फिर उन्हें भट्टी में पकाकर लंबी अवधि के लिए सुरक्षित रख लेते थे । इस प्रकार से यह छापे अपराध करनेवाले की पुष्टि करने में सहायक होते थे । चीन और बेबिलॉन में यह परंपरा थी ।

।' इसी परिप्रेक्ष्य में विधि का शासन भी ना । अपराध विज्ञान अपराधों को रोकने के लए तैयार हुआ । वह भी समय था जब व्यक्ति पास नियमों और कानूनों को लिपिबद्ध करने लिए भाषा न थी । भाषा के व्यवधान को पार रता हुआ वह उस स्थान पर भी अटका जहां नको सुरक्षित रखने के लिए कागज की ावश्यकता थी । विश्व के विभिन्न देशों में नके रोचक विवरण मिलते हैं । सभ्यताओं का कास एक स्थान पर भी नहीं हुआ । ल्पनाशील व्यक्तियों ने उन्हें जगह-जगह ावहारिक रूप दिया ।

अंगुलियों की छाप

तकनीकी के इस विकास में चीन काफी ागे रहा । धीरे-धीरे इनके अनुसंधानों को विश्व अन्य देशों ने परिष्कृत रूप में दुनिया के मने लाया । विधि का विज्ञान, कानून का लन करवाना और न्यायालयों की प्रक्रिया यह ब प्राचीन चीन में हुई खोजें हैं । पश्चिमी निया ने इसे आधुनिक शास्त्रों के रूप में कसित किया । अंगुलियों का छाप-विज्ञान के शेषज्ञ हर्षशेल, फॉल्ड, गाल्टन, हेनरी, स्टिक आदि को कार्य की प्रेरणा चीन से ली । यद्यपि हस्तछाप प्राचीन रोम में प्रचलित ।

आधुनिक अपराध विज्ञान में अंगूठे व हथेली के छापे का जो प्रयोग अपराध को सत्यापित करने के लिए किया जाता है, वह भी चीन में प्राचीन काल से प्रयोग में था । विशेषज्ञ यहां तक भी मानते हैं कि ब्रिटेन के न्यायालयों में जिस गोल मुहर का प्रयोग करते हैं, वह चीन की ही परंपरा है ।

जिस काल में अशिक्षा का बोलबाला था, उस काल में अपराधियों के अंगूठे के निशान को पहले मिट्टी की कच्ची पट्टियों में ले लेते थे, फिर उन्हें भट्टी में पकाकर लंबी अवधि के लिए सुरक्षित रख लेते थे । इस प्रकार से यह छापे अपराध करनेवाले की पुष्टि करने में सहायक होते थे । चीन और बेबिलॉन में यह परंपरा थी ।

जरमन विशेषज्ञ डॉ. राबर्ट हेंडल ने अंगुलियों के छापे के इतिहास पर लिखा है कि यह पहचान के लिए सबसे पहले टेंग शासन काल (सन् ६१८-९०६) में प्रयोग में आया । यह चीन की कला और काव्य का स्वर्ण काल था । बाद में चीन ने 'लूप्स और व्हर्ल्स' प्रणाली का विकास किया । डॉक्टर हेंडल ने इस बात को बार-बार स्मरण करवाया कि गाल्टन जो आधुनिक 'फिंगर प्रिंट्स' के जनक हैं,उन्होंने अपना वर्गीकरण विधि को चीन से ही लिया ।

बेर और कीकर के पेड़ के नीचे बैठकर न्याय करना एक परंपरा थी। चीन के लोगों का विश्वास था कि इन पेड़ों में जादुई क्षमता है।

आज 'फिंगर प्रिंट्स' के स्थान पर हस्ताक्षर का प्रयोग उसी का नमूना है। यहां तक कि स्याही व पैड भी चीन की ही देन है।

जहर कब पहचाना

चीन ने औषधि विज्ञान में भी महत्त्वपूर्ण कार्य किया। 'मटिरिया मेडिका' का प्रकाशन ३००० ई. पू. में हुआ था। उस काल में पुस्तक में दी गयी सूचनाएं बच्छ का पौधा, आर्सेनिक और अफीम को जहर बताया गया। हशीश का प्रयोग नशे के रूप में प्राचीन चीन में किया जाता था। लेकिन आदी होने के लिए प्रयोग में नहीं लाते थे। छोटी कोठरी में गरम पत्थर पर हशीश रखकर उसका धुवां रोगी को सूंघाते थे। इससे रोगी बेहोश हो जाता था। 'मटिरिया मेडिका' में उल्लेख है कि टोड के विष का प्रयोग हृदय रोगों के लिए किया जाता था। इसी प्रकार २६०० ई. पू. में चीन में 'औषधि-विधि' प्रणाली का प्रचलन शुरू हो गया था। सम्राट हवांग टी के शासन काल में संपूर्ण औषधि साहित्य को समेटा गया। इस पुस्तक को नि-चिंग ने लिखा। पुस्तक में उल्लेख है कि रक्त चक्र में निरंतर बहता है। इसी बात का समर्थन सन् १६२८ में विलियम हार्वे ने किया। इन्हें रक्त-संचार के खोज का श्रेय दिया जाता है।

अपराधी कैसे पकड़ा जाता?

नि चुंग ने अपराधी व्यक्ति को ढूंढ़ने की विधि भी बतायी। उस समय अपराधी को बैठाकर उसके सामने औषधि का जानकार व्यक्ति अपना हाथ उसके सीने पर रखता था और उसके हृदय की धड़कनों को सुनता था। यह विश्वास किया जाता था कि जो व्यक्ति झूठ बोलता है उसकी दिल की धड़कन बढ़ जाती है। इसी विधि को आधार मानकर बाद में पौलिग्राफ का आविष्कार हुआ। यह मशीन झूठ को पकड़ती है। अमरीकन डॉ. लेनार्ड केलर पौलिग्राफ के आविष्कारक हैं। यह शरीर की विभिन्न संवेदनाओं को रेकॉर्ड करती है। जैसे नाड़ी, सांसें, रक्तचाप और त्वचा की संवेदनशीलता।

पेड़ के नीचे जादू

हत्या करने पर अपराधी को पकड़ने के लिए एक और विधि का प्रयोग होता था। माना जाता था कि हत्या करने के लिए अपराधी कील का प्रयोग सिर पर हथौड़ी मारकर करते थे। तब सिर के घाव और उस कील के निशान को मिलाकर हत्या की गुत्थी सुलझायी जाती थी। हत्या के संभावित कारणों की छानबीन की जाती थी। वास्तविक न्यायिक प्रक्रिया प्राचीन चीन में खुले स्थान पर शुरू होती थी। सबसे उपयुक्त स्थान नाशपाती के पेड़ के नीचे होता था। शाहों के ड्यूक नाशपाती के पेड़ के नीचे ही फैसले सुनाता था। बेर और कीकर के पेड़ के नीचे बैठकर न्याय करना एक परंपरा थी। चीन के लोगों का विश्वास था कि इन पेड़ों में जादुई

करिश्मा है ।

जब न्याय करना कठिन होता था, तब न्यायाधीश गरम पत्थर के ऊपर अपराधी को चलने के लिए कहता था । यदि उसे कुछ नुकसान नहीं होता था तो वह अपराधी नहीं माना जाता था । या फिर खूंखार बिल्ली के पास कमरे में छोड़ दिया जाता था । न्याय प्रणाली की प्राचीन पुस्तक 'चाउ-लि' में वर्णन है कि अपराधी की पांच अभिव्यक्तियों पर उसे दंड दिया जाता था । पहली, उसकी वाणी का परीक्षण किया जाता था, दूसरी चेहरे के हाव-भाव का परीक्षण, तीसरा : स्वास प्रक्रिया की गति, इसमें दवा देने वाले आदमी का हाथ अपराधी के दिल पर रखा जाता था । चौथी, अपराधी के कानों को ध्यान पूर्वक देखा जाता था ।इसमें न्यायाधीश की बातों को सुनने पर कैसी प्रतिक्रिया अपराधी की होती है । पांचवीं : अपराधी की आंखों का परीक्षण किया जाता था ।

कानून की पुस्तकें कैसे बनीं

कानून की अधिकांश पुस्तकों से पता चलता है कि अधिकारी राजा की ओर से नियुक्त किये जाते थे । न्यायाधीश राजा का प्रतिनिधि होता था । आज भी न्याय की प्रक्रिया में इन बातों पर गौर किया जाता है ।

चीन में रेकॉर्ड आसानी से रखे जाते थे । हन शासन काल (२०६ ई. पू. से सन् २२०) में न्यायालयों की सुनवाई लकड़ी की तख्तियों पर लिखकर सुरक्षित रखी जाती थी ।

सन् ४०० के आस-पास विधि-विज्ञान का सरलीकरण किया गया ।

इस प्रकार आज विश्व जिस सभ्यता की ऊंचाइयों को छू रहा है, उसमें पूर्व की देन अधिक है । विकास एक निरंतर प्रक्रिया है । उसमें आप किस रूप में भागीदार हो सकते हैं । यह समय ही बता सकता है ।

बिना दूध और चीनी की चाय

दूध, चीनी और चाय-पत्ती के मिश्रण से बनी चाय का स्वाद ही कुछ दूसरा है, पर बिना दूध और चीनी की बनी चाय ? आजकल बिना दूध और चीनी की चाय इंगलैंड में अधिक लोकप्रिय हो रही है । इंगलैंड की एक प्रमुख चाय उत्पादक कंपनी इस तरह की चाय का प्रचार कर रही है जिसमें दूध और चीनी का मिश्रण न हो । अमरीका के 'कॉफीशाप' में इस तरह की चाय का प्रचार करने के साथ-साथ कंपनी फ्रांस तथा जापान की ओर भी प्रवेश कर रही है । कंपनी के प्रबंध निदेशक का कहना है कि जब आप चीनी तथा दूध मिलाते हैं तो दार्जिलिंग तथा अन्य उत्कृष्ट चायपत्ती के गुण समाप्त हो जाते हैं । इसलिए बिना दूध और चीनी की चाय का 'फ्लेयर' सोने में सुहागा— गुण भी और जायका भी ।

—सु वा

रहस्य दुर्लभ तंत्र के खोज का

• विजयपाल

गरमियों के मौसम का वह एक बेहद गरम दिन था । दोपहर की चिलचिलाती धूप आग बरसा रही थी । चारों ओर दूर-दूर तक कहीं कोई व्यक्ति नजर नहीं आ रहा था । जून की उस कड़कती धूप में भला कौन अकारण बाहर निकलने की हिम्मत करता । लेकिन इस तेज झुलसा देनेवाली धूप में, एक नौजवान बेतहाशा साइकिल दौड़ाता हुआ आगे बढ़ रहा था । संभवतः वह कहीं पहुंचने की बहुत जल्दी में था ।

हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिले का एक छोटा-सा गांव । मध्यम दरजे की पर्वत श्रृंखलाओं के बीच खड्ड में तीन तरफ पानी से घिरा वह बहुत ही सुंदर गांव था । पानी की जलधार से चलनेवाली चक्की पहले-पहल मैंने यहीं देखी थी । खड्ड के पानी को मोड़कर छोटी नहर बनाकर पानी चक्की तक पहुंचाया गया था । नहर के दोनों ओर केले के वृक्षों की कतार देखते ही बनती थी । शहरों की भीड़भाड़ और प्रदूषण से निकलकर एक बार जो यहां आ गया, निस्संदेह, वह यहां से जाने का नाम नहीं लेगा ।

तंत्र रहस्य की खोज

दुर्लभ तंत्र रहस्य की खोज-शोध के सिलसिले में, एक समय था जब मैं निरंतर यात्राओं पर रहा और इस तरह, मैंने भारत के अनेक प्रांतों का भ्रमण किया । दुर्गम से दुर्गम स्थान पर खतरों से खेलता जोखिम उठाते हुए पहुंचा । अपने भ्रमणकाल के दौरान घटित एक घटना हिमाचल प्रदेश की है, जिसे मैं सुनाने जा रहा हूं और जिसका अनायास ही मैं प्रत्यक्षदर्शी बन गया ।

मेरे एक मित्र ने किसी अच्छे 'चेले' (तांत्रिक) का पता कर मुझे बुला लिया था । उस रोज हम प्रातः ही उससे मिलने घर से निकल पड़े थे । कुछ बस द्वारा व शेष आठ-नौ कि.मी. का रास्ता हमने पैदल चलकर ही तय किया था । पैदल चलते हुए रास्ते में कई छोटे-छोटे गांवों से होकर गुजरे थे । प्रकृति के शांत-स्वच्छ वातावरण में बसे छोटे-छोटे गांवों को देखकर मन को बहुत अच्छा लगा था ।

जून का महीना हो और गरमी न हो यह असंभव था । समुद्रतल से आठ-नौ सौ फुट की ऊंचाईवाला यह क्षेत्र दिन में काफी गरम हो जाता है,यह जानकर आश्चर्य हुआ था । सूरज जब सिर पर हो तो उस वक्त खड्ड का वातावरण पत्थरों व रेत की वजह से और भी तपने लगता है । लेकिन वहां लू आदि का प्रकोप नहीं था । वहां से लौटने में हमें देर हो गयी । बहुत रात गये रात्रि के दस बजे हम वहां से लौटे थे । उस चेले से हमारी खूब विस्तारपूर्वक बातचीत हुई थी । अतः उसकी कही अनेक बातें अब भी हमारे मन-मस्तिष्क में घुमड़ रही थी । यद्यपि हम थक गये थे, मगर विचारों की उधेड़बुन के कारण नींद हमारी आंखों से कोसों दूर थी । तब

ने की बजाय बहुत देर तक हम दिन में उस ले से हुई बातचीत पर विचार-विमर्श करते रहे और बातों ही बातों में कब सवेरा हो गया, ा ही न चला था।

मायांवी विद्या

प्रातः पता चला कि पानी की चक्कीवाला भी छ-कुछ मायावी विद्या से संबंध रखता है। पि, मेरे मित्र की उसमें रुचि नहीं थी, लेकिन कहा था—'एक बार मिल लेने में क्या हर्ज और उससे मिलने की खातिर मैं एक और न के लिए रुक गया था। किंतु, रात्रि में जब उससे मिलने गये तो उससे अधिक बात हीं हो सकी थी। वहां से हम शीघ्र ही लौट ये थे।

अगले रोज मेरा जाना बिलकुल निश्चित । मगर मित्र की माताजी के अत्यधिक ग्रह पर मैंने अपना जाना दूसरे दिन तक के ए स्थगित कर दिया था। कई बार ऐसे ग्रह प्रकृति के संकेत होते हैं, अतः उसे त ही समझ कर उसके अनुकूल चलना च्छा ही सिद्ध होता है और सचमुच ही, उस जो घटना घटी उसकी छाप आज भी मेरे -मस्तिष्क में अमिट है। उस घटना के रहस्य मुझे विशेष तौर से प्रभावित किया था।

दोपहर के भोजन के बाद घर के सभी लोग राम फरमा रहे थे। मगर मेरा मन बार-बार खड्ड तक घूम आने को प्रेरित कर रहा था। एक, मैं यंत्रवत रूप से उठा और यह कर की जरा खड्ड तक टहलने जा रहा हूं, मैं त्तर की प्रतीक्षा किए बिना चल दिया था। अजीब-सी मानसिकता लिए, चलते-चलते खड्ड में बहते पानी के निकट आ खड़ा हुआ था। थोड़ी देर खड़े-खड़े बहते पानी को निहारता रहा, लेकिन मन में कुछ बेचैनी व भारीपन था। पास ही वहां दो औरतें कपड़े धो रही थीं। अतः मैं वहां रुका नहीं। पानी गहरा नहीं था इसलिए उसके बीच घुसकर बहते पानी में चलते हुए उसको पार कर गया था। दूसरे किनारे पहुंचकर क्षणभर को रुककर पीछे मुड़कर देखा और सामने पहाड़ से लिपटी सर्पाकार पगडंडी पर आगे बढ़ने लगा था। ऊपर पहाड़ के शिखर पर पहुंच, एक वृक्ष की छाया तले बैठ वहां से, मैं संपूर्ण खड्ड के दृश्य को निहारने लगा। लेकिन, मन अब भी बेचैन था। मैं उठा और पुनः वहां से चल दिया था।

अदृश्य मंदिर

चलते-चलते दूर एक ऊंची-सी जगह पर एकांत में मुझे एक मंदिर नजर आया था। मगर अगले ही पल सामने से मंदिर अदृश्य था। हठात् मेरे कदम वहीं रुक गये। मैंने अपनी आंखों को मला फिर देखा, तो मंदिर ठीक वहीं मौजूद था। निश्चित ही ऐसा तेज धूप की वजह से हुआ था। अब तक आसपास मुझे कोई भी मानवी आकृति दिखायी नहीं दी थी। मंदिर को अपना लक्ष्य निर्धारित कर, मेरे कदम कुछ तेज हो गये थे। चारों तरफ सन्नाटा था। गांव कुछ हटकर एक ओर रह गया था। खेतों को पार करता हुआ, अचानक मैं कच्ची सड़क पर आ पहुंचा था। सहसा, तभी खड़-खड़ की अजीब-सी ध्वनि सुन मैं चौंक पड़ा। वह ध्वनि दूर से पास आती हुई प्रतीत हुई। एक नौजवान साइकिल दौड़ाता हुआ (चूंकि वहां कुछ ढलान थी) अतः वह खड़खड़ाहट करता हुआ तेजी से गुजर गया। मैं उस नौजवान को दूर तक जाते हुए देखता रहा था। मेरी हैरानी समाप्त हो चुकी

थी । फिर अगले मोड़ पर जाकर वह आंखों के सामने से ओझल हो गया था । मैंने मुड़कर पुनः मंदिर की ओर कदम बढ़ाया ही था कि, तभी अकस्मात एक भयावह चीख हवा में तैर गयी । साथ ही साथ एक जोरदार धमाका भी हुआ था । उस वक्त मैं बिलकुल भी न समझ सका था कि वह धमाके की आवाज कैसी थी ? यह सोचकर कि उस साइकिल वाले नौजवान की दुर्घटना हुई है, मैं उसकी मदद के खयाल से उस ओर लपका था ।

वहां साइकिल समेत वह नौजवान बेहोश पड़ा था । जल्दी से सड़क पर से उठाकर मैंने उसे एक छायादार वृक्ष के नीचे लिटा दिया था । मैंने गौर किया कि उसे कहीं भी खरोंच तक नहीं आयी थी । साइकिल उठाते हुए मैंने जब साइकिल का निरीक्षण किया कि शायद वह टयूब फटने का धमाका था । लेकिन आश्चर्य ! टायर-टयूब दोनों सही-सलामत थे । फिर ख्याल आया कि संभवतः उसे मिरगी का दौरा पड़ा हो । लेकिन वह चीखा क्यूं था ? और वह धमाका कैसा था ? उस वक्त इतना सब सोचने का वक्त नहीं था । अतः शीघ्रता से मैं निकट के गांव की ओर दौड़ पड़ा था ।

हमारे सारे प्रयत्नों के बावजूद पूरे ढाई घंटे बाद वह युवक होश में आया था । उस वक्त साढ़े चार बजे थे और यह घटना दोपहर दो बजे के करीब घटी थी । होश आने पर जो कुछ उसने बताया, सहसा उस पर विश्वास ही नहीं हुआ क्योंकि उसकी वह दास्तान बेहद अजीब थी ।

अजनबी बुढ़िया

उसने बताया कि घर लौटते हुए रास्ते में एक अजनबी बुढ़िया ने हाथ के संकेत से मुझे रुकने का इशारा किया था । मैंने साइकिल रोक दी थी । 'बेटा, बहुत थक गयी हूं तुम जरा मुझे आगे तक छोड़ दो' उसने नम्रतापूर्वक कहा था । मैंने सहर्ष उस बुढ़िया को साइकिल पर बिठा लिया था । उसके हाथों में मैली-सी एक पोटली थी, जिसमें कुछ बंधा था । जब मैं मंदिर के नीचे से गुजरा था तो 'इन्हें' (उसका इशारा मेरी ओर था) मैंने वहां देखा था । 'लेकिन, उस वक्त तो तुम्हारी साइकिल के कैरियर पर मैंने किसी को बैठे नहीं

इससे पहले कि मैं कुछ पूछता अचानक पता नहीं कैसे उस बुढ़िया की पोटली खुल गयी थी । गठरी खुलते ही चारों ओर हड्डियों की वर्षा-सी हो गयी । यह सब देखकर मेरे होशो-हवास ही उड़ गये । मैंने भयभीत दृष्टि से उस बुढ़िया को गौर से देखा तो उसका चेहरा मांस रहित खप्पर में परिवर्तित हो चुका था और उसके उस भयानक विकृत चेहरे को देखकर डर के मारे मेरी चीख निकल गयी । तभी जोर का धमाका हुआ था । उसके बाद क्या हुआ, मुझे कुछ पता नहीं ।

देखा था—मैंने बीच में ही उससे कहा था ।

'नहीं, उस वक्त भी वह बुढ़िया साइकिल के कैरियर पर बैठी हुई थी और अगला मोड़ आते ही साइकिल रुकवाकर वह उतर गयी थी'

'यहां तो आसपास कोई घर नहीं है' आप यहां कहां उतर गयीं ?' मैंने आश्चर्यचकित होकर उस बुढ़िया से पूछा था । लेकिन, मेरी बात अनसुनी कर अगले ही पल जेब से मुट्ठीभर सिक्के निकाल हथेली मेरे सामने खोल दी थी ।

'इनमें से जितने चाहो उठा लो ।'

'नहीं, मैं भला आपसे पैसे क्यूं लूंगा, मैंने आपका ऐसा क्या काम किया है, नहीं मैं पैसे नहीं लूंगा ।' लेकिन मेरे इस प्रकार जवाब देने से बुढ़िया ने कड़ककर कहा था—'उठाओ ।' उसका चेहरा सख्त व जर्द था । उसकी आंखों के कठोर भाव देख मैं सहम गया था । तब उसकी हथेली पर फैले पच्चीस, पचास व रुपये के सिक्कों के साथ मुड़े-तुड़े नोटों में से बड़े संकोचवश मैंने पच्चीस पैसे का सिक्का उठा लिया था और जैसे ही मैंने पच्चीस पैसे का सिक्का उठाया, उसी क्षण बड़े ही निराशाजनक व रूखे स्वर से उस बुढ़िया ने कहा था—'मुझे अफसोस है बेटा तुम्हारी जिंदगी ज्यादा दिन की नहीं है ।'

इससे पहले कि मैं कुछ पूछता अचानक पता नहीं कैसे उस बुढ़िया की पोटली खुल गयी थी । गठरी खुलते ही चारों ओर हड्डियों की वर्षा-सी हो गयी । यह सब देखकर मेरे होशो-हवास ही उड़ गये । मैंने भयभीत दृष्टि से उस बुढ़िया को गौर से देखा तो उसका चेहरा मांस रहित खप्पर में परिवर्तित हो चुका था और उसके उस भयानक विकृत चेहरे को देखकर डर के मारे मेरी चीख निकल गयी । तभी जोर का धमाका हुआ था । उसके बाद क्या हुआ, मुझे कुछ पता नहीं ।

उस नौजवान की यह कथा सुन मैं आश्चर्यचकित था । लेकिन जब वह युवक मेरे बराबर से गुजरा था, मैंने किसी को भी साइकिल के कैरियर पर बैठे नहीं देखा था और न ही घटनास्थल पर मैंने कहीं कोई हड्डी देखी थी । हां, धमाके की आवाज बड़ी स्पष्ट सुनी थी । पर बुढ़िया के होने का कोई भी चिह्न मुझे वहां नहीं मिला था । आखिर, वो कैसा रहस्य था ? क्या, वह कोई भटकती हुई प्रेत आत्मा थी ? लेकिन, इसका जवाब कौन देता । यह शोध का विषय है ।

दूसरे दिन प्रातः मैं अपने मित्र के साथ पुनः उस घटनास्थल का निरीक्षण करने गया था । लेकिन, वहां कोई भी सुराग नहीं मिल पाया था । सिवा इस बात के कि देवी-मंदिर की हद उस मोड़ तक ही थी । उस मोड़ के आगे (जहां दुर्घटना घटी थी) का क्षेत्र किसी ग्राम देवता के अधीन था ।

वहां से लौटने के पूर्व हम एक बार फिर उस नौजवान से मिलने गये थे । वह ज्वरग्रस्त था और उसके निस्तेज चेहरे पर अजीब-सी मुर्दानी छायी हुई थी । वह बहुत भयभीत लग रहा था । तीन-चार माह उपरांत मेरे मित्र द्वारा मुझे सूचना मिली थी कि लगातार ज्वर से ग्रस्त रहने की हालत में उसे जिला अस्पताल में भरती होना पड़ा था । वहीं एक दिन उसकी हालत बहुत बिगड़ गयी । नाक और मुंह से ढेर सारा खून बहा और वह चल बसा था ।

—वार्ड नं. १, कृष्णानगर, पत्रालय व
जिला—हमीरपुर हिमाचल प्रदेश

प्रेरक प्रसंग

वेदांत की शिक्षा क्या है ? प्रथमतः यह शिक्षा देता है कि सत्य-दर्शन के लिए तुम्हें अपने से भी बाहर जाने की जरूरत नहीं । सभी अतीत और सभी अनागत इसी वर्तमान में निहित है । कभी किसी ने अतीत को नहीं देखा । क्या तुममें से किसी ने देखा है ? जब यह सोचते हो कि तुम केवल वर्तमान में ही अतीत की कल्पना करते हो । भविष्य को देखने के लिए तुम्हें उसे वर्तमान में उतारना होगा, जो वर्तमान यथार्थ सत्य है—शेष सब कल्पना है । वर्तमान ही सब कुछ है । केवल वही 'एक' है—एक—मेवाद्वितीयम् । जो कुछ है, सब इसी में है । अनंत काल का एक क्षण दूसरे प्रत्येक क्षण की ही भांति अपने में पूर्ण और सबको समाहित कर लेनेवाला है । जो कुछ है, था और होगा, सब इसी वर्तमान में है । इससे परे किसी कल्पना में कोई प्रवृत्त हो तो वह विफल मनोरथ होगा ।

क्या इस पृथ्वी से भिन्न का चित्रण कोई धर्म कर सकता है ? यह सब कला मात्र है, केवल इस कला का ज्ञान हमें धीरे-धीरे होता है । पंचेंद्रियों के सहारे इस सृष्टि को निरखते हैं और उसे रंग-रूप-शब्द आदि से युक्त स्थूल हो पाते हैं । मान लो, विद्युत चेतना का मुझमें स्फुरण हो जाए तो सब कुछ बदल जाएगा । मान लो कि मेरी इंद्रियां सूक्ष्मतर हो जाएं तो तुम सब बदले नजर आओगे । मैं ही बदल जाऊं तो तुम भी बदल जाओगे । यदि मैं इंद्रियों की सीमा पार कर लूं तो तुम सब आत्मरूप तथा ईश्वररूप दिखोगे । जगत का दृश्यरूप सत्य नहीं है ।

('वेदांत'—स्वामी विवेकानंद)

मैं हमेशा से यह महसूस करता रहा हूं कि भारतवर्ष में एक राष्ट्रभाषा का होना आवश्यक है । जो इस बात को नहीं मानते हैं, उन्हें एक बार विदेशों की यात्रा करनी चाहिए । पिछले वर्ष जब मैं वियंता के अपने यूरोपियन मित्र के यहां अन्य कई भारतीयों के साथ एक भोज में सम्मिलित हुआ, तो वहां हम आपस में अंगरेजी में बातचीत करने लगे । यूरोपियन मित्र को बहुत आश्चर्य हुआ और उन्होंने पूछा कि आप लोग क्यों अंगरेजी में बातचीत कर रहे हैं ? इस प्रश्न को सुनकर हम लोगों का सिर लज्जा से झुक गया ।

दुर्भाग्य की बात है कि हमारे देश के कुछ हिस्सों में हिंदुस्तानी के प्रचार के संबंध

में भ्रम फैला हुआ है । उदाहरण के लिए मद्रास है । वहां के स्कूलों में हिंदी को पाठ्य विषय बनाने का लोग विरोध करते हैं । उनकी धारणा है कि हिंदी की पढ़ाई से मातृभाषा या प्रांतीय भाषा भ्रष्ट हो जाएगी । प्रांतीय भाषाओं को मिटाकर उसके स्थान पर हिंदी का आधिपत्य होगा । यह बिलकुल भ्रमपूर्ण कल्पना है । प्रांतों में प्रांतीय भाषाएं प्रथम स्थान प्राप्त करेंगी । हिंदी को तो दूसरा स्थान ही प्राप्त होगा । अतः मद्रास के लोगों को राष्ट्रभाषा का सच्चा उद्देश्य समझ लेना चाहिए और हिंदी विरोध से हाथ खींच लेना चाहिए ।

(सुभाषचंद्र बोस)

मेरी आकांक्षा का लक्ष्य स्वतंत्रता से ज्यादा ऊंचा है । भारत की मुक्ति के द्वारा मैं पश्चिम के भाषण शोषण से दुनिया के कई निर्बल देशों का उद्धार करना चाहता हूं । भारत के अपनी सच्ची स्थिति को प्राप्त करने का अनिवार्य परिणाम यह होगा कि हर एक देश वैसा ही कर सकेगा और करेगा ।

मैं अपने दिल की गहराई में यह महसूस करता हूं कि दुनिया रक्तपात से बिलकुल ऊब गयी है और इस असह्य स्थिति से बाहर निकलने का रास्ता खोज रही है । मैं विश्वास करता हूं तथा उस विश्वास में सुख और गर्व अनुभव करता हूं कि शायद मुक्ति के प्यासे जगत को यह रास्ता दिखाने का श्रेय भारत की प्राचीन भूमि को ही मिलेगा ।

(महात्मा गांधी)

मैं चाहता हूं कि मालिक और मजदूर का भेद मिट जाए । इसका मतलब यह नहीं कि हम मालिक की अक्ल का उपयोग नहीं करना चाहते । जो मालिक होगा, वह मजदूर भी होगा और जो मजदूर होगा, वह मालिक भी । कुछ तो मालिक-प्रधान मजदूर रहेंगे, जो हाथ का काम करते हुए भी दिमाग के काम को प्रधानता देंगे और कुछ मजदूर-प्रधान मालिक होंगे, जो दिमाग का काम करते हुए हाथ के काम को प्रधानता देंगे । बुद्धि-प्रधान शरीर-श्रम करनेवाले और श्रम प्रधान बुद्धि का काम करनेवाले, ऐसी अवस्था समाज में होनी चाहिए । अगर भगवान यह नहीं चाहता, तो कुछ को तो वह हाथ देता और कुछ को बुद्धि ही । राहु और केतु के समान सबको अपूर्ण बनाता । पर उसने सबको परिपूर्ण बनाया है, इसलिए कि सब परिपूर्ण जीवन बिता सकें ।

(आचार्य विनोबा भावे)

बेजोड़ हैं सिद्धियों के नृत्य

तरुण कुमार दाधीच

हमारे देश के प्रत्येक अंचल में नृत्य और संगीत की समृद्ध परंपरा रही है । धूमर, चकरी, गरबा, डांडिया, सपेरा, तेरह ताली, कालबेलिया आदि नृत्य अपनी क्षेत्रीय विशेषताओं एवं अनूठेपन के कारण मन मोह लेते हैं । इसी श्रृंखला में सिद्धी नृत्य एक ऐसा नृत्य है जो अत्यंत आकर्षक होने के साथ-साथ बेहद अनूठा है । रंग-बिरंगा भड़कीला परिधान पहने, पूरे शरीर व चेहरे पर आकर्षक चित्रकारी किये, कमर पर 'लपेटी' और उस पर पक्षियों के रंग-बिरंगे पंखों का घेरा बांधे, गले में कौड़ियों की माला धारण किये सिद्धी नर्तक जब नगाड़ों की थाप पर 'हाउ-हाउ' की ध्वनि के साथ नृत्य करते हैं, तब ऐसा जान पड़ता है मानो ये कलाकार अफरीका के हब्शी हों अथवा अफरीका के कलाकार भारत में 'अफरीकी-महोत्सव' में भाग ले रहे हों ।

यह अफरीकी गुलाम

वस्तुतः सिद्धी अफरीकी मूल के ही हैं । सिद्धियों के संबंध में अलग-अलग मत प्रचलित हैं । पुष्ट मान्यताओं के अनुसार जब विदेशी व्यापारी भारत आये थे, तब उन्होंने अफरीकी गुलाम खरीद लिये थे । सिद्धियों के बारे में यह भी कहा जाता है कि बंगाल के एक मुसलिम शासक ने लगभग दस हजार गुलाम खरीदे । ये अफरीकी बंगाल में गुलाम बनकर रहे । जब बंगाल का मुसलिम शासक भारत छोड़कर गया, तब ये सिद्धी लोग देश के दक्षिण में चले गये । कालांतर में जब महमूद गजनवी भारत पर आक्रमण करने आया, तब उसने सिद्धियों को अपने यहां नगाड़े बजाने के लिए रखा । महमूद गजनवी के भय से कुछ सिद्धी भाग गये और उन्होंने गुजरात के जंगलों में निर्वासित जीवन बिताया । भागे हुए सिद्धी, जो गुजरात में स्थायी रूप से बस गये वे इन्हीं नगाड़ा बजानेवालों के वंशज माने जाते हैं ।

यह सत्य है कि सिद्धी भारत में गुलाम बनकर आये । इनमें से कुछ ने जंगलों में निर्वासित जीवन बिताया और कुछ ने 'जंजीरा' नामक रियासत पर शासन भी किया । ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर एक सिद्धी कमांडर ने जाफराबाद के शासक मुहम्मद जलंधर को पराजित किया एवं स्वतंत्र रूप से शासन किया ।

भारत में सिद्धी मुख्य रूप से गुजरात में तथा शिरकान बीहड़ों में पाये जाते हैं । कुछ सिद्धियों के वंशज केरल, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र के जंगलों में भी रहते हैं । सिद्धियों का अपना समाज है । इनके समाज में पंचायत होती है जिसे वे 'जमात' कहते हैं । सिद्धी लोग जमात के आधीन रहकर आज भी परंपरागत रीति-रिवाजों का पालन करते हैं ।

सामाजिक परिवर्तन एवं धार्मिक मान्यताओं के अनुसार सिद्धी समुदाय के लोग तीन फिरकों में बंट गये । सिद्धियों का एक समुदाय जो समाज में रहता है वो धर्म के अनुसार चलता है । दूसरा समुदाय जिसे 'काफिर' के नाम से जाना जाता है क्योंकि ये ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं रखते, परंतु इस समुदाय के लोग स्वयं को सिद्धी कमांडर की संतान मानते हैं, जिसने जाफराबाद पर शासन किया था । गुजरात में रहनेवाला 'जाकूर' सिद्धी समुदाय गुजराती रीति-रिवाजों के अनुसार रहते हैं । कुछ सिद्धी ऐसे भी हैं जो अफरीका में बोले जानेवाली भाषा ही बोलते हैं, ये सिद्धी 'सवाहली' कहलाते हैं ।

चित्ताकर्षक लोकगीत

सिद्धी समुदाय में लड़के-लड़कियों के विवाह माता-पिता की इच्छानुसार होते हैं । ज्यादातर विवाह लड़के-लड़कियों के वयस्क होने पर होते हैं, परंतु इनमें बाल-विवाह का प्रचलन भी है, दहेज-प्रथा के ये विरोधी हैं, लेकिन वर पक्ष को जो भी आवश्यक एवं सामर्थ्य के अनुसार वस्तुएं भेंट स्वरूप दी जाती हैं, उसे ये सहर्ष स्वीकार करते हैं । विवाह में प्राप्त वस्तुओं की सूचना इन्हें अपने जमात के मुखिया को देनी पड़ती है । इनमें विवाह मुसलिम मान्यताओं के अनुसार होते हैं, क्योंकि ये इसलामिक केलेंडर के आधार पर विवाह की तिथि तय करते हैं ।

मनोरंजन के लिए लोक गीत एवं लोकनृत्य सिद्धियों में चित्ताकर्षक एवं अनूठे होते हैं । सिद्धी लोग 'धमाल' व 'गोमा' नृत्य विशेष अवसरों पर ही करते हैं । 'धमाल नृत्य' केवल 'नागरशाह पीर' के उर्स के अवसर पर ही किया जाता है । खुशी के अवसर पर 'सिदधी गोमा' नृत्य का अपना विशेष महत्त्व है । इनके नृत्यों में भाव, मुद्रा, गीतों के बोल, पद संचालन, वाद्य यंत्रों का प्रयोग दर्शकों को बरबस आकर्षित करता है, अफरीकी आदिवासी जंगली जातियों की तरह गहरे काले रंग का चमकता इनका सुगठित शरीर, सिर पर ताज के समान काले घुंघराले बाल, बालों पर मोर पंख या विभिन्न पक्षियों के पंख लगाकर जब ये नृत्य करते हैं, तब श्रोतागण मंत्र-मुग्ध हो जाते हैं । परंपरागत लोक गीतों की धुन पर नृत्य करना सिद्धियों की अपनी ही विशेषता है ।

भारत महोत्सव, अपना उत्सव, शिल्पग्राम, उदयपुर आदि कई समारोहों में ये अपनी कला से प्रभावित कर चुके हैं । पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर द्वारा आयोजित 'मरु से सागर तक' समारोह में जब सिद्धियों ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किये, तब दर्शक भावधारा में बह गये, सिद्धियों की एक प्रमुख विशेषता यह है कि ये नृत्य करते समय जब अपने सिर पर नारियल फोड़ते हैं, तब दर्शक दांतों तले अंगुली दबा लेते हैं । पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र ने अपने कई कार्यक्रमों में सिद्धियों को अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया, जो सराहनीय है । सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े सिद्धियों को समुचित प्रोत्साहन और संरक्षण मिले तो ये अपना स्वतंत्र अस्तित्व कायम कर सकते हैं ।

—६-स्टेशन रोड,
मावली जंक्शन-३१३२०३
उदयपुर (राज.)

गीत

मैं गाती मन के मधुर गीत
बन, वन-कोकिला अनुरागिनी ।

कब कोमल कलिका जाग उठी
मधुरिम समीर के आंचल में ?
कब राग-परागमयी गगरी
छलकी, उन्मीलित शतदल में ?

मैं रंजित नभ को नाप रही,
बन, भ्रमित पक्षिणी एकाकिनी...

जीवन सरिता नीरव तट पर
नि:शब्द व्यथा उर अंक लिये ।
दिग्‌भ्रांत रही शापित बनकर,
प्रिय-रेख का अकणिम रंग लिये ।

मैं गाती गिरिधर नवल गीत
बन चिर मीरा वैरागिनी...

सुधि नूपुर रनके केकी पग,
घन फेरे देख गगन-आंगन ।
टोली बचपन के मीतों की,
झूली अमराई के कानन ।

मैं नंदन-वन में झूल रही,
बन नव किशोरी मधु सावनी...

● कृष्णा अनुराधा

C/o Dr. M. K. Khatri
118, New Lands Road
Lancaster Lai 4JE



उल्फत

अश्क मेरे बहें,
सजल उनके नयन ।
दर्द मेरा बढ़ा,
जवां उनकी गजल ।

ना कहीं आग है,
ना तो चिंगारी है,
तपन है, जलन है,
और धुआं उठता है ।

देखिए !!
किस खूबी से,
मेरी जिंदगी का,
शहर जलता है ।

54 Hill Road
Mitcham CR 4 2HQ
London.

दार्जिलिंग की चाय

बस तड़का लगाने की कमी थी !

● डॉ. रजनी कांत तिवारी एवं डॉ.आशा तिवारी

चाय ! स्वाद के अनुसार चाय में चीनी, दूध और अन्य अवयवों की मात्रा बदलती रहती है । पंजाबी कड़क चाय में ज्यादा दूध, ज्यादा चीनी और ज्यादा पत्ती । दूसरी ओर अंगरेजी मिजाज वाले बिना चीनी या दूध (या बहुत-थोड़ी मात्रा में) की चाय पसंद करते हैं । ट्रक ड्राइवरों की चाय तो मील के हिसाब से होती है । पाइया-दी या अध-पाइया-दी चाय के एक गिलास में पावभर दूध हो या आधा पाव । गुजराती चाय में अगणित मसाले जैसे लौंग, इलायची, काली मिर्च, दालचीनी आदि पड़ती है ।

एक बार ऐसी ही चाय नेहरूजी को गुजरात के मुख्यमंत्री ने पिलायी और पूछा कैसी लगी । पंडितजी का उत्तर था 'चाय तो बहुत बढ़िया बनी बस तड़का लगाने की कमी थी' ।

उत्तर भारत में सरदी के मौसम में तुलसी, अदरख, सोंठ इत्यादि डालकर चाय बनती है । महाराष्ट्र में 'सिंगल, डबल, आर्डिनरी तथा पेशल (स्पेशल) चहा' का प्रावधान है । चाय मलाई मारकर हो तो और भी अच्छा । दक्षिण भारत में चाय फेंटकर लंबाई से नापकर कटोरी के ऊपर गिलास उलटकर परोसी जाती है । सावधानी न बरतें तो सारी 'चाह' फैल जाए । वहां एक बटा दो, दो बटा तीन वाली चाय का गणित तो सभी जानते हैं ।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में खड़े चम्मच की चाय का प्रचलन है । गुजरात में एक किस्सा है कि छै कंजूस एक रेस्तरा में गये, आर्डर दिया, "एक प्याला चाय लाओ, छै तश्तरी लाओ, छै गिलास पानी लाओ, आज का अखबार दो और बाहर खड़ी साइकिलें देखते रहना । कश्मीर में बादाम डालकर नमकीन कहवा या हमेशा खौलती हुई गरम-गरम समोवरवाली चाय । हरिद्वार की जड़ी-बूटीवाली चाय, नींबू की चाय, बर्फ डालकर ठंडी चाय !

इसी प्रकार चाय की पत्ती की भी अनेक किस्में हैं और उनके बड़े-बड़े व्यापारिक दावे भी । असम की, दार्जिलिंग की, देहरादून की और कांगड़ा की । पर असली चाय पीने के शौकीनों को तो हमेशा दार्जिलिंग की चाय की ही तलब रहती है । आखिर क्या है दार्जिलिंग की चाय में ?

दार्जिलिंग की चाय

दार्जिलिंग उत्तरी बंगाल का एक जनपद है जिसमें मुख्यतः पूर्वी क्षेत्र सम्मिलित हैं ।

चाय आज के तनावपूर्ण जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग बन चुकी है । अमीर हो या गरीब, सरदी हो या गरमी, सुबह हो या शाम, लोगों को चाय की आवश्यकता होती है । इसकी विशिष्ट संस्कृति ने निश्चित रूप से वर्तमान युग में एक नयी हैसियत पैदा कर दी है । सिल्वर पॉट हों या चायना के टी सेट, मिट्टी के कुल्हड़ हों या कागज/प्लास्टिक के प्याले, चाय अपने विभिन्न स्वादों के साथ लोगों की आदतों तथा नशे का बहाना बन चुकी है ।

भारतवर्ष के अन्य पर्वतीय स्थलों की भांति दार्जिलिंग को भी अंगरेजों ने ही विकसित किया । परंतु यहां ब्रिटिश साम्राज्य के हाथ थोड़ी देर से पहुंचे । मालदा जनपद के तत्कालीन व्यापार विभाग के रेजीडेंट, जे. डब्ल्यू. ग्रांट तथा कैप्टन लॉयड को फरवरी १८२९ में सिक्किम-नेपाल सीमा-विवाद सुलझाने के लिए नियुक्त किया गया । उनकी इस यात्रा का मार्ग दार्जिलिंग होकर था जो उस समय केवल जंगलों से भरी पहाड़ी मात्र थी ।

इस यात्रा के दौरान वे हिमाच्छादित कंचनजंघा और साथ की पर्वत श्रृंखला देखकर मंत्रमुग्ध हो गये । संपूर्ण रास्ते वे प्रकृति के इस मनोरम सौंदर्य से इतने आकर्षित हुए कि जून १८२९ में भारत के तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बेंटिक को भेजी गयी रिपोर्ट में लिखा कि यह क्षेत्र इतना सुंदर है कि इसको ब्रिटिश अधिकार में लेकर एक सेनीटोरियम बनाया जाए । रिपोर्ट में यह भी था कि यह क्षेत्र सामरिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह नेपाल तथा सिक्किम जाने के मार्ग पर स्थित है ।

लॉर्ड बेंटिक ने इस रिपोर्ट पर तत्कालीन उपप्रमुख सर्वेक्षक कैप्टेन हरबर्ट को ग्रांट के साथ इस क्षेत्र के सर्वेक्षण के लिए भेज दिया । इन्होंने भी सेनीटोरियम और साथ ही एक यूरोपीय रेजीमेंट के लिए स्थायी छावनी बनाने की सिफारिश की । गवर्नर जनरल ने इस रिपोर्ट को स्वीकृति दी तथा उनके प्रयास से सिक्किम के राजा ने, जिनका इस क्षेत्र पर आधिपत्य था, १ फरवरी १९८५ को एक लिखित समझौता के तहत, बिना किसी शर्त के दार्जिलिंग का पर्वतीय क्षेत्र ईस्ट इंडिया कंपनी को भेंट स्वरूप दे दिया । सन् १९४१ में कंपनी सरकार ने सिक्किम राजा को हरजाने के रूप में ३००० रुपये का भत्ता स्वीकार किया

इस पर्वतीय क्षेत्र पर संपूर्ण अधिकार प्राप्त करने के पश्चात सन् १८३७ में लॉयड को दार्जिलिंग का स्थानीय प्रतिनिधि नियुक्त किया गया । उन्होंने इस क्षेत्र को, जो कि उस समय एक निर्जन पहाड़ी थी, आबाद करने के उद्देश्य से लोगों को प्रेरित कर यहां जमीनें उपलब्ध करवायीं ।

सन् १८२४ में ही लॉर्ड बेंटिक ने भारतवर्ष में चाय पीने की प्रथा को प्रचलित करने की

रिकल्पना की । इस उद्देश्य से असम, ढ़वाल तथा कुमाऊं क्षेत्रों में तत्कालीन सरकार ने प्रायौगिक रूप से चाय तथा काफी के पौधे लगवाने का अभियान आरंभ किया । सन् १८३९ में असम टी कंपनी की स्थापना हुई । चीन से अच्छी नस्ल के पौधे और बीज आयात किये गये तथा साथ ही भारतीय मजदूरों को चाय बागान लगाने तथा चाय उत्पादन संबंधी तकनीकी प्रशिक्षण के लिए चीनी विशेषज्ञों को भी बुलाया गया । यूं तो सन् १८२१ में मेजर ब्रूस ने तथा सन् १८२४ में स्कॉट ने असम के जंगलों में चाय के पौधे देखे थे पर अन्य लोगों को इसका किंचित मात्र भी ज्ञान नहीं था ।

डॉ. कैंपबेल के निर्देश पर सन् १८४१ में चीन की चाय के कुछ बीज कुमाऊं से दार्जिलिंग लाये गये और प्रायौगिक तौर पर उनसे पौधे उगाये गये । उनका यह प्रयोग शत प्रतिशत सफल हुआ । इस विचार, कि यहां की भूमि तथा जलवायु चाय के पौधों के लिए हर दृष्टि से उपयुक्त है, की पुष्टि हुई । इस परीक्षण के आधार पर औरों ने भी दार्जिलिंग में चाय के पौधे लगाए । इनमें चीनी तथा असम की दोनों किस्में थीं । सन् १८५६ तक चाय उत्पादन के उद्योग का बड़े पैमाने पर विकास होने लगा ।

ब्रिटिश सरकार ने भी इस उद्योग को बढ़ावा देने में अपनी रुचि दिखायी । चाय की अच्छी नस्ल के बीज उपलब्ध कराये । बढ़ती हुई चाय की उत्पादकता तथा खपत को देखते हुए इसी वर्ष खरसांग (कुर्सियांग) में आलूबारी चाय बागान की बाकायदा स्थापना की गयी । सन् १८५९ में घूतरिया चाय बागान बना । सन् १८६० तथा १८६४ के बीच दार्जिलिंग टी कंपनी ने जिंग, अंबूतिया, टकडाह तथा फूबसरिंग में चार चाय बागान लगवाये । ऐसे तत्कालीन चाय बागानों में मकाईबारी, पंडम तथा स्टीनथल वर्तमान में भी प्रसिद्ध हैं ।

दार्जिलिंग के अतिरिक्त भारतवर्ष में केवल कांगड़ा ही एक ऐसा स्थान पाया गया जिसकी जलवायु चाय उत्पादन के लिए उपयुक्त थी । वहां भी अच्छी किस्म की चाय पैदा होती थी पर इस शताब्दी के आरंभ में आये एक बड़े भूकंप के कारण वहां के चाय बागान नष्ट हो गये और फिर पनप नहीं पाये ।

चाय के पौधों की किस्में

भारत में तीन प्रकार के चाय के पौधे प्रचलित हैं— चाइनरी (मूलतः चीन से), असमिया (मूलतः असम से) तथा कंबोड (मूलतः कंबोडिया से) । दार्जिलिंग में अधिकतर चाइनरी चाय का ही उत्पादन किया जाता है । इसके बाद असमिया चाय का नंबर आता है । कंबोड नस्ल की चाय का उत्पादन बहुत कम है । चाइनरी चाय के बीज अब उपलब्ध नहीं है अतः उसके पौधों की कलम से ही नये पौधे बनाये गये हैं जिनकी आर्थिक उपयोगिता मात्र ६०-७० वर्ष होती है । इसके प्रारंभिक ८ वर्ष तो बढ़ने में लगते हैं तथा तब तक इनसे पत्तियां नहीं तोड़ी जातीं ।

दार्जिलिंग के बागानों में प्रायः पुराने पौधे ही हैं । गत ५० वर्षों में नये बाग नहीं लगे । इसके कई कारण हैं । एक तो दार्जिलिंग के चाय बागानों पर विशेष वैज्ञानिक अनुसंधान नहीं हुआ, दूसरे पुराने पौधों से बीज नहीं बनाये जा सकते और यदि बनाए भी जाएं आवश्यक नहीं कि नये पौधों की विशिष्टता बनी रहे ।

चाय की श्रेणियां

दार्जिलिंग की चाय की विशेष स्तरीय गुणवत्ता बनाये रखने के लिए सदैव नयी कोंपलों में से ऊपर की दो पत्तियां और एक कली' ही तोड़ी जाती हैं । सामान्य बागानों में ऊपर की तीन-चार पत्तियां भी तोड़ ली जाती हैं । पत्तियों को तोड़ने की समयावधि भी निश्चित है । पत्ती तोड़ने के मौसम पर चाय की गुणवत्ता निर्भर है । मार्च-अप्रैल में तोड़ी गयी पत्तियों से बनी चाय को फर्स्ट-फ़्लश की चाय कहते हैं यह उत्कृष्ट चाय मानी जाती है । सेकेंड फ़्लश १५ मई से ३० जून तक होता है जिनसे दार्जिलिंग की सर्वोत्तम चाय का उत्पादन होता है । जुलाई से सितम्बर के बीच तोड़ी गयी चाय की गुणवत्ता सबसे कम होती है पर अक्तूबर-नवम्बर में तोड़ी गयी पत्तियों (ऑटम फ़्लश) से बनी चाय मध्यम श्रेणी की मानी जाती है । दिसम्बर से फरवरी तक चाय के पौधे गौड़ रहते हैं, इनकी पत्तियों का उत्पादन थम जाता है,

उत्कृष्ट एवं स्तरीय चाय बनाने के लिए आवश्यक है कि पूरे वर्ष में तापमान २०° से ३०° सेल्सियस रहे, दिन लंबे हों और वातावरण में नमी रहे । दार्जिलिंग में यह सभी विशेषताएं उपस्थित है और इसी कारण से यहां की चाय सर्वोत्तम मानी जाती है ।

तैयार चाय की पत्तियों का वर्गीकरण का एक और आधार उनकी लंबाई है । चाय की पत्तियों को पौधों से तोड़कर उनको थोड़ा सुखाकर रोल करते हैं और पुनः सुखाते हैं । चूंकि यह सारा कार्य मशीनों से होता है, वे टूट जाती हैं । १/४ इंच से १/२ इंच लंबाई की चाय को 'लीफ-टी' कहते हैं जो कि सबसे महंगी बिकती हैं । १/८ इंच लंबाईवाली पत्ती को 'ब्रोकेन-टी', १/८ इंच से १/१६ इंच लंबाई वाली चाय को 'फैनिंग-टी' तथा उससे कम वाली को 'डस्ट-टी' कहते हैं । इन सभी चाय को वर्गीकृत करके डिब्बों में बंद करके कलकत्ता में नीलाम किया जाता है । इनका दाम भी इनके वर्ग पर निर्भर करता है । इनका दाम कुछ सौ से कुछ हजार रुपये किलो तक होता है । दार्जिलिंग की एक 'गुडरिक' चाय कंपनी जो कि 'कैसेलटन' के नाम से चाय बनाती है का दावा है कि अभी हाल में कलकत्ता के नीलाम में उनकी चाय १३,००१ रुपये प्रतिकिलो बिकी जिससे उनका अपना पुराना अंतरराष्ट्रीय कीर्तिमान टूट गया ।

चाय का रसायनिक विश्लेषण

चाय की फुनगी से तोड़ी गयी दो पत्तियां और एक कली' (जिसे ढाई पत्तियां भी कहते हैं) सर्वोत्तम चाय उत्पादन के लिए उपयुक्त हैं । इनमें तीन चौथाई नमी होती है और एक चौथाई ठोस पदार्थ । इस ठोस पदार्थ में केवल आधा भाग पानी में घुलनशील है जिसमें विशेष रसायनिक तत्त्व होते हैं । घुलनशील भाग में 'सेल्युलोज', 'प्रोटीन', 'वसा' तथा 'फाइबर' होता है । घुलनशील भाग में कैफीन, टैनीन, थियारुबीन, थियाफ़्लेबीन, शर्करा, एंजाइम तथा लगभग २० प्रकार के एमीनो एसिड होते हैं । 'थियारुबिन' की मात्रा पर चाय का रंग निर्भर करता है तथा उसकी सुगंध का आधार है 'थियाफ़्लेबिन' ।

— आर.-११ एन्ड्रूजगंग एक्सटेंशन
जोसिप ब्रॉज टीटो मार्ग
नयी दिल्ली-११००४९

बड़कुल की जलेबियां!

• श्री सुरेश सरल

बुंदेलखंड के प्रसिद्ध शासक महाराज छत्रसाल के राजदरबार में दो भाईयों ने बड़ी प्रसिद्धि पायी थी । उनमें बड़े श्री मंसूराम जी राजसत्ता के प्रमुख खजांची थे, जो अपनी ईमानदारी के लिए जाने जाते थे और छोटे भाई सुमंसरामजी सेनापति थे जो शौर्य के लिए अनेक राजों-रजवाड़ों के मध्य चर्चा में बने रहते थे ।

एक की सच्चाई और दूसरे की बहादुरी ने महाराज का दिल जीत लिया । अतः उन्होंने उन्हें राजकीय सम्मान देते हुए उनकी वंश-परंपरा को आगे भी गुणात्मक प्रगति करते रहने के लिए उन्हें 'बड़कुल' शब्द से सम्मानित किया था । यह आख्यान इतिहास हो या किंवदंती किंतु उन दो भाईयों के वंशज आज भी मध्य प्रदेश के अनेक शहरों ग्रामों में अवस्थित हैं, जो कहीं मजदूर हैं, तो कहीं उद्योगपति, कहीं सर्विसमैन तो कहीं व्यापारी । उनमें से अनेक में आज भी सत्य एवं साहस के बीजाणु जीवित हैं । अनेकों में से एक श्री मोतीलाल बड़कुल का व्यक्तित्व वैशिष्ट्य एवं वैचित्र्य का धारक बन चुका है । आप मानेंगे इस कथन को कि वे सिद्धहस्त कलाकार नहीं हैं, पर सदा ही कलाकारों के संरक्षक रहे हैं । वे सधे हुए साहित्यकार नहीं हैं, पर हर वरिष्ठ-कनिष्ठ साहित्यकार के उपासक हैं । पत्रकारिता का अंश मात्र उनमें नहीं है, पर विगत और वर्तमान के अनेक वरिष्ठ-पत्रकार उनका नाम आदर से लेते मिलते हैं । वे नेता नहीं हैं, पर नेताओं को समय पर तौलने की तुला रहे हैं । वे संत नहीं हैं, परंतु पल-पल संत समागम के लिए समर्पित मिले हैं । वे पूर्णरूपेण धर्मज्ञ भले ही न हों परंतु तन-मन-धन से धर्मात्मा हैं । गो यह कि वे 'कुछ' नहीं हैं, पर 'बहुत कुछ' हैं ।

समाज सेवा का भाव

१९मई, १९१६ में श्री हरप्रसाद बड़कुल के घर उनका जन्म हुआ था । उनके पिता श्री हरप्रसाद बड़कुल ने वर्ष १९०० में जबलपुर के प्रसिद्ध मुहल्ला लार्डगंज (अब जवाहरगंज) में छोटी-सी दुकान डाली थी । वे खोआ में तेखुर का शुद्ध साफ पाउडर मिलाकर देशी घी के संयोग से खोआ की जलेवी बनाने में महारत पा गये थे और उनकी जलेवियां चल निकली थीं । स्वाद ऐसा निराला-रसनाप्रिय बना कि वह ग्राहकों के दिल-दिमाग में छाता चला गया । हर पीढ़ी का उपभोक्ता उस स्वाद से संबंध जोड़ता चला गया ।

मोतीलाल बड़कुल ने सत्रह वर्ष की उम्र में जब पहली बार तराजू उठाकर जलेबियां तौलीं तो उस समय उनकी दर मात्र छह आना प्रति सेर (चालीस पैसा किलो) थी । तब घी का भाव आठ आने प्रति सेर था, खोआ का चार आना

एक-की सच्चाई और दूसरे की बहादुरी ने महाराज का दिल जीत लिया । अतः उन्होंने उन्हें राजकीय सम्मान देते हुए उनकी वंश-परंपरा को आगे भी गुणात्मक प्रगति करते रहने के लिए उन्हें 'बड़कुल' शब्द से सम्मानित किया था ।

(२५ पैसे) प्रति सेर और तेखुर का दो आना सेर । स्वतः मोतीलालजी उस समय यदि अपनी दैनिक मजदूरी जोड़ते तो वह दो आने मात्र थी । आज उनकी जलेवी पचासी रुपये किलो बिक रही है ।

मोतीलाल मिठाई के पहले मजदूर हैं जो मजदूरी से बढ़े और बढ़ते-बढ़ते जीवन के अस्सी वसंत देख लेने के बाद भी मिठाई के निकट हैं । पहले मिठाई उनके साथ थी, अब वे मिठाई के साथ हैं । सच तो यह है कि अब वे मिठाई के बादशाह हैं । मिठाई और मिठास युक्त मानवता के सर्जक ।

हलवाइयों का गौरव

श्रम और सादगी से प्रारंभ की गई यात्रा आज यश और धनधान्य के चरम-विकास तक पहुंच गयी है । 'बड़कुल हलवाई' जैसे साधारण शब्द को अपने चोखे धंधे के कारण वे प्रतिष्ठा की उच्च सीमा तक ले गये हैं । हलवाई का धंधा भले ही साधारण माना जाता रहा हो पर 'बड़कुल हलवाई' ने तो समस्त हलवाईयों का गौरव बढ़ा दिया । उनके हाथ से बननेवाली खोआ की जलेबी का नाम इतना प्रसिद्ध हो गया कि वह बाद में 'बड़कुल की जलेबी' कहलाने लगी । साधारण धंधे से उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त करनेवाले श्री बड़कुल ने सिद्ध कर दिया कि हलवाई का धंधा भी यदि नेक-नीयत से किया जाए तो वह विशिष्टता प्राप्त कर लेता है ।

जबलपुर के नागरिकों के रिश्तेदार देश के अनेक शहरों तक फैले हैं । इन संबंधों की मधुरता में बड़कुल जी अक्सर 'बीच में' मिलते हैं, जब जबलपुर से कोई 'पिता' दूरस्थ नगर में बसी हुई 'बेटी' के घर जाता है तो साथ में बड़कुल की जलेबी ले जाना नहीं भूलता । तब लगा—बड़कुल जी के माध्यम से यहां का प्रेम, वात्सल्य और माधुर्य देश के अनेक-अनेक शहरों तक फूलों की सुगंध के मानिंद जाता रहा है । कहें बड़कुल जी अन्य कार्यों के साथ-साथ दो परिवारों के बीच उच्च संस्कृति और मधुर-व्यवहार का ताना-बाना भी बांधते रहे हैं ।

लगभग बीस वर्षों से जबलपुर के बड़े फुहारे के पास महावीर-जयंती पर विराट कवि-सम्मेलन का प्रचलन बना हुआ है । देश के किसी भी भाग से कोई भी कवि आये हों, वे बड़कुल जी को कविता की तरह स्मृति में रखकर ले गये हैं । कवि की कविता और बड़कुल की जलेबी हर वर्ष आमने-सामने जो हुई हैं—आदर और स्नेह से । उनका व्यवसाय प्रारंभ हुए नब्बे वर्ष हो गये हैं, जो उनके पिता और चाचा ने प्रारंभ किया था । देशी घी का सच्चा मूल्यांकन यहीं से प्रारंभ हुआ जबलपुर के मिष्ठान व्यवसाय में । यही कारण था कि जैन

मंदिर लार्डगंज के लिए उपयोग में आनेवाला घी इन्हीं के यहां से लिया जाता था, बाद में श्री मोतीलाल ने घोषणा कर दी कि उक्त मंदिर को उनका प्रतिष्ठान जीवन भर निःशुल्क घी प्रदान करता रहेगा, क्रम आज भी निरंतर है । घी देनेवाले बड़कुल ने बाद में अनेक सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में आर्थिक सहयोग भी दिया । धर्म का ध्यान जागा तो मंदिरजी में भगवान बाहुबलीजी की पांच फुट ऊंची भव्य प्रतिमा की स्थापना भी करायी । बारह वर्ष सपत्नीक नित्य मंदिर पहुंचकर घंटों पूजा-अर्चना की । उनका यह धार्मिक-आचरण मात्र इस पीढ़ी का नहीं है, आज से लगभग १४० वर्ष पूर्व, सन् १८५६ में, उनके पूर्वज स्व. ठाकुरदास बड़कुल ने हटा में मंदिर निर्माण कराया था और उसमें तीर्थंकर पार्श्वनाथ एवं नेमिनाथ की भव्य प्रतिमाएं स्थापित करायी थीं, जो आज भी दर्शनीय हैं ।

विविधता भरा जीवन

विविधताओं से भरे हुए उनके जीवन के प्रसंग इस आलेख को लंबा कर देंगे अतः कलम की सीमा निर्धारित करता हुआ कहता हूं कि श्री मोतीलाल बड़कुल बहुत बड़े व्यक्तित्व के धारक नहीं हैं, पर वे कविवर रहीम के एक प्रिय पात्र अवश्य हैं, जिसका नाम है 'लघु' । हां—वही 'लघु' जिसके लिए रहीम ने लिखा है—

''रहिमन देख बड़ेन को,
'लघु' न दीजिये डारि ।
जहां काम आवै सुई,
कहा करै तरवारि ।

मिष्ठान के धंधे को गरिमा प्रदान करने में सफल श्री बड़कुल, जबलपुर के श्री श्यामसुंदर



श्री मोतीलाल बड़कुल

बड़ेरिया की श्रेणी के नागरिक हैं जो अपने सही कार्यों के कारण जबलपुर-मिष्ठान विक्रेता संघ के संचालक रहे हैं । उनका उत्साह तो देखिए कि जब स्वस्थ शरीर की उम्र थी तो अपने मित्रों श्री फूलचंद जैन, श्री श्यामसुंदर बड़ेरिया, श्री नाथूराम जैन, श्री दुक्खीलाल गुप्ता, श्री प्रताप चंद नीखरा, श्री सुगनामल एवं श्री महादेव प्रसाद वर्मा के साथ दो बार मिष्ठान्नों की प्रदर्शनी का सुंदर आयोजन किया और तत्कालीन राज्यपाल महोदय से उद्घाटन कराया । मात्र प्रदर्शनी या उद्घाटन उनका लक्ष्य नहीं था, उनने अपने संगठन के माध्यम से एंबुलेंस-कार स्थानीय अस्पताल को भेंट की थी । बाद में तो श्री बड़कुल प्रांतीय मिष्ठान विक्रेता संघ के अध्यक्ष बने और फिर आल इंडिया मिष्ठान विक्रेता संघ के संयुक्त सचिव । बड़कुल की जलेबियां देशभर में अलग पहचान बनाये हैं ।

—२९३, गढ़ाफाटक,
जबलपुर

युवावस्था में ही उसे वैधव्य का दुःख झेलना पड़ा । और इस पर पांच बच्चों के भरण-पोषण का भार ! अभावों से भरी जिंदगी ! रोजमर्रा के छोटे-छोटे खर्चों के लिए दिन-रात की जद्दो-जहद !

अभावों से भरी जिंदगी में सुख के, संतोष के यदि कोई क्षण थे, तो बस वही, जब वह अपने बच्चों को, उनके दोस्तों को कहानी सुनाने बैठ जाया करती थी । जितनी तन्मयता से वह कहानी सुनाती उतना ही दत्त-चित्त होकर बच्चे स्वयं कहानियां टाइप कीं, उन्हें पत्रिकाओं में भेजा । वे छपीं भी, प्रशंसित भी हुईं । अंततः एक रेडियो कार्यक्रम के लिए उसे लेखन का भी कार्य मिल गया ।

एक अनुबंध

और, फिर एक दिन उससे अमरीका के प्रमुख प्रकाशकों में से एक साइमन एंड शूस्टर ने एक अनुबंध किया । और इस अनुबंध की राशि थी—

एक करोड़ डॉलर !

वह बचपन में कविताएं एक उपन्यास के लिए

भी उसकी कहानियों को सुनते । उनमें रहस्य होता, रोमांच होता और अंत में होती यही सीख कि 'अपराध' का 'पुरस्कार' जरूर मिलता है— और वह 'पुरस्कार' है दंड !'

नया रास्ता

धीरे-धीरे उसके श्रोताओं की भीड़ बढ़ने लगी ! और अपने नन्हें-नन्हें श्रोताओं के जमघट को देखकर उसने सोचा, क्यों न वह इन कहानियों को लिखे और उन्हें प्रदर्शित कराये । शायद अतिरिक्त आय का एक नया रास्ता खुल जाए !

और उसने यही किया । टाइपराइटर पर

अमरीका में इतनी बड़ी राशि का, किसी लेखक और प्रकाशक के बीच यह पहला अनुबंध था ! एक इतिहास की रचना करनेवाली इस लेखिका का नाम है— मेरी हिगिन्स क्लार्क ! जॉन ले कारे और रॉबर्ट लुडलुम अमरीका के ऐसे लेखक हैं— जिन्हें प्रति कृति तीस लाख डॉलर मिलते हैं ।

रॉबर्ट लुडलुम रहस्य-रोमांचपूर्ण कृतियां लिखने में सिद्ध हस्त हैं । भारत में भी उनकी कृतियां बेहद चाव से पढ़ी जाती हैं । 'जेमिनी कंटेंडर', 'चांसलर मैन्युस्क्रिप्ट', 'द पारसिफल मोज़ाइक' लुडलुम के ऐसे रहस्य-रोमांचपूर्ण

उपन्यास हैं कि पाठक उन्हें बिना खतम किये छोड़ता नहीं ।

असफलताओं से अप्रभावित

अब मेरी हिगिन्स क्लार्क की गणना भी इन्हीं सिद्ध हस्त लेखकों में होने लगी है ।

लेकिन इसके लिए मेरी को शब्द-साधना करनी पड़ी है, संघर्ष करना पड़ा है और निराशाओं, हताशाओं और असफलताओं से बिना प्रभावित हुए निरंतर लेखन में जुटना पड़ा है ।

जैसा कि आम तौर पर होता है, कोई बड़ा प्रकाशक उसे छापने के लिए तैयार नहीं हुआ । एक के बाद एक 'डबल डे' और 'हार्पर'-जैसे प्रकाशक संस्थानों ने उसे छापने से इनकार कर दिया । कारण— महिला-पाठकों शायद उसके रहस्य-रोमांच से बेहद्र भयभीत हो जातीं ।

अंत में 'साइमन एंड शूस्टर' नामक प्रकाशन संस्थान ने इस उपन्यास को छापना स्वीकार किया ।

और पांच प्रकाशकों से अस्वीकृत यह

बेचा करती थी आज एक करोड़ डॉलर !

मेरी रहस्य-रोमांच से भरी औपन्यासिक कृतियों का सृजन करती हैं । पर उनका पहला उपन्यास रहस्य-रोमांच से शून्य था । वह जॉर्ज वाशिंगटन की जीवनी के कुछ प्रसंगों पर आधारित था । शीर्षक था— 'एस्पायर टू द् हेवन' । यद्यपि इस उपन्यास ने कोई खास सफलता नहीं पायी, पर उसने मेरी को अवश्य यह प्रेरणा दी कि अब वह केवल लिखे और लिखे !

तेरह वर्ष पूर्व मेरी ने अपना पहला रहस्य-रोमांचपूर्ण उपन्यास लिखा— 'व्हेयर आर माई चिल्ड्रन'

उपन्यास छपते ही हाथों-हाथ बिक गया और उसके साथ ही अमरीका में एक 'अगाथा-क्रिस्टी' का जन्म हुआ । बाद में मेरी के इसी उपन्यास पर एक फिल्म भी बनी । इसके बाद मेरी ने और भी अनेक लोकप्रिय उपन्यास लिखे । बारह से अधिक भाषाओं में मेरी की पुस्तकों की प्रतियों की संख्या है तीन करोड़ !

कवयित्री बनने का सपना

मेरी ने एक साक्षात्कार में बताया कि वह शुरू से ही एक लेखिका बनना चाहती थी ।

अभावों से भरी जिंदगी में सुख के, संतोष के यदि कोई क्षण थे, तो बस यही, जब वह अपने बच्चों को, उनके दोस्तों को कहानी सुनाने बैठ जाया करती थी । जितनी तन्मयता से वह कहानी सुनाती उतना ही दत्त-चित्त होकर बच्चे भी उसकी कहानियों को सुनते । उनमें रहस्य होता, रोमांच होता और अंत में होती यही सीख कि 'अपराध' का 'पुरस्कार' जरूर मिलता है— और वह 'पुरस्कार' है दंड !'

स्कूल में मैं अपने सहपाठियों को कविताएं बेचा करती थी ! विवाह के बाद मैंने लेखन का प्रशिक्षण लिया । छह वर्षों के परिश्रम और चालीस अस्वीकृत पत्रों के बाद सन् १९५६ में यानी चालीस वर्ष पूर्व उसकी एक कहानी एक सौ डॉलर में बिकी ।

लेखन के प्रति समर्पित

मेरी अपने लेखन के प्रति पूरी तरह समर्पित हैं । एक अनुभवी रिपोर्टर की तरह वह किसी घटना के तह तक में जाना चाहती है । मेरी प्रतिमास अमरीका और यूरोप की यात्रा पर निकलती है— अपने किसी उपन्यास की पृष्ठभूमि की तलाश में । पृष्ठभूमि के स्थल को स्वयं देखने-परखने और अनुभव करने के लिए ।

मेरी अपनी कृतियों को बार-बार सुधारने में, उन्हें फिर से लिखने में कोई संकोच या कठिनाई नहीं अनुभव करतीं । उनका एक लोकप्रिय उपन्यास है— 'वीप नो मोर, माई लेडी !' मेरी ने दो वर्षों के भीतर चार बार इस उपन्यास को प्रायः दुबारा लिखा ।

थोपा गया अंत

मेरी का कहना है— किसी अच्छी पुस्तक के थोपे गये अंत को पढ़ने से बदतर और कोई बात नहीं । किसी भी उपन्यास का अंत तर्क सम्मत होना चाहिए ।

मेरी अपराध के लिए दंड को अनिवार्य मानती हैं । यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि लोग चाहते हैं कि अपराधी को अवश्य दंड मिले । जो अन्याय हुआ है, उसका प्रतिकार हो ।

मेरी का कहना है—

'अपराध दंड से ही पुरस्कृत होता है ।'

आज रहस्य-रोमांच से भरी कृतियों के रचनाकारों में मेरी हिगिन्स क्लार्क अग्रणी हैं । लेकिन सफलता के शिखर पर पहुंचने के लिए जो संघर्ष उन्होंने किया है, लेखन के प्रति जिस अटूट निष्ठा को अपनाया है, वह नये लेखकों के लिए प्रेरणास्पद है ।

प्रस्तुति : ग्रह्मशु

पॉल ब्रंटन नामक एक अंगरेज जिज्ञासु लेखक-चिंतक सत्य खोजने भारत आया था — उस 'गुप्त भारत की खोज में', जो चमत्कार करनेवाले सिद्ध-साधकों, तांत्रिकों, योगियों, ऐंद्रजालिक मायावियों और आध्यात्मिक शक्ति-संपन्न साधु-संतों का देश है। जगन्नाथ पुरी में उसे एक ऐसा फकीर मिला, जिसके चमत्कारों की गुत्थी वह कभी नहीं सुलझा सका और उसी के शब्दों में 'उस फकीर के रहस्य मेरे लिए एक स्थायी समस्या बनकर रह गये।'

वह चमत्कारी फकीर

■ पॉल ब्रंटन

जगन्नाथ पुरी के समुद्र की मृदुल हिलकोरियों का मधुर कलकल नाद मुझे बहुत प्यारा लगा। एक दिन समुद्र-तट पर मैं यों ही घूम रहा था। कुछ देर घूमकर शहर की ओर चल पड़ा। रास्ते में अनजाने ही एक ऐसी बात मुझे दिखायी दी, जिसका समाधान मुझे आज तक नहीं सूझ पड़ा है। यह मेरे लिए एक स्थायी समस्या बनकर रह गयी है।

मैंने देखा कि रास्ते के एक ओर भीड़ के बीच एक मदारी-सा आदमी खूब भड़कीली वेशभूषा में मजमा लगाये हुए खड़ा है। उसके साफे और पायजामे से वह मुझे मुसलमान लगता था। हिंदुओं के पवित्र नगर में एक मुसलमान ? और उसका भी ऐसा रौब ? उसे देखकर मेरे हौंसले और मेरी उत्सुकता न जाने क्यों लहर मारने लगी। उसके पास एक पालतू बंदर था, जिसे वह नचा रहा था।

मुझे देखते ही उसने अपने बंदर से कुछ कहा, तो बंदर भीड़ में से उछलता-कूदता मेरे पास आया और एक गमगीन आवाज बनाकर उसने मुझे सलाम किया। उसने अपनी टोपी उतारी और इस ढंग से कि मानो मुझसे भीख मांगता हो, टोपी मेरी ओर बढ़ा दी। मैंने उसमें एक चवन्नी फेंक दी। बंदर उसे उठाकर अपने मालिक के पास लौट गया।

उसने फिर बंदर का एक अजीब-सा नाच दिखाया। जब नाच खतम हो गया तो उसने अपने युवा अनुचर मुसलमान भाई से उर्दू में कुछ कहा और अनुचर ने मेरे निकट आकर मुझसे प्रार्थना की कि मैं उसके साथ पीछे के तंबू में चलूं क्योंकि उसका उस्ताद मुझे कुछ खास बातें दिखाना चाहता है।

मैं तैयार हो गया तो वह तंबू के बाहर भीड़ को रोकने के लिए खड़ा हो गया और मैं उसके उस्ताद के साथ तंबू में दाखिल हुआ। भीतर प्रवेश करते ही मैंने देखा कि तंबू में कोई छत नहीं थी। चारों ओर चार खंभे गाड़ दिये थे और उनके चारों ओर एक मोटा परदा बांध दिया गया

था । उस घेरे के बीचोंबीच एक सादी और हलकी मेज रखी थी ।

उसने एक कपड़े में लिपटे दो-दो अंगुल के कई खिलौने निकाले । उन खिलौनों के सिर रंग-बिरंगे मोम के बने थे और उनके पैर कुछ कड़े तिनकों के । पैरों के नीचे लोहे के चपटे टुकड़े ठुके हुए थे । उसने सभी खिलौनों को मेज पर खड़ा किया और स्वयं मेज से एक गज की दूरी पर खड़ा हो गया । वह खिलौनों को उर्दू में हुक्म देने लगा । एक या दो मिनट में सब के सब खिलौने मेज पर उछलते-कूदते हुए नाचने लगे ।

उसके हाथ में छोटी-सी एक छड़ी थी । उस छड़ी की गति के अनुसार वे खिलौने नाच रहे थे । कोई भी उनमें से भूल कर भी नीचे नहीं गिरा । शाम के चार बजे की खुली रोशनी में मैं यह खेल देख रहा था, इसलिए इसमें चालाकी की तो कोई गुंजाइश नहीं थी फिर भी मुझे लगा कि हो न हो इसमें कोई चालाकी है । अतः मैं मेज के बिलकुल निकट गया और गौर से निरीक्षण-परीक्षण करने लगा । अपने हाथ से मेज के ऊपर और नीचे भी टटोलकर देखा कि कहीं कोई पतला धागा या बाल तो नहीं बंधा है, लेकिन ऐसा कहीं कुछ नहीं था ।

अब उसने मुझे इशारे से बताया कि मैं मेज के किसी भी भाग की ओर अपनी अंगुली से इशारा करूं । मैंने वैसा ही किया तो सभी खिलौने ठीक उधर ही आ जाते, जिधर मैं अंगुली से इशारा करता था । जिधर मैं अंगुली दिखाता वे उधर ही आकर नाचने लगते ।

फिर उसने अपनी जेब से एक रुपये का सिक्का निकालकर मुझे इशारे से बताया कि मैं अपनी जेब से एक रुपये का सिक्का निकालकर मेज पर रख दूं । मैंने एक रुपये का सिक्का मेज पर रख दिया । वह सिक्का भी नाचने लगा और नाचते-नाचते उसकी ओर चलने लगा । जब वह उसकी ओर मेज की छोर पर पहुंचा तो नीचे गिरा और लुढ़कता हुआ उसके पैरों के पास जाकर रुक गया । उसने उस सिक्के को उठा लिया और अपनी जेब में रखते हुए अदब के साथ मुझे सलाम किया ।

योगी ब्रह्म की अंगूठी

मैं नहीं कह सकता कि मैं किसी विचित्र इंद्रजाल का तमाशा देख रहा था या सच्चे योग की एक विभूति का प्रदर्शन । मेरी शंकाएं मेरे



चेहरे पर उभर आयी थीं, जिसे देख उसने अपने युवा साथी को बुलाया । साथी ने मुझसे पूछा कि क्या मैं और भी देखना चाहता हूं । मेरे हां कहने पर उसने एक बाजा उस्ताद के हाथ में दिया और मुझसे कहा कि मैं अपनी अंगूठी उतारकर मेज पर रख दूं । मैंने अंगूठी उतारकर मेज पर रख दी । यह अंगूठी मुझे अडयार नदी के तट पर रहनेवाले एक सिद्ध योगी ब्रह्म ने दी थी । मैं मेज पर रखी अंगूठी की हरी मणि को ताक रहा था । उस्ताद कुछ पीछे हटा और अंगूठी को हुक्म देने लगा । उसकी हर आज्ञा का पालन करती हुई अंगूठी ऊपर की ओर उछलती और फिर गिर जाती । वह अपने बायें

हाथ में बाजा लेकर दाहिने हाथ से अपनी आज्ञाओं के साथ इशारे करने लगा तो मेरी चकित दृष्टि के सामने मेरी अंगूठी बाजे के ताल के अनुरूप ही नाचने लगी, जबकि न तो वह अंगूठी के पास गया और न उसने अंगूठी को छुआ।

इस अजीब तमाशे का क्या अर्थ है, यह मेरी समझ में नहीं आया। एक जड़-अचेतन वस्तु से क्यों कर शाब्दिक आज्ञाओं का पालन करवाया जा सकता है ?

उसने मेरी अंगूठी मुझे लौटा दी तो मैंने



अंगूठी की गौर से परीक्षा की। किंतु, उस पर किसी प्रकार का कोई चिह्न नजर नहीं आया।

फिर उसने रुई में लिपटे जंग लगे लोहे के टुकड़े को निकाला जो चपटा था, ढाई इंच लंबा और आधा अंगुल चौड़ा। वह उसे मेज पर रख ही रहा था कि मैंने उससे पूछा कि क्या मैं इसे देख लूं। उसने कोई आपत्ति नहीं की। मैंने उस लोहे के टुकड़े को ध्यान से देखा। उस पर किसी प्रकार को कोई धागा, तार या बाल बंधा हुआ नहीं था। मैंने उसे लौटा दिया और मेज की ओर देखने लगा लेकिन मेज पर भी ऐसी कोई वस्तु नहीं थी, जिससे शक पैदा हो।

मेज पर लोहे के टुकड़े को रखकर वह जोर से अपने दोनों हाथ मलने लगा। फिर कुछ झुककर उसने उसके कुछ अंगुल ऊपर ही अपने हाथ रखे। फिर अंगुलियों को उसकी ओर करके अपने हाथ पीछे खींचने लगा। न मालूम कैसे वह लोहे का टुकड़ा ठीक हाथों की तरफ बढ़ने लगा। मैं तो एकदम हैरान रह गया। ठीक उसके हाथों के नीचे ही नीचे उसके चलने के अनुसार मेज पर वह लोहे का टुकड़ा चलने-फिरने लगा, जबकि लोहे के टुकड़े और उसके हाथों के बीच करीब पांच अंगुल की दूरी थी।

चेतना-शक्ति लोहे में

इसी प्रकार उसने एक छुरी के साथ भी प्रयोग करके दिखाया।

जब मैंने उससे इसके रहस्य के बारे में पूछा तो उसने बताया कि उसने जिन चीजों को लेकर प्रयोग दिखाये हैं, उन सभी में लोहा था और लोहे में एक अनूठी चेतना शक्ति होती है। वैसे वह इन प्रयोगों को करते-करते इतना निपुण हो गया है कि इन प्रयोगों को वह सोने की चीजों के साथ भी कर सकता है।

मैं मन ही मन इस पहेली को बूझने की कोशिश करने लगा। इसके रहस्य को और जानने के लिए मैंने उसकी तारीफ करते हुए कहा, "आप तो बड़े ही होशियार जादूगर हैं।"

उसने मेरे इस कथन का नाराजगी के साथ विरोध किया तो मैंने पूछा कि, "फिर आप हैं कौन ?"

उसने अपने साथी के जरिये मुझसे कहलाया कि, "मैं एक सच्चा फ़कीर हूं...कला का अभ्यास करनेवाला हूं।" (उसने उर्दू में जिस कला का नाम बताया था उसे मैं ठीक से सुन

नहीं सका) फिर उसने कहा, "मैं भीड़ में आपके आने से पहले ही आपके बारे में जान गया था, तभी तो आपको इस तंबू में आने के लिए कहा ।"

"सच !"

"जी हां, बिलकुल सच । भूलकर भी आप यह न सोचिएगा कि मैं रुपये-पैसे के लालच में ये सारी चीजें आपको दिखा रहा हूं । मुझे अपने उस्ताद के लिए रौजा बनवाना है, जिसके लिए मुझे कुछ रकम की जरूरत है । इसीलिए मैं इस काम में दिलो-जान से लगा हुआ हूं ।"

मैंने उससे अनुरोध किया कि वह मुझे अपने बारे में कुछ बताए । बड़ी अनिच्छा से वह मेरी बात मानकर कहने लगा—

"जब मैं तेरह बरस का था तो अपनी भेड़-बकरियां चलाया करता था । हक रोज हमारे गांव में एक दुबला-पतला-सा फकीर आया । उसने एक रात के लिए सोने का स्थान और खाना मांगा । मेरे पिता ने उन्हें ठहराया और खाना खिलाया । वह फकीर एक रात की जगह एक साल तक हमारे यहां रहा । चंद रोज में ही हमें पता चल गया कि वे अजीब ताकत रखते हैं । एक रात हम सब खाना खाने के लिए बैठे । फकीर ने मेरी ओर कई बार गौर से ताका । दूसरे दिन मैं भेड़ें चरा रहा था कि वह मेरे पास आकर बैठ गये और मुझसे पूछा, "बेटा, तुम फकीर बनना चाहोगे ?"

मैंने हां कह दी ।

उन्होंने मेरे मां-बाप से बात की । मां-बाप भी राजी हो गये तो वे यह कहकर चले गये कि वे तीन साल बाद मुझे ले जाएंगे । किस्मत की बात कि इसी बीच मेरे मां-बाप दोनों चल बसे । इसलिए जब वे फकीर मुझे लेने आये तो मैं उनके साथ चलने के लिए बिलकुल आजाद था । मैं उनका चेला बन गया और वे मेरे उस्ताद ।

मैंने उनके साथ सारे मुल्क का फेरा लगाया । कई गांव और शहर देखे । जो कुछ भी चीजें मैंने आपको दिखायी हैं, वे सब की सब उन्होंने ही मुझे ये सब सिखायी हैं ।

"क्या ये चीजें सहज में ही सीखी जा सकती हैं ?"

वह हंस पड़ा और बोला, "कई साल की कड़ी साधना से कोई भी इन्हें सीख सकता है ।"

मुझे उसकी बातों में सच्चाई लगी । मैं स्वभाव से बड़ा शक्की था, तब भी उसकी बाबत मैंने अपने शक्कीपन को ताक पर रख दिया ।

मैं उसके तंबू से कुछ अनिश्चित और भ्रांत होकर बाहर निकला । मैं एक अजीब चक्कर में फंसा हुआ था । सोचता था कि मैंने कोई स्वप्न तो नहीं देखा है । ज्यों-ज्यों मैं आगे बढता जाता, त्यों-तयों वे करामातें मुझे अधिकाधिक अविश्वसनीय लगती जा रही थीं । इच्छा होती थी कि फकीर के मत्थे किसी जादू-टोना करने की बात मढ़ दूं, लेकिन, जाने क्यों उसके ईमान में संदेह करना असंभव ही मालूम होता था । छुए बिना जो जड़ वस्तुओं को वह नचाने लगा था, इसका मर्म क्योंकर समझाया जा सकता है ? प्राकृतिक नियमों में कोई भी मनमाने परिवर्तन कैसे पैदा कर सकता है, यह मेरी समझ के बाहर की बात है । प्रकृति के नियमों के बारे में जितना हम समझे हुए हैं, शायद उतना पर्याप्त नहीं है । ●

सामने मंदिर का शिखर दिखायी देने लगा था। उस पर लगा, ध्वज हवा में फहरा रहा था। पर उसे लगा कि ध्वज मुसकरा रहा है। उसे बुला रहा है। वह पथरीली चढ़ाई पार कर आया है, इस पर उसे बधाई दे रहा है !

चलते-चलते, पहाड़ी पर चढ़ते-चढ़ते वह थककर चूर-चूर हुआ जा रहा था, पर मंदिर का शिखर और उस पर लगा ध्वज देखकर उसकी सारी थकान दूर हो गयी थी।

यह मनी नाग का मंदिर था ! काफी ऊंची

वह प्रसाद चढ़ाने मंदिर जा रहा था। परिचिता का एक होनहार किशोर बेटा अक्षय कई दिनों से गायब था। परिचिता ने उससे कहा था कि वह मनी नाग के मंदिर में उसी ओर से प्रसाद चढ़ाकर प्रार्थना कर आये। शायद मनी नाग देवता उसकी प्रार्थना सुन लें। उसका खोया बेटा घर वापस आ जाए !

वह इसी उधेड़बुन में चढ़ा जा रहा था कि उसकी नजर ढेर सारे चील-कौओं पर पड़ी।

ओह ! हे भगवान ! यह क्या !

किशोरों के कटे सिर कहां मिले ?

● डॉ. गंगाप्रसाद

पहाड़ी पर स्थित ! कटक से लगभग तीस किलोमीटर दूर रामपुर कस्बे के पास लगभग तीन किलोमीटर पर यह मंदिर एक पहाड़ी पर स्थित था। लोगों की मंदिर के देवता पर अगाध आस्था थी। उनका विश्वास था कि सच्चे दिल से की गयी प्रार्थना अवश्य सुनी जाती है। समस्याओं का निराकरण भी हो जाता है।

वह भी एक प्रार्थना, एक समस्या लेकर मंदिर की ओर बढ़ा जा रहा था। पर न समस्या इसकी अपनी थी और न प्रार्थना वह अपने लिए करने जा रहा था।

मनी नाग से प्रार्थना

महल्ले की एक परिचिता के अनुरोध पर

सामने किसी किशोर का कटा सिर था और चील-कौए उसे ही नोच रहे थे !

क़हीं यह अक्षय का सिर तो नहीं !

यह सोचकर वह उस बड़ी चट्टान के पास गया, जहां यह कटा सिर पड़ा था।

किशोर का सिर काफी कुचल दिया गया था। फिर भी वह कुछ-कुछ पहचान में आ रहा था। वह अक्षय का सिर तो नहीं है ! यह तय है। फिर यह सिर किसका है ! किसका है ! वह स्वयं से प्रश्न कर रहा था। सहसा उसे याद आ गया। अरे, यह तो भिखारी का सिर है !

भिखारी ! उसी के महल्ले का एक किशोर ! वह भी कई दिनों से गायब था ! मनी

नाग मंदिर की ओर जाना भूल तेजी से कस्बे की ओर दौड़ा ।

आनन-फानन में सारे महल्ले में यह बात फैल गयी ।

एक आशंका से सब कांप उठे ।

क्या अक्षय का भी यही हाल हुआ होगा ?

और अक्षय ही क्यों ? महल्ले का एक और लड़का भी तो गायब था ! तो क्या वह भी ! वह भी !

भिखारी के माता-पिता ने यह जरूर बताया कि राधामोहन नामक अपने मित्र से उसने कहा था कि वह 'जात्रा' देखने जाएगा । 'जात्रा' एक लोक नाट्य है, जो रातभर चलता है और उड़ीसा तथा बंगाल में बेहद लोकप्रिय है ।

पुजारी से बातचीत

पुलिस का खोजी दल 'जात्रा' के आयोजकों से मिला । उन्होंने पास मंदिर के पुजारी से भी बात की । पुजारी ने बताया कि एक लड़का उसके पास जरूर आया था । उसने अपना नाम

एक-एक कर गांव से तीन किशोर गायब हो गये थे । काफी खोजबीन के बाद भी उनका पता नहीं चल पा रहा था । फिर एक दिन एक पहाड़ी चट्टान के पास एक कटा हुआ सिर मिला ! वह गायब हुए एक किशोर का था ! इसके बाद कस्बे में अफवाह फैल गयी कि अब किसी गर्भवती स्त्री की बारी है ! और सचमुच हत्यारे ने अपना जाल बिछा दिया था !

भीखू बताया था । साथ ही उसने यह भी अपराध स्वीकार किया था कि वह घरवालों को बिना बताये 'जात्रा' देखने आ गया है । वह रातभर ठहरना चाहता था । पुजारी को दया आ गयी और उसने उसे आश्रय दे दिया । दूसरे दिन वह लड़का भीखू अपने साथ दो और लड़कों को ले आया !

"फिर वे कहां गये ?"

पुलिस ने प्रश्न किया ।

पुजारी ने बताया कि सुबह वे तीनों एक आदमी के साथ चले गये । वे जरूर उसे जानते होंगे, क्योंकि वे उससे हंस-हंसकर बातें कर रहे थे । पुजारी ने उस व्यक्ति का हुलिया भी

किशोरों के शव

इधर महल्लेवाले परेशान थे, उधर पुलिस भी कम परेशान नहीं थी । पुलिस की परेशानी कुछ ज्यादा थी । रामपुर के पास ही स्थित सत्यवादी पुरी नामक स्थान से भी उन्हें दो किशोरों के शव मिले थे । उनके केवल धड़ थे । सिरों का कहीं भी पता नहीं चल पाया था ।

अब पुलिस ने सक्रियता से खोजबीन शुरू की ।

वे भिखारी के माता-पिता से मिले । अक्षय के माता-पिता से भी उन्होंने पूछताछ की । पर कोई विशेष जानकारी प्राप्त नहीं हुई । हां,

बताया, लेकिन पुलिस को उससे विशेष लाभ नहीं हुआ । हां, यह अवश्य ज्ञात हुआ कि उन किशोरों को साथ ले जानेवाला व्यक्ति रामपुर का ही है ।

पर उस क्षेत्र में ऐसे व्यक्ति को ढूंढ़ पाना कठिन क्या असंभव ही था, जिसका हुलिया भी पूरी तरह ज्ञात न था ।

गर्भवती महिला की हत्या

पुलिस ने कई लोगों से पूछताछ की, पर कोई फल नहीं निकला ।

इसी बीच पुलिस का ध्यान एक अफवाह पर गया । अफवाह यह थी कि पांच किशोरों की हत्या के बाद अब किसी गर्भवती स्त्री की भी जरूर हत्या होगी !

पुलिस चौकन्नी हो उठी । संभव था, इस अफवाह में कोई सच्चाई हो ! नरबलि के किस्से बिलकुल अविश्वसनीय भी नहीं थे ।

पुलिस ने अफवाहों के स्रोत को ढूंढ़ना शुरू किया तो पता चला कि कस्बे के बूढ़े नाई गोकुल कारिक ने ही यह आशंका व्यक्त की थी । हुआ यह था कि एक बरगद के पेड़ के नीचे लोगों की हजामत बनाते-बनाते उसने यह आशंका जतलायी थी । उसने कहा था कि मनोकामना की पूर्ति के लिए किशोरों की हत्या बाद किसी गर्भवती स्त्री की भी हत्या जरूरी है । तभी ग्राम-देवी प्रसन्न होती है । और यदि ऐसी हत्या न की गयी तो किशोरों की हत्या करनेवाले पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ता है ।

पुलिस सतर्क हो गयी । उसने मुखबिरों को भी चौकन्ना रहने के लिए कहा ।

पुलिस का भाग्य अच्छा था !

उसे पता चला कि एक युवा नाई बनमाली बारिक ने अपने परिचितों को बतलाया है कि उसका एक हितैषी है— गोविंदा । उसी ने उसे दुकान के लिए सामान खरीदने हेतु आर्थिक सहायता की है । एक दिन गोविंदा ने उसकी गर्भवती पत्नी से कहा था कि वह मनी नाग मंदिर में जाकर पुत्र की कामना करे । उसे अवश्य पुत्र होगा । वह मनी नाग मंदिर जाने के लिए तैयार भी हो गयी । गोविंदा ने उससे कहा कि बनमाली तो कटक गया है । और पंडितों ने उसे गोविंदा को बताया है कि आज रात ग्यारह बजे मनी नाग मंदिर में पूजा-हवन करने से अवश्य पुत्र होगा । पहले तो उसकी पत्नी तैयार हो गयी, पर आधी रात को जाना है, जानकर वह झिझक गयी । उसने तय किया कि पति के आने पर ही मंदिर जाएगी ।

किशोरों का हत्यारा कौन ?

क्या गोविंदा ही किशोरों का हत्यारा है ! पुलिस के अधिकारी सोचने लगे । उन्होंने गोविंदा के बारे में चुपचाप खोजबीन शुरू की । पुलिस को पता चला कि गोविंदा अपराधी प्रवृत्ति का व्यक्ति है । वह विवाहित है, पर अभी तक पिता नहीं बन पाया है । एक मृत किशोर अक्षय के पिता से भी उसका परिचय है । दरअसल, अक्षय के पिता ने उसकी शादी में आर्थिक ऋण भी दिया था ।

पुलिस ने अब गोविंदा से पूछताछ का निश्चय किया । थाने में गोविंदा से कई प्रश्न पूछे गये । यह भी पूछा गया कि क्या उसी ने बनमाली की गर्भवती पत्नी को रात में मंदिर चलने के लिए कहा था ।

गोविंदा ने सहर्ष हामी भर दी । फिर कहा कि, 'मुझे एक पंडित ने यह बतलाया था ।'

'किस पंडित ने ?'

गोविंदा ऐसे किसी प्रश्न के लिए तैयार न था । अनुभवी पुलिस अधिकारी उसकी मनोदशा भांप गये । अब उन्होंने सख्ती बरती तो गोविंदा पसीना-पसीना हो उठा । उसकी आवाज भी भरभराने लगी ।

तंत्र-मंत्र की सहायता

पुलिस ने और दबाव डाला तो गोविंदा ने बताया कि उसने किसी पंडित से नहीं पूछा था । ताड़ी बेचनेवाला महाराना उसका दोस्त है, वह तंत्र-मंत्र भी जानता है । उसी ने सलाह दी थी कि आधी रात को ही उस पर 'सवारी' आती है और तभी वह कोई सहायता कर सकेगा ।

अब पुलिस ने महाराना को पकड़ बुलवाया । साथ ही उसके दोनों जवान बेटे भी थाने बुलवाये गये । पुलिस अधिकारी ने महाराना से कहा, "गोविंदा ने अपना अपराध कबूल कर लिया है । वह कहता है कि तुम भी अपने जवान बेटों के साथ इन हत्याओं में शामिल थे !'

अब तो गोविंदा और महाराना में जैसे युद्ध-सा छिड़ गया । दोनों एक-दूसरे पर हत्याओं का आरोप लगाने लगे ।

पुलिस ने चैन की सांस ली !

"चलो, इन दोनों में से कोई न कोई तो हत्यारा होगा !"

पुलिस ने उन दोनों के साथ सख्ती की तो सारा भेद उजागर हो गया ।

बांझ पत्नी के संतान

गोविंदा ने रोते हुए स्वीकार किया कि उसी ने उन तीनों किशोरों की हत्या की है । पर यह हत्याएं उसने महाराना के सिर पर चढ़ी 'आत्मा' के कहने पर ही कीं । उसने महाराना के साथ साझेदारी में एक खेत खरीदा था । खेत अच्छी फसल दे, उसकी बांझ पत्नी को संतान हो जाए इसीलिए उसने यह सब किया था !

फिर बाद में चारों अभियुक्तों ने उन स्थानों का भी पता बताया, जहां उन्होंने वे हत्याएं कीं थीं ।

किशोरों के कटे सिरों का रहस्य अब खुल चुका था !

रहस्यमयी आत्महत्या

असम के पर्वतीय क्षेत्र में एक गांव है— जातिंगा । इस गांव के एक ओर बाराइल पहाड़ स्थित है । गुवाहाटी से सिलचर जानेवाली ट्रेन जातिंगा गांव से होकर गुजरती है । गांववासी ज्यादातर मिकिर आदिवासी हैं । यह गांव विश्वभर में पक्षियों के रहस्यमयी आत्महत्या के लिए प्रसिद्ध है । इस गांव में हर वर्ष बरसात के बाद अगस्त से अक्टूबर के बीच, हजारों पक्षी जंगली आग में कूदकर आत्महत्या करते हैं । वैज्ञानिक अभी तक इस रहस्यमयी मौत का कारण जान नहीं पाये हैं ।

● मनोज राय

पुराण कथा-३

'पैतृक उत्तराधिकार राजमद का अहंकार पद का दुरुपयोग, राजनीतिक कुचालों की उठा-पटक अंततः पराजय और पतन का कारण बनती है ! 'त्रिशंकु' का असली नाम था सत्य व्रत अपने तीन महापातकों के कारण उसे त्रिशंकु की उपाधि दी गयी थी . . . विश्वामित्र की महत्वाकांक्षाओं ने उसे स्वर्ग तक पहुंचने का अधिकारी घोषित किया किंतु न इधर न उधर बीच में ही औंधा मुंह किये लटके रहे थे, महाराज 'त्रिशंकु' और शायद आगामी युगों के लिए भी उन्होंने परंपरा डाल दी थी 'त्रिशंकु' बनने की !'

त्रिशंकु की व्यथा

□ डॉ. सुधा पांडे

विश्वामित्र का यज्ञ पूर्ण हुआ और प्रसन्नमन से अग्नि की प्रदक्षिणा करके उन्होंने त्रिशंकु से कहा—'हे राजन ! मेरी तपस्या के प्रभाव से तुम सशरीर ही स्वर्ग को प्राप्त करोगे, यदि मेरी तपस्या का कुछ भी फल प्राप्त हुआ है तो तुम्हें स्वर्ग जाने से कोई नहीं रोक सकेगा ।'

पलक झपकते ही त्रिशंकु सशरीर स्वर्ग की ओर बढ़ने लगे थे . . .

"महाराज अनर्थ ! घोर अनर्थ ही दिखायी दे रहा है, कोई नर देह धारी जीव स्वर्ग में सशरीर चला आ रहा है" । घबराये हुए देवों ने देवाधिदेव इंद्र के पास जाकर समाचार दिया था . . .

यह कैसे हो सकता है ? चौंक उठे थे, एक बारगी इंद्रमहाराज . . . उनका वाक्य पूरा भी नहीं हो पाया था कि इंद्र के आसन के समीप त्रिशंकु पहुंच गये थे . . . वे तत्क्षण ही पहचान गये कि आगंतुक पुरुष कौन था . . .

त्रिशंकु दो-पग आगे बढ़कर इंद्र को नमस्कार करने के लिए झुके, उसी बीच उसे ललकारते हुए देवाधिदेव की गंभीर वाणी गूंज उठी—

"तू गुरु के शाप से नष्ट हो चुका है अतः नीचे मुख किये हुए पृथ्वी पर पुनः गिर जा ।"

त्राहि माम् ! गुरुदेव त्राहिमाम् । कहते हुए त्रिशंकु स्वर्ग से नीचे गिरने लगे थे ।

त्रिशंकु का आर्त्तस्वर सुन विश्वामित्र चौंक उठे और तत्काल—'राजन ठहर जा ।वहीं ठहर जा ।' लगभग चीखते हुए विश्वामित्र बोले और उनके ऐसा कहने पर त्रिशंकु बीच में ही लटके रह गये थे । सब कुछ पाकर भी त्रिशंकु असफल, असहाय और दीनता से भर गये ।

अपने उद्धत और निंदनीय कर्मों से महाराज सत्यव्रत किस प्रकार त्रिशंकु बन गये, उत्तर कोसल के प्रजाजनों के लिए कोई आश्चर्यमयी घटना न थी ।

'सत्यव्रत' नाम था उस राजकुमार का किंतु अपने आचरण से इस नाम को विपरीत भाव से सार्थक बनाया था उसने . . . बचपन से ही वह दुर्विनीत और उद्दंड था, पिता के सामने भी नृशंसतापूर्ण कार्यों से प्रजाजनों को दुःख पहुंचाने में उसने कोई कमी न उठा रखी थी । सारे विश्वभर में फैल चुकी उसकी अपयश गाथा ।

'अरे अभी तो इसका लड़कपन है युवा होने पर सब ठीक हो जाएगा' इकलौते पुत्र की ममता से विवश पिता उसकी गलतियों पर आवरण डालते रहते थे . . .युवराज बनने पर भी सत्यव्रत की मनमानी पूर्ववत् ही बनी रही, उसमें कोई सुधार नहीं हुआ । मंत्रियों व्यवहार का अपमान, प्रजाजनों से क्रूरतापूर्ण व्यवहार अपने राजमद और ऐश्वर्य के प्रति निरंतर आसक्ति उसके लिए कौतूहल के विषय थे !

मंत्रिपरिषद् के सभी सदस्य चिंता में डूबे थे 'युवराज निरंकुशता की सीमा पार करते जा रहे हैं, महाराज ! उन पर अंकुश लगाना आवश्यक प्रतीत हो रहा है' राजपुरोहित ने अवसर देखकर एक दिन महाराज से कहा . . .

'मैं भी क्या करूं ? मैं वृद्ध हो चला हूं . . . आज न सही कल तो उसे ही राजा बनना है । आप लोग नीति से कार्य लें, धैर्य रखें समय आने पर सब ठीक हो जाएगा' बिना किसी प्रतिक्रिया के शांतभाव से उत्तर दिया था पिता ने, दिन ऐसे ही व्यतीत होते जा रहे थे कहीं से युवराज के सुधरने की आशा नहीं दिखायी दी । युवराज की प्रवृत्तियों से महाराज भली-भांति परिचित थे ही, अधिक उपद्रव न बढ़े इसलिए उन्होंने मंत्रियों से परामर्श किया और युवराज के ऊपर राज्य का संपूर्ण उत्तरदायित्व सौंपने का निश्चय कर लिया ।

आज संपूर्ण उत्तरकोसल में विशेष चहल-पहल है . . . युवराज सत्यव्रत का राज्याभिषेक किया जा रहा है . . . प्रजाजनों में कोई विशेष उत्कंठा नहीं । सत्यव्रत के राज्यासीन होने पर दुःख ही बढ़ेंगे इस आशंका से सभी भयभीत हैं, फिर भी राजा तो बन ही गये थे युवराज सत्यव्रत । महाराज के इकलौते पुत्र थे वे उत्तराधिकार उन्हें ही मिलना निश्चित था । महाराज ने भी मुक्ति पायी, राज्यकार्यों से उन्होंने वैराग्य-सा ले लिया ।



युवराज की चिर अभिलाषा पूर्ण हुई . . . जाने कब से वे इस क्षण की प्रतीक्षा में थे . . . पिता के समय के पुराने मंत्रियों से उनका तालमेल होना संभव न था अतः पहला कार्य उन्होंने यही किया कि कुटिल राजनीति से सबको अपने वश में करने का दांव फेंका—

"प्रजा में अनुशासन खतम हो चला है . . . कोई व्यवस्था नहीं रह गयी है, इसके मूल में आप लोगों की दुर्भावनाएं छिपी हैं . . राजसभा में पहले ही दिन महामात्य और राजपुरोहित को अपमानित करते हुए सत्यव्रत ने कहा—'मैं अपनी इच्छा से नये मंत्री रखूंगा जो मेरे विचारों का अनु पालन कर सकें और सारे राज्य की सुख-शांति लौटा सकें । आप लोग स्वयं राज्य कार्यों से विरत हो जाएं अन्यथा आदेश देकर मुझे आपको हटाना पड़ेगा ।"

'हमें विदा दें । महाराज सत्यव्रत . . .' पुराने मंत्री और अधिक अपमान नहीं सहना चाहते थे . . . विवश भी राज्य कार्यों से विरत हो गये ।

सत्यव्रत के लिए अब मार्ग साफ था . . . विलासी अधम मित्रों को मंत्रिमंडल में शामिल कर सभी गलत कार्यों को प्रमुख महत्त्व देना उसका धर्म बन गया था . . .

'शासन की परंपरा बदलनी होगी . . . मनु द्वारा चलायी गयी पद्धति हमारे अनुकूल नहीं है, धर्म के स्वरूप को भी बदलना होगा . . .' ऐसी अनेक घोषणाएं उसने करवानी प्रारंभ कर दीं . .. जगह-जगह जनसभाएं आयोजित कर स्वयं जाकर प्रजा को उपदेश देना शुरू कर दिया—'राज्य के किसी भी व्यक्ति को राजा के पास आने की आवश्यकता नहीं है . . . वे स्वयं उनके समस्त कष्टों को दूर करेंगे, उनकी प्रार्थना सुनेंगे . . . राज्य में जो भी विद्रोह फैलाने की चेष्टा करेगा उसे कठोर दंड दिया जाएगा . . . राजा के आदेशों का पालन करने में शिथिलता बरतने वालों को तत्काल हटाया जाएगा . . . प्रजा को चाहिए अपने नये राजा के प्रति अनुकूल वातावरण बनाये ।

सर्वत्र आतंक और अनिश्चय का वातावरण फैलता गया । प्रजा सत्यव्रत के स्वभाव से पहले से ही परिचित थी, पुराने राज अधिकारी मौन रह गये थे . . . अधर्म का बोलबाला बढ़ चला . . .सुख-शांति का नाम न था . . . अपने आतंक भरे क्रूर आचरण से सभी को भयभीत कर रखा था उस महाराज ने !

'पुराने राजा से जो सुविधाएं प्रजा को मिल चुकी हैं, उसे आसानी से नहीं छोड़ेगी . .. कहीं प्रजाजन विद्रोह न कर बैठें . . .' परामर्श देते हुए एक मित्र ने कहा था . . .

पुराने मंत्री गण भी पीठ पीछे आपकी घोषणाओं का उपहास कर रहे हैं . . . वे आपके विरुद्ध घृणा और द्वेष भी फैला रहे हैं . . .' दूसरे ने पुष्टि की थी ।

मेरे ही राज्य में रहकर मेरे विरुद्ध षड्यंत्र ? मैं ऐसा कभी नहीं होने दूंगा . . . चारों तरफ गुप्तचरों का जाल बिछा दिया गया था किसी को मुख खोलने का अवसर ही नहीं मिल पाता था, छोटी-छोटी बातों पर दंड दिया जाने लगा . . . ! सारी मंत्रिपरिषद् अनुभव विहीन युवा निरंकुश शासक की अनुगामिनी थी और आतंक और भय की छाया में अवश सांसें गिनती सारी प्रजा . . . उत्तरकोसल का भविष्य अनिश्चय के सागर में लहरा रहा था . . . ।

'महाराज सत्यव्रत ऋषियों की उपेक्षा कर अधम वृत्ति वाले लोगों की सहायता से कोसल का राज्य चला रहे हैं और स्वयं चांडालों जैसी प्रवृत्ति वाले बन गये हैं' यह प्रवाद पूरे राज्य में तो फैल चुका था राज्य की सीमाओं के बाहर भी सत्यव्रत की निंदा होने लगी किंतु अधिकार मद में डूबे सत्यव्रत को इन सब बातों की परवाह कब थी ? मृगया में डूबे रहना और निरंतर अन्यायपूर्ण क्रूर कर्म करते रहना उनकी जीवनचर्या बन चुकी थी।

उस वर्ष राज्य में उत्सव मनोविनोद अधिक आनंद के साथ मनाये गये . . . सबसे अधिक आनंदमयी मृगया सबके कौतूहल का विषय बनी थी . . . युवा मित्रों के साथ राजा की कामवासना भी तीव्रतर होकर इठला उठी। उस दिन मृगया से लौटते हुए उन्होंने अनर्थ ही कर दिया . . .

हंसते-खिलखिलाते, सभी मित्रों के साथ लौट रहे थे महाराज सत्यव्रत। हठात् एक स्थान पर ठिठककर रुक गये थे वे—

'यह दिव्यांगना कौन है ? अपनी सुकोमल देहयष्टि से शोभायमान वह सुकन्या अपने आकर्षण पाश में सभी को बांध लेने का निमंत्रण-सा देती प्रतीत हुई . . . मुग्धभाव से अपलक उसे निहारते युवराज अपनी सुध-बुध ही खो बैठे . . .

उनकी कुटिल भावनाओं को भांपते ही नवयुवती सिहर उठी और शीघ्रता से कुटिया में प्रवेश करने को मुड़ी . . .

'पकड़ लो इसे और ले चलो अपने साथ' युवराज पर वासना का ज्वार चढ़ चुका था . . . मित्र मंडली संकेत की प्रतीक्षा में ही



थी। आदेश पाते ही दौड़कर उस युवती का बलात् अपहरण कर लिया और ले चले राजधानी की ओर।

'उस भिखारी मुनि की पत्नी बनकर तुझे क्या मिला है . . . मैं तुझे अपनी महारानी बनाने का वचन देता हूं . . .' मुनि पत्नी चीखती-पुकारती रही और सत्यव्रत उसे राजमहल में ले ही गया।

महाराज किसी तरुणी का अपहरण करके ले आये हैं, वह तो विवाहिता भी है। घोर अनर्थ . . . महापातक . . . स्त्री का अपहरण और वह भी ब्राह्मण मुनिपत्नी . . . सभी लोग त्राहि-त्राहि कर उठे, पर किसी में साहस न था कि उनका विरोध कर सके। राजपरिवार पर कलंक लग चुका था . . . सत्यव्रत का दुस्साहस और बढ़ चला, पिता के कानों तक यह दुस्संवाद पहुंचा, किंतु वे निरुपाय थे।

इसी प्रकार एक दिन वशिष्ठ मुनि की कामधेनु उनके आश्रम के समीप चर रही थी, सत्यव्रत के आखेटक मित्र विचित्र वेशभूषा में उधर से निकले . . . वे सभी अधम और चांडाल कुल के थे . . . उनका भयभीत रूप देखकर गाय ने विकराल रूप धारण कर लिया और अपने सींगों और खुरों से प्रहार करके उन

बको घायल कर दिया किसी के हाथ-पैर टूट ये, कुछ प्राण बचाकर भागे, कुछ में उठने की क्ति नहीं रह गयी । आश्रम में बच्चे उन्हें खकर तालियां बजाकर हंस पड़े ।

सत्यव्रत को जैसे ही यह समाचार मिला कि नके मित्रों की दुर्गति हो गयी है । क्रोध में फकारते बढ़ चले धनुष बाण लिए आश्रम की र, आंखों में रक्त उतर आया था . . . णभर में धनुष पर बाण संधान किया उन्होंने त्कार करती गौ वहीं गिर पड़ी । पलक पकते ही सब शांत हो गया था . . . चारों रफ हाहाकार मच गया . . .महाराज ने ऐसा ष्कृत्य किया कि पृथ्वी भी कांप उठी . . .

वशिष्ठ उनके कुलगुरु थे . . .वे क्षुब्ध हुए, न्होंने जाकर पुराने महाराज को दुर्विनीत त्यव्रत के कुकर्मों से अवगत कराया . . . त्यव्रत की अपकीर्ति चारों ओर पहले से ही ली थी . . . अब प्रजा का भी धैर्य छूट चुका ा—

'हम इस अनाचारी राजा के आधीन नहीं रह केंगे . . . इसे सिंहासन छोड़ना पड़ेगा . . .' ब तो प्रजा ही निर्णायक भूमिका अदा रेगी . . .

दिन एक पहर ही चढ़ा था पर राजमार्ग पर कोलाहलभरी नदी उमड़ आयी . . . जनता विद्रोह पर उतारू थी . . .

'उत्तरकोसल पर तो जैसे विपदा ही आ गयी , अगर ऐसे अनाचार बढ़ते रहे तो प्रजा कैसे सुख से रह सकेगी—

'मारो-मारो इस धूर्त राजा को मारो . . . भीड़ में से कोई स्वर उभरा . . . कोलाहल बढ़ता ही जा रहा था । सत्यव्रत के कुछ साथियों ने प्रजा से अकड़ने का साहस दिखाया किंतु फिर भीड़ में से आवाजें आयीं—'इसे भी मारो, इसे भी राजा के साथ निष्कासित करो ।

महामात्य और राजपुरोहित जनता को शांत करने का प्रयास कर रहे थे किंतु आज जनता भी आर-पा की लड़ाई की मुद्रा में तनी थी . . .

'हम इसका शासन नहीं मानेंगे यह सत्यव्रत नहीं त्रिशंकु है, अपने तीन महापातकों के कारण यह 'त्रिशंकु' के नाम से जाना जाएगा—इसने अधर्मियों की सहायता से अपना राज्य चलाया, विवाहिता मुनि पत्नी का अपहरण किया और कुलगुरु की गौ को मारा है . . .' ऋषियो का समूह अपनी गोष्ठी में उसे त्रिशंकु की उपाधि दे चुका है ।

सत्यव्रत स्थिति की गंभीरता को समझ चुके थे, कहीं प्रजा आक्रमण करके बंदी न बना ले ऐसी आशंका को भांपकर मौका पाते ही कुछ मित्रों के साथ वन में भाग गये और अपने पदों का प्रायश्चित करने के लिए तपस्या करने लगे । उन्होंने दृढ़ निश्चय किया कि अपना खोया वैभव मैं पुनः प्राप्त करके रहूंगा . . . वन में तप करते-करते वहां की वन्य जातियों पर भी उसने अपना प्रभाव जमा लिया और उसकी राजसी प्रवृत्ति फिर से जाग उठी . . . फिर क्या था जप-तप छोड़ वहीं वन्य आदिवासियों के बीच राजा बनकर उन पर शासन करने लगा . . . एक बार फिर से अपना पराक्रम उनके बीच उसने फैला दिया . . . ।

त्रिशंकु को उत्तरकोसल छोड़े हुए बारह वर्ष से भी अधिक समय व्यतीत हो चुका था । पूरे राज्य में अनावृष्टि से अकाल की छाया मंडराने लगी थी . . . सर्वत्र भुखमरी दिखायी देने

लगी . . . वशिष्ठ चिंतित थे . . . प्रजा के कल्याण की सतत चेष्टा करते रहने पर भी कहीं आशा की किरण नहीं दिखायी दे रही थी . . .

प्रजा के मन में यह बात पैठ गयी थी कि राजपुत्र को देश निकाला दिये जाने के कारण ही राज्य पर ऐसी विपत्ति आन पड़ी है फिर क्या था एक बार फिर विद्रोह की चिनगारियां सुलगने लगीं . . .

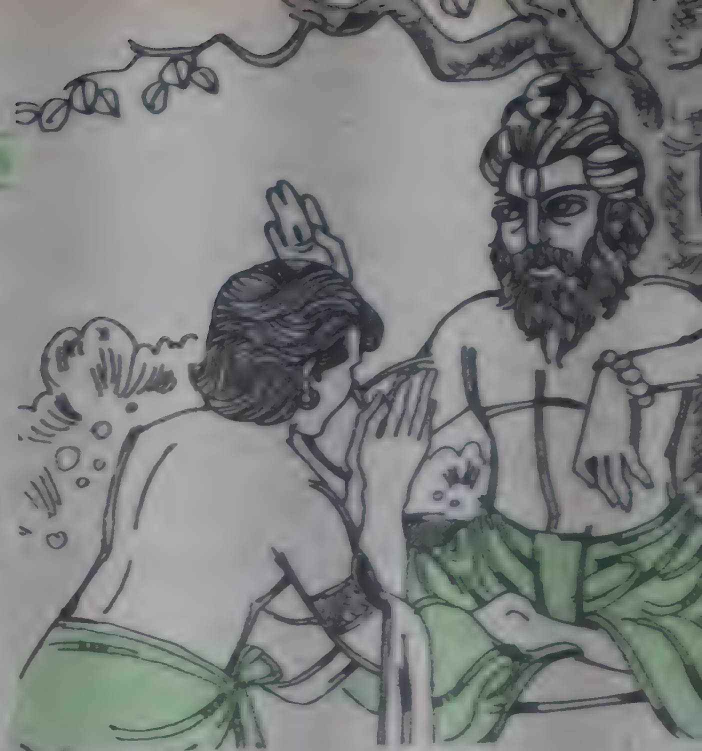
'त्रिशंकु को वापस बुलाया जाए . . . उन्हें राजसिंहासन का अधिकारी घोषित किया जाए' सभी तरफ से यही आवाजें उठने लगीं . . . वशिष्ठ सहित पूरी मंत्रिपरिषद ने प्रजा के इस आग्रह को ठुकरा दिया . . . प्रजा अकाल पीड़ित थी . . . किसी प्रकार से उनके आंदोलन को दबा ही दिया गया।

वन में त्रिशंकु नामक पराक्रमी युवक अपना प्रभाव जमा चुका है ऐसी चर्चा राजर्षि विश्वामित्र के कानों में भी पहुंची . . . विश्वामित्र महामुनि का पद पाने की अभिलाषा से उसी वन में तपस्या कर रहे थे।

गोधुलि वेला थी। राजर्षि विश्वामित्र प्रतिदिन की भांति एकांत चिंतन में मग्न बैठे थे तभी उनके शिष्यों ने आकर सूचना दी—'वनवासियों का राजा अपने साथियों के साथ इधर ही आ रहा है, बड़ा क्रूर है वह कहीं आप पर आक्रमण न कर बैठे . . .'

'तुम लोग चिंता न करो मैं उसके बारे में जानता हूं . . .'

अब तक त्रिशंकु वहां पहुंच चुका था . . . विश्वामित्र उसे समीप आने को कहनेवाले ही थे कि त्रिशंकु उनके पैरों में गिर पड़ा . . . 'मैं उत्तरकोसल का अधिपति आपको प्रणाम करता



हूं . . .'

उसके साथी भी प्रणत मुद्रा में वहीं खड़े रहे। 'कौन मांधाता के वंशज ? इक्ष्वाकुवंशी सार्वभौम महाराज सत्यव्रत ?'

'हां राजर्षि ! मैं ही वह अभागा पुरुष हूं जिसे वशिष्ठ आदि सभी पुरोहितों और मंत्रियों ने दुरभिसंधि करके निष्कासित कर दिया . . .' सत्यव्रत ने विनम्र होकर निवेदन किया।

'मैं तुम्हें अन्याय का बदला दिलाकर ही चैन लूंगा . . .' विश्वामित्र को अनुकूल दिशा मिल गयी थी, उनका क्षेत्र तेज एक बार फिर से जाग उठा।

'हे महामुनि ! अत्यंत आर्त्त होकर मैं आपकी शरण में आया हूं . . . दैव ने मेरे पुरुषार्थ को दबा दिया है। अब मैं आपके सिवा किसी अन्य की शरण नहीं जाऊंगा।'

त्रिशंकु को भी नवजीवन मिला। विश्वामित्र ने उसे विराट यज्ञ के आयोजन की सलाह दी—'इस यज्ञ के आयोजन से तुम्हारे सारे पाप दूर हो सकेंगे . . .'

सारे भूमंडल पर चर्चा फैल चुकी थी 'महाराज सत्यव्रत जिन्हें त्रिशंकु की उपाधि देकर निष्कासित कर दिया गया था वे विराट यज्ञ कर रहे हैं . . .'

वशिष्ठ सहित उनके सौ पुत्रों ने यज्ञ में आने मना कर दिया . . . विश्वामित्र को जैसे ही चना मिली क्रोध से भर गये और कहा—'वे भी दुरात्मा इस यज्ञ की आहुतियों में भस्म हो एंगे जो इस प्रकार का दुर्भाव रखते हैं . . .' नके नेत्र अंगारों की तरह लाल हो उठे . . .

'हम देवों का आह्वान करेंगे और मैं अपने कल्पों से तुम्हारा यज्ञ पूर्ण करवाऊंगा . . .' ढ़तापूर्वक विश्वामित्र ने त्रिशंकु को आश्वस्त या था ।

मंत्रों से देवों का आह्वान शुरू हुआ, किंतु वगण भी त्रिशंकु के यज्ञ में आने से भयभीत 'अपवित्र इस चांडाल के यज्ञ में भाग लेकर म वशिष्ठ के कोपभाजन नहीं बनेंगे . . .'

विश्वामित्र भी कब शांत रहते . . . रेश्वर । अब देव गण भी मेरी तपस्या का बल वें मैं तुम्हें सशरीर स्वर्ग पहुंचाऊंगा . . . इंद्र न यज्ञ में न आये । मुझे कोई दुविधा नहीं है । एक नये देव लोक की सृष्टि करूंगा । मैं रे इंद्र को प्रतिनिधि बनाऊंगा . . . या मेरा र्ग लोक बिना इंद्र के रहेगा ।'

ऋषि मंडली के समक्ष देखते-देखते ही होंने नये सप्तर्षियों की सृष्टि की और क्रोध में रकर नये नक्षत्रों का भी निर्माण कर ला . . . सर्वत्र हलचल मच गयी . . . वगण असुर समाज और ऋषि समुदाय भीषण कट में पड़ गये थे . . . विश्वामित्र अपने घ से कुछ भी कर बैठेंगे इसकी आशंका से सारा वातावरण कांप उठा . . . किसी वाणी में विनय भरकर सभी ने विश्वामित्र से निवेदन किया—'महाभाग ! ये त्रिशंकु राजा गुरु के शाप से हतपुण्य हो चुके हैं और चांडाल कोटि में पहुंच गये हैं, ये सशरीर स्वर्ग जाने के अधिकारी कैसे हो सकते हैं ।'

'नहीं मैंने राजा त्रिशंकु को सशरीर स्वर्ग भेजने की प्रतिज्ञा की है . . . इसे मैं वापस नहीं लौटा सकता ।'

देवों सहित सभी महर्षि मौन रह गये थे । उन्हें विश्वामित्र का अनुमोदन करना पड़ा—

'महर्षि प्रवर ऐसा ही हो । मुनि श्रेष्ठ आपके रचे हुए नक्षत्र आकाश में वैश्वानर पथ से बाहर प्रकाशित होंगे और उन्हीं ज्योतिर्मय नक्षत्रों के बीच सिर नीचा कर त्रिशंकु लटकते हुए प्रकाशमान रहेंगे ।'

न धरती में, न आकाश में अधर में लटके रहने की स्थिति में पहुंच गये थे त्रिशंकु यही उनकी नियति थी मानो फिर भी विश्वामित्र के सहयोग से उन्हें अपने पापों से मुक्ति मिली, आत्मोद्धार कर सके थे वे उनकी स्थिति देवो के समान मानी गयी, उस नये नक्षत्र लोक के सभी नक्षत्र उनका अनुसरण करते प्रतीत हुए । इंद्र को भी विवश होकर उनका प्रभाव स्वीकार करना पड़ा ।

—प्राचार्य,

एम. के. पी. पो. ग्रे. कॉलेज

देहरादून (उ. प्र.)

एक बड़ी नीली व्हेल की चरबी में से १२० बैरल तेल निकाला जा सकता है ।

●

कटल फिश के तीन दिल होते हैं । दो दिल उसके गलफड़ों के आधार पर स्थित होते हैं और तीसरा दिल शरीर के केंद्र में होता है ।



महानगर

रोज, हरेक पल नयी घटनाओं को,
जन्म देता हुआ नगर ।
मानव खो गया है एक
मृग मरीचिका के पीछे,
शेष कुछ बचा है, तो यह नगर ।
कोलाहल, भीड़ एक-दूसरे को पीछे धकेलने
की प्रतिस्पर्धा को जन्म देता है,
यह नगर ।
आज नित नये परिधानों से सुसज्जित,
किसी गरीब की मेहनत का प्रतिफल है,
यह नगर ।
गगनचुंबी इमारतों से युक्त,
लेकिन इनसानी रिश्तों से दूर,
एक अलग दुनिया बसा चुका है,
यह नगर ।
इसमें दया, सहानुभूति नहीं,
क्योंकि देश का सर्वश्रेष्ठ है,
यह महानगर ।

—दीपक चतुर्वेदी

पता— 'चतुर्वेदी भवन'
कायमगंज जिला-फर्रुखाबाद (उ.प्र.)
पिन-२०७५०२
संप्रति— बी.काम में अध्ययनरत
आत्मकथ्य— अपने जीवन में, समाज में जो कुछ दिखायी देता है उसे अपनी कविताओं के माध्यम से [illegible] करने [illegible] करता हूं । इसे मैं अभिव्यक्ति का [illegible] माध्यम मानता हूं ।



एक ही पहेली

अजीब सच है यह
कि तुम्हारे न रहने पर
ज्यादा ही महसूस किया है तुम्हें,
कब जज्ब हो गये तुम मुझमें
पता ही न चला ।
एक ही पहेली है—
कि क्या मेरे भाव
पहुंचते भी हैं तुम तक ?
नन्हा-सा घर हो,
या महल हो,
जहां भी रहूंगी,
मंदिर के दीपक-सी जलूंगी ।

— मीनाक्षी शर्मा

शिक्षा: एम. ए. अंगरेजी एम. ए. हिंदी, बी.एड.
सम्प्रति: शिक्षा अधिकारी
पता: डी.ए.वी. इंस्टीट्यूट ऑव इन सर्विस एजुकेशन. अशोक विहार फेज-१, ब्लाक एच, कु. ह. मा. स्कूल के. जी. विंग दिल्ली ।
आत्मकथ्य: वेगवान प्रवाह-सा जीवन अचानक एक अप्रत्याशित मोड़... और मैं ठगी-सा अनुभव बार-बार झकझोर-सा जाता है और फूट पड़ती है अभिव्यक्ति ।

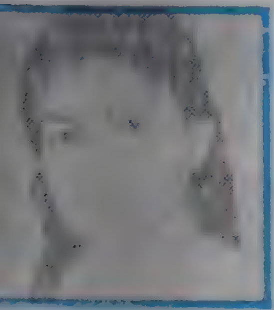


सन्नाटे का सुख

ाम का यही संधिप्रकाश
स्तब्ध पर
ुप-चुप पड़ा कमरा
ुछ बातें करो न !
को सन्नाटे
म्हें अगरबत्ती की महक दूं ।
ससे बनती कुछ
ढ़ी-मेढ़ी लकीरें
शारा करेंगी हमें
स्ता बताएंगी
लेंगे सन्नाटे
म और तुम
धर ही चलकर
ातें करुंगी
ुमसे
नभर अपने मन की !

— वंदना लाल

शिक्षा— एम.ए.
न्म-तिथि— ७.७.६७
आत्मकथ्य— समाज की विसंगतियों पर जब दृष्टिपात करती हूं तो अंदर एक अकुलाहट-सी होती है जो कविता का रूप ले पन्नों पर उतर आती है ।
पता— श्री राघव लाल
नीची बागान, सीतामढ़ी-८४३३०२ बिहार





स्मृतियां

सुदूर गगन के
नीले विशाल आंचल पर
छितराये बादल
तुम्हारे पत्तों के पन्नों-जैसे
बिखरे पड़े हैं
उड़ते जा रहे हैं बादल
उड़ती जा रही हैं स्मृतियां
बादल शायद बरसें या नहीं
पर
मेरी स्मृतियां अक्सर बरसती हैं
मेरी आंखों से ।

एक पंछी
नीले गगन की गहराई नापता
स्वच्छंद, उन्मुक्त उड़ान
आखिर कब तक
कहां तक जाएगा,
एक दिन थकेगा,
उफनती नदी के कगार पर
खड़े तरु की तरह
बह जाएगा
यह सच है ।
शेष...
स्मृतियां !!!

—विजय कुमार उपाध्याय

शिक्षा— बी.एस.सी.
पता— पूनी कीम पट्टी, महारानी पश्चिम
जिला—सुलतानपुर (उ.प्र.)
संप्रति— 'डाबर' नेपाल प्रा. लि., बीरगंज (नेपाल), में 'प्रोडक्शन केमिस्ट' के पद पर कार्यरत
आत्मकथ्य— लिखने से मुझे चरम आनंद की प्राप्ति होती है । अतः इसकी अनुभूति ही मुझे प्रेरित करती है लिखने के लिए ।

सौंदर्य

मौन
समाधित-सा
निर्निमेष तकता
अनुरागी मधुकर
कमल दलों की ओट से
शशि मुख
नेह दीप्त अलौकिक
शुभ्र सौंदर्य तुम्हारा—
प्रकृति की अनुपम
छटा-सा
नभ पर विचरित
निश्छल घटा-सा
भू-वक्ष पर लहराती
पावन पुनीत सरिता-सा
पावन पवित्र स्नेह तुम्हारा—
आकंठ डूबा स्नेह में
लालायित निर्बोध शिशु-सा
तरजनी हस्तगत करने को आतुर
मोहन तुम्हारा—

—नरेश मोहन

शिक्षा— एम.एस-सी, बी.एड., शोधार्थी (मनो.वि.)
आत्मकथ्य— हृदय वातायन से बहनेवाली हर तरंग को शब्दों में ढालने का प्रयत्न ही कविता का सूत्रपात है ।
पता— विद्या मंदिर इंटर कालेज सेक्टर-५, बी.एच.ई.एल. रानीपुर, हरिद्वार ।
संप्रति— चार नाटक, तीन कहानियां, तीन सौ कविताएं तथा कुछ गढ़वाली कविताएं ।



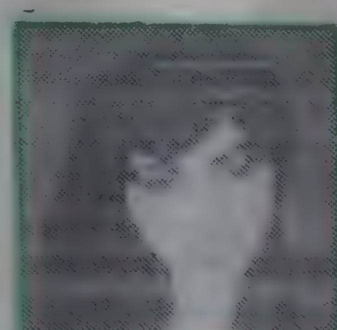


निर्माण मसीहे का

गरम सलाखें,
चुभो दी गयी हैं,
हाथ और पांव में ।
बिखर गयी हूं मैं
बच्चे के हाथ से
छूटकर टूटे
थर्मामीटर के
पारे की तरह ।
दर्द के अहसास में
जब भी उफ करने की
कोशिश की
कहा गया
मसीहा बना रहा हूं ।

—भारती सिंह

शिक्षा— एम.ए. (हिंदी
आत्मकथ्य— परिवेश की अनुभूतियों को भाषा का प्रयास ।
पता— थाना रोड, मुरलीगंज (मधेपुरा)



खंडहरों में बिखरी एक प्रेम-कथा

● डॉ. अनामिका प्रकाश



शाही महल (मांडू)

मांडू भारत का एक सुंदर प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण आकर्षक पर्यटन स्थल है। ह शहर प्रेम, आनंद और उल्लास का प्रतीक । मांडू का इतिहास तेरहवीं शताब्दी से लेकर गरेजी शासन तक रक्तरंजित इतिहास है। तवीं शताब्दी में हिंदू राजा भोज ने 'रिट्रिट' के प में मांडू शहर की स्थापना की थी। रहवीं शताब्दी में परोमा राजाओं ने मालवा स्वतंत्र राज्य घोषित कर दिया। अतुल दर्य की सुरम्य घाटी मांडू को राजधानी बनाया या। इसके बाद मालवा पर गौरी और लजी राजाओं ने कब्जा कर लिया। १४०१ में मुगलों ने दिल्ली को जीतकर अपने कब्जे कर लिया। उसी वर्ष मालवा के गवर्नर फगान नायक दिलावर खां ने स्वयं को मांडू स्वतंत्र रूप से सुल्तान घोषित कर दिया।

दिलावर खां खिलजी वंश का था। सन् १४०५ से १५२६ तक मालवा में खिलजी सुल्तानों का राज्य रहा। दिलावर खां ने मांडू की प्रगति के लिए अनेक काम किये। अफगान शिल्पकला के आधार पर कई महल, मसजिदें बनायीं। १४०५ में दिलावर खां के पुत्र होशांगशाह ने सत्ता संभाली। उसने 'धार' के स्थान पर मांडू को राजधानी बना दिया। शहर का प्रवेश द्वार दिल्ली गेट, जामा मसजिद, अपनी ही समाधी होशांगशाह की शिल्प-प्रेम, प्रतिभा के आकर्षक एवं अनुपम नमूने हैं। होशांगशाह के पुत्र को महमूदशाह ने सत्ताच्युत कर दिया और स्वयं सुल्तान बन बैठा। १४६९ में महमूद के पुत्र गियासुद्दीन ने ४७ वर्ष की प्रौढ़ावस्था में गद्दी संभाली और ३१ वर्षों तक शासन किया। बाद में इसी के पुत्र नसीरुद्दीन ने षड्यंत्र कर



बाजबहादुर महल

जा सकता है । नीचे का भाग कभी सेना के रहने के लिए बनवाया गया था । यहां पर दो तरफ सैनिकों के रहने के लिए दो ढलाननुमा बैठक बनी हैं । साथ में पीने के पानी का एक हौज बना है । जिसमें वर्षा ऋतु से एकत्रित किये गये पानी को कोयले व रेत द्वारा साफ कर लिया जाता था । जिसको युद्ध के दौरान सैनिक उसका पानी अपने पीने के काम में लिया करते थे । बाद में ऊपरी मंडप बाजबहादुर ने अपनी प्रिय संगीत-प्रेमी रूपमती के लिए पवित्र नर्मदा के दर्शन के लिए बनवाया था । जहां से वह हर रोज सूर्य उदय के समय नर्मदा के दर्शन करती थी ।

मांडू में स्थित बाजबहादुर का महल एक ऊंचाई पर बनवाया गया था, इसके सामने चौड़ी सीढ़ियां हैं । इसके अंदर के भाग में एक सुंदर हौज बना है । हौज के उत्तर में सफेद संगमरमर का झरोखा है व दक्षिण की ओर रहवासी कक्ष है । इसी स्थान से ऊपर बारहदरी में जाने के लिए सीढ़ियां बनी हैं । महल के मुख्य द्वार व सीढ़ियों के साथ लगी हुई ऊंची आर्चनुमा दीवार है, जो पहले रेवाकुंड में जाकर मिलती थी । इस दीवार पर पत्थर की पाइप लाइन बिछायी गयी थी जिसमें रेवाकुंड से रहट द्वारा पानी ऊपर चढ़ाकर महल में ले जाने की व्यवस्था थी । इस महल के मुख्य द्वार पर एक शिलालेख है, जिसमें लिखा है कि इसका निर्माण नसीरुद्दीन के समय किया गया था । बाद में बाजबहादुर ने अपने शासनकाल में इसको अपने महल के रूप में उपयोग किया था, तब से इसे बाजबहादुर के महल के रूप में जाना जाता था ।

रेवा का मतलब होता है नर्मदा, पवित्र नर्मदा नदी को प्राचीन काल से पुराणों में रेवा नाम से जाना जाता है । ऐसा कहा जाता है कि रूपमती जब तक पवित्र नर्मदा के दर्शन नहीं करती थी, तब तक वह अन्न व जल ग्रहण नहीं करती थी । तब रूपमती की भक्ति को देखकर नर्मदा ने प्रसन्न होकर रूपमती को स्वप्न दिया और पवित्र नर्मदा का पानी झरने के रूप में प्रकट हुआ, इसलिए इस पवित्र कुंड को रेवा कुंड कहा जाता है ।



जहाज महल

मांडू का निकटतम रेलवे स्टेशन इंदौर १०० कि.मी. तथा रतलाम १२४ कि.मी. है । मांडू सड़क मार्ग द्वारा इंदौर, महू, उज्जैन, भोपाल, ग्वालियर आदि स्थानों से जुड़ा है । यहां का निकटतम हवाई अड्डा इंदौर है जो यहां से लगभग १०० कि.मी. दूर है । इंदौर , बंबई, दिल्ली, ग्वालियर तथा भोपाल से सीधी वायु सेवा से जुड़ा है ।

मांडू जाने का सबसे अच्छा मौसम जुलाई से मार्च तक का है । बारिश के मौसम में मांडू का मौसम देखते ही बनता है । मांडू में पर्यटकों के ठहरने हेतु कई होटल, लॉज एवं धर्मशालाएं उपलब्ध हैं ।

—आर.बी. २, जी.एफ.बी.
रेलवे कॉलोनी, बाद (मथुरा)

(सभी चित्र : डॉ. अनामिका प्रकाश)



हिंडोला महल



रानी रूपमती महल



अशोक स्तंभ



प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान

बिहार की राजधानी पटना से मात्र ५० कि.मी. दूर वैशाली में प्रवेश पटना से हाजीपुर, लालगंज होकर किया जाए या मुजफरपुर की ओर से, वैशाली की सीमारेखा के अंदर प्रवेश करते ही प्रकृति के शांत सौंदर्य की जादुई छड़ी हमारे दिलोदिमाग को शांत कर देती है । सड़क के दोनों तरफ के शीशम, पीपल, जामुन, बरगद आदि के छायादार पेड़ तथा आम और लीची के बड़े-बड़े बगीचों का असली

विशाल स्तूप, अशोक स्तंभ और छोटे-छोटे अन्य स्तूप



पूरे विश्व को लोकतंत्र का पहला पाठ पढ़ानेवाली वैशाली इस धरती का वह टुकड़ा है जो हिंदुस्तान के भूले-बिसरे एवं गौरवशाली अतीत की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक गतिविधियों का साक्षी बनकर, क्रूर काल के निर्मम थपेड़ों से जूझते-जूझते भी यादों की कई किस्तों की जीवंत निशानी अपने सीने में सहेजे हुए है।

मंडरा रही है बुद्ध और महावीर की आत्मा

□ महेश कुमार झा

मजा तो तब आता है, जब वह सफर किसी दुपहिए से पूरा किया जाए, क्योंकि बस या कार से पूरे सफर के दौरान प्रकृति के कोमल अहसासों से वंचित हो जाना पड़ता है।

वैशाली के आम के सुंदर बगीचों ने बौद्ध धर्म के प्रवर्तक महात्मा बुद्ध को इतना आकर्षित कर रखा था कि उन्होंने कई बार इन बगीचों में प्रवचन देकर अपने शिष्यों एवं आम जनता को अपने विचारों से अवगत कराया। इन्हीं बगीचों में एक बगीचा था आम्रपाली का जो वैशाली की एक परम सुंदरी एवं विश्वविख्यात नर्तकी थी। आम्रपाली बाद में गौतम बुद्ध की शिष्या बन गयी थी। वैशाली में ही महात्मा बुद्ध ने अपने निर्वाण की घोषणा की थी। महात्मा बुद्ध की मृत्यु के ठीक एक साल बाद द्वितीय बौद्ध महासभा यहीं आयोजित की गयी थी, जिसमें अनेक देशों के बौद्ध समर्थकों ने भाग लिया



महावीर के जन्मस्थल पर स्थापित चौथी शताब्दी में निर्मित चौमुखी महादेव की मूर्ति

था । महात्मा बुद्ध ने इस पावन भूमि को जितना सम्मान दिया उसके प्रतिफल में यहां दो बुद्ध स्तूप बने हुए हैं । ये स्तूप महात्मा बुद्ध के शरीर की राख के अवशेष पर बने हुए हैं और खुदाई से भी महात्मा बुद्ध की कई मूर्तियां प्राप्त हुई हैं जो यहां के संग्रहालय में रखी हुई हैं । गौतम बुद्ध के मनपसंद स्थलों में से एक थी वैशाली ।

चौबीसवें तीर्थंकर

जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर बर्द्धमान महावीर का जन्म वैशाली में ही लुम्बिनी नामक स्थान पर हुआ था । वर्द्धमान महावीर राजपरिवार से संबद्ध थे । इनकी माता त्रिशला लिच्छवि नरेश चेतक की बहन थी । बारह वर्ष तक वैशाली की मिट्टी में ही खेलने-कूदने यानी बचपन गुजारने के बाद बर्द्धमान महावीर ने अपने विलासपूर्ण जीवन का परित्याग कर दिया था और ज्ञान की खोज में निकल पड़े थे । महावीर के जन्मस्थल पर एक स्मारक बना हुआ है जहां पहुंचते ही श्रद्धा से खुद-ब-खुद सर झुक जाता है । पास में प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान है जहां पूरे विश्व के छात्र जैन शास्त्र के अध्ययन एवं अहिंसा पर शोध करने के लिए आते हैं, क्योंकि यह अपने आप में एक अनूठा संस्थान है । एक अनोखी दिव्य शांति यहां-चारों ओर फैली हुई नजर आती है । ऐसा लगता है मानो वर्द्धमान महावीर के विचार अभी भी वातावरण में घूम रहे हों और पूरे माहौल को शांति का संदेश दे रहे हों ।

इंद्र की वैशाली

'पुराण' के अनुसार मनु, जिन्होंने महाप्रलय के बाद पुनः सृष्टि की रचना की थी, के वंशज सुमति वैशाली के राजा उन दिनों थे, जब अयोध्या के राजकुमार रामचंद्र अपने अनुज लक्ष्मण एवं गुरु विश्वामित्र मुनि के साथ जनकपुर (मिथिला की राजधानी जहां राम और सीता का विवाह हुआ था) में सीता के स्वयंवर में भाग लेने जाते वक्त वैशाली आये थे । जनकपुर जाते वक्त वैशाली की ऊंची-ऊंची मीनारों ने इन लोगों का ध्यान अनायास ही अपनी ओर आकर्षित कर लिया था । जिज्ञासा को शांत करने हेतु उनके कदम वैशाली की ओर मुड़ गये थे । उस वक्त विश्वामित्र मुनि ने उन्हें यह भी बताया था कि प्राचीनकाल में समुद्रमंथन से पूर्व देवता और दानवों के बीच विचार-विमर्श वैशाली में ही हुआ था । देवराज इंद्र ने भी उस समय इस पृथ्वी पर रहने के लिए वैशाली को ही पसंद किया था ।

ईसा पूर्व छठी शताब्दी में जब पूरे विश्व में कहीं भी प्रजातंत्र से लोगों का परिचय तक नहीं था और सब जगह राजतंत्र की तानाशाही का बोलबाला था, तब वैशाली में प्रजातंत्र बड़े मजे में फूल-फल रहा था । विश्व के इस पहले प्रजातांत्रिक राज्य में प्रजातंत्र का पूर्ण विकसित रूप था । यहां संसद नाम की संस्था थी जिसके सदस्य आम जनता के मतों के आधार पर चुने जाते थे । यह संसद आज की संसद की तरह ही थी । प्रशासन की कई शाखाएं थीं जो राजधानी से लेकर राज्य की सीमा से सटे दूर-दूर के गांवों तक फैली हुई थीं, जिसके अलग-अलग कोड थे । प्रशासन के संचालन की व्यवस्था इतनी सुदृढ़ थी कि नगण्य संख्या में ही अपराधों की चर्चा सुनने को मिलती थी । संसद में विभिन्न क्षेत्र की जनता की समस्याओं पर गंभीरतापूर्वक विचार-विमर्श किये जाते थे



महात्मा बुद्ध के शरीर की राख के अवशेष पर बना स्तूप

र तब कोई सामान्य हल तलाशा जाता था। तुतः विश्व के तमाम प्रजातांत्रिक राज्यों के ए वैशाली एक पवित्र तीर्थ स्थान है।

मांगनेवाले को मिल जाता है

मगध के महान सम्राट अशोक द्वारा निर्मित शोक स्तंभ आज भी पूरी शान के साथ खड़ा जिसके ऊपर स्थित शेर की मूर्ति शक्ति एवं क्रम की प्रतीक है। इस स्तंभ को स्थानीय ग भीमसेन की लाठी भी कहते हैं। भीमसेन हाभारत में वर्णित पांडवों में से एक था। इस शोक स्तंभ के सामने एक बड़ा-सा स्तूप है, से तीन ऐतिहासिक किस्तों में बना-बनाकर हुत ऊंचा कर दिया गया है। इस बड़े स्तूप की ाल में तथा अशोक स्तंभ के चारों ओर टे-छोटे ढेर सारे स्तूप हैं। इन स्तूपों को ौती स्तूप कहा जाता है। प्राचीनकाल में हुत से लोग यहां आकर मनौती मांगा करते थे और जिनकी मनौती पूरी हो जाती थी वे एक स्तूप बना दिया करते थे। आज भी वैशाली के लोगों का मानना है कि अशोक स्तंभ को अपनी बांहों में लेकर व सीने से लगाकर सच्चे हृदय से जो कुछ भी मांगा जाता है, वह मांगनेवाले को प्राप्त हो ही जाता है।

अशोक स्तंभ के आसपास की खुदाई में कई महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक निशानियां प्राप्त हुई हैं, जिन्हें एक संग्रहालय में सुरिक्षत रखा गया है। कुछ मुख्य वस्तुएं हैं— तरह-तरह के बरतन, औजार, खिलौने, कलाकृतियां, रत्न जड़ी हुई ईंटें, गौतम बुद्ध की मूर्तियां व अन्य। १०वीं, ११वीं सदी में पत्थर से निर्मित घड़ियाल के मुंह के आकार की नली भी बहुत आकर्षक लगती है। इस नली को महलों की छत पर वर्षा का पानी निकलने के लिए लगाया जाता था। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में निर्मित शौच पात्र भी पर्यटकों का ध्यान अपनी ओर खींचता है। खुदाई से ही महलों की दीवालें भी प्राप्त हुई हैं। चार मुंहवाले भगवान शिव की प्रतिमा

चर्चित चीनी यात्री फाहियान और ह्वेनसांग ने भी वैशाली की यात्रा क्रमशः पांचवीं और सातवीं शताब्दी में की थी । इन यात्रियों ने भी दुनिया को वैशाली के बारे में बहुत कुछ बताया । आज भी रोजाना सैकड़ों पर्यटक आते हैं तथा वैशाली में इतिहास के टुकड़ों से साक्षात्कार कर बेमन से यहां से लौटते हैं, क्योंकि यहां से तुरंत लौटने को जी नहीं करता । तेज रफ्तार से भागती शहरी जीवन-शैली से त्रस्त पर्यटकों को बहुत सुकून देती है वैशाली !

भी अपने आप में अनोखी है । यह चौमुखी महादेव चौथी शताब्दी में निर्मित हैं । खुदाई से प्राप्त बहुत-सी वस्तुएं हालांकि टूट-फूट गयी हैं फिर भी इन्हें सहेज कर रखने का प्रयत्न किया गया है । इन वस्तुओं से प्राचीन वैशाली की कला-संस्कृति, रहन-सहन पर पर्याप्त रोशनी पड़ती है ।

प्राचीन संसद भवन

राजा विशाल का गढ़ अपनी विशालता का अहसास दूर से करा देता है । करीब एक सौ चालीस फुट चौड़ी खाई गढ़ के चारों ओर बनी हुई है जो करीब दस फुट गहरी भी है । इसे गढ़ की सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने के लिए बनाया गया था । इस खाई में हमेशा पानी भरा रहता था । यह गढ़ अब एक टीले के रूप में है । इस टीले की परिधि डेढ़ कि.मी. है जिसे प्राचीन संसद भवन भी कहा जाता है । यहां विज्जैन संघीय सभा के ७७०७ सदस्य एकत्र होकर राज्य का प्रशासन संभालते थे तथा जनता की समस्याओं पर विचार-विमर्श किया करते थे । यहां भी जमीन के अंदर से कई ऐतिहासिक साक्ष्य मिले हैं, जिन्हें पास के संग्रहालय में रखा गया है । संग्रहालय के सामने कमल तालाब है जो पूरब से पश्चिम तक एक कि.मी. लंबा है । ऐसा विश्वास है कि यह तालाब लिच्छवियों का पिकनिक स्थल था । चारों ओर हरे-भरे वृक्षों से घिरे इस तालाब के उत्तर की ओर संग्रहालय, स्तूप, गेस्ट हाउस व कुछ क्वार्टर हैं तथा दक्षिणी ओर जापानी मंदिर है । राजगृह में बने विशाल शांति स्तूप की तर्ज पर इस कमल तालाब के दक्षिण में शांति स्तूप बनाया जा रहा है । तालाब के चारों ओर सिर्फ शांति ही शांति नजर आती है । यहां का माहौल चिंतन के लिए सर्वथा उपयुक्त था, तभी तो गौतम बुद्ध का सान्निध्य एवं वर्द्धमान महावीर को जन्म देने का श्रेय मिल पाया है इसे । और अब भी यहां कुछ पलों के लिए ठहरने पर ही मन करने लगता है कि यहीं हमेशा के लिए ठहर जाएं ।

खुराना पोखर के नाम से चर्चित एक छोटा तालाब अभिषेक पुष्करजी है, जिसका पानी काफी पवित्र माना जाता था । इसी तालाब के पानी का इस्तेमाल राजाओं के शपथ ग्रहण समारोह में किया जाता था । पाल वंश के समय में निर्मित अनेक हिंदू देवताओं की खूबसूरत मूर्तियों से सुसज्जित भवन पोखर मं



भी है, यह पोखर तालाब के किनारे है।

हरिक्टोरा मंदिर में सिर्फ कार्तिकेय भगवान की मूर्ति है। मुसलमानों का एक कब्रगाह भी है जिसमें सबसे प्रमुख मिरांजी की दरगाह है। इस दरगाह में पांचवीं शताब्दी के एक प्रमुख संत शेख मोहम्मद काज़िम के अवशेष हैं।

नवनिर्मित जैन मंदिर भी काफी खूबसूरत है।

मीठे आम और लीची

वैशाली में इतिहास के टुकड़ों से साक्षात्कार करते हुए मन जहां एक ओर अतीत की गौरव गाथाओं की ओर भागता है, वहीं दूसरी ओर यहां की फिजा में फैली शांति बेतहाशा भागती जिंदगी को बहुत सुकून देती है। आबादी कम होने की वजह से भी यहां फैली शांति बाधित नहीं हो पाती। गरमी के दिनों में तो बड़े-बड़े बगीचे शांति और शीतल छाया के साथ-साथ मीठे व रसीले आम और लीची भी खिलाते हैं। यह इलाका लीची के उत्पादन के लिए भी विश्व प्रसिद्ध है। यहां से आम व लीची विभिन्न देशों को भेजे जाते हैं। यहां उत्तम नस्ल के केले भी खूब मिलते हैं।

छोटे-छोटे मनौती स्तूप

चर्चित चीनी यात्री फाहियान और ह्वेनसांग ने भी वैशाली की यात्रा क्रमशः पांचवीं और सातवीं शताब्दी में की थी। इन यात्रियों ने भी दुनिया को वैशाली के बारे में बहुत कुछ बताया। आज भी रोजाना सैकड़ों पर्यटक आते हैं तथा वैशाली में इतिहास के टुकड़ों से साक्षात्कार कर बेमन से यहां से लौटते हैं, क्योंकि यहां से तुरंत लौटने को जी नहीं करता। तेज रफ़्तार से भागती शहरी जीवन-शैली से त्रस्त पर्यटकों को बहुत सुकून देती है वैशाली! ठहरने के लिए वैशाली में तो रेस्टहाउस हैं हीं, वैशाली से मात्र ३५ कि.मी. दूर हाजीपुर में टूरिस्ट बंगला तथा होटल हैं। यहां सड़क मार्ग द्वारा पटना और मुजफ्फरपुर से पहुंचा जा सकता है। रेलगाड़ी से आने वाले को हाजीपुर स्टेशन उतरना पड़ता है।

—द्वारा श्री सहजानंद
स्टेट बैंक ऑव पटियाला
हथुवा मार्केट के सामने पटना-४ (बिहार)

वैद्य की सलाह

संदीप, फरीदाबाद

प्रश्न : उम्र ४५ वर्ष है । आठ वर्ष से अल्सर से पीड़ित हूं । जलन, गैस, खट्टी डकार, पेट दर्द और सिरदर्द बना रहता है । इलाज किया पर लाभ नहीं हुआ ।

उत्तर : स्वर्ण सूतशेखर रस पांच ग्राम, प्रवाल पंचामृत रस पांच ग्राम लेकर चालीस मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह शहद से लें । अविपत्तिकर चूर्ण एक-एक चम्मच दोपहर-रात पानी से लें ।

मीनाक्षी, मुंबई

प्रश्न : उम्र २३ साल है । अविवाहित हूं । गैस और मोटापे से पहुत परेशान हूं । कृपया कोई दवा बतायें ।

उत्तर : आरोग्यवर्धनी एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें । कांकायन वटी दो-दो भोजन के बाद पानी से लें ।

श्रीमती रत्नप्रभा, बेगूसराय

प्रश्न : लगभग सात वर्ष पहले अचानक मूर्छित हो गयी । कुछ ही क्षणों में ठीक हो गयी । तब से सिर में दर्द रहने लगा है । शरीर पहले से भारी हो गया । सारे शरीर में सूजन है । ब्लड प्रेशर के साथ-साथ हाथ-पांव में झनझनाहट रहती है । हर माह दस दिन पूर्व मासिक आ जाता है । मुंह का स्वाद फीका रहता है ।

उत्तर : शिरशूलादि वज्र रस एक वटी, सूतशेखर रस एक वटी सुबह-शाम पानी से लें ।

अशोकारिष्ट एक चम्मच, अर्जुनारिष्ट एक चम्मच भोजन के बाद पियें ।

ब्रह्मरसायन एक-एक चम्मच रात दूध से लें ।

सविता, जबलपुर

प्रश्न : उम्र १९ वर्ष है । मासिक धर्म १४ वर्ष की अवस्था में प्रारंभ हुआ । १५-१५ दिन के बाद हो जाता है और लगभग ५ दिन रहता है । कब्ज बराबर बना रहता है । कभी-कभी सिरदर्द व शरीर में भारीपन बना रहता है ।

उत्तर : अशोकारिष्ट एक चम्मच, अभयारिष्ट एक चम्मच समभाग पानी में मिलाकर भोजन के बाद दोनों समय पियें ।

मोहनलाल कुशवाह, झांसी

प्रश्न : उम्र ३६ वर्ष है । ६ माह से दायें पैर में जकड़न शुरू हो गयी है । वजन लेकर चलने में परेशानी होती है । अधिक दूर चल नहीं सकता ।

उत्तर : चंद्रप्रभा वटी एक, त्रयोदशांग गूगल एक वटी सुबह और रात दूध से लें अश्वगंधारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पियें ।

कुं. सीमा, नागपुर

प्रश्न : उम्र १७ साल है । ४ वर्ष से चश्मा लगाती हूं । दिन पर दिन आंखें कमजोर हो रह

ई । नंबर बहुत ज्यादा है । धुंधला दिखता है ।

उत्तर : सप्तामृत लोह तीस ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें ।

महात्रिफला घृत एक चम्मच रात दूध से लें । दही, खटाई और तेज मिर्च-मसाले सेवन न करें । एक वर्ष नियमित औषधि सेवन करें ।

श्रीमती सुलक्षणा, चंडीगढ़

प्रश्न : ३५ वर्षीय हूं । कमर दर्द, सिरदर्द और पेट दर्द बना रहता है । गृहस्थ जीवन में बहुत परेशानी है । कमजोरी भी है ।

उत्तर : चंद्रप्रभावटी एक, शिरशूलादि वज्र रस एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । कांकायन वटी दो-दो भोजन के बाद पानी से लें ।

एस. प्रसाद, नोएडा

प्रश्न : सांस फूलना, कफ, खांसी और पेशाब बार-बार आता है । कमजोरी भी है । नींद कम आती है ।

उत्तर :च्यवनप्राश अवलेह एक-एक चम्मच सुबह-रात दूध से लें । द्राक्षारिष्ट दो चम्मच समभाग पानी मिलाकर भोजन के बाद पियें ।

राम प्रताप, मधुबनी

प्रश्न : उम्र २० वर्ष है । तीन वर्ष से कब्ज है । गुदा मार्ग पर मस्सा निकल गया है । कभी-कभी मल के साथ खून आ जाता है । दर्द बना रहता है ।

उत्तर : अर्शोघ्नी वटी एक-एक सुबह-शाम पानी से लें । अभयारिष्ट दो-दो चम्मच समभाग पानी मिलाकर भोजन के बाद पियें । ।

आरोग्यवर्धनी वटी एक-एक रात दूध से लें ।

प्रमोद, खरखोदा

प्रश्न : उम्र २५ साल है । एक साल से रात्रि में लारयुक्त पानी आता है । रात को दो-तीन बार उठना पड़ता है ।

उत्तर : कृमिमुद्गर रस एक-एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । आरोग्यवर्धनी वटी एक-एक भोजन के बाद पानी से लें ।

सीमा, अगस्त कुंड

प्रश्न : माताजी की उम्र ७० वर्ष है । स्थूलकाय हैं । घुटनों में दर्द रहता है । नाक से कभी-कभी खून भी आ जाता है । रक्तचाप ऊंचा रहता है । कृपया दवा लिखें ।

उत्तर : सर्पगंधा वटी एक, योगराज गूगल एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । केहरवा पिष्टी दस ग्राम, प्रवाल पिष्टी दस ग्राम और आंवला चूर्ण तीस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा दोपहर-रात पानी से लें ।

बी. सुबरमण्यम, हैदराबाद

प्रश्न : उम्र तीस साल है । हाथ-पैर सुन्न हो जाते हैं । घुटनों में भी भारीपन नजर आता है । कभी-कभी ऐसा लगता है कि शरीर में जान ही नहीं है ।

उत्तर : असगंध चूर्ण साठ ग्राम, त्रयोदशांग गूगल तीस ग्राम और मुक्ताशुक्ति भस्म दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-रात दूध से

लें । अश्वगंधारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पियें ।

उमा सक्सेना, लखनऊ

प्रश्न : उम्र २३ वर्ष है । लगभग पांच साल से बलगम जुकाम है । मौसम बदलने पर अधिक हो जाता है । सिरदर्द और गरदन दर्द बना रहता है । उत्साहहीन हो गया हूं । कभी-कभी चक्कर भी आ जाते हैं ।

उत्तर : चित्रक हरीतकी एक-एक चम्मच सुबह-रात गरम दूध से लें । लक्ष्मीविलास रस एक-एक वटी दिन में दो बार पानी से लें ।

ललित, चित्रकूट

प्रश्न : मां की उम्र ४५ वर्ष है । दो साल से बीमार है । दोनों एड़ियों में दर्द रहता है । चलते समय एड़ी जमीन पर नहीं रख पाती है ।

उत्तर : कैशोर गुग्गुल दो-दो वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । गरम पानी में नमक डालकर एड़ी पानी में रखें । यह कार्य प्रतिदिन करवायें ।

श्रीमती अरुणा, नयी दिल्ली

प्रश्न : उम्र चालीस साल है । विवाह देर से हुआ, मासिक दिन-प्रतिदिन कम हो रहा है । संतान नहीं है । मानसिक रूप से परेशान हूं । गृहस्थ जीवन के प्रति कोई रुचि नहीं । पति भी परेशान रहते हैं । कार्यरत महिला हूं । जीवन नीरस बन गया है ।

उत्तर : शंख पुष्पी चूर्ण साठ ग्राम, असगंध चूर्ण साठ ग्राम और चंद्रप्रभा वटी तीस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-रात दूध से लें ।

दशमूलारिष्ट एक चम्मच, अशोकारिष्ट एक चम्मच समभाग जल मिलाकर भोजन के बाद पियें । दही और खटाई का परहेज कर छह माह नियमित औषधियों का सेवन करें ।

—कविराज वेदव्रत शर्मा

अश्वगंधा : प्रभावशाली औषधि

यह प्राचीनकाल से रसायन, बल्य औषधि के रूप में विशेष प्रचलित वनौषधि है । इसकी जड़ का प्रयोग चूर्ण के रूप में ३-६ ग्राम की मात्रा में उपयोग किया जाता है । इसका अश्वगंधारिष्ट, अश्वगंधादि चूर्ण औषधि के रूप में विशेष लोकप्रिय है । नागौर (राजस्थान) के आसपास के अश्वगंधा को विशेष प्रभावशाली पाया गया है । इस पर पर्याप्त अनुसंधान कार्य हुआ है, जिससे प्राप्त परिणाम के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि यह मानव समाज के लिए मानसिक विकार, कैंसर, दुर्बलता, अल्पायुजन्य समस्या की चिकित्सा में वरदान है । लखनऊ मेडिकल के कालेज के प्रो. नरेन्द्र सिंह के अनुसार अश्वगंधा के प्रयोग से दिल की बीमारी, रक्तचाप, गठिया, दमा, कैंसर, यकृत विकार, मानसिक असंतुलन के रोग में काबू पाया जा सकता है ।

हस्य-कथा

इच्छाधारी सर्पों का विवाहोत्सव !

• सुरेश नीरव

वह रात कुछ ज्यादा ही कालिमा लिए हुए थी। आसमान पर छाये काले बादल सितारों की रोशनी को भी जमीन तक आने से रोक रहे थे। रात के सन्नाटे में गूंजती झींगुर और मेंढकों की आवाजें वातावरण में एक अजीब-सी सिहरन उत्पन्न कर रही थीं। कभी-कभी पेड़ की शाखों पर लटके चिमगादड़ रात के वातावरण को अपनी बेसुरी आवाज से और खौफनाक बना देते थे।

ठाकुर तेजसिंह ने बियावान जंगल की दुनिया को सुरक्षित पार कर लिया था। माथे पर उभर आयी पसीने की बूंदों को पोंछते हुए उन्होंने राहत की सांस ली। पीछे मुड़कर जंगल की ओर देखा और जेब में रखी सिगरेट को होंठों पर सुलगाते हुए विचारों की दुनिया में डूबने-उतराने लगे।

"क्या ये खबर गलत है कि रात में जंगलों में चोरी-छिपे लकड़ी काटी जाती है ?" तेजसिंह मन-ही-मन बुदबुदाये। और फिर खुद ही अपने आप से बोले, "लगता है उन्हें मेरे आने की खबर किसी ने दे दी है। खैर...।" उन्होंने जीप की 'स्टीयरिंग' को मुख्य सड़क की ओर मोड़ते हुए सिगरेट फेंक दी। जीप मुख्य सड़क पर तेजी से भागने लगी थी। तेजसिंह की तराई के जंगलों में अभी हाल ही में 'फॉरेस्ट रेंजर' के रूप में नियुक्ति हुई थी। और वे बड़ी ईमानदारी से जंगल को माफिया से मुक्त कराना चाहते थे। विचारों में डूबते-उतराते वे अपनी जीप की गति को तेज करना ही चाह रहे थे कि सड़क पर सामने चादर से ढकी किसी अंजान आकृति को देखकर ठिठक गये। जीप को रोककर उन्होंने उस आकृति की जांच-पड़ताल करनी चाही। वे जीप से उतरे और उन्होंने उस आकृति से चादर को हटाया। वे देखकर भौंचक्के रह गये। वह एक लड़की थी। जिंदा और जीवित लड़की। उम्र, यही कोई छह या सात माह। उन्होंने सोचा शायद गरीबी से बेबस होकर या फिर सामाजिक मर्यादा के भय से कोई मां अपनी बच्ची को जंगल में छोड़ गयी है। जीप की 'हैड लाइट' के उजाले में नहायी वह लड़की ठाकुर तेजसिंह को काफी सुंदर लगी। उन्होंने मन-ही-मन ईश्वर को धन्यवाद दिया कि कोई अनिष्ट होने से पहले ही उनकी दृष्टि इस मासूम बच्ची पर पड़ गयी। उन्होंने सोचा कि इसे उठाकर अपने साथ ले चला जाए और फिर इसे पुलिस की मदद से किसी अनाथालय को दे दिया जाए। यह सोचकर वह लड़की को उठाने झुके। उन्हें लगा कि वह लड़की अपनी उम्र के हिसाब से वजन में कुछ ज्यादा है। उन्होंने अतिरिक्त ताकत लगाकर उसे उठाना चाहा मगर

वह जितनी ज्यादा ताकत लगाकर उसे उठाने का प्रयास करते, उसकी लंबाई बढ़ती जाती। ठाकुर तेजसिंह का दिल किसी अनिष्ट की आशंका से थर-थर कांपने लगा। भय के कारण माथे पर पसीने की बूंदें भी छलछला उठीं। चंद लम्हों में ही वह मासूम-सी दिखनेवाली बच्ची एक खूबसूरत नवयौवना में बदल गयी थी। ठाकुर तेजसिंह की आंखें विस्मय से फटी-की-फटी रह गयीं, चेहरे की बनावट से वह एक पहाड़ी लड़की दिखायी पड़ रही थी। और वह रेंजर साहब को देखकर मंद-मंद मुसकरा रही थी। उसकी सफेद शफ्फाक पोशाक जीप की 'हेड लाइट' में ऐसी चमक रही थी मानो दर्पण पर सूरज की किरणें पड़ रही हों।

"कौन हो तुम ? मुझसे क्या चाहती हो ?" अपने भीतर बिखरे सारे साहस को बटोरकर रेंजर साहब उस लड़की से बोले।

जवाब में उस लड़की ने अट्टहास किया। ऐसा अट्टहास कि जंगल का सारा परिवेश उस अट्टहास से गूंज उठा।

"बाबूजी हम एक लड़की हैं, और क्या हैं ?" अट्टहास थमने के बाद वह बोली।

"वह तो मैं भी देख रहा हूं।" रेंजर तेजसिंह ने कहा।

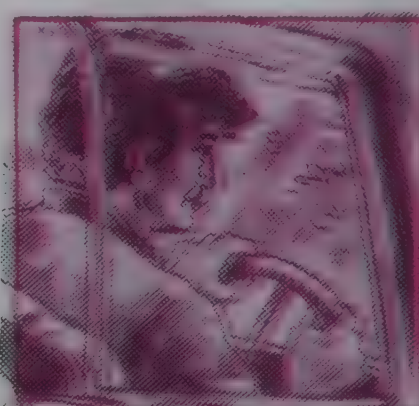
"पर इतनी रात इस बियावान जंगल में क्या करने आयी थीं और यहां क्यों लेटी थीं ?"

"मैं घर से रूठकर आयी थी। अपने बाबू से कही थी कि मुझे नयी चूड़ियां पहना दो। आज मुझे शादी में जाना है। वो माने नहीं तो मैं गुस्से में आकर लेट गयी। सोचा कोई आप-जैसा भला आदमी आएगा तो मुझे उठा ही देगा और मेरी मनोकामना भी पूरी कर देगा।" वो हंसकर बोली।

रेंजर तेजसिंह ने ध्यानपूर्वक उस लड़की को निहारा। उसकी त्वचा का रंग उन्हें कुछ विलक्षण-सा लगा। पर वे इस तथ्य को नजरअंदाज करते हुए उस लड़की से बोले, "ठीक है यह बताओ कि तुम्हें कहां छोड़ दूं ?"

"उधर सामनेवाले गांव में। वहां हाट लगी है। मुझे चूड़ी, कंगन कुछ दिलवा दीजिएगा और मेहरबानी करें तो मुझे वहां छोड़ दें जहां मुझे शादी में जाना है।" उस लड़की ने खनकती-सी हंसी के साथ यह बात कही।

"सामने गांव कहां है, वहां तो घना जंगल है। मैं अभी वहीं से आ रहा हूं। वहां कोई हाट



भी नहीं लगी है। तुमको शायद उस तरफ जाना है।" दूसरी तरफ जाती हुई सड़क की ओर इशारा करते हुए ठाकुर तेजसिंह ने कहा।

"नहीं बाबू, हमें इसी तरफ जाना है। आप गाड़ी मोड़िए तो।" यह कहकर वह लड़की उछलकर जीप में बैठ गयी।

ठाकुर तेजसिंह को एक मदहोश कर देनेवाली सुगंध का झोंका अपनी सांसों के साथ लिपटता हुआ महसूस हुआ। खस और चमेली के इत्र की एक मिश्रित गंध थी शायद उस मदहोश कर देनेवाली उस देहगंध में। वह यंत्रवत अपनी जीप उसी ओर मोड़कर चल पड़े,

जिस तरफ से कि अभी-अभी वह आये थे। उस लड़की के शरीर की निकटता को जब उन्होंने महसूस किया तो वे अपने आप में इस तरह चौंक पड़े— जैसे रात के अंधेरे में अचानक उनका पैर किसी मेंढक या चूहे पर पड़ गया हो। उसकी त्वचा में एक अजीब-सा गिलगिलापन और बरफ के समान ठंडक थी।

जिस तरह सपेरे की बीन की आवाज के साथ सांप सम्मोहित हो जाता है वह उसी तरह सम्मोहन की गहरी झील में उतरते चले जा रहे थे। उन्हें अपने कंधे कुछ भारी-से लगने लगे। वह लड़की अंगुली से इशारा कर रही थी कि गाड़ी उस ओर मोड़ें। ठाकुर तेजसिंह के मस्तिष्क में आनेवाली विपत्ति और अनहोनी के खौफनाक बवंडर उठने लगे थे। वे यह देखकर हैरान थे कि अभी-अभी जिस जंगल से निकलकर वे आये थे और जहां वे जंगल के चोरों को ढूंढ़ रहे थे, उस जंगल का सारा भौगोलिक परिवेश पलक झपकते ही बदल कैसे गया ? हर जगह उन्हें अनजान और अपरिचित-सी क्यों लग रही है ?

उन्होंने देखा कि वह चादर, जिसे ओढ़कर वह लड़की सड़क पर लेटी थी, जीप से दो हाथ की दूरी बनाये उसी रफ़्तार के साथ-साथ जीप के साथ-साथ चल रही है। उस चादर में हवा के झोंकों से सरसराहट नहीं हो रही है बल्कि वह चादर किसी जलयान पर तने हुए मस्तूल की तरह हवा के थपेड़ों से अप्रभावित साथ-साथ दौड़ लगा रही है। लड़की अपलक सामने की ओर निहार रही थी।

ठाकुर तेजसिंह ने महसूस किया कि जीप की रफ़्तार अपने आप बढ़ती जा रही है। स्पीडोमीटर की सुई ९० और १०० के बीच थरथरा रही थी। जबकि वे साठ किलोमीटर की रफ़्तार से अधिक गाड़ी कभी नहीं चलाते थे। और सबसे ज्यादा आश्चर्य तो उन्हें इस बात का हो रहा था कि इस जंगल में ये सड़कें कहां से निकल के आ रही हैं।

ठाकुर तेजसिंह को लगा कि वे एक अनजान टापू के मुसाफिर बनते चले जा रहे हैं। उस अनजाने टापू के जो कभी उनका परिचित जंगल हुआ करता था। अचानक जंगल के एक कोने से रोशनी की नागिनें उन्हें हवा में उड़ती दिखायी पड़ीं, जो इस बात का आभास करा रही थीं कि उधर कुछ खासी चहल-पहल होगी। सन्नाटे के सीने में शब्दों की कटार घोंपते हुए उस लड़की ने कहा, "उधर देख रहे हैं न, वहीं हाट लगी हुई है। वहीं चूड़ियां भी मिल जाएंगी।"

विस्मय से तेजसिंह की आंखें फैल गयीं। "ये हकीकत है या कोई सपना ?" अपने सिर को झटकते हुए वे मन ही मन बुदबुदाये। "बस यहीं गाड़ी रोक दीजिए, बाबूजी ! मैं चूड़ियां खरीदकर अभी आयी।" लड़की ने चिहुंकते हुए कहा।

ठाकुर तेजसिंह ने मनीबैग से एक रुपया निकाला और उसे दे दिया। लड़की उस हाट की ओर बढ़ने लगी। तेजसिंह ने महसूस किया कि उस लड़की की चाल कुछ विचित्र है। वह ऐसे चल रही थी मानो रेंग रही हो। उन्होंने कलाई में बंधी अपनी घड़ी में समय देखना चाहा पर उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उनकी 'ऑटोमेटिक घड़ी' जो कभी बंद नहीं हुआ करती थी वो आज बंद है। यानी कि इस

समय वे कहां हैं और इस वक्त क्या समय हुआ है उन्हें कुछ भी पता नहीं । एक बार उन्होंने सोचा कि जीप स्टार्ट कर यहां से भाग चलें मगर अगले ही पल सोचा कि भागकर जाएंगे कहां ? यह सारी जगह तो अब उनके लिए एक अपरिचित स्वप्न-लोक बनी हुई है ।

अभी वह विचारों में डूबते-उतराते निर्णय के किसी सूत्र को पकड़ने का प्रयास कर ही रहे थे कि वह रहस्यमयी लड़की बल खाती हुई उनके सम्मुख प्रकट हो गयी । "ये देखिए बाबूजी कितनी सुंदर चूड़ियां हैं । हरे कांच की चूड़ियां ।" ठाकुर तेजसिंह को चूड़ियां दिखाते हुए वह चहकती हुई बोली और फिर उनके उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना आदेशात्मक लहजे में बोली, "अब आप मुझे सामनेवाली सड़क से वहां ले चलिए जहां शादी का जलसा हो रहा है । वह गांव ज्यादा दूर नहीं है । बस होगा यही कोई आधा कोस ।" बिना किसी प्रतिरोध के ठाकुर तेजसिह ने जीप स्टार्ट कर उस ओर मोड़ दी जहां का संकेत उस लड़की ने किया था । लगता था मानो ठाकुर तेजसिंह भी इस अजूबे और तिलस्मी तमाशे का मन-ही-मन अंत देख लेने का संकल्प कर चुके थे । उन्हें यह तो लगने ही लगा था कि वे रहस्य और रोमांच की इस कथा के अनायास ही एक पात्र बनते जा रहे हैं । अचानक उन्होंने देखा कि वे गांव की एक पुरानी हवेलीनुमा कोठी के सामने आ पहुंचे हैं, जिसके बाहर के चबूतरे पर एक सफेद दाढ़ीवाले सज्जन बैठे हुए हुक्का गुड़गुड़ा रहे हैं और एक दूसरा बूढ़ा आदमी कंधे पर लटकी चमड़े की मसक से बाहर फैले कच्चे आंगन में छिड़काव कर रहा है । कोठी के पिछवाड़े से दो और बूढ़े जिनकी लंबी-लंबी दाढ़ियां हवा में लहरा रही हैं, अपने कंधे पर गैस के हंडे लेकर चले आ रहे हैं । हवेली के मुख्य द्वार से ही एक बूढ़ा आदमी निकलता हुआ दिखायी दिया जिसके हाथ में कांसे का बना इत्रदान था जिसको हिला-हिलाकर वह केवड़ा-जल चारों ओर छिड़कता जा रहा था । भीतर महिलाओं का संगीत चल रहा था । परिवेश में तैरती घुंघरूओं की झुनझुन की मद्धिम-मद्धिम सुर-लहरी वातावरण को मदिर-मदिर मदहोशी



कहा जाता है कि आज भी घने जंगलों में इच्छाधारी सांप की ऐसी प्रजाति अस्तित्व में है जो कि मनचाहा रूप धारण करने में समर्थ होती है । आज भी यह रहस्य बना हुआ है कि ठाकुर तेजसिंह ने जो बारात देखी थी वह कोई भुतहा बारात थी या इच्छाधारी सर्पों का कोई विवाहोत्सव ?

से भर रही थी ।

उस लड़की ने ठाकुर तेजसिंह की तंद्रा को तोड़ते हुए कहा, ''बाबूजी आप भी आइए न, यहीं तो आना था मुझे ।'' ठाकुर तेजसिंह ने चुप रहना ही बेहतर समझा क्योंकि उन्होंने सभी चेहरों को बड़े ध्यानपूर्वक देख लिया था । यंत्रवत चलती वे सारी आकृतियां उन्हें अजीबोगरीब लगीं । सपाट, निर्जीव संवेदनाशून्य चेहरे । एक अजीब रेंगती-सी चाल । मानो सभी लोग किसी अज्ञात ग्रह के प्राणी हों । त्वचा का रंग भी अजीब, आंखों में जंगली सांप की आंखोंवाली चमक । धुनी हुई कपास-जैसे छितरे हुए बाल ।

''चलिए न बाबूजी ।'' लड़की ने मनुहारभरे स्वर में कहा, ''नहीं मुझे घर पहुंचना है ।'' आवाज में दृढ़ता लाते हुए ठाकुर तेजसिंह ने उत्तर दिया ।

''ठीक है बाबूजी तो फिर अपने हाथों से हमें यह चूड़ियां ही पहना दीजिए ।'' यह कहकर उस लड़की ने हरे कांच की चूड़ियां ठाकुर तेजसिंह की ओर बढ़ा दीं और वे यंत्रवत उस लड़की को चूड़ियां पहनाने लगे । ठाकुर तेजसिंह ने जैसे ही चूड़ियां पहनाने का क्रम बंद किया, एक गगनभेदी अट्टहास के साथ उसकी आकृति रात के अंधकार में विलीन हो गयी । और शादी का वह अकल्पनीय दृश्य भी रात के अंधकार के गर्त में समा गया । वहां रह गया था फिर वही एक जंगल...और उस जंगल के घने बियावान में जीप में बैठे नितांत अकेले ठाकुर तेजसिंह... !

कौन थी वह लड़की ? कोई अशरीरी आत्मा ? कोई अतृप्त आत्मा या फिर कोई इच्छाधारी सर्प कन्या ?

कहा जाता है कि आज भी घने जंगलों में इच्छाधारी सांप की ऐसी प्रजाति अस्तित्व में है जो कि मनचाहा रूप धारण करने में समर्थ होती है । आज भी यह रहस्य बना हुआ है कि ठाकुर तेजसिंह ने जो बारात देखी थी वह कोई भुतहा बारात थी या इच्छाधारी सर्पों का कोई विवाहोत्सव ? ठाकुर तेजसिंह के लिए यह घटना जीवन पर्यंत एक ऐसी रहस्य-रोमांच की अनबूझ पहेली बनी रही जिसकी गुत्थी वे कभी न सुलझा सके । अभी दिल्ली प्रवास के दौरान अंतरंग क्षणों में उनके पुत्र ने मुझे यह घटना सुनायी थी । उत्सुकतावश मैंने ठाकुर तेजसिंह से मिलने की जब इच्छा व्यक्त की तो उनके पुत्र ने भारी स्वर में कहा कि, ''उनसे मिलने के लिए तो आपको दूसरे लोक में ही जाना पड़ेगा ।''

—आई-२०४ गोविंदपुरम
हापुड़ रोड, गाजियाबाद (उ.प्र.)

एक व्यक्ति: एक समय: हर जगह हाजिर !

• सुरेंद्र श्रीवास्तव

क्या एक व्यक्ति एक ही समय पर दो स्थानों पर उपस्थित हो सकता है ? और, वह भी एक स्थान से सैकड़ों मील दूर दूसरे स्थान पर । अधिकांश लोग इस बात पर हंसेंगे और इस पर विश्वास नहीं करेंगे कि ऐसा भी हो सकता है ।

लेकिन बहुत-से लोग ऐसे भी होंगे जो इस बात पर हंसने की बजाय गंभीर हो जाएंगे— विशेष रूप से वे वैज्ञानिक तथा मनोवैज्ञानिक, जो आज तक पुरुष-द्वय लुईस राजर्स के दावे को गलत सिद्ध नहीं कर सके हैं ।

लुईस राजर्स एक साधारण व्यक्ति था और ओझागिरी का काम करता था । किंतु सन् १९२७ में उस पर एकाएक सबका ध्यान आकर्षित हो गया, जब उसके दोहरे व्यक्तित्व की बात प्रकाश में आयी ।

मनोवैज्ञानिक अनुसंधान की ऑंटेरियो इंस्टीट्यूट के निदेशक डॉ. मार्टिन स्पैंसर ने राजर्स के दावे को प्रारंभ में अस्वीकार करते हुए कहा था कि ये ऐसी बातें हैं, जिन पर जांच नहीं की जा सकती । डॉ. स्पैंसर का उस समय यह विश्वास था कि लुईस राजर्स मात्र एक ठग है ।

रहस्यपूर्ण व्यक्तित्व

लुईस राजर्स का जन्म इंगलैंड में हुआ । सिर्फ तीन वर्ष की आयु में वह कनाडा चला गया । सन् १९३१ में वह टोरंटो में जाकर बस गया । यहां वह 'सयानों' और 'ओझाओं' के माध्यम के रूप में काम करने लगा । वह खूबसूरत तथा आकर्षक था । लोग उसके पास अपने मृतक संबंधियों से भेंट करने के लिए पहुंचने लगे । वस्तुतः ऐसे लोगों की तसल्ली के लिए ही लुईस राजर्स सयाने का काम करता था । किंतु लोगों को लुईस राजर्स के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त नहीं थी ।

राजर्स को अपने रहस्यपूर्ण होने की बहुत खुशी थी । वह अकसर कहता था— 'मुझ पर आत्माओं की मेहरबानी है । जब भी वे मुझे बुलाती हैं, मुझे उनके पास जाना ही पड़ता है ।'

शंकालु लोगों को तब तक यही संदेह था कि राजर्स का व्यवसाय एक शब्द-जाल मात्र है, जब तक कि उसकी दो मुवक्किलों की टोरंटो में भेंट नहीं हो गयी । ये दोनों स्त्रियां थीं । एक दिन जब दोनों बाजार में मिलीं, तो उनमें लुईस राजर्स के बारे में बात छिड़ गयी । एक स्त्री ने

कहा— 'मुझे तो पता ही नहीं था कि मि. लुईस राजर्स आजकल मांट्रियल गये हुए हैं । मेरी बहन ने उन्हें गत मंगलवार को वहां देखा था और उनसे काफी देर तक बातें की थीं ।

यह सुनते ही दूसरी औरत चौंक पड़ी । आश्चर्यचकित हो उसने कहा— 'यह असंभव है ।'

'क्यों ?'— पहली औरत ने जिज्ञासावश पूछा ।

'क्योंकि गत मंगलवार को तो मि. राजर्स मेरे

अब लुईस राजर्स के बारे में सूचनाएं एकत्र की जाने लगीं । प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण करने पर पता चला कि यदि एक जगह राजर्स वाक-पटु, कुशल, चुस्त और सक्रिय होता था, तो दूसरी ओर वह खामोश व सुषुप्त-सा होता ।

घर पर थे ।' — दूसरी औरत ने हैरतअंगेज बयान दिया ।

इस बात पर दोनों औरतें काफी देर तक बहस करती रहीं । और, इसके बाद लुईस राजर्स के बारे में अफवाहें फैलने लगीं— कुछ सच्ची, कुछ झूठीं । राजर्स के एक साहसी मुवक्किल ने उससे इन अफवाहों के बारे में व उसके दोहरे व्यक्तित्व की सत्यता के संबंध में उससे पूछ ही लिया, किंतु राजर्स ने कोई जवाब नहीं दिया । वह बस मुसकरा कर रह गया ।

अब लुईस राजर्स के बारे में सूचनाएं एकत्र की जाने लगीं । प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण करने पर पता चला कि यदि एक जगह राजर्स वाक-पटु, कुशल, चुस्त और सक्रिय होता था, तो दूसरी ओर वह खामोश व सुषुप्त-सा होता ।

अनेक किस्से प्रचलित

सन् १९३७ तक राजर्स के बारे में ये कहानियां इतनी चर्चित हो गयीं कि ओंटेरियो इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने राजर्स से पूछा कि क्या वह प्रश्नों के उत्तर देगा । राजर्स ने इस पर मना कर दिया । इससे इंस्टीट्यूट के निदेशक डॉ. स्पैंसर असमंज़स में पड़ गये । वह राजर्स से मिलने उसके पास गये और उन्होंने उससे पूछा कि उनके प्रश्नों के उत्तर देने में आखिर उसे किस बात का डर है ?

लुईस राजर्स ने प्रत्युत्तर में कहा कि वह नहीं चाहता कि उसके काम और उसके मुवक्किलों के विश्वास से वैज्ञानिक सिद्धांत गढ़े जाएं । डॉ. स्पैंसर ने उसे समझाया कि ऐसा नहीं होगा । बहुत समझाने के बाद आखिर डॉ. स्पैंसर उसे मनाने में सफल रहे । अंततः लुईस राजर्स उनके परीक्षण में भाग लेने के लिए तैयार हो गया ।

इस समय तक अन्य लोग लुईस राजर्स के संबंध में फैल रही अफवाहों को गंभीर रूप में लेने लगे थे । पुलिस भी छानबीन में लग गयी और राजर्स के नाम की एक फाइल भी तैयार कर ली गयी ।

डॉ. स्पैंसर का परीक्षण शुरू हो गया । उनके परीक्षण की एक शर्त यह थी कि राजर्स अगले तीन सप्ताह तक टोरंटो से बाहर नहीं जाएगा । स्पैंसर ने अपने साथियों से कहा कि जब भी राजर्स घर से बाहर निकले, वे उसका पीछा करें । परीक्षण शुरू होने के तीसरे दिन ८



अप्रैल, १९३७ को मांट्रियल से एक व्यक्ति ने सूचना दी कि एक व्यक्ति, जो अपने आपको लुईस राजर्स बताता है, मांट्रियल के एक होटल में देखा गया है।

जांच दल के सदस्य तुरंत मांट्रियल पहुंचे और वहां उनकी भेंट राजर्स के हू-ब-हू से हुई। वह व्यक्ति बोला— 'मैं लुईस राजर्स हूं।' उसकी शक्ल राजर्स से इतनी मिलती-जुलती थी कि जांच करने वाले सदस्य दुविधा में पड़ गये। उन्होंने तुरंत मांट्रियल से डॉ. स्पैंसर को फोन करके सब बतलाया। डॉ. स्पैंसर यह सुनकर सकते में आ गये। वह लगभग चीखकर बोले— 'नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। मैं इस समय यहां राजर्स के साथ दोपहर का खाना खा रहा हूं।'

यह राजर्स के दोहरे व्यक्तित्व का बेहद सनसनीखेज प्रमाण था। लेकिन, इतना होने पर भी डॉ. स्पैंसर को विश्वास नहीं हुआ कि राजर्स सचमुच दोहरे व्यक्तित्व का स्वामी है। अभी भी उनका यह विश्वास था कि राजर्स जालसाजी से काम लेता है।

दोहरे व्यक्तित्व का स्वामी

लोगों की उलटी-सीधी बातों तथा डॉ. स्पैंसर के उपरोक्त तर्कों से तंग आकर राजर्स ने कहा— 'मैं इन सबसे थक गया हूं। १२ अप्रैल को मैं यह हमेशा के लिए सिद्ध कर दूंगा कि मेरे अंदर असाधारण शक्ति है। तब शायद आप मुझे हमेशा के लिए अकेला छोड़ देंगे और फिर पूछताछ के लिए परेशान नहीं करेंगे।'

डॉ. स्पैंसर इस महत्त्वपूर्ण परीक्षण के लिए सहमत हो गये। १२ अप्रैल, १९३७ को लुईस राजर्स को डॉ. स्पैसर के कार्यालय में ले जाया गया। उसे कार्यालय के अंदर अकेला बैठा कर बाहर से ताला लगा दिया गया। डॉ. स्पैंसर व उनकी जांच टीम के तीनों सदस्य वहां मौजूद

थे । उन सबके सामने लुईस राजर्स ने कहा कि उनके दिमाग में जो भी पहली चीज आती है, वह बोल दें । डॉ. स्पैंसर ने कहा— 'गुलाब' ।

लुईस राजर्स बोला— 'बस, अब ठीक है ।'

राजर्स को डॉ. स्पैंसर के ऑफिस के कमरे में बंद करके डॉ. स्पैंसर और उनके साथी बाहर बैठ गये । वे लोग लगभग एक घंटे तक बैठे रहे । इतने में उनके पास रखे फोन की घंटी बज उठी । फोन ओंटेरियो इंस्टीट्यूट के एक प्रतिनिधि का था । उसने फोन पर बताया कि उसने अभी-अभी लुईस राजर्स को शहर में घूमते देखा है । प्रतिनिधि की यह बात सुन कर डॉ. स्पैंसर व उसके साथी दंग रह गये, क्योंकि वे साफ देख रहे थे कि लुईस राजर्स तो उनके सामने डॉ. स्पैंसर के कार्यालय में बंद बैठा है, तो फिर वह शहर में कैसे पहुंच गया ? वहां एक स्तब्धता छा गयी ।

डॉ. स्पैंसर विचार करते हुए बैठे रहे । इसके एक घंटे बाद पुनः फोन की घंटी बजी । डॉ. स्पैंसर ने फोन उठाया । उधर से राजर्स की स्पष्ट आवाज सुनायी दी— 'डॉ. स्पैंसर, मैं लुईस राजर्स बोल रहा हूं । सांकेतिक शब्द (कोड; वर्ड) गुलाब है ।'

यह सुनकर डॉ. स्पैंसर के आश्चर्य की सीमा नहीं रही । विचित्र तथ्य यह था कि राजर्स ने फोन कहां से किया, जबकि वह तो उनके कार्यालय में कैद था, जहां से फोन हटा दिया गया था और कार्यालय के दरवाजे, खिड़की सब बंद थे ।

इस घटना ने डॉ. स्पैंसर को सोचने पर मजबूर कर दिया और काफी सोच-विचार के बाद अंततः वह लुईस राजर्स के चमत्कारिक व्यक्तित्व के कायल हो गये । उन्होंने राजर्स के दुहरे व्यक्तित्व को स्वीकार कर लिया ।

डॉ. स्पैंसर द्वारा मान्यता दिये जाने के बाद लुईस राजर्स प्रसिद्धि के शिखर पर जा पहुंचा । चारों ओर उसकी चर्चा होने लगी ।

इस घटना से कोई पांच साल बाद द्वितीय विश्वयुद्ध में लुईस राजर्स की मृत्यु हो गयी । और, इसके साथ ही दोहरे व्यक्तित्व के स्वामी लुईस राजर्स का अस्तित्व हमेशा के लिए समाप्त हो गया ।

— आसाम कॉटन मिल्स,
पोस्ट—चारद्वार-७८४१०३
जिला—शोणितपुर, (आसाम)

समदर्शी

महात्मा गांधी ट्रेन से कश्मीर जा रहे थे । रास्ते में तेज वर्षा होने लगी और यात्री भीगने लगे । गार्ड ने गांधीजी से कहा, 'कहें तो आपके लिए अलग व्यवस्था कर दूं !'

गांधीजी ने पूछा, 'फिर मेरी सीट का क्या होगा ?'

उसने कहा, 'यहां किसी अन्य को बैठा दिया जाएगा ।'

गांधीजी ने स्पष्ट शब्दों में कहा, 'माफ करना भाई, मेरे कारण दूसरे यात्री को कष्ट मुझे मंजूर नहीं; मेरे लिए सभी बराबर हैं ।'

• डॉ. वीरेन्द्र झा

इस औरत को क्यों जिंदा जला रहे हो ?

• श्रीहरि

सत्रहवीं शताब्दी का अंतिम चरण । मसालों और भारतीय कपड़ों के व्यापार से आकृष्ट हो कर अनेक यूरोपीय शक्तियां देश के विभिन्न स्थानों पर अपनी व्यापारिक चौकियां, फैक्टरियां आदि स्थापित कर रही थीं । इन यूरोपीय शक्तियों के कारिंदे यूरोप की मनोहारी स्वास्थ्यवर्धक और शीतल जलवायु को छोड़कर भारत और यहां की सूखी गरम और धूलभरी जलवायु में अपने मित्रों और परिवारजनों से हजारों मील दूर दस-पंद्रह रुपये के मासिक वेतन पर काम करते थे ।

कोड़ों से पिटाई

ईस्ट इंडिया कंपनी का एक ऐसा ही कारिंदा था— जाब चर्नाक । वह सन् १६५५ में भारत पहुंचा । उसने देश के सभी भागों में कंपनी के गुमाश्ते के रूप में कार्य किया । वह एक साहसी, दूरदर्शी और मेहनती अंगरेज था । भारत में उसका समय कभी आनंद से और कभी कष्ट में बीता । एक बार एक मुगल सूबेदार की नाराजगी के कारण उसे कोड़ों से पिटना भी पड़ा ।

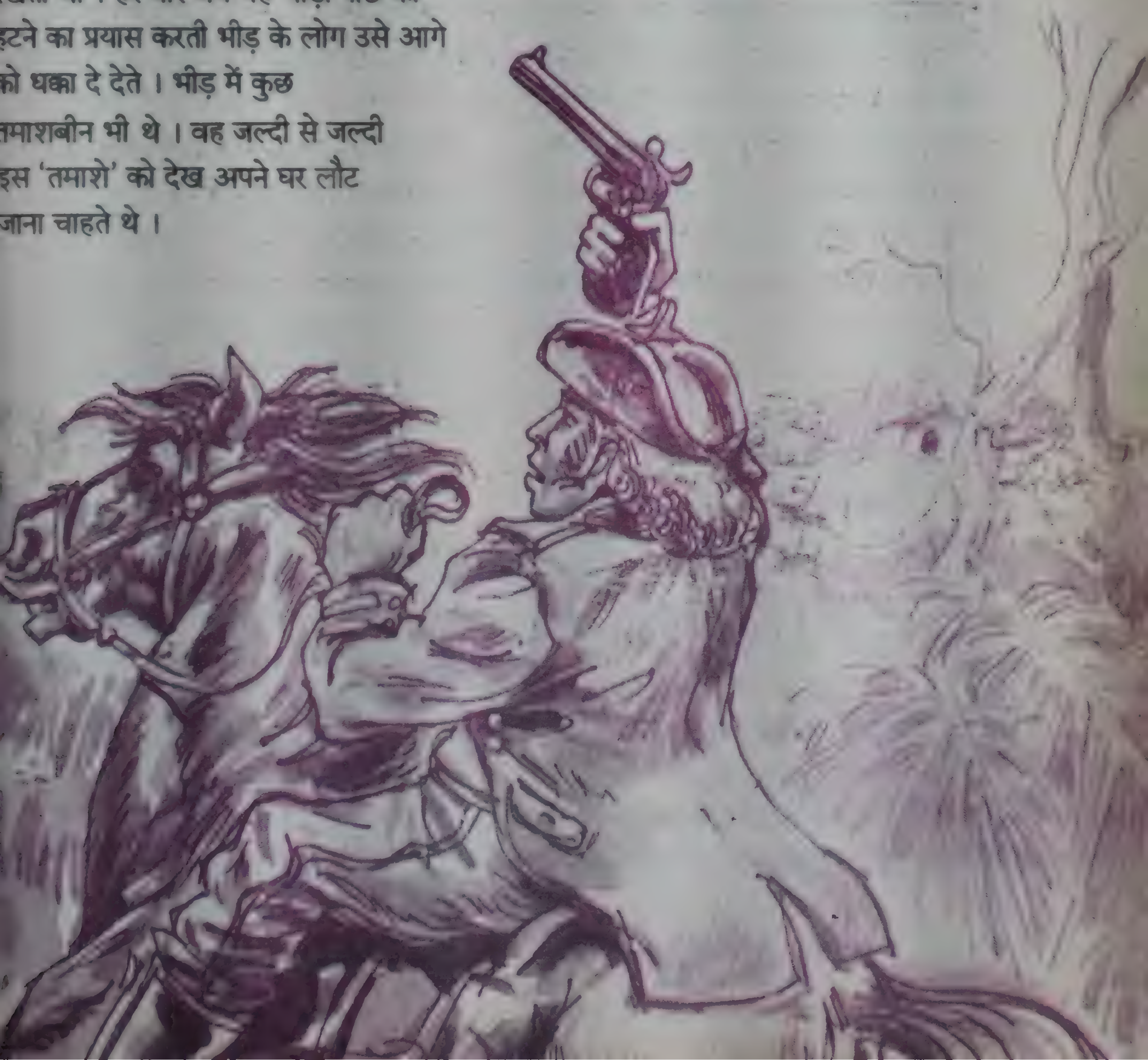
एक दिन जाब चर्नाक बंगाल के ग्रामीण क्षेत्र में अपना घोड़ा दौड़ाते हुए जा रहा था । अचानक उसके कानों में घंटे, घड़ियाल, ढोल, मर्जीरे की आवाज आयी । शीघ्र ही उसका



ोड़ा उस स्थान पर पहुंच गया जहां से यह आवाज आ रही थी।

जाब चर्नाक ने जो कुछ देखा उससे उसकी आंखें फटी-की-फटी रह गयीं। लोगों की विशाल भीड़ एक चिता को घेरकर खड़ी थी। चिता पर किसी कुलीन पुरुष का पार्थिव शरीर रखा था। लोगों की भीड़ चिता पर लकड़ियां लगा रही थी। कुछ लोग लाल साड़ी पहने एक सुंदर युवा स्त्री को चिता में बिठाने का प्रयत्न कर रहे थे। आसन्न मृत्यु से भयभीत वह युवती एक कदम आगे को और दो कदम पीछे को रखती थी। हर बार जब वह थोड़ा पीछे को हटने का प्रयास करती भीड़ के लोग उसे आगे को धक्का दे देते। भीड़ में कुछ तमाशबीन भी थे। वह जल्दी से जल्दी इस 'तमाशे' को देख अपने घर लौट जाना चाहते थे।

भीड़ में कुछ लोग चिल्ला रहे थे। 'सती को सदेह स्वर्ग मिलता है।' दूसरे जोर-जोर से ढोल-नगाड़े आदि बजाकर और जय-जयकार करके वातावरण को और रहस्यमय बना रहे थे। बीच में भीड़ 'सती माता की जय' के नारे भी लगा रही थी। उसकी आंखें करुण पुकार कर रही थीं, मुझे बचा लो मैं मरना नहीं जीना चाहती हूं।' लेकिन उस विशाल भीड़ में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं था जो जीवन रक्षा की उस अपील को सुनने को तैयार हो। उनकी सोचने की शक्ति नष्ट हो गयी थी। उनकी दया और



''आप इस औरत का जिंदा क्यों जला रहे हैं ?'' भीड़ फिरंगी को देख उत्तेजित हो गयी, भीड़ में से किसी ने कहा, ''हम अपनी औरतों को जलाएं या बहाएं इससे तुम्हारा क्या मतलब ? भीड़ में से कुछ लोगों ने जाब चर्नाक पर कुछ पत्थर भी फेंके । कुछ लोगों ने हमला करने के लिए म्यान से अपनी तलवारें भी निकाल लीं ।

ममता मर गयी थी ।

जाब चर्नाक सब कुछ समझ गया । उसे भारत में रहते हुए बीस-एक वर्ष हो गये थे । भीड़ के लोग किसी विधवा को जबरदस्ती जलाकर सती बनाने की कोशिश में लगे थे । जाब चर्नाक ने अपना घोड़ा रोका । फिर उसने भीड़ से पूछा, ''आप इस औरत को जिंदा क्यों जला रहे हैं ?'' भीड़ फिरंगी को देख उत्तेजित हो गयी, भीड़ में से किसी ने कहा, ''हम अपनी औरतों को जलाएं या बहाएं इससे तुम्हारा क्या मतलब ? भीड़ में से कुछ लोगों ने जाब चर्नाक पर कुछ पत्थर भी फेंके । कुछ लोगों ने हमला करने के लिए म्यान से अपनी तलवारें भी निकाल लीं ।

जाब चार्नाक स्थिति की गंभीरता को समझ गया । स्पष्ट था कि अगर उसने तत्काल दृढ़ता नहीं दिखायी तो भीड़ उस औरत को जिंदा जलाने के साथ जाब चर्नाक की जान भी ले सकती थी । उसने अपना पिस्तौल निकाला और हवा में दो गोलियां चलाने के बाद सख्त आवाज में कहा, '' चुपचाप भाग जाओ, नहीं तो एक-एक को भून दूंगा ।

एक नया जीवन

चर्नाक की चेतावनी का तत्काल असर हुआ । लोगों की भीड़ जिधर नजर पड़ी उस दिशा में भाग ली । मिनटों में मैदान खाली हो गया । चिता पर धकेली गयी महिला डर और आतंक के मारे अपने होशोहवास खो चुकी थी । जाब चर्नाक ने उसे चिता से उतारा और किसी तरह अपने घोड़े पर बैठाया । फिर उसने तेजी से अपने घर की दिशा में घोड़ा दौड़ाया ।

नौ-दस घंटे की लगातार यात्रा के बाद जब वह अपने घर पहुंचा तो थककर चूर हो गया था । घर पहुंचकर चर्नाक ने उस औरत को अपनी नौकरानी के सुपुर्द कर दिया । उसकी नौकरानी पड़ौस से एक ब्राह्मणी बुला लायी । ब्राह्मणी ने उस औरत को अपने संरक्षण में ले लिया ।

कृतज्ञ महिला

चर्नाक ने उस औरत को पूरा सम्मान और सुरक्षा प्रदान की । उसने स्वयं को कभी उस औरत पर नहीं थोपा । वह सदैव एक परदे की ओट में उससे बात करता था । चर्नाक ने कभी उसके कमरे में प्रवेश नहीं किया । चर्नाक के उदार व्यवहार ने महिला का दिल जीत लिया । अपने प्राण बचाने के लिए वह उसकी आभारी तो पहले से ही थी, चर्नाक के गरिमापूर्ण आचरण से वह उसकी मुरीद हो गयी ।

चिता से गृहिणी तक

एक दिन चर्नाक ने उस औरत से कहा, 'मैं तुम्हारे साथ गृहस्थी बसाना चाहता हूं। लेकिन यह तभी संभव है जब तुम इसके लिए तैयार होओ।' औरत ने कुछ उत्तर नहीं दिया। चर्नाक निराश होकर अपने कमरे में लौट गया। लेकिन वह औरत दिल-ही-दिल में अपने प्राणदाता को पूजती थी। फिर एक दिन बहुत कुरेदने पर उसने अपने मन की बात चर्नाक की नौकरानी को बतायी। नौकरानी के सुझाव पर उसने ईसाई मत और मारिया नाम स्वीकार कर लिया। फिर एक दिन धूम-धड़ाके के साथ दोनों स्थानीय गिरजाघर में विवाह-सूत्र में बंध गये।

जाब चर्नाक मारिया से बहुत प्यार करता था। मारिया ने चर्नाक को सुखी-दांपत्य जीवन और आठ बच्चे दिये। चर्नाक अपनी भारतीय पत्नी पर जान देता था। एक महामारी में पत्नी की असमय मृत्यु ने उसे जबरदस्त आघात पहुंचाया।

जाब चर्नाक को सन् १६८६ में कंपनी ने बंगाल की खाड़ी का गवर्नर नियुक्त किया। चर्नाक भारतीय रईसजादों की तरह रहता था और मलमल का कुर्ता और तंग पाजामा पहनता था। वह भारतीयों की तरह हुक्का पीने का भी शौकीन था।

कलकत्ता शहर का निर्माता

चर्नाक हुगली के पश्चिमी तट पर अंगरेज़ों के लिए एक सुरक्षित बस्ती बसाना चाहता था। इसके लिए उसने सूतानाती, गोविंदपुर और कालिकता गांवों को चुना। कंपनी के बड़े अधिकारी चर्नाक की इस पसंद से खुश नहीं थे। लेकिन चर्नाक उनको यह विश्वास दिलाने में सफल हुआ कि उसकी पसंद सर्वोत्तम है। अतः कंपनी ने स्थानीय जमींदार से तीन गांव खरीद कर सन् १६९० में ब्रिटिश बस्ती की नींव रखी। यही बस्ती कालांतर में भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की राजधानी, महानगरी और भारत की प्रमुख औद्योगिक नगरी बनी। इस तरह जाब चर्नाक को कलकत्ता की स्थापना का भी श्रेय है।

— २२ मैत्री एपार्टमेंट्स
ए/३ पश्चिम विहार, नयी दिल्ली

दुर्लभ है गजलक्ष्मी प्रतिमा

दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान में उद्योगनगरी कोटा से अड़बीस किलोमीटर की दूरी पर स्थित है बूंदी नगरी। जो कि अपने शिल्प और वास्तुकला से पर्यटकों को आकर्षित करने में समर्थ है। इसी शिल्पकला की बानगी है— गजलक्ष्मी की अद्भुत प्रतिमा।

सद्यःस्नाता द्विभुजा लक्ष्मी को हाथियों द्वारा घटाभिषेक, केशराशि से गिरते जल को चोंच से पीते हंस और देवी के निचले भाग को पूर्णतः ढंकते श्री यंत्र (कमल) एवं उसके नीचे दो हाथी इस मूर्ति को विशिष्टता प्रदान करते हैं। गजलक्ष्मी की यह प्रतिमा एक पूर्वाभिमुख शिव मंदिर में शिवलिंग के पीछे दीवार से सटकर लगी हुई है। 'तंत्र' और 'सृजन' की परिचायक गजलक्ष्मी की यह मूर्ति कालक्रमानुसार उत्तरमध्यकालीन है।

—पीयूष 'पाचक'

रहस्य कथा

भूतों की फोटो खींची और फिल्म बनी !

● अमिताभ स.

भूत-प्रेत के भटकने की सत्य घटनाएं तो अनेक हैं, लेकिन कैमरे की रील में भूत को कैद करने की मिसालें दुनियाभर में शायद एक-दो ही होंगी ।

पहले भूत की फोटो खींचने की सच्ची घटना— सन् १९६६ की बात है । कनाडा के पर्यटक श्री आर.डब्ल्यू. हार्डी और उनकी पत्नी ब्रिटेन की सैर करने आये । वे ग्रीनविच स्थित सत्रहवीं शताब्दी के 'क्वींस हाउस' को देखने गये । 'क्वींस हाउस' आज नेशनल मैरीटाइम म्यूजियम का हिस्सा है ।

हार्डी और उनकी पत्नी ने महारानी के महल के बहुतेरे फोटो खींचे । उनमें एक फोटो तुलिप सीढ़ियों का था । हैरत की बात है कि जब फोटो खींची गयी, तो सीढ़ियां खाली थीं, लेकिन फोटो तैयार होने के बाद सीढ़ियों के पास खड़ी एक-दो धुंधली छायाएं दिखायी दी । रील की बाकायदा बारीकी से जांच की गयी । लेकिन रील की तकनीकी खराबी की वजह से, छाया का उभरना साबित नहीं हुआ ।

भटकती आत्माएं

वैसे, फोटो के प्रमाण से पूर्व, 'क्वींस हाउस' में भूत-प्रेत भटकने की किसी को कानोंकान भी खबर नहीं थी । मगर फोटो खींचने के बाद से, 'क्वींस हाउस' के कर्मचारियों का मानना है कि कभी-कभार सीढ़ियों के समीप अजीबोगरीब आकृतियां दिखायी देती रही हैं । कहते हैं कि ये आकृतियां जरूर सत्रहवीं शताब्दी के दौरान 'क्वींस हाउस' में रहनेवालों की भटकती आत्माएं हैं ।

इससे भी ताज्जुब की बात है कि वास्तविक भूत की एक फिल्म बनी और ब्रिटिश दूरदर्शन पर प्रदर्शित भी की गयी । दुनिया के किसी भी दूरदर्शन द्वारा वास्तविक भूत की फिल्म प्रदर्शित करने की यह पहली घटना है । दरअसल, फिल्म की शूटिंग 'मोरले हाउस' नामक एक भूत-बंगले में हुई थी । 'मोरले हाउस' इंगलैंड के नोरविन नगर, पूरब एंजिला में है । यह भूत-बंगला सेक्सन काल से भी पहले का ज्यों-का-त्यों खड़ा है । खंडहर इमारत हालांकि रहने लायक नहीं है, लेकिन रिक्की कोटरइल नामक निर्धन किसान अब तक खंडहरों को अपना घर बनाये हैं ।

एक रात भुतहाघर में

रिक्की कोटरइल की एक सहेली है कुमारी

रूथ प्लांट। जनवरी १९६६ में, दोनों में दोस्ती हुई थी। भूत-प्रेतों की शौकीन रूथ प्लांट की रिक्की के साथ दिनोंदिन मित्रता बढ़ती गयी। वे एक-दूसरे के घर आने-जाने लगे। सन १९६६ में रूथ अपनी एक सहेली एना के संग पूरब एंजिला किसी काम से गयी। वहां उसे काम निबटाते-निबटाते रात हो गयी। उन्होंने रात वहीं ठहरना ठीक समझा, किंतु किसी होटल में उन्हें कमरा नहीं मिला।

रूथ को रिक्की की याद आयी। वह बेझिझक उसके घर गयी और बोली, "रिक्की, हमें किसी भी स्थानीय होटल में रात बिताने के लिए कमरा नहीं मिला। क्या हम एक रात तुम्हारे यहां गुजार सकते हैं ?"

"हां, क्यों नहीं ? तुम्हारा ही तो घर है।" रिक्की ने उनका स्वागत किया।

रात्रि-भोज और गपशप के बाद रिक्की दूसरे कमरे में सोने चला गया। दोनों सहेलियों ने रात इकट्ठे रिक्की के निजी कमरे में बितायी।

दिनभर की थकान के कारण दोनों को बिस्तर पर लेटते ही गहरी नींद आ गयी। तड़के रूथ की आंख खुली। उठकर वह खंडहर से इस बंगले में घूमने लगी। किसी जादुई शक्ति से वह बरबस सामनेवाले कमरे में खिंची हुई चली गयी। कमरे की खिड़की का शीशा टूटा हुआ था। तेज ठंडी हवा चल रही थीं।

अगले ही क्षण, रूथ को मंद-मंद सुर में प्रार्थनाएं सुनायी देने लगीं। आरती के साथ-साथ सामने टूटी खिड़की में धीरे-धीरे एक औरत की आकृति बनने लगी। और रूथ ने देखा— सामने एक भोली-भाली नवयुवती खड़ी मुसकरा रही है।

रूथ फौरन दौड़ती हुई, यह अजूबा एना को दिखाने उसके कमरे में गयी। कमरे में ऐना को घबरायी देख, रूथ भी भयभीत हो गयी। कुछ देर बाद एना ने बताया कि उसने किसी औरत के लंबी-लंबी सांस लेने की ध्वनि सुनी है।

रूथ ने सारा किस्सा रिक्की को सुनाया। लेकिन वह इस मामले से बिलकुल बेखबर था। फिर रूथ ने आस-पड़ोसवालों से औरत के भूत के बारे में पूछताछ की, तो उसे मालूम हुआ कि बंगले में अकसर किसी स्त्री की छाया

अगले ही क्षण, रूथ को मंद-मंद सुर में प्रार्थनाएं सुनायी देने लगीं। आरती के साथ-साथ सामने टूटी खिड़की में धीरे-धीरे एक औरत की आकृति बनने लगी। और रूथ ने देखा— सामने एक भोली-भाली नवयुवती खड़ी मुसकरा रही है।

खिड़की में खड़ी दिखायी देती है। धीरे-धीरे रूथ की दिलचस्पी बढ़ती गयी। मामले की अंतिम तह तक पहुंचने हेतु उसने प्रेतात्मा विशेषज्ञ श्री बोरोरान से संपर्क किया। विशेषज्ञ बोरोरान 'मोरले हाउस' गये, जहां उन्होंने औरत का भूत देखा। उन्होंने बताया कि बंगले में औरत के भूत के अलावा एक योगी का भूत भी रहता है।

फिल्म की शूटिंग

एक अरसे के बाद, रूथ को रिक्की का फोन



सीढ़ियों के पास भूत की छाया

आया । रिकी ने फोन पर कहा, "बोरोरान सारी रात मेरे बंगले में टेलीविजन के लिए विशेष फिल्म लेना चाहते हैं । मेरी इच्छा है कि इस फिल्म की शूटिंग में तुम भी भाग लो ।"

निर्धारित दिन फिल्म की शूटिंग प्रारंभ हुई । रातभर 'मोरले हाउस' में शूटिंग जारी रही ।

फिल्म बनकर तैयार हुई और एंजिला दूरदर्शन केंद्र ने प्रदर्शित की । लाखों दर्शकों ने फिल्म को दिलचस्पी से देखा । औरत का भूत दर्शकों को साफ नजर आया । लेकिन रूथ सहित केवल चौबीस दर्शकों ने फिल्म में बोरोरान और कारनेल के मध्य एक दाढ़ीवाले योगी की हलकी-सी छाया को भी देखा ।

दर्शकों के जोरदार अनुरोध पर फिल्म को पुनः एंजिला दूरदर्शन पर दिखाया गया । इस बार योगी के भूत को पहचाननेवालों की संख्या इकत्तीस तक पहुंच गयी । नारविच में रहनेवाली इलवइग्ग पानइटा ने तो टी.वी. पर प्रदर्शित दाढ़ीवाले योगी के भूत का रेखाचित्र बना डाला । लंबा चोगा और सिर पर टोपी पहने वह योगी प्रार्थना-मुद्रा में खड़ा था ।

भूतों का रहस्य

औरत और योगी का भूत किसकी भटकती आत्माएं हैं ? कोई नहीं जानता । इतिहास गवाह है कि 'मोरले हाउस' से वाकई एक औरत और एक साधु का जीवन जुड़ा है । सोलहवीं शताब्दी में, इंगलैंड के हेनरी (सप्तम) से एलिजाबेथ तक के राजकुल की एक सदस्या नवयुवती इस बंगले में रहती थी । वह सदा प्रगति के पथ पर अग्रसर दुनिया को देखना चाहती थी । इसी तीव्र इच्छा की पूर्ति हेतु वह न चाहकर भी आज दुनिया को चांद तक पहुंचे देख रही है ।

योगी का भूत वास्तव में बारहवीं शताब्दी के किसी एलेक्ज़ेंडर-डी-लानली की आत्मा है । उस पर किसी व्यक्ति के कत्ल का आरोप था । किंतु एलेक्ज़ेंडर-डी-लानली अपना अपराध मानने को तैयार नहीं था । उसे दस मील तक घोड़ों के पीछे बांधकर घसीटा गया । आखिर प्राण त्यागते वक्त उसने अपना अपराध कबूल किया । उसकी मौत उसी स्थान पर, अल्पायु में हुई, जहां आज यह भूत-बंगला है ।

—५१, राजपुर रोड,
दिल्ली-११००५४

खूनी नीलम के चमत्कार

● बलराम दुबे

मारी आंखें आश्चर्य से फटी की फटी रह गयीं। वह खून के समान बिलकुल लाल ा। ऐसा प्रतीत होता था— जैसे रक्त की बूंद मकर पत्थर हो गयी हो, और जब जौहरी ने में उसका नाम बताया तो हम रोमांचित हो ठे। उसने कहा, "साहब यह खूनी नीलम।" हुआ यह था, मैं अपने चित्रकार मित्र के ाथ नीलम खरीदने करोलबाग की उस दूकान र गया था। जौहरी ने पहले तो हमारी ावभगत की और फिर एक-एक कर कई लम दिखाये। इनकी कीमत पांचसौ से लेकर ास हजार तक थी।

और इसी क्रम में उसने हमें सबसे ंत में वह खूनी नीलम दिखाया था। उसने हा कि साहब नीलम बेहद चमत्कारिक और त्काल प्रभाव दर्शानेवाला रत्न होता है। मैंने हा, "हां इसका तो हमें भी अनुभव है।" मारे संपादक, जो हिंदी के एक सुविख्यात न्यासकार भी हैं, के पास एक गहरे नीले रंग ा चमत्कारिक नीलम है।" फिर मैंने उसे सारी टना सुनायी कि किस तरह वह नीलम पादकजी को प्रख्यात दिवंगत ज्योतिषी और तरेखा विशारद पी.टी. सुंदरम ने दिया था। पादकजी के संस्मरण मैंने उसे सुनाये।

कार की स्पीड और दर्द की दीवार

उन्होंने मुझे बताया था कि एक दिन शनिवार ो पी.टी. सुंदरम ने सुबह-सुबह मुझे फोन िया। उन्होंने कहा कि तुरंत मेरे पास होटल हुंच जाइए। उनके साथ हुए इस संक्षिप्त ार्तालाप ने मुझे होटल जाने के लिए विवश र दिया।

जब मैं होटल पहुंचा तो सुंदरम साहब अपनी आलमारी में कुछ ढूंढ़ रहे थे। उन्होंने ढूंढ़ते-ढूंढ़ते मुझे बैठने के लिए कहा। कुछ देर बाद अपनी आलमारी से एक अंगूठी निकालकर मेरी मध्यमा में पहना दी। तत्पश्चात पी.टी. सुंदरम ने मुझसे कहा कि अब मुझे अपनी कार में चांदनी चौक ले चलिए। मैंने कहा कि एक टैक्सी कर लेते हैं उसमें आराम से चले चलेंगे क्योंकि चांदनी चौक के इलाके में कार चलाने से मुझे नफरत है। इतनी भीड़ होती है कि डर लगता है कहीं कोई दुर्घटना न हो जाए, यह सुनकर उन्होंने कहा कि इसीलिए तो मैं चाहता हूं आज मेरे साथ तुम कार चलाकर चांदनी चौक ले चलो। अंततः मुझे सुंदरम की बात माननी पड़ी और मैं चांदनी चौक गया। सुंदरम ने मुझे उन जगहों में कार चलाने के लिए कहा जहां बेहद भीड़ थी।

वहां पहुंचकर सुंदरम ने कहा कि तुम जितनी तेजी से कार चला सकते हो,

चलाओ । सुंदरम के कहने पर मैं एक यांत्रिक मानव की तरह अपनी कार की स्पीड बढ़ाये चला जा रहा था । कुछ देर बाद सुंदरम ने मेरी पीठ थपथपायी और कहा कि बस, अब होटल चलो ।

दुर्घटना नहीं हुई

सुंदरम के कमरे में पहुंचते ही मैंने सबसे पहला सवाल किया कि "आप किस जन्म का बदला ले रहे हैं ? सुबह-सुबह क्या मेरी ड्राइविंग की परीक्षा ले रहे थे ? सुंदरम ने हंसकर कहा, "नहीं, मैं तुम्हारी ड्राइविंग की नहीं अपनी इस अंगूठी की परीक्षा ले रहा था । फिर उन्होंने मुझसे कहा कि देखो, आज मैंने तुम्हें बहुमूल्य रत्न दिया है । मुझे खुशी है कि यह नीलम तुम्हारे लिए शुभ सिद्ध होगा । मैंने पूछा कि आप यह कैसे कह सकते हैं ? सुंदरम ने कहा अगर यह नीलम तुम्हारे लिए शुभ न होता तो अब तक तुम किसी अस्पताल में पड़े होते । चांदनी चौक तुम्हें ले जाने का आशय यही था कि देखें तुम किसी दुर्घटना के शिकार होते हो या नहीं ?"

मैंने उस जौहरी को संपादकजी का यह अनुभव सुनाया तो वह बोला, "साहब, सुंदरमजी ने ठीक ही कहा था । अगर नीलम शुभ नहीं होता तो कोई-न-कोई दुर्घटना घट जाती ।"

विपत्ति झेलता पत्थर

दुर्घटना की बात सुनकर अचानक मेरे सामने वह दृश्य चलचित्र की भांति घूम गया । वह एक भयंकर दुर्घटना थी । आज भी उस घटना की याद करके मेरा रोम-रोम कांप उठता है । एक आदमी स्कूटर पर बैठा सामने से चला आ रहा था । उसकी बायीं ओर से एक बस तेजी से आयी और स्कूटरवाले ने अपना संतुलन खो दिया । वह बस के नीचे आ गया । बसवाले ने ब्रेक लगाये । टायरों और सड़क के बीच घर्षण से चिंगारियां उगलती हुई बस रुकी । उसके बाद तो जो नजारा देखने को मिला वह अविश्वसनीय सत्य था । स्कूटर सवार व्यक्ति बाल-बाल बच गया था । कुछ समय बाद वह सामान्य हुआ । उस व्यक्ति ने अपनी स्थिति देखकर ईश्वर को धन्यवाद दिया कि किस तरह भगवान ने उसे मौत के मुंह से बचाया है । अचानक उसकी निगाह अपने हाथ की अंगुली पर पड़ी । वह एकदम स्तब्ध रह गया । लोगों ने पूछा कि क्या हुआ तो उसने कहा कि उसकी कीमती अंगूठी गुम हो गयी है। वह बहुत निराश हो गया । अचानक जब बस चालक ने पुनः बस चलायी तो उसकी निगाह बस के टायरों पर पड़ी । वह चिल्ला उठा । उसकी अंगूठी बस के टायर में घुसी हुई थी । उसमें जड़ित अत्यंत कीमती रत्न कुछ क्षतिग्रस्त हो गया था । उसने कहा कि इसका सारा श्रेय उस ज्योतिषी को है जिसने मुझे यह रत्न पहनने के लिए कहा । आज इसी रत्न ने मेरे ऊपर आयी सभी विपत्तियों को झेला है ।

जौहरी ने मेरा ध्यान भंग करते हुए कहा, "क्या सोचने लगे साहब ?" मैं चौंक उठा, जैसे मुझे किसी ने जगा दिया हो । फिर उसने खूनी नीलम के बारे में बताना आरंभ किया, "अब इसी नीलम को ले लीजिए, अपने नाम के अनुसार यह वाकई एक खूनी नीलम है ।

उसने बताया कि यह खूनी नीलम संभवतः श्रीलंका से भारत लाया गया था । निश्चित है

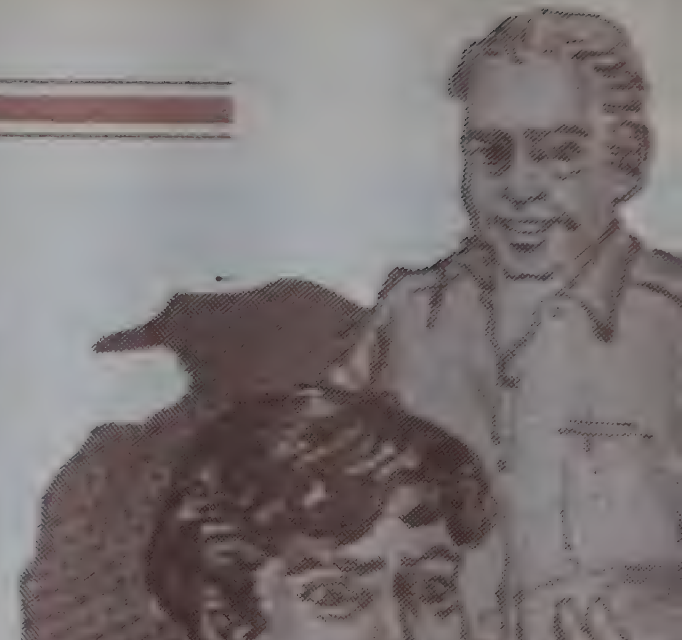
कि यह खूनी नीलम कई लोगों के पास रहा होगा। किंतु पिछले तीन-चार वर्षों में यह नीलम जिन-जिन के पास रहा उनकी बरबादी का हाल मैं जानता हूं। हमने उससे पूछा कि क्या आप हमें उन लोगों के नाम बता सकते हैं जिनके पास यह खूनी नीलम था, तो उसने कहा कि हां दो-तीन लोगों के पते तो मेरे पास हैं। फिर उसने बताया कि यह नीलम जिन्होंने खरीदा उनका रातोंरात दीवाला निकल गया था। उन्होंने वह दुर्लभ नीलम न चाहते हुए भी अपने किसी और संपन्न मित्र को दे दिया लेकिन नीलम ने वहां भी अपना खतरनाक असर दिखाया और नीलम घर में लाते ही उनके घर में आग लग गयी। इसके बाद वह नीलम जिस व्यक्ति के पास गया उसने उसे इस तरह दुर्घटनाग्रस्त कराया कि वह आज तक अपंग है। हमें विश्वास नहीं हो रहा था कि यह छोटा-सा पत्थर इतना खतरनाक हो सकता है। हमने सोचा कि हम क्यों न इन व्यक्तियों से मिलकर वस्तुस्थिति का पता लगायें।

पहले हम चांदनी चौक में उस व्यक्ति के घर गये जिसने सर्वप्रथम यह नीलम खरीदा था। वहां गये तो हमें जो अजूबा देखने-सुनने को मिला उससे हम अवाक् रह गये और जिन घटनाओं को मात्र एक संयोग समझा जा रहा था उन पर हमें विश्वास होने लगा। वहां पर आसपास के लोगों से पता लगा कि व्यापार में अचानक भारी घाटा होने के कारण उन्हें अपना घर और फैक्टरी बेच देनी पड़ी। आजकल वे हरिद्वार में रह रहे हैं। हमारी उत्सुकता उनसे मिलकर उनकी कहानी जानने की थी। हमने उनके एक परिचित से हरिद्वार का उनका पता लिया और सोचा एक दिन हरिद्वार जाकर उनसे अवश्य मिलेंगे। मन में जो जिज्ञासा बार-बार उठ रही थी उसे रोक पाना मुश्किल था। एक दिन अचानक हरिद्वार के मेरे मित्र के यहां से आमंत्रण आया। मुझे अपनी जिज्ञासा शांत करने का इससे अच्छा अवसर नहीं मिलेगा, यह सोचकर मैंने हरिद्वार की टिकट लेकर अपने कार्यालय के एक मित्र के साथ हरिद्वार जाने का कार्यक्रम बना लिया। खूनी नीलम की कहानी हमें बार-बार झकझोर रही थी। उसके संबंध में सोचकर रोंगटे खड़े हो जाते थे। हरिद्वार में

उसने बताया कि यह खूनी नीलम संभवतः श्रीलंका से भारत लाया गया था। निश्चित है कि यह खूनी नीलम कई लोगों के पास रहा होगा। किंतु पिछले तीन-चार वर्षों में यह नीलम जिन-जिन के पास रहा उनकी बरबादी का हाल मैं जानता हूं।

खूनी नीलम के शिकार उस व्यक्ति का पता लगाने हम चल पड़े। हमें अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ा। वे सज्जन हरिद्वार में अपना छोटा-सा मकान लेकर रह रहे थे।

उनसे मिलकर हमने उस कहानी की पुष्टि की जो अब तक हमें मात्र कहानी लग रही थी। उन्होंने कहा कि उस नीलम की याद मुझे मत दिलवाइए। उसके बारे में सोचकर मेरा रोम-रोम कांप उठता है। उन्होंने बताया कि यह



घटना दिल दहला देनेवाली है । मेरे एक अजीज मित्र थे । उन्होंने जब इस घटना के बारे में सुना तो मेरे साथ दुःख बांटने और सहानुभूति व्यक्त करने मुझसे मिलने चले आये । मैंने उन्हें नीलम के बारे में बताया । उन्होंने नीलम देखा तो कहा कि यह तो अद्‌भुत नीलम है । मेरे ऊपर शनि की महादशा चल रही है । अतः आप यह नीलम मुझे दे दीजिए । जो नीलम मैंने उतारकर इस निश्चय के साथ रख दिया था कि इसे मैं मोक्षदायिनी गंगा के हवाले कर दूंगा, उसे मैं अपने मित्र को कैसे दे सकता था ? मैंने उन्हें अपने पतन की कहानी सुनायी । मैंने उन्हें बताया कि मुझे भी शनि की महादशा चल रही थी । इस खूनी नीलम को मैंने उसी के निवारण के लिए पहना था परंतु इसने मुझे कहीं का नहीं छोड़ा । इन सब बातों में विश्वास न करनेवाले मेरे मित्र कुछ नास्तिक किस्म के व्यक्ति थे । उन्होंने मेरे साथ हुई दुर्घटना को महज संयोग माना और नीलम मेरे से ले लिया । मैंने न चाहते हुए उन्हें वह नीलम दे दिया । मेरे मन में एक डर-सा बैठ गया था कि उनके साथ यह खूनी नीलम कैसा व्यवहार करेगा ?

घर में आग लग गयी

जिसका डर था वही हुआ । नीलम घर में पहुंचा नहीं कि उसने अपना चमत्कार दिखाया । उनके घर में भयंकर आग लग गयी और वे बेचारे बाल-बाल बचे । इस घटना ने उनके मन को झकझोरकर रख दिया । उनका हृदय परिवर्तन हुआ और उन्होंने इस घटना का जिम्मेदार उस खूनी नीलम को माना ।

वे मुझसे अभी कुछ दिन पहले ही मिले तो मैंने उनसे पूछा कि आपने उस नीलम का क्या किया ? तो उन्होंने जो बात बतायी वह और रोमांचक और रहस्यमय घटना है । उन्होंने कहा कि एक दिन मेरे मन में विचार आया कि इस नीलम को किसी ऐसी जगह फेंक दूंगा जहां से यह किसी के संपर्क में न आ सके और किसी अन्य को अपना शिकार न बना पाये । इसी उधेड़बुन में लगे मेरे मित्र को अचानक एक यात्रा के दौरान एक व्यक्ति मिला । बातचीत होते-होते बीच में उन्होंने खूनी नीलम की घटना उसे सुनायी । उसने मेरे मित्र से आग्रह किया कि वह नीलम अब आपके अनुकूल नहीं है इसलिए उसे आप चाहें तो मुझे उचित दर पर बेच दीजिए । वह नीलम उन्होंने उसे बेच दिया । अचानक एक दिन उसका पत्र आया

जिसमें लिखा था कि खूनी नीलम की वजह से ही वह लकवे का शिकार हो गया है ।

उनसे अपाहिज व्यक्ति का पता लेकर हम उसके यहां गये । वहां जाकर पता चला कि नीलम ने अपना विपरीत चमत्कार दिखाया है । अब तक वह लोगों पर विपत्तियां डालता रहा लेकिन उन्होंने जो घटना हमें बतायी वह एकदम अलग है । उनसे पता चला कि एक दिन रास्ते में अचानक उन्हें एक भिखारी मिला । उन्होंने वह खूनी नीलम उस भिखारी को यह सोचकर दान कर दिया कि यह बेचारा तो वैसे ही फटेहाल है, अतः यह खूनी नीलम इसका क्या बिगाड़ लेगा ।

खूनी नीलम

समय बीतता गया । कुछ दिन बाद वह हादसा और खूनी नीलम की याद उनके मानस पटल पर फीकी पड़ती गयी । उधर खूनी नीलम ने अपना चमत्कार दिखाना जारी रखा ।

उन्होंने बताया कि एक दिन अचानक मेरी आश्चर्यमिश्रित प्रसन्नता का ठिकाना न रहा । मेरे साथ घटना ऐसी घटी जिसने खूनी नीलम की वजह से मेरे साथ जो हुआ था उसके बावजूद मेरे मन में उस नीलम के प्रति आस्था उत्पन्न कर दी । मुझे विश्वास हो गया कि इस अद्‌भुत रत्न को जो पसंद आ जाए उसे यह आसमान की ऊंचाइयों तक पहुंचा सकता है और जिसके अनुकूल न हो उसे गर्त में धकेल देता है । मुझे एक सबक मिला कि हमें इन रत्नों को महज एक खिलवाड़ समझकर और मजाक के तौर पर नहीं पहन लेना चाहिए । कौन-सा रत्न हमारे अनुकूल होगा, इस संबंध में पूरी सलाह किसी विद्वान व्यक्ति से लेकर ही हमें कोई रत्न धारण करना चाहिए ।

उन्होंने इस आश्चर्यमिश्रित प्रसन्नता का कारण बताया तो उसका हमारी मनःस्थिति पर अप्रत्याशित प्रभाव पड़ा । उन्होंने बताया कि एक दिन की बात है, मैं अपने बगीचे में व्हीलचेयर पर बैठा हुआ था । अचानक एक विदेशी कार मेरे घर के आगे आकर रुकी । उसमें से एक आकर्षक व्यक्तित्व मेरी ओर बढ़ा चला आ रहा था । उसने पूछा कि क्या आपने मुझे पहचाना ? मैंने प्रश्नवाचक निगाहें डालते हुए अपना उत्तर दिया, "नहीं साहब मैं आपको नहीं पहचान पाया ।" उसने जब कहा कि आपने मेरी जिंदगी बदल दी और मुझे यहां तक पहुंचा दिया । आप याद कीजिए, आपने एक खूनी नीलम राह चलते एक भिखारी को दान कर दिया था । यह सुनकर मैं चौंका और खूनी नीलम की याद ताजा हो आयी । मैंने हैरानी से पूछा कि क्या हुआ उस भिखारी के साथ ? उस व्यक्ति ने कहा कि वह भिखारी मैं ही हूं जिसे आपने यह नीलम दिया । उस दिन जब आप मेरी दुकान पर आये थे तो मैंने आपको पहचानने में गलती नहीं की, इसकी मुझे प्रसन्नता है । उस नीलम ने मेरे जीवन में महान परिवर्तन कर दिया । मेरे मन में अचानक एक दिन कुछ करने का विचार आया और मैंने भीख मांगना छोड़कर कबाड़ी का काम शुरू कर दिया । मेरा काम ईश्वर की और उस खूनी नीलम की कृपा से चल निकला । आज मेरा बहुत बड़ा कारोबार है । आपको मैं ईश्वर का दूत मानता हूं जिसने मुझे यहां तक पहुंचाया ।

—ई-८०४-ए, एम.आई.जी. फ्लैट्स, प्रताप विहार
गाजियाबाद (उ.प्र.)

गोली किसे लगी— कौए को या लड़की को !

● राजेश कुमार

साढ़े नौ बज चुके थे रात के । लेकिन अभी रात का अंधियारा नहीं घिरा था क्योंकि इंगलैंड में गरमियों के दिन बहुत लंबे होते हैं । एक किसान अपने मवेशी को लिये हुए गांव लौट रहा था । रास्ता सुनसान था । दोनों ओर हरी-भरी ऊंची-ऊंची झाड़ियां खड़ी थीं । किसान ने देखा कि रास्ते के एक ओर एक साइकिल पड़ी है और उसके पास ही एक नौजवान लड़की औंधे मुंह गिरी पड़ी है । उसने लड़की को सीधा किया । उसका चेहरा खून से लथपथ था । लड़की उसी के गांव की थी । नाम था— बेला राइट, उम्र लगभग इक्कीस साल । मां-बाप की इकलौती संतान ।

पोस्टमार्टम रिपोर्ट से पता चला कि उसकी बायीं आंख के नीचे गोली लगी है, जो खोपड़ी के पिछले हिस्से को फोड़ती हुई निकल गयी है । घटना-स्थल की जांच-पड़ताल करने पर पुलिस को दो चीज़ें मिलीं । एक तो खाली कारतूस जो लाश से सत्रह फीट दूर पड़ा था और लगता था कि इसे पैर से दबाकर जमीन में धंसाने की कोशिश की गयी है । दूसरे, खून से सने पंजे के निशान । छह जोड़े पंजे के निशान लाश की ओर आते थे और छह जोड़े जाते थे एक फाटक की ओर । रास्ते के दूसरी ओर घनी झाड़ियों के बीच एक बाग का बड़ा-सा फाटक था । सफेद रंग से पुते इस फाटक के सबसे ऊपरी धड़ पर खून से सने पंजे के निशान थे । पंजे किसी पक्षी के थे । बाग की छानबीन करने पर एक बड़ा-सा काला कौवा मरा हुआ पड़ा मिला । कौवा अधिक खून पी जाने के कारण



होश आने पर उसने बताया कि एक शाम वह बंदूक लेकर खेत में शिकार खोज रहा था कि उसने रास्ते के उस पार सफेद रंग के पुते फाटक पर एक कौए को बैठे देखा तो उसने निशाना साधकर गोली चला दी ।

गया था, शायद ।

गांववालों ने बताया कि एक तो इस इलाके कौवे हैं ही नहीं और अगर एकाध कौवा कहीं आ गया हो, तो कौवा खून नहीं पीता । कौवे लेकर पुलिस अधिकारियों में काफी मतभेद । कौवा उनके लिए एक पहेली बन गया कि वे ने इतना खून आखिर कब और कैसे पी या जबकि लाश वहां अधिक देर तक नहीं ड़ी रही ।

बेला की मां ने बताया कि आज बेला की ट्टी थी । शाम को वह अपने चाचा से मिलने लबी गांव गयी थी । चाचा ने बताया कि ला उससे मिलने आयी थी । उस समय घर उसका दामाद आया हुआ था । बेला के थ एक युवक भी था, जो अपनी साइकिल ये बाहर ही खड़ा रहा । उस युवक के बारे में छने पर बेला ने अपने चाचा को बताया था कि ह युवक को नहीं जानती । घंटे-डेढ़ घंटे बाद ला बाहर इंतजार करते हुए युवक से बातचीत रती हुई वापस लौट गयी । इसके घंटेभर बाद ला मरी हुई पायी गयी ।

इंतजार करनेवाले युवक की हुलिया पुलिस प्रचारित की साथ ही उसकी साइकिल के हरे का भी उल्लेख किया ।

पुलिस और फिर स्काटलैंड यार्ड के जासूसों बहुत हाथ-पैर मारे लेकिन हत्या और हत्यारे का कोई सुराग नहीं मिला । हार-थककर फाइल 'दाखिल-दफ़्तर' कर दी गयी ।

लेकिन, एक दिन हरी साइकिल का सुराग अचानक मिल गया । कोयले से लदी एक नाव लाइसेस्टर नगर के पास की नहर से गुजर रही थी कि नाव को किनारे से बांधने का रस्सा नहर में गिर गया और उसके हुक में फंसा हुआ एक साइकिल का फ्रेम ऊपर चला आया । यह फ्रेम हरी रंग की साइकिल का था । फिर क्या था पुलिस ने उस जगह जाल डालकर साइकिल के दूसरे हिस्से-पुरजों के साथ कारतूस की एक पेटी भी बरामद कर ली, जिसमें सात कारतूस थे ।

हरी साइकिल वकिंघम में बनी एक विशेष मॉडल की थी । साइकिल से सभी मार्क और नंबर मिटा दिये गये थे । लेकिन एक जगह नंबर मिटने से रह गया था, उसके आधार पर पता चला कि यह साइकिल विवियन नामक व्यक्ति ने खरीदी थी । फौज से रिटायर्ड विवियन चेल्टेनहम के स्कूल का अध्यापक था, जो अपनी अपंग मां के साथ लाइसेस्टर में रहता था ।

परिस्थितिगत सारे साक्ष्य विवियन के खिलाफ थे । अतः पुलिस ने विवियन पर बेला की हत्या का मुकदमा चलाया ।

विवियन ने अदालत में दिये बयान में कहा कि मैं उस रात यूं ही घूमने निकला था । मैं इस

इलाके से परिचित नहीं था। रास्ते में मुझे एक लड़की मिली, जो रास्ते में खड़ी हो अपनी साइकिल का मुआइना कर रही थी। उसने मुझे रोककर रिंच मांगी क्योंकि, उसकी साइकिल का अगला पहिया कुछ डगमगा रहा था, लेकिन कोई खास परेशानी नहीं थी। रिंच मेरे पास था नहीं। वहां से हम दोनों साथ-साथ चले। लड़की ने बताया कि वह अपने रिश्तेदार से मिलने गलबी गांव जा रही है। जहां उसे सिर्फ दस-पंद्रह मिनट लगेंगे। इससे मैंने समझा कि शायद, वह मुझे रुके रहने का संकेत दे रही है। शायद, वापसी में उसे इस सुनसान रास्ते में किसी सहयात्री की जरूरत हो। मैं उसका इंतजार करता हुआ घर के बाहर खड़ा रहा। और उसके साथ ही वापस लौट पड़ा। बीच रास्ते में मेरी साइकिल का टायर बर्स्ट हो गया। मैं साइकिल ठीक करता हुआ वहीं रास्ते में रह गया और लड़की अपनी राह चली गयी।

विवियन ने आगे कहा, कि दूसरे दिन जब मैंने उस लड़की की हत्या की खबर पढ़ी तो मैं बेहद डर गया और मैंने साइकिल तोड़कर नहर में फेंक दी।

विवियन के इस बयान को कोई गलत साबित नहीं कर सकता था लेकिन एक तो कोई चश्मदीद गवाह नहीं था। दूसरे उसके खिलाफ हत्या करने का कोई कारण और उद्देश्य भी सिद्ध नहीं किया जा सका। बेला के शरीर पर कोई चोट के निशान भी नहीं थे। लाश के पास मिले कारतूस और नहर से मिले कारतूस का एक जैसा होना महज संयोग था। जूरी ने विवियन को अंततः निर्दोष बरी कर दिया।

आखिर, बेला की हत्या किसने की, यह आज तक रहस्य बना हुआ है। दरअसल, यह एक कहानी है, जिसे शर्लाक होम्स के निर्माता कानन डायल ने गढ़ा था और इसके रहस्य को रहस्य ही रहने दिया। लेकिन इस कहानी के रहस्य को सुलझाने का प्रयास एक अन्य जासूसी कहानी लेखक ट्रूमैन हम्फ्रीज ने अपनी एक कहानी में किया है, जिसके अनुसार इस इलाके में गोली के निशानेबाजी की एक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में इस इलाके के आसपास के बहुत-से युवकों ने भाग लिया। इसमें बहुत ही कठिन निशाने रखे गये जैसे—भागते हुए हिरणों व खरगोशों की परछाइयों के निशाने। ये सारे निशाने प्रतियोगियों के सामने अचानक ही जाते थे। इनमें एक निशाना अजीब था—झाड़ियों के बीच सफेद रंग से पुता एक फाटक और उस पर बैठा एक कौवा। जब यह निशाना सामने आया तो एक नवयुवक सहसा अवाक् रह गया और फिर बेहोश होकर गिर पड़ा। होश आने पर उसने बताया कि एक शाम वह बंदूक लेकर खेत में शिकार खोज रहा था कि उसने रास्ते के उस पार सफेद रंग के पुते फाटक पर एक कौए को बैठे देखा तो उसने निशाना साधकर गोली चला दी। इसी बीच रास्ते में साइकिल पर सवार एक लड़की सामने आ गयी और गोली कौवे को लगने के बजाय उसे जा लगी। तो यह था बेला की हत्या के रहस्य का समाधान। लेकिन यह समाधान वास्तविक नहीं है। बेला की हत्या का रहस्य तो आज तक रहस्य ही बना हुआ है।

—सी. बी. ६६ डी, जी-८ एरिया, राजौरी गार्डन
नयी दिल्ली-११००६४



१. क. **गौतम** बुद्ध के जन्म, बोधत्व-प्राप्ति, धर्मचक्र-प्रवर्तन एवं महापरिनिर्वाण से संबंधित स्थान कौन-से हैं ?

ख. किस घटना को धर्मचक्र-प्रवर्तन कहा गया है ?

२. क. **भारत** किन देशांतरों के मध्य स्थित है ?

ख. भारत का दक्षिणतम बिंदु क्या है ?

३. क. **अकबर** द्वारा शुरू किये गये 'दीन-ए-इलाही' को माननेवाला एकमात्र हिंदू, जो नवरत्नों में था, कौन था ?

ख. अकबर की समकालीन, गोंडवाना राज्य की, महिला शासक कौन थी ?

४. क. **किस** महिला को दो बार नोबेल पुरस्कार मिला है ?

ख. किन विषयों में ?

५. क. **इंगलैंड** और फ्रांस को जोड़नेवाले भूमिगत रेलमार्ग का क्या नाम है ?

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सभी प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प

— संपादक

ख. इसका उद्घाटन कब हुआ था ?

६. क. विगत मार्च में कौन-से उपग्रह प्रक्षेपण यान और कहां से सफल परीक्षण हुआ था ?

ख. उपग्रह का क्या नाम है ?

ग. उपग्रह के क्या उद्देश्य हैं ?

७. क. **देश** में १९९५ में चाय का उत्पादन कितना हुआ ?

ख. सन् २००१ तक देश में कितनी खपत होने का अनुमान है ?

८. क. **इस** वर्ष आयोजित विश्व कप क्रिकेट का खिताब किसने जीता ? किसको हराकर ?

ख. इस टूर्नामेंट में सर्वाधिक रन किसने बनाये ?

ग. भारतीय उप-महाद्वीप के कौन-से देश इस खिताब को जीत चुके हैं ?

९. **इस** वर्ष हेवीवेट मुक्केबाजी में किसने खिताब जीता है ?

१०. **बिड़ला** फाउंडेशन का १९९५ का 'शंकर पुरस्कार' किसे मिला है ?

११. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिये और बताइये कि यह क्या है—



एक वर्ष बाद,आज जब मैं अपनी इंगलैंड यात्रा के बारे में सोचता हूं, तो सबसे अधिक मुझे कारों की याद आती है । खासकर उस कार की, जिसने लगभग मेरे प्राण ही ले लिये थे । आज तक मैं विश्वास नहीं कर पाता हूं कि क्या सचमुच ऐसा हुआ था ।

उस रात मैं अपनी एक मित्र के घर ठहर गया था । दूसरे दिन जब मैं होटल में पहुंचा,

अब बोल्सटर जाने के लिए केवल एक उपाय बचा था, और वह कि किसी कारवाले से लिफ्ट मांगूं । पर मैंने अपने देश में भी किसी से कभी कोई 'लिफ्ट' नहीं मांगी थी । यों भी मैं कुछ-कुछ गंजा हो चला था, और मुझ-जैसे सामान्य व्यक्ति को कोई 'लिफ्ट' देगा, इसमें भी संदेह था । पर मेरा बोल्सटर जाना बेहद जरूरी था । वहां एक बैठक आयोजित की गयी थी

चैक रहस्य-रोमांच

खून पीती रही एक खतरनाक कार

● जोसेफ नेस्वाद्बा

जहां मेरा मित्र ठहरा था और जिसके साथ मुझे बोल्सटर जाना था, तो मुझे पता चला कि वह होटल छोड़कर रवाना हो चुका है । होटलवालों ने मुझे बताया कि उसने अंतिम क्षण तक मेरी प्रतीक्षा की, पर उसे ट्रेन से बोल्सटर रवाना भी होना था । अतः वह चला गया । शायद, वह मुझसे नाराज भी था क्योंकि, उसने मेरे लिए होटल में कोई संदेश भी नहीं छोड़ा था ।

अब शहर में मैं अकेला था । ८० लाख की आबादीवाले उस नगर में मैं किसी को भी नहीं जानता था । मेरी जेब में एक पैसा भी न था । मैं अपनी मित्र के ऑफिस गया, पर वह भी वहां नहीं थी । मैं उसके घर गया, पर वह वहां भी नहीं मिली ।

और उसी में भाग लेने मैं इंगलैंड आया था ।

हारकर मैं एक पैट्रोल पंप के पास खड़ा हो गया । उम्मीद थी कि शायद, कोई तरस खाकर मुझे 'लिफ्ट' दे दे । पर ऐसा लगता था, कारवालों को जैसे मेरे अस्तित्व का पता ही नहीं था । मैं निराश हो चला ।

''क्या आपको लिफ्ट चाहिए ?'' सहसा किसी ने मुझसे पूछा । मैंने घूमकर देखा, एक लंबा, दुबला-पतला, पीले चेहरेवाला व्यक्ति मुझसे ही पूछ रहा था ।

मैं कभी उसे भूल न सकूंगा । न उसे और न उसकी रेसिंग कार को ! वह एक शानदार, अद्भुत कार थी !

मैंने उत्तर दिया, ''हां, बोल्सटर जाना है ।''

पर साथ ही मैं सोच रहा था कि यह व्यक्ति मेरी क्यों सहायता करना चाहता है । मैंने तो पहले कभी उसे देखा नहीं !

उसने मुझे अपनी कार में बैठा लिया । मुख्य राजमार्ग पर आते ही उसने चुप्पी तोड़ते हुए कहा, "आपको वाकई कार की बेहद जरूरत है ?"

"हां, मुझे बोल्सटर पहुंचना ही है किसी तरह । वहां एक बैठक है । मैं उसी के लिए खासतौर पर आया हूं । मुझे समय पर पहुंचना ही है ।"

सहसा उसने गाड़ी रोक दी । और दरवाजा खोलकर बाहर निकलते हुए बोला, "आप कार तो चलाना जानते ही हैं । आप मेरी कार ले जाइए । मुझे इस शहर में अभी कुछ और काम निपटाने हैं । मैं कल बोल्सटर पहुंचकर उसे ले लूंगा ।"

"पर मेरे पास जरूरी कागजात नहीं हैं । मैं तो एक विदेशी हूं ।" मैंने दुर्बल स्वरों में कहा । दरअसल, बायीं ओर कार चलाने में मुझे कुछ भय-सा भी लग रहा था ।

"कोई बात नहीं । इस कार के लिए आपको किसी कागजात की जरूरत नहीं पड़ेगी ।" कहते हुए उसने विपरीत दिशा से आती एक खाली टैक्सी को रुकने का इशारा किया । मैं उसे धन्यवाद दे पाता कि वह टैक्सी में बैठकर रवाना हो गया ।

मैं चकरा गया । उस भले आदमी ने मुझे उस कार की कार्यप्रणाली की जरा भी जानकारी नहीं दी । ऐसी भी क्या जल्दी थी उसे ! क्या उसने किसी से कोई शर्त लगायी थी !

खैर, मैं ड्राइविंग सीट पर बैठ गया । मुझे लगा, जैसे किसी कैद में हूं । कार में केवल दो लोगों के बैठने की जगह थी । उसकी गद्दियां भी विशेष ढंग की थीं । विंड शील्ड के नीचे जमानेभर के छोटे-बड़े डायल थे । कार में चाबी लटक रही थी । मैंने एक्सलेटर दबाया ही था कि कार अचानक गति से दौड़ पड़ी । मुझे लगा, जैसे मैं कोई रॉकेट चला रहा हूं ।

शुरू-शुरू में तो मुझे थोड़ी तकलीफ हुई, पर शीघ्र ही मैं अभ्यस्त हो गया । मैंने यह भी अनुभव किया कि सड़क पर चलनेवाले दूसरे कार-चालक भी मेरी सहायता करना चाहते हैं । मेरी कार देखते ही वे रुक जाते । यहां तक कि मोटर-साइकिल पर सवार पुलिस-सिपाही भी अपनी विशिष्ट शैली में मेरा अभिवादन करते ।

आज सोचता हूं कि मुझे तभी सावधान हो जाना था । रास्ते में ही रुककर उस कार से उतर जाना था, पर उस समय मैं कार चलाता ही रहा ।

अगले एक चौराहे पर तो मैंने एक युवती को भी साथ बैठा लिया । उसका नाम सूसन था । उसकी मां अभिनेत्री थी और उसने उसे आधुनिक शिक्षा भी दिलायी थी । सूसन जल्दी ही मुझसे घुल-मिल गयी । मैं भी उसे पसंद करने लगा ।

लेखक परिचय : जोसेफ नेस्वद्बा को चेक विज्ञान-कथाओं का पितामह समझा जाता है । सन् १९२६ में जन्मे जोसेफ का प्रथम कहानी-संग्रह 'टारजनोवा स्मर्ट' (टार्जनस् डेथ) सन् १९५८ में प्रकाशित हुआ था । अपनी विज्ञान-कथाओं के माध्यम से जोसेफ ने आधुनिक मनुष्य की महत्त्वपूर्ण समस्याओं का हल खोजने का प्रयत्न किया है ।

रास्ते में उसने चाय पीने की इच्छा जाहिर की। राह में मिलनेवाले होटलों को देखकर ही उसके मन में यह खयाल आया होगा। एक जगह रुककर हमने चाय पी। उसने तो व्हिस्की पीने की इच्छा की थी, पर उस समय व्हिस्की उपलब्ध नहीं थी। मेरी जेब में तो एक पैसा भी नहीं था। सोचा, शायद सूसन के पास पैसे हों। पर उससे मांगना ठीक भी नहीं लगा। सोचा, बिल अपने राजदूत के पास भिजवा दूंगा।

हम लकड़ी के एक चौड़े काउंटर के पास खड़े थे। आसपास अन्य कार-चालक भी थे। मेरा सिर कुछ चकरा-सा रहा था। तभी मैंने सुना, कोई महिला कह रही है, 'पूरे इंगलैंड में केवल यही एक कार है, जो मेरी 'कनिंग्घम' का मुकाबला कर सकती है।' मुझे नहीं मालूम था कि वह महिला मुझसे मेरी ही कार के बारे में बात कर रही थी। उसने हम लोगों के लिए भी खाने की बढ़िया चीजें मंगवायीं। वह प्राहा के बारे में प्रायः बहुत कुछ जानती थी। उसे हमारी महिला कार-चालक एलिस्का जुनकोवा के बारे में भी मालूम था, जिसने सन् १९२६ में सिसिलियन तार्गा फ्लोरिया दौड़ लगभग जीत ही ली थी। उसने मुझसे कहा, 'आपके देश में तो अब अच्छी रेसिंग कारें बनती नहीं। आप इस इंग्लिश कार में कैसे?'

मैं उसके इस प्रश्न का उत्तर टाल गया। मैंने उससे कहा कि 'यूरोप में कारों की इस दीवानगी के पीछे मैं 'व्यक्तिवादिता का संकट' ही मुख्य कारण मानता हूं। हर आदमी अपना स्वयं का वाहन चाहता है और यही कारण है कि हर सड़क पर चाहे वह गांव की हो या शहर की, यातायात अवरुद्ध-सा रहता है। इस तरह हर व्यक्ति स्वतंत्र व्यापार, स्वतंत्र बहस, स्वतंत्र मताधिकार चाहता है, पर केवल अपने लिए।' मैंने आगे कहा, 'कारों की यह बाढ़ दरअसल, हमारे समय में व्यक्ति के संकट का लक्षण मात्र है।' पर उसे मेरी बातें शायद समझ में नहीं आयीं। वह फिर कारों की बातें करने लगी। पर मैं भी उन्हें समझ नहीं पा रहा था। मेरे दिमाग में इस होटल का बिल घूम रहा था। हमारे राजदूत को लंबा-चौड़ा बिल चुकाना पड़ेगा और प्राहा में शायद, मुझसे जवाब-तलबी भी हो। पर जब वेटर ने बताया कि वह महिला सारा बिल चुकता कर गयी है, तो मेरी जान में जान आयी। वेटर ने बताया कि उस महिला ने केवल नाम के लिए एक प्रसिद्ध रेसिंग ड्राइवर के से शादी की थी।

हमारे साथ-साथ वह महिला भी होटल से बाहर आयी। वह अपनी गाड़ी में बैठी और मुझे प्रतिस्पर्धा में शामिल होने के लिए संकेत किया। हम लोग साथ-साथ निकले। सौभाग्य से शाम हो चुकी थी और सड़क पर ज्यादा कारें भी नहीं थीं। थोड़ी दूर तक तो मैं उसके साथ-साथ रहा, इसके बाद तो हमने उसे जो पीछे छोड़ा तो कुछ देर बाद उसकी कार का कहीं अता-पता भी नहीं था। पता नहीं, मेरी उस कार में क्या था कि उसने आनन-फानन में उस प्रथम श्रेणी की अमरीकी कार को दौड़ में बहुत पीछे छोड़ दिया था।

सूसन मारे खुशी के मुझसे चिपट गयी। बोली, "हम जीत गये, हम जीत गये।"

मैं बेहद थक गया था। इतना कि कार रोककर सीट पर ही पसर गया। जब नींद खुली

तो रात काफी घिर आयी थी । सूसन ने मेरे दायें पैर को अपनी गोद में ले लिया और जूता उतारकर उसे सहलाने लगी ।

सहसा उसने कहा, ''तुमने मुझे बताया नहीं कि तुम्हारे पैर में चोट लगी है !''

''चोट !''

प्राहा से रवाना होने के पूर्व मैंने अपनी मेडिकल-जांच करायी थी । तब तो मैं पूरी तरह स्वस्थ था । कहीं कोई चोट नहीं थी । पर जब सूसन ने मुझे मेरा तलवा दिखाया, तो मैं चौंक उठा । वहां एक घाव था । उसकी हथेली के बराबर !

''चलो, पहले किसी डॉक्टर के पास चलें । उसे जरूर दिखाओ । तुम्हारा काफी खून बह चुका है !''

''परसों ही मैंने डॉक्टर से जांच करवायी थी । अपने पैरों से मैंने कहीं भी कुछ भी नहीं किया है । भला मेरा खून कैसे बहेगा ?'' यह कहते हुए मैंने उठना चाहा, पर मेरा सिर चकरा रहा था । मैं बड़ी मुश्किल से कार से बाहर आया । मैं सोच रहा था, पैर में घाव कैसे हुआ ? मैंने तो पैर से कुछ किया नहीं । केवल पैर से कार का एक्सलेटर ही दबाता रहा ।

मैंने सूसन से कार का बोनट खोलने के लिए कहा । वह बोली, ''कार तुम्हारी है । उसे कैसे खोलना है, यह मुझे नहीं मालूम । तुम्हीं खोलो ।''

मैंने किसी तरह कार का बोनट खोला । उस कार का एंजिन मुझे कुछ विचित्र-सा लगा । कारबोरेटर के स्थान पर उसमें एक इस्पात का अंडाकार डब्बा था । उसमें से दो मोटी नलियां एंजिन में जा रही थीं । मुझे कुछ समझ नहीं आया । कार के भीतर आकर मैंने अपने जूते से जनरेटर दबाया । पर कार का एंजिन चुप रहा । अब मैंने अपनी अंगुली से एक्सलेटर दबाया तो कार झटके-से आगे बढ़ गयी । हम दोनों के सिर कार की छत से टकरा गये ।

''क्या बात है ?'' सूसन ने पूछा, ''कार क्यों नहीं चल रही है ?'' काफी परेशानी उठाने के बाद मैंने कार की बत्तियां जलायीं और सूसन को अपनी अंगुली दिखायी । उसमें घाव-सा हो गया था—हलकी खरोंच-सा !



"इसे देखो !" मैंने उससे कहा, पर वह कुछ समझ नहीं पायी। मैंने आगे कहा, "यह एक विचित्र कार है। वह अपने चालक की मौत ला सकती है। यह मनुष्य के रक्त से चलती है !"

वह हंसने लगी। उसने मुझे कार-निर्माता का नाम दिखाया। वह स्टीयरिंग व्हील के नीचे एक पीतल की पट्टिका पर खुदा हुआ था। 'जेम्स स्टुअर्ट, पुराना जार्जटाउन, २६'

"क्या तुम सोचते हो कि यह महाशय आत्महत्या करनेवाले को अपनी कार बेचते हैं ! तुम विदेशी लोग ऐसी ही बातों पर विश्वास करना चाहते हो ! मनुष्य के रक्त से चलनेवाली कार ! वाह !" पर सहसा वह चुप हो गयी। उसकी नजर कार के 'इस्पाती दिल' पर पड़ी। उसमें रक्त शिराओं-जैसी छोटी-छोटी नलियां थीं— पारदर्शी ! अब वे लाल, गहरे लाल रंग की हो गयी थीं। ऐसा लगा, जैसे मैं सच कह रहा हूं। मैंने उसे बताया कि किस तरह मुझे यह कार मिली। मुझे पक्का विश्वास था कि विदेशी समझकर ही उसने मुझे यह कार सौंपी थी। मुझे कोई भी नहीं जानता था ! और मेरे न होने का किसी को पता भी नहीं चलता। किसी को फिक्र भी नहीं होती !

हम दोनों कार से नीचे उतर आये।

"पर अब हम क्या करेंगे ?" सूसन ने चिंतित स्वरों में पूछा।

मेरे पास कोई दूसरा विकल्प था ही नहीं, सिवाय इसके कि पास के किसी होटल से अपने मित्र को फोन करूं। मैंने सूसन से कहा, वह किसी और कार में लिफ्ट ले ले।

"नहीं, मैं तुम्हें इस तरह अकेला नहीं छोड़ूंगी।" उसने दृढ़तापूर्वक कहा।

आखिरकार, हम लोग सड़क के किनारे-किनारे तीन घंटे तक पैदल चलते रहे। गाड़ियां आ-जा रही थीं, पर मैंने किसी को हाथ नहीं दिखाया। मैंने सूसन से फिर कहा कि वह मुझे मेरे हाल पर छोड़ दे और खुद किसी कार में लिफ्ट लेकर चली जाए। अंततः वह मान गयी।

सुबह आखिरकार, मैं एक शहर में पहुंचा। अब मैंने समझा कि तेज रफ़्तार बनाये रखने के लिए ही यह सड़क बस्तियों से दूर बनायी गयी थी।

संयोग से इस शहर का नाम 'पुराना जॉर्ज टाउन' ही था। मैं पता लगाते-लगाते २६ नंबर के मकान में पहुंचा।

वहां एक प्रौढ़ महिला मिली। मैंने जेम्स स्टुअर्ट के बारे में पूछा तो उसने बताया, "महाशय, जेम्स स्टुअर्ट की मौत तो बत्तीस वर्ष पहले ही हो चुकी है। तब से यह मकान बंद है। अब यह एक बैंक के आधीन है। इसका कोई खरीदार ही नहीं मिल पा रहा है। बैंक की ओर से मैं ही इसकी देखभाल करती हूं।" फिर उसने एक टूटी खिड़की से घर का विशाल आहाता दिखाया। वहां बहुत-सी कारें रखी थीं— टूटी-फूटी ! उनके आसपास ऊंची-ऊंची घास उग आयी थी।

"जेम्स की कारों का क्या हुआ ?" मैंने पूछा।

वह बोली, "अब उनमें से एक भी कार नहीं दौड़ रही है ! एक समय उन कारों ने हर रेस जीती थी !" उसने पुराने-से टाइपराइटर पर कागज चढ़ाते हुए कहा, "भयानक मंदी ने

हमारी कमर तोड़ दी । फिर ऐसे अमीर लोग भी नहीं रहे, जो विशेष रूप से तैयार की गयी कार खरीदते । जेम्स स्टुअर्ट ने अपनी आखिरी कार, बैंक द्वारा सारी संपत्ति कुर्क करने के एक दिन पहले तैयार की थी । वे उसी में बैठकर जॉर्ज टाउन से जो निकले तो लौटकर नहीं आये ।'' फिर उसने मुझे जेम्स स्टुअर्ट का एक पुराना फोटो दिखाया ।

ओह ! यह तो वही व्यक्ति था, जिसने मुझे वह खतरनाक कार सौंपी थी । हां, चित्र में वह स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट दिखायी दे रहा था, जबकि जब वह मुझे मिला था तो बिलकुल पीला, बीमार-सा था । वह कार ही शायद उसका खून पी गयी थी !

''मैंने जेम्स के बारे में सुना है । और यही नहीं, मैं यह भी जानता हूं कि उसकी आखिरी कार कहां है ?''

वह कुछ चौंक-सी पड़ी । फिर बोली, ''वह एक शानदार कार है, सोलह स्पीड, दो स्पेयर ब्रेकवाली ! उसकी कोई भी बराबरी न कर सका ।''

''पर वह जानलेवा भी है !'' मैंने कहा ।

''इस कार से आप हर रेस में विजयी हो सकते हैं ।'' वह बोली ।

''और मर भी सकते हैं ।'' मैंने उसे बीच में ही टोका ।

वह मेरी बात समझ नहीं पायी । पर मुझे लगा कि वह कार के बारे में शायद, सब-कुछ जानती है । शायद, उसने उसे बनाने में जेम्स की सहायता भी की हो !

''यह रही उसकी चाबियां ।'' मैंने उसे चाबी का गुच्छा देते हुए कहा ।

''आप विदेशी हैं !'' उसने पूछा ।

मैंने उसे अपना परिचय दिया । और फिर फोन पर अपने मित्र से किसी तरह संपर्क कर उसे बताया कि मैं कहां हूं । फिर मैं वहीं उसकी प्रतीक्षा करने लगा ।

इतने में वही 'कनिंग्घम' कारवाली महिला अपनी गाड़ी में आ गयी । मुझे देखते ही वह बोली, ''मैं इसे बेचकर आपकी कार लेना चाहती हूं ।''

मैंने उसे महिला के पास भेज दिया, पर साथ ही उसे चेतावनी दी कि, ''वह कार जानलेवा है । वह जान ले लेगी ।''

''ओह, कितनी दिलचस्प बात है !'' वह बोली ।

''मैं सच कह रहा हूं । एक्सलेटर के जरिए वह चालक का खून पीती है !''

''तब तो फिर और भी अच्छी बात है । आप क्या सोचते हैं कि रेसिंग कार किसी और ईंधन से चलती हैं ! और मैं ! मैं तो बस जीवन में ले मेंस दौड़ एक बार जीतना चाहती हूं । फिर मैं शांति से मर भी सकती हूं । यह कार मुझे विजय दिलाएगी ।''

''पर तुम्हारी जान भी जा सकती है ।'' मैंने फिर चेतावनी दी ।

''इसका कोई महत्त्व नहीं ।'' उसने शांति से उत्तर दिया ।

अब मैं समझ पाया कि सन् १९३२ के बाद क्यों नहीं किसी ने उस कार को लौटाया । वे उस खतरनाक कार को जान-बूझते अपना खून पिलाते रहे, सिर्फ सब्रसे आगे निकल जाने की जिद के लिए ।

भावानुवाद : दु.प्र.शु.

भूतिया महल में मेरा एक दिन

● अनंतराम गौड़



बारह दिन की कड़ी मेहनत से टॉवर की दीवार पूरी करके शाम को मिस्त्री-मजदूर अपने घर चले गये । सबेरे आये तो देखा, दीवार गिरी पड़ी है । दीवार फिर बनायी गयी । अगले दिन वह फिर गिरी हुई मिली । खैर, दीवार फिर बनायी गयी और वह तीसरी बार भी गिर गयी ।

मिस्त्री-मजदूर तो हैरान-परेशान थे ही, टॉवर ऑव लंदन नामक महल को बवानेवाला इंगलैंड का किंग विलियम-प्रथम गुस्से से आग-बबूला हो रहा था कि बार-बार दीवार बनाने में पैसा व्यर्थ ही बरबाद हो रहा है, जरूर मिस्त्रियों की गलती है । उसने चीफ मिस्त्री को बुलाकर डांटा-फटकारा कि आखिर दीवार गिर कैसे जाती है ?

चीफ मिस्त्री क्या बताता कि दीवार बार-बार कैसे गिर जाती है ?

विलियम ने मारे गुस्से के चीफ-मिस्त्री की छुट्टी कर दी और दूसरा रख लिया । उसने भी खूब मेहनत और ठोक-परखकर, अपनी तरफ से खूब मजबूत दीवार बनवायी लेकिन, रात में टेम्स नदी के सन्नाटे को तोड़ती हुई, भयंकर आवाज के साथ, दीवार फिर ढह गयी ।

अब तो विलियम का माथा ठनका, जरूर कोई-न-कोई अजीब बात है । उसने जांच-पड़ताल करायी, तो उसने जो बातें सुनीं उनसे और परेशान हो उठा । निर्माण-स्थल के पास ही अस्थायी निवास बनाकर रहनेवाले कुछ

इंगलैंड का राजमहल 'टॉवर ऑव लंदन' जितना आकर्षक और भव्य है, उतना ही भयानक । राजशाही की बर्बर क्रूरता और राजनीतिक षड्यंत्रों का यह गढ़ सदियों से भूत-प्रेत और चुड़ैलों का अड्डा रहा है । पर्यटकों के लिए खोल दिये गये इस महल को दिन में ही देखा जा सकता है । प्रस्तुत है लेखक द्वारा दिन में ही देखे इस भूतिया महल का इतिहास ।

मजदूरों ने बताया कि रात को दीवार के पीछे की पहाड़ी—टॉवर हिल से एक परछायी-सी उठती है, जो धीरे-धीरे लंबी-चौड़ी होती जाती है । फिर वह चलकर दीवार के पास आती है और एक ही धक्के में दीवार को ढहा देती है ।

'ये सब बकवास है, मजदूर बेहूदा बातें करते हैं— भूत भी कहीं होते हैं ? जाओ, दीवार फिर से बनवाओ ।' विलियम ने आदेश दिया हालांकि, वह अंदर ही अंदर भूतों की बात से डर भी रहा था ।

दीवार फिर बनकर तैयार हो गयी तो चीफ मिस्त्री ने विलियम से प्रार्थना की कि आज रात वह दीवार के समीप रहकर दीवार की निगरानी करें और स्वयं देखें कि भूत होता है या नहीं ?

'हां, हम रात को देखेंगे कि कैसे दीवार गिरती है ? कैसे आता है भूत ?' विलियम ने कहा और अपने अमले के साथ टेम्स नदी के दूसरे किनारे पर पड़ाव डालकर बैठ गया ।

बैठे-बैठे आधी रात बीत गयी । एक तो रात का सन्नाटा दूसरे, अधबना महल और दीवार खंडहर जैसी लग रही थी, जो अपने आप में दहशत पैदा करती थीं... तभी पिछली पहाड़ी से एक परछाई प्रकट हुई, धीरे-धीरे वह लंबी-चौड़ी होकर दैत्याकार हो गयी । फिर वह लंबे-लंबे डग भरती हुई आयी और जमकर एक लात मारी कि दीवार घोर गर्जना करती हुई धड़ाम से गिर पड़ी ।

जान बचाकर भागा राजा

डर के मारे लोगों की घिघियां बंध गयीं । जान बचाकर दौड़ पड़े । भाग खड़े होनेवालों में विलियम भी पीछे नहीं था । वह भी ताबड़तोड़ भागा । उसके लिए जो तंबू लगाया गया था, उसकी रस्सी में उसका पैर ऐसा उलझा कि वह पटखनी खाकर चित्त हो गया और तत्काल ही बेहोश ।

महारानी ने दूर-दूर से भूत-प्रेत विशेषज्ञ, झाड़-फूंक और जादू-टोने करनेवाले बुलाये । वे कई दिनों की कोशिशों के बाद विलियम को ठीक-ठाक कर पाये । उन्होंने साफ-साफ बता दिया कि जिस जगह महल बनवाया जा रहा है, वहां पर टॉवर हिल के एक भूत का साया है । उन्होंने यह भी बताया कि टॉवर हिल पर बहुत समय पहले टॉमस वैकिट नामक व्यक्ति का कत्ल कर दिया गया था, उसी का भूत यहां रहता है । अब इसका इलाज यही है कि भूत के लिए एक चर्च बनवा दो और नाम रख दो— संत टामस वैकिट चर्च । तब वह शायद, शांत हो जाए और उपद्रव करना छोड़ दे ।

विलियम ने भूत के लिए चर्च बनवाने का संकल्प कर फिर से दीवार बनवानी आरंभ कर दी । अबकी बार दीवार नहीं गिरी और वहां पूरा का पूरा महल बन गया, जिसका नाम है टॉवर ऑव लंदन । बहुत ही शानदार है यह महल ।

लेकिन कहानी अभी खतम नहीं हुई, इस महल में पलने और बढ़नेवाली भूतों की अतृप्त आत्माओं की, अशरीरी काली शक्तियों की ।

भूतों ने छुड़ा दिया महल

टॉवर ऑव लंदन नामक यह शाही महल तेरहवीं सदी में बनकर तैयार हो गया । राज-परिवार निवास भी करने लगा । आज जो राजमहल है— बकिंघम पैलेस, जिसमें राज-परिवार के सदस्य रहते हैं, के बनने से पहले ब्रिटेन के छह सौ वर्षों का इतिहास इसी टॉवर ऑव लंदन महल में बना और बिगड़ा है ।

यह महल टॉवर ऑव लंदन जितना शानदार और भव्य है, उतना ही दुर्भाग्यपूर्ण । इसमें राज-परिवार के बसने के बाद से लगातार एक के बाद एक दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं, पागलपन के कारनामे और भूत-प्रेतों की मौजूदगी बढ़ती ही गयी ।

विलियम जब सपरिवार इस महल में आ बसा, तो इसके बाद भूत-प्रेतों का सिलसिला इस तरह शुरू हुआ कि एक रात एक चीख सुनायी दी, जैसे कोई किसी का गला घोंट रहा हो । घुटते गले की आवाज के बंद होते ही सन्नाटा छा गया । चौकीदारों की टुकड़ी की टुकड़ी दौड़ पड़ी उस ओर जिधर से चीख आयी थी । मशालों की रोशनी में छान-बीन शुरू हुई, तो महल के पिछले हिस्से में राज-परिवार की एक प्रमुख महिला बेहोश पड़ी पायी गयी ।

जब उसे होश आया तो चीखी— 'भूत... भूत' और काल-कोठरियों की ओर इशारा करती हुई फिर बेहोश हो गयी । दरअसल, इस महल के साथ कारावास भी जुड़ा हुआ था, जिसमें खतरनाक अपराधी रखे जाते थे और उन्हें फांसी व क्रूर यंत्रणाएं दी जाती थीं ।

तेरह नंबर की काल-कोठरी

आखिरकार, उस महिला ने बताया कि तेरह नंबर की काल-कोठरी में से एक कैदी निकला, जो उसे सम्मोहित कर महल के पिछवाड़े ले गया और फिर गला घोंटने लगा ।

तेरह नंबर की काल-कोठरी देखी गयी । बाहर से मजबूत ताला लगा हुआ था । सींखचे भी बहुत मजबूत थे, जिन्हें तोड़कर बाहर निकलना किसी के लिए संभव नहीं था । उसके अंदर का कैदी भी उसमें मौजूद था । उसे निकालकर पहचान कराने के लिए महिला के सामने लाया गया, तो बोली, 'यह नहीं है । उसकी आंखें नीली थीं, कद ऊंचा था, नुकीली मूंछें और कलमें छोटी थीं ।'

कैदियों की पड़ताल हुई । कोई भी कैदी इस शक्ल-सूरत का नहीं था ।

एक बूढ़े पहरेदार को याद आया, बोला, 'अरे, ऐसी हुलियावाला तो कैदी लियोनार्द द कोनेर था, जो तेरह नंबर में बंद था, लेकिन उसकी तो बीस वर्ष पहले इसी कोठरी में हत्या कर दी गयी थी ।'

उस समय ब्रिटेन के सिंहासन पर हेनरी था । हेनरी को तत्काल याद आ गया— लियोनार्द द कोनेर । हेनरी ने ही उसका कत्ल करवाया था— राज-परिवार की एक युवती से प्रेम करने

क जुर्म में ।

बाद में तो यह तेरह नंबर की काल-कोठरी का भूत लियोनार्द और भी उग्र हो उठा । एक बार जब वह राज-परिवार की एक लड़की को हाथ पकड़े हुए ले जा रहा था, तो पहरेदार ने उसे रोकना चाहा तो वह भेड़िया बनकर उस पर टूट पड़ा और चींथकर उसे मार डाला ।

भूतों की बढ़ती आबादी

लियोनार्द का ही भूत नहीं, बल्कि और भी कई भूत पैदा हो गये, जो तरह-तरह की हरकतें करते । पुरुषों को मार डालते, राज-परिवार की औरतों से दुराचार करते । हर तरह के अत्याचार करने लग गये थे ये भूत । और करते भी क्यों न ? टॉवर ऑव लंदन भी तो क्रूर हत्याओं का गढ़ बन चुका था । हर काल-कोठरी में या तो कोई कैदी एड़ियां रगड़-रगड़कर मरता या फिर मार दिया जाता । असमय ही मौत पायी मृतात्माएं राजा और राज-परिवार से प्रतिशोध लेने के लिए रातभर महल में भटकती रहतीं ।

एक बार तो हेनरी-अष्टम पर ही भूत सवार हो गया, जिसकी वजह से उसने रात को सोते समय अपने पास सो रही तीन रानियों के सिर ही धड़ से अलग कर दिये ।

ये तीनों रानियां भी चुड़ैलें बनकर भूतिया समुदाय में शामिल हो गयीं और उन्होंने हेनरी का सोना हराम कर दिया । वह नींद में चीखता-चिल्लाता और फिर बदहवास-सा महल में दौड़ने लगता । दरअसल, वे तीनों भयंकर काली बिल्लियों की शक्ल में उस पर झपटती थीं । इसी बीच हेनरी के दो छोटे-छोटे राजकुमारों की गरदनें भी सोते-सोते काट डाली गयीं ।

हारकर हेनरी-अष्टम ने इस महल से अपना बोरियां-बिस्तर समेटा और हैम्पटन कोर्ट में जा बसा । लेकिन टॉवर ऑव लंदन वैसे-का-वैसा ही रहा । दरअसल, इंगलैंड की राजशाही की क्रूरता और शाही षड्यंत्रों का भी तो यह गढ़ ही रहा । लेडी जेन रो को इसी में कैद करके रखा गया । रानी ऐनी बोलीन को भी एकाएक सोते से उठाकर काल-कोठरी में डाल दिया गया । एक किंग को भी भूखा-प्यासा दीवारों से सिर फोड़कर मरना पड़ा । ड्यूकों और लार्डों से लेकर रानी और राजाओं की भूत-प्रेतों की आड़ में राजनीतिक हत्याएं भी खूब हुई हैं इस महल में । रानी ऐलिजाबेथ की हत्या भी राजनीतिक षड्यंत्र के तहत उसके नौकरों ने रात को उसे जगाने के बाद की । एलिजाबेथ ने भी बर्बरता बरतने में कोई कमी नहीं की थी । उसने सर वाल्टर रेले को इसी महल की काल-कोठरी में तेरह साल कैद करके रखा था और उसका जुर्म क्या था ? यही कि उसने शादी करने से पहले महारानी से अनुमति क्यों नहीं ली थी ।

आज बीसवीं सदी के वैज्ञानिक युग में भूतों के अस्तित्व को नकारनेवालों के लिए यह महल एक चुनौती है । प्रेत-विद्या विशेषज्ञ चाहें तो वहां जाकर ऐसे भूतों से मिल सकते हैं, जो अब सैकड़ों साल बूढ़े हो चुके हैं और रात को निकलकर महल में टहलते रहते हैं । ब्रिटेन के पर्यटन विभाग ने अब इसे रंग-रोगन करा कर पर्यटकों के लिए खोल दिया है, वह भी रात में नहीं केवल दिन में ।

—सी-२-बी/११२ सी, जनकपुरी,
नयी दिल्ली-११००५८

यह महीना और आपका भविष्य

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष— उच्चाधिकारियों के सहयोग से लंबित कार्यों की पूर्ति होगी। पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति से प्रसन्नता होगी। धार्मिक स्थान के प्रवास से आनंदानुभूति होगी। संपत्ति कार्यों में धीमी उन्नति होगी। शत्रु पक्ष गुप्त षड्यंत्र कर छवि बिगाड़ने का प्रयास करेगा।

वृषभ—राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी। आजीविका संबंधी वांछित परिवर्तन से प्रसन्नता होगी। सामाजिक नेतृत्व का अवसर मिलेगा। परिवारजनों के सहयोग से नवीन कार्यों की पूर्ति होगी। आध्यात्मिक सत्संग अथवा प्रवास का अवसर आएगा।

मिथुन— आजीविका की दिशा में पदोन्नति अथवा वांछित पदस्थापना होगी। पारिवारिक विषमता से भावनात्मक खिन्नता होगी। कार्यों की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा। साझेदारी के कार्यों में व्यर्थ पीड़ा होगी। परोपकारी कार्यों में सावधानी रखें।

कर्क— आजीविका की दिशा में नवीन दायित्वों की अधिकता होगी। उच्चाधिकारियों से संतुलित संभाषण करें। नवीन कार्यों के लिए प्रवास, दौड़-धूप तथा व्यर्थ व्यय होंगे। शत्रु पक्ष कार्यों में अवरोध उपस्थित करेगा। निकटजनों के सहयोग वांछित लाभ मिलेगा। बुद्धि कौशल तथा चातुर्य से शत्रु पक्ष का शमन होगा।

सिंह— पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि होगी। प्रियजन की अस्वस्थता से चिंता होगी। रक्त संबंधियों से व्यर्थ विवाद होगा। आध्यात्मिक रुझान बढ़ेगा। सत्संग, तीर्थाटन अथवा रहस्य संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी। आर्थिक परिवर्तनों में अकारण अवरोध उपस्थित होंगे। निकटजनों के असहयोग से भावनात्मक पीड़ा का सामना करना होगा।

कन्या— व्यावसायिक कार्यों में अनपेक्षित धनलाभ होगा। उच्चाधिकारियों का वांछित सहयोग मिलेगा। नौकरी में वांछित परिवर्तन अथवा पदोन्नति के अवसर मिलेंगे। पारिवारिक कार्यों में उदासीनता रहेगी। प्रियजनों से व्यर्थ विरोधाभास होंगे। संपत्ति कार्यों में व्ययों की अधिकता होगी। अव्यवस्थित दिनचर्या से अस्वस्थता का उदय होगा

तुला— संपत्ति कार्यों में वांछित निर्णय से उत्साह वृद्धि होगी। प्रवास की अधिकता से दिनचर्या अव्यवस्थित होगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। धार्मिक अथवा सामाजिक कार्यों में नेतृत्व मिलेगा। नवीन मित्रों का समागम लाभदायी होगा। उच्चाधिकारियों की प्रसन्नता

ग्रह स्थितिः सूर्य १४ जून से मिथुन में, मंगल ४ से वृषभ में, बुध ७ से वृषभ में, २९ से मिथुन, गुरु धनु में, शुक्र ४ से वृषभ में, शनि मीन में, राहु कन्या में, केतु मीन में, हर्षल नेपच्यून मकर में, प्लेटो वृश्चिक राशि में भ्रमण करेंगे।

से प्रभाव में वृद्धि होगी । परिवार संबंधी सुखद सूचना से प्रसन्नता होगी । परोपकारी कार्यों की अधिकता होगी । साझे के कार्य सावधानी से करें ।

वृश्चिक— आत्मविश्वास तथा साहस से अपूर्ण कार्यों की पूर्ति होगी । शत्रुपक्ष से सुलह होगी । जीवनसाथी अथवा उनके संबंधियों से धनलाभ होगा । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों की पूर्ति से प्रसन्नता होगी । राजकीय कार्यों में धीमी उन्नति होगी । पारिवारिक अथवा सामाजिक कार्यों की अधिकता होगी । प्रवास में स्वास्थ्य संबंधी चिंता होगी ।

धनु— पारिवारिक वातावरण उत्साहदायी होगा । निकटजनों के सहयोग से शत्रु पक्ष का पराभव होगा । सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों में क्रियाशीलता बढ़ेगी । उदर अथवा रक्त विकारों से पीड़ा होगी । स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें । निकटजन के सहयोग से लंबित धन मिलेगा । प्रवास से विशिष्ट कार्य की पूर्ति होगी । मासांत में उच्चाधिकारियों से चले आ रहे मतांतर दूर होंगे । विलासितादायी वस्तु पर व्यर्थ व्यय होगा ।

मकर— पारिवारिक कार्यों की पूर्ति होगी । आकस्मिक धनलाभ से लंबित समस्या का समाधान होगा । संपत्ति कार्यों में शत्रु पक्ष अवरोध उपस्थित करेगा । उच्चाधिकारियों से व्यर्थ विरोधाभास बढ़ेंगे । नवीन योजनाओं में जोखिम नहीं लें । परोपकारी कार्यों से पीड़ा होगी । मासांत में आर्थिक अस्थिरता की अधिकता होगी । कार्यों की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा ।

कुंभ— मास में श्रम-साध्य उपलब्धि होगी । निकटजनों से व्यर्थ विरोधाभास बढ़ेंगे । स्वजनों के सहयोग से संपत्ति समस्या का समाधान होगा । शत्रु पक्ष गुप्त षड्यंत्र कर छवि बिगाड़ने का प्रयास करेगा । विशिष्ट व्यक्ति से सहयोग मिलेगा । जिससे नवीन योजनाओं में प्रगति होगी । आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी । जोखिमपूर्ण कार्यों से धनलाभ होगा । परिवार में धार्मिक अथवा मांगलिक कार्य की पूर्ति से उत्साहवृद्धि होगी ।

मीन— मास मध्यम फलदायी होगा । कार्यों की अधिकता होगी । शत्रु पक्ष पर धैर्य तथा संयम से विजय मिलेगी । तीर्थाटन अथवा प्रवास में व्यर्थ पीड़ा होगी । स्वजनों के सहयोग से संपत्ति अथवा वाहनादि का सुख मिलेगा । निकटजनों के कारण सामाजिक विरोधाभास का उदय होगा । साझेदारी कार्यों को टालना हितकर होगा । शत्रु पक्ष का उच्चाधिकारियों पर प्रभाव बढ़ेगा ।

पर्व और त्योहार

१ जून, ९६ स्नानदान व्रत की ज्येष्ठी पूर्णिमा, ४ जून, ९६ संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, ८ जून, ९६ शीतलाष्टमी, ११ जून, ९६ योगनी एकादशी स्मार्त, १२ जून, ९६ योगिनी एकादशी वैष्णव, १३ जून, ९६ प्रदोष व्रत, १५ जून, ९६ स्नानदान श्रद्धादि की अमावस्या, १६ जून, ९६ स्नानदान अमावस्या, १७ जून, ९६ मल मास आरंभ (आषाढ़ शुक्ल पुरुषोत्तम मास), २४ जून, ९६ श्री दुर्गाष्टमी, २५ जून, ९६ हरि जयंती, २७ जून, ९६ पुरुषोत्तमी एकादशी, २८ जून, ९६ प्रदोष, ३० जून, ९६ व्रत पूर्णिमा ।

चारों तरफ वीराना और गहरा सन्नाटा था । जरा ऊपर देखने पर बेगनबोलिया के लाल सुर्ख फूल दिखायी देते थे, जो सारे टीलों को अपनी लपट में लपेटे हुए । वहां अंधेरा था क्योंकि,छतनारों की गहरी-दोहरी हरी जालियां थीं । एक उनींदा-सा शोर था पतझड़ का, जो झाड़ियों को छूता हुआ भीतर आता था और कैला घाटी के सन्नाटे को और भी रहस्यमय बना रहा था ।

मलाज खंड में मेजर लोरेंस का वह तीसरा दिन था । भू-सर्वेक्षण विभाग के एक आला

अनसुलझा रहस्य

पुराना मंदिर और पीली चील

● डॉ. कैलाश नारद

अफसर थे । अपनी पत्नी रेबेका तथा पुत्र बिली के साथ वह सन् १८९१ के उजले दिनों में सतपुड़ा के बियावानों में डेरा डाले हुए थे । वह बालाघाट और छिंदवाड़ा के बीच फैली धरती के गर्भ में छिपी तांबे की खानों का पता लगाने आये थे । उनके दल में अट्ठाइस खिदमतगार थे । जो खुदाई करते, खुदी मिट्टी का परीक्षण करते,रिपोर्ट तैयार करते । उनका खास टहलकार सुदर्शन प्रसाद पांडेय रिपोर्ट के सारे कागजातों को ब्योरेवार सहेजकर रखता जाता ।

उस अपराह्न मेजर लोरेंस पहाड़ी के दूसरे छोर पर थे, जहां जमीन का एक हिस्सा अजीब-सी आकृति में ऊपर उठा हुआ था । टीला चारों तरफ से घास और अमलतास के पेड़ों से घिरा हुआ । धूप में सुलगता-सा, मेजर को उस टीले से जो नजर आया, उसकी तरफ वे हैरानी से देखते रह गये । अमलतास के उन पेड़ों के भीतर एक पुराना मंदिर था । मंदिर के भीतर आंगन था । मेजर लोरेंस मंदिर में दाखिल हुए ।

न कोई दीपदान, न ही कोई शिलालेख और न भीतर से आती कोई आवाज । सिर्फ खाली और सूने मंदिर की सायं-सायं... और तभी उनकी आंखें वेदी पर पड़ीं । मूर्ति के बिलकुल सामने, एक पीली चील वहां बैठी हुई उन्हें घूर रही थी । मेजर असमंजस से चील की तरफ देखते रहे कि अचाक उन्हें लगा जैसे चील ने अपने डैने समेटे हों ।

पीछे पैरों की आहट हुई । मेजर ने मुड़कर देखा । उनका खास टहलकार सुदर्शन प्रसाद पांडेय था, जो अचरज से उनकी तरफ देख रहा था ।

"यस पांडे...", मेजर ने कहा ।

"आप यहां पर, साहब... इस मंदिर में..." ।

"यह मंदिर...," मेजर लोरेंस बोले, "यह तो अद्भुत जगह हैं... और काले पत्थर की यह मूर्ति," वे वेदी पर प्रतिष्ठित एक नारी मूर्ति की तरफ इशारा कर रहे थे । लगभग दो फुट ऊंची थी वह प्रतिमा । प्रतिमा की आंखें असाधारण रूप से बड़ी थीं । माथे पर सिंदूर लगा हुआ

था ।

प्रतिमा बीजासेनी देवी की थी, जिसकी मलाज खंड में बड़ी मान्यता थी । जेठ की हर पूनम को उसका अभिषेक होता था ।

मेजर लारेंस मुग्ध भाव से प्रतिमा को देखते हुए बोले, ''आश्चर्यजनक रूप से सुंदर है । शिल्प का एक बेहतरीन नमूना है यह प्रतिमा ।''

आप ठीक कह रहे हैं, साहब यह हम सब की देवी हैं ।'' पांडेय ने बताया ।

''इसे मैं अपने साथ ले जाऊंगा,'' मेजर ने कहा ''बजाय इस बीरान और पुराने मंदिर के, लंदन के मेरे बंगले में यह ज्यादा अच्छी लगेगी ।''

''नहीं साहब, इससे आपका अनिष्ट हो जाएगा ।'' पांडेय ने उन्हें चेतावनी दी, ''बेहतर यही होगा कि मंदिर की किसी चीज से आप छेड़छाड़ न करें ।''

हलकी-सी सरसराहट हुई और मूर्ति के सामने बैठी वह चील झपट्टा मारकर उड़ गयी । हाथ बढ़ाकर मेजर लारेंस ने बीजासेनी की वह प्रतिमा उठा ली । पांडेय चाहकर भी उन्हें रोक नहीं पाया । उसका चेहरा फक् पड़ गया । मेजर उसकी तरफ देखकर मुसकराया, बोला, ''डरो मत, पांडे, मुझे कुछ भी नहीं होगा, तुम सब हिंदुस्तानी, दरअसल, बहुत ज्यादा डरपोक होते हो ।'' और मूर्ति लेकर वह बाहर निकल आये ।

वह चील उड़ी नहीं थी । वह मंदिर के गुंबद पर जा बैठी थी ।

उस रात मलाज खंड में धूल भरी आंधी उठी । धूल और अंधड़ के बाद तारे निकल आये थे । चारों ओर रात का सन्नाटा । कभी-कभी कोई पक्षी उड़कर तंबुओं पर फड़फड़ाने लगता ।

अपने तंबू में लेटे मेजर लारेंस ने करवट बदली । हलकी और नामालूम-सी सरसराहट हुई कि उनकी नींद खुल गयी । वे फौज में रह चुके थे । उनकी नींद कच्ची थी । उनके पास के बिस्तर पर उनकी पत्नी सोयी हुई थीं । बिस्तर पर



उसी क्षण मंदिर के गर्भगृह से हंसी का ठहाका सुनायी दिया । बेहद पैशाचिक थी वह हंसी । मेजर का खून ही जैसे सर्द हो गया । उन्हें अपने हाथ-पांव ठंडे होते जान पड़े ।

लेटे-ही-लेटे उन्होंने आसपास का जायजा लिया । कोई भी नहीं था । उन्होंने करवट बदली और निश्चिंत होकर फिर से आंखें मूंद लीं ।

तभी एक चीख से उनकी आंखें खुल गयीं । उनकी पत्नी चीखी थीं । बेहद पीड़ा-दायक थी वह चीख । वह बुरी तरह से तड़प रही थी । तभी मेजर की निगाह पलंग के नीचे पड़ी । घास में कोई जीव था, उसकी आंखें चमक रही थीं । वह गेंहुअन सांप था ।

मेजर की देह में कंपकंपी झूटने लगी । बदहवास-से वे पत्नी की तरफ लपके । तभी टहलकार और अर्दली मशालें, लाठियां और बल्लम लिए आ पहुंचे ।

रेबेका की दाहिनी बांह से खून बह रहा था । वहां गेंहुअन के दातों के निशान थे । जहर बड़ी तेजी से देह में पैबस्त होता जा रहा था । वे निढाल हो गयी थीं ।

सुबह होते-न-होते रेबेका ने दम तोड़ दिया ।

पत्नी की मौत के आघात से मेजर लारेंस जैसे अपनी सुधबुध खो बैठे । रेबेका की लाश के पास वह स्तब्ध से बैठे रह गये— चारों तरफ बिखरे असबाब और नक्शों-दस्तावेजों के बीच । बीजासेनी की वह प्रतिमा भी उसी असबाब में थी— मृत रेबेका लारेंस के बिलकुल सिरहाने ।

फिर मेजर ने अपने आंसू पोंछे । हिम्मत जुटाकर वे बाहर आये । मजदूरों से कहा, "वापसी की तैयारी करो, यहां का काम खतम ।"

फैसला किया गया कि रेबेका की मृत देह छिंदवाड़ा के ईसाई कब्रिस्तान में दफन की जाएगी । छिंदवाड़ा का फासला यहां से सत्तर मील था, लगभग पूरे दिन का सफर ।

तभी सुदर्शन प्रसाद पांडेय हाजिर हुआ । माथे पर चंदन पुता था । उसने लाल सिंदूर का टीका लगाया हुआ था । हाथ में ताजा जवाकुसुम के फूल थे । वह बड़े अदब से बोला, "साहब, मेरी मानें तो एक बिनती करूं ?"

मेजर ने उसकी तरफ देखा ।

"छिंदवाड़ा जाने से पहले मेमसाब को उस मंदिर में ले चलें ।"

"व्हाट !" दुख से कातर मेजर पांडेय पर फट-से पड़े, "मुर्दा रेबेका को मजाक बना रखा है तुमने... गोली मार दूंगा तुमको,.. ।"

'आप भले ही मेरी जान ले लें," पांडेय दृढ़तापूर्वक बोला, "लेकिन एक दफा मेरा कहा मानकर भी देखें । आपको निराश नहीं होना पड़ेगा... मुझे यकीन है ।"

मेजर कुछ देर तक सोच में डूबे रहे, फिर बुदबुदाये, "ठीक है, चलो ।"

पूर्वाह्न की धूप में मंदिर के बाहर चबूतरे पर

रख दी गयी रेबेका की लाश ।

भीतर गर्भगृह में सन्नाटा था । बेदी खाली थी । वहीं एक कोने में एक बूढ़ा बैठा था । उजाले से भीतर अंधेरे की तरफ जाने से मेजर को वह बूढ़ा नजर नहीं आया, लेकिन वे उसे बखूबी देख पा रहे थे । उसकी उम्र सत्तर-पचहत्तर साल की थी । कमर में पुरानी-सी धोती पहन रखी थी उसने । बाकी देह नंगी थी । पूरे चेहरे पर झुर्रियों का मकड़जाल-सा फैला हुआ था । गले में रुद्राक्ष की माला थी, दोनों हाथों में तांबे के कड़े ।

अपने हाथ से जवाकुसुम सुदर्शन प्रसाद पांडेय ने सूनी बेदी पर रखे और फिर अपने दोनों हाथ जोड़कर आंखें बंद कर लीं । फिर आंखें खोलने के बाद उसने बूढ़े से कुछ कहा । बूढ़े की आंखें चमकने लगीं । अपना सिर हिला दिया उसने ।

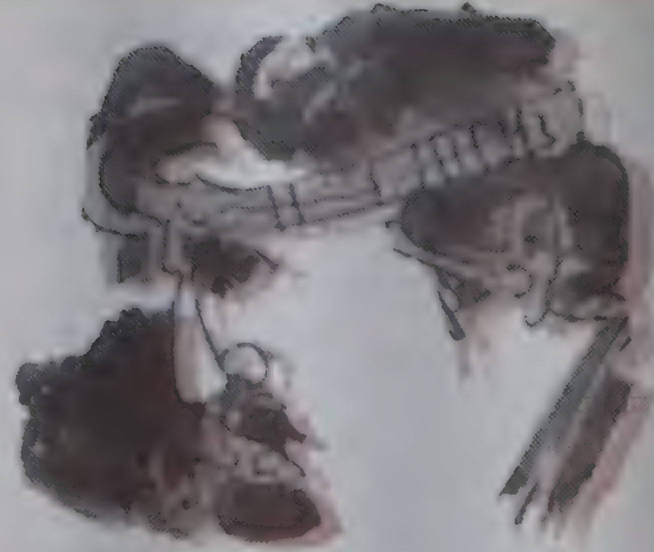
"आइये, साहब," पांडेय ने मेजर से कहा, "बाहर चलते हैं ।"

रेबेका का शव अब तक नीला पड़ चुका था । उसके इर्द-गिर्द भीड़ इकट्ठा हो गयी थी । बस्ती के तमाम वाशिंदे उस हुजूम में थे ।

वह बूढ़ा चबूतरे के नीचे बैठकर रेबेका के शव को गौर से देख रहा था । मेजर ने देखा, उसका चेहरा उन लमहों बेहद गंभीर हो गया था ।

मेजर को तभी लगा, रेबेका के शव के पास से कोई छाया गुजरकर मंदिर के भीतर गयी है ।

फिर उस बूढ़े ने अपनी गरदन हिलानी शुरू की । वह अपने होठों में कुछ बुदबुदा रहा था । धीरे-धीरे उसकी आंखें खुलती गयीं । उसके चेहरे पर एक मंद मुसकराहट आयी, जैसे कोई



बोझ हट गया हो । और फिर, वह नीरव, खाली आंखों से मेजर की तरफ देखने लगा । उस निगाह में क्या था, मेजर समझ नहीं पाये ।

अचानक बूढ़े ने रेबेका की तरफ अपनी गर्दन मोड़ी, निश्चेष्ट रेबेका की ओर । लेकिन निश्चेष्ट कहां थी रेबेका की देह ? उसका मृत शरीर में स्पंदन पैदा हो गया था ।

मारे विस्मय के मेजर की आंखें विस्फारित हो आयीं । हुजूम भी मारे भय के पीछे सरकने लगा । उसी क्षण मंदिर के गर्भगृह से हंसी का ठहाका सुनायी दिया । बेहद पैशाचिक थी वह हंसी । मेजर का खून ही जैसे सर्द हो गया । उन्हें अपने हाथ-पांव ठंडे होते जान पड़े ।

अब रेबेका की लाश पूरी तरह से ऐंठने लगी थी ।

और तभी हुआ वह तमाशा ।

अचानक एक चील जो पिछले दिन मंदिर के गर्भगृह में देखी गयी थी, वही पीली चील अमलतास के पेड़ से उतरी और रेबेका के पास बैठ गयी । उसके पंजों में एक सांप लिपटा हुआ था— जहरीला गेंहुअन । चील ने वह सांप रेबेका के ऊपर फेंका और उसके आसपास मंडराने लगी ।

सांप ने अपना फन फैलाया और रेबेका की

इनके भी बयां जुदा-जुदा

खुला देखा जो दरवाजा तो गम पहलू में आ बैठे
यह कैसा घर सजाया है आके देख तो जाओ

—सुल्तान राही

वह बात सारे फसाने में जिसका जिक्र न था
वह बात उनको बहुत नागवार गुजरी है

—फैज अहमद फैज

मुझको अपना बना के छोड़ दिया
क्या असीरी है क्या रिहाई है

—जिगर मुरादाबादी

आप उसूलों की दुहाई का सहारा लेकर
आप जो चाहें कहें आपको आजादी है

—दिवाकर 'राही'

यह आईना भी बात न पूछेगा आपकी
इस बार अपने अक्स से कटकर तो देखिए

—सिमाब सुल्तानपुरी

कुछ मैं ही जानता हूं जो मुझ पर गुजर गई
दुनिया तो लुत्फ लेगी मेरे वाक्यात में

—मुस्तफा जैदी

जिसको तूफान से उलझने की हो आदत मोहसिन
ऐसी कश्ती को समुंदर भी दुआ देता है

—मोहसिन नकवी

दार तक तो आ गया जौके नियाजे बंदगी
और कहिए आपके किस काम आ सकता हूं मैं

—शम्स गाजियाबादी

ख्वाहिशें जिंदा हैं सीने में मेरे कुछ इस तरह
जिस तरह कागज दबा हो फाइलों के बीच में

—जकी तारिक

कत्ल होते दिखायी देते हैं
कातिलों का पता नहीं चलता

—जमील हापुड़ी

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

दायीं बांह में दांत गड़ा दिये उसने । फिर किंचित ठिठका वह और बूढ़े की तरफ अपना फन उठाया ।

बूढ़े ने अपनी गर्दन हिलायी ।

सांप ने अपना फन फिर से रेबेका की बांह से सटा लिया । अब वह अपना खुद का जहर चूस रहा था ।

जैसे कोई इंद्रजाल-सा घटित हो रहा हो, ऐसे विस्मय-विजड़ित से मेजर खड़े रह गये थे ।

और फिर, रेबेका ने अपनी आंखें खोल दीं । उन आंखों में बेहोशी तैर रही थी, लेकिन मृत्यु की छाया से मुक्त थीं वे ।

अपना जहर-चूसते-चूसते सांप शिथिल-सा हो गया था । तभी पीली चील ने अपने डैने फड़फड़ाये । गेंहुअन को अपनी पंजों में समेटा और उड़ गयी ।

सुदर्शन प्रसाद पांडेय की आंखों में चमक-सी झलझला आयी । वह मेजर लोरेंस की तरफ मुखातिब हुआ और बोला, "आपने देवी की प्रतिमा को उठाकर अच्छा नहीं किया, साहब !"

"मैं अपनी करतूत पर शर्मिंदा हूं, पांडे," मेजर ने खेद प्रगट किया, "उसे मैं मंदिर में ही वापस रख दूंगा ।"

" अब कोई फायदा नहीं साहब," पांडेय बोला, "अपने स्थान से उखड़ जाने के बाद बीजासेनी अपवित्र हो गयी... अब आप उसे अपने पास ही रखे रहें ।"

('जॉर्ज रसेल 'द हाइलैंड्स ऑव सेंट्रल इंडिया' से साभार एक प्रसंग)

—**हुकमचंद नारद रोड, तिलक भूमि, जबलपुर-४८२००२**

मई का महीना । चिलचिलाती धूप में तन-बदन दोनों बेचैन । गरमी की छुट्टियां बिताने मैं अपनी बहन के यहां नेपाल आयी हुई थी । राप्ती अंचल में दांग जिले के बनगई गांव में घर है मेरी बहन का । एक दिन दोपहर को अकेली ऊपरी मंजिल के कमरे में लेटी हुई, पंखा झलते हुए पसीने को सुखाने की कोशिश कर रही थी कि नीचे से आवाज आयी— 'भइली रानी ।' बहन बाहर गयी हुई थी । लिहाजा, मुझे उठना पड़ा । खिड़की से झाकंककर देखा । नीचे थारु जनजाति की दो औरतें खड़ी हैं और मुझसे तंबाकू मंगा रही हैं ।

मुझे तो पता नहीं था तंबाकू कहां रखी है सो



भुक्त-भोगी लखिका

किसने पकड़ा था मुझे ?

● रूचि सिंह

मैंने उन्हें कहा, ' मुझे मालूम नहीं कि तंबाकू कहां है ।'उन्हें लगा कि मैं उन्हें तंबाकू देना नहीं चाहती, इसलिए बहाना बना रही हूं । वे जिद करती रहीं कि मैं उन्हें तंबाकू दूं ।

उनकी जिद से मुझे गुस्सा आ गया और मैंने उन्हें बुरी तरह डांट दिया । उन्हें भी मेरा डांटना बुरा लगा और वे खिसयायीं मुझे घूरती हुई, साथ ही कुछ बुदबुदाते हुई चली गयीं ।

उनका जाना था कि मेरा बुरा हाल । मैं बदहवास-सी उन औरतों के पीछे दौड़ पड़ी । मैंने अपने कपड़े फाड़ डाले । साड़ी उतार फेंकी । अड़ौस-पड़ौस के लोगों ने मुझे इस हालत में देखा तो मुझे पकड़ने के लिए दौड़ पड़े।

मैं दो दिन तक केवल झूमती रही । न कुछ खाया, न पीया । बस, यही रट लगाये रही कि मैं मैला खाऊंगी । इसी बीच गांव के औझा ने दो दिन तक घर में पूजा-पाठ किया । झाड़-फूंक की, काले मुरगे की बलि दी । मुझे तो यह सब बातें बाद में पता चलीं । तंत्र-क्रिया द्वारा उस भूतनी को भी बुलाया, जिसे मेरे पीछे लगाया गया था । उन दोनों औरतों ने मेरी डांट-फटकार से चिढ़कर मुझसे बदला लेने के लिए एक भूतनी मेरे पीछे लगा दी थी, तभी मैं गंदी चीजें खाने के लिए मांगती रही थी ।

हालांकि, मैं तंत्र-मंत्र और जादू-टोने में विश्वास नहीं करती लेकिन, इस घटना के बाद विश्वास करना ही पड़ता है ।

— १/२७४, जनकपुरी, नयी दिल्ली-११००५८

अंधकार, बर्फ और घाटी का बीहड़

• कर्नल श्याम सिंह

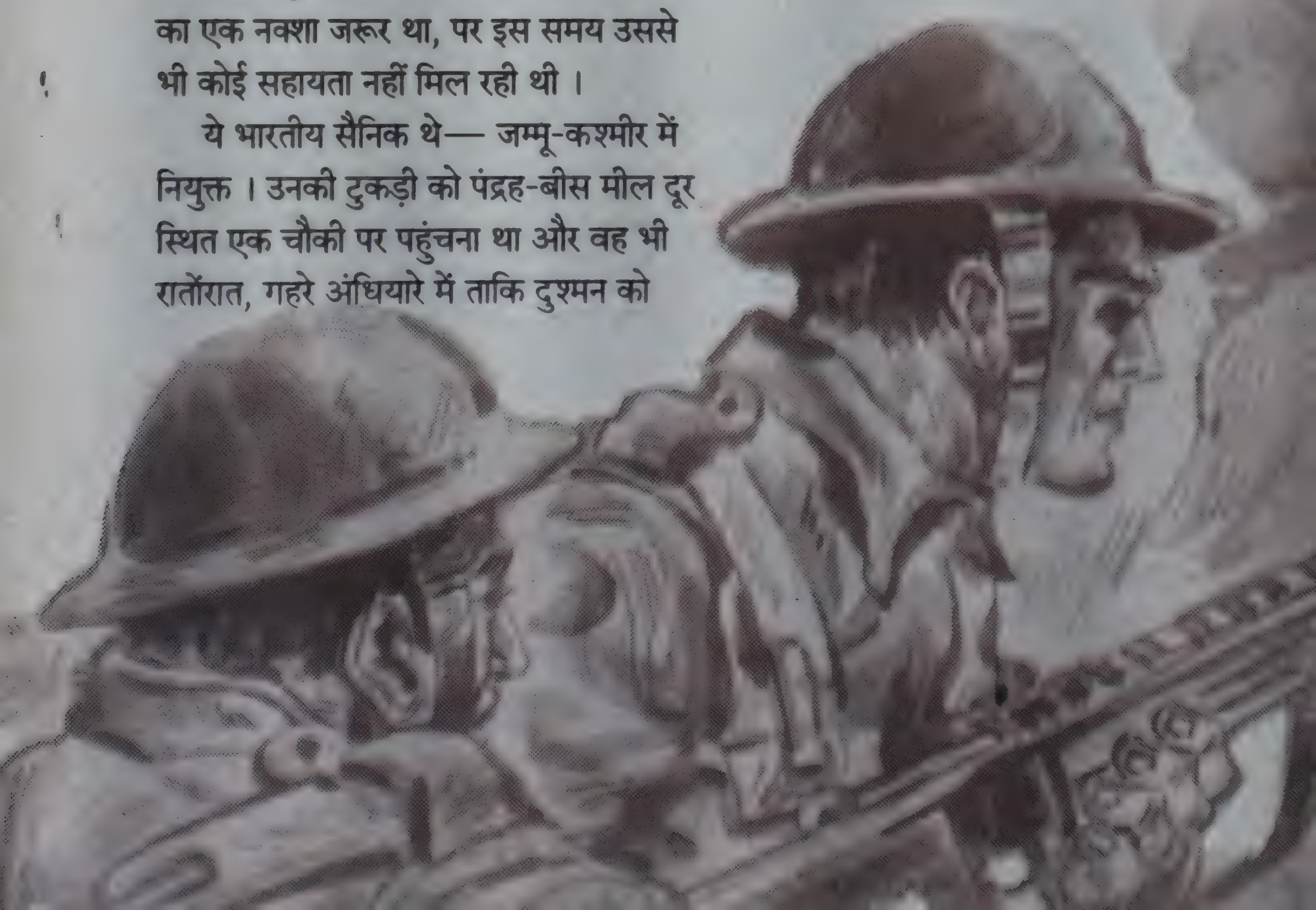
चारों ओर अंधकार छाया हुआ था । रात का सन्नाटा उस अंधकार को और भी भयावह बना रहा था । इस सन्नाटे को रह-रहकर भंग कर रही थी, पच्चीस-तीस सिपाहियों के कदमों की आहट । सिपाही सावधान थे, पर साथ ही परेशान भी । अंधकार में उन्हें सही रास्ता ही नहीं सूझ पा रहा था ।

उनकी टुकड़ी के नायक के पास इस क्षेत्र का एक नक्शा जरूर था, पर इस समय उससे भी कोई सहायता नहीं मिल रही थी ।

ये भारतीय सैनिक थे— जम्मू-कश्मीर में नियुक्त । उनकी टुकड़ी को पंद्रह-बीस मील दूर स्थित एक चौकी पर पहुंचना था और वह भी रातोंरात, गहरे अंधियारे में ताकि दुश्मन को उनके अभियान का पता न चल पाये ।

वायरलैस सेट पर कमांड पोस्ट से उनका निरंतर संपर्क बना हुआ था । टुकड़ी के नायक ने वरिष्ठ अधिकारियों को अपनी समस्याओं से अवगत करा दिया था । रात के अंधकार में सही रास्ता सूझ ही नहीं रहा था । उधर ठंड भी कड़ाके की थी । कुछ दूर आगे जाने पर जैसे उनका रास्ता ही बंद हो गया था । चारों ओर बर्फ-ही-बर्फ थी । टुकड़ी के नायक ने अपनी घड़ी पर नजर डाली । तीन बज रहे थे । कुछ ही घंटों बाद सुबह हो जाएगी । सुबह के प्रकाश में शायद रास्ता ढूंढ़ने में सहुलियत भी हो जाए । पर ! पर सुबह का प्रकाश उनके लिए रक्तपात का संदेश भी ला सकता था ।

हो सकता है, दुश्मन की गश्त देती टुकड़ी आसपास ही हो । उसी से मुठभेड़ हो जाए और सारी योजना पर पानी फिर जाए ।



उन्हें रात के अंधकार में ही अगली चौकी तक पहुंचना ही था ।

पर कैसे ? समस्या यही थी !

टुकड़ी का नायक चिंता में डूब गया । उसके साथी सिपाही भी चिंतित हो उठे ।

अंधकार में एक ही स्थान पर गहरे सोच में डूबे पच्चीस-तीस निर्भीक सिपाही ।

वायरलेस पर कमांड पोस्ट से पूछा गया, 'कब तक चौकी पर पहुंचोगे । सुबह होने में ज्यादा देर नहीं ।'

टुकड़ी के नायक ने अपनी परेशानी बतायी, फिर विश्वासभरे स्वर में वचन दिया, 'सुबह के पहले हम लोग जरूर चौकी पर पहुंच जाएंगे ।'

कहने को तो उसने कह दिया, पर वास्तविकता तो कुछ और होने जा रही थी ।

तभी सभी लोग, सारे सिपाही, टुकड़ी का नायक, सांस थामकर सावधान हो गये ।

उस निर्जन प्रदेश में कोई फौजी आ रहा था— अकेला ।

सिपाही कदमों की आहट से ही जान गये थे कि वह कोई फौजी ही है ।

पर अकेला क्यों ?

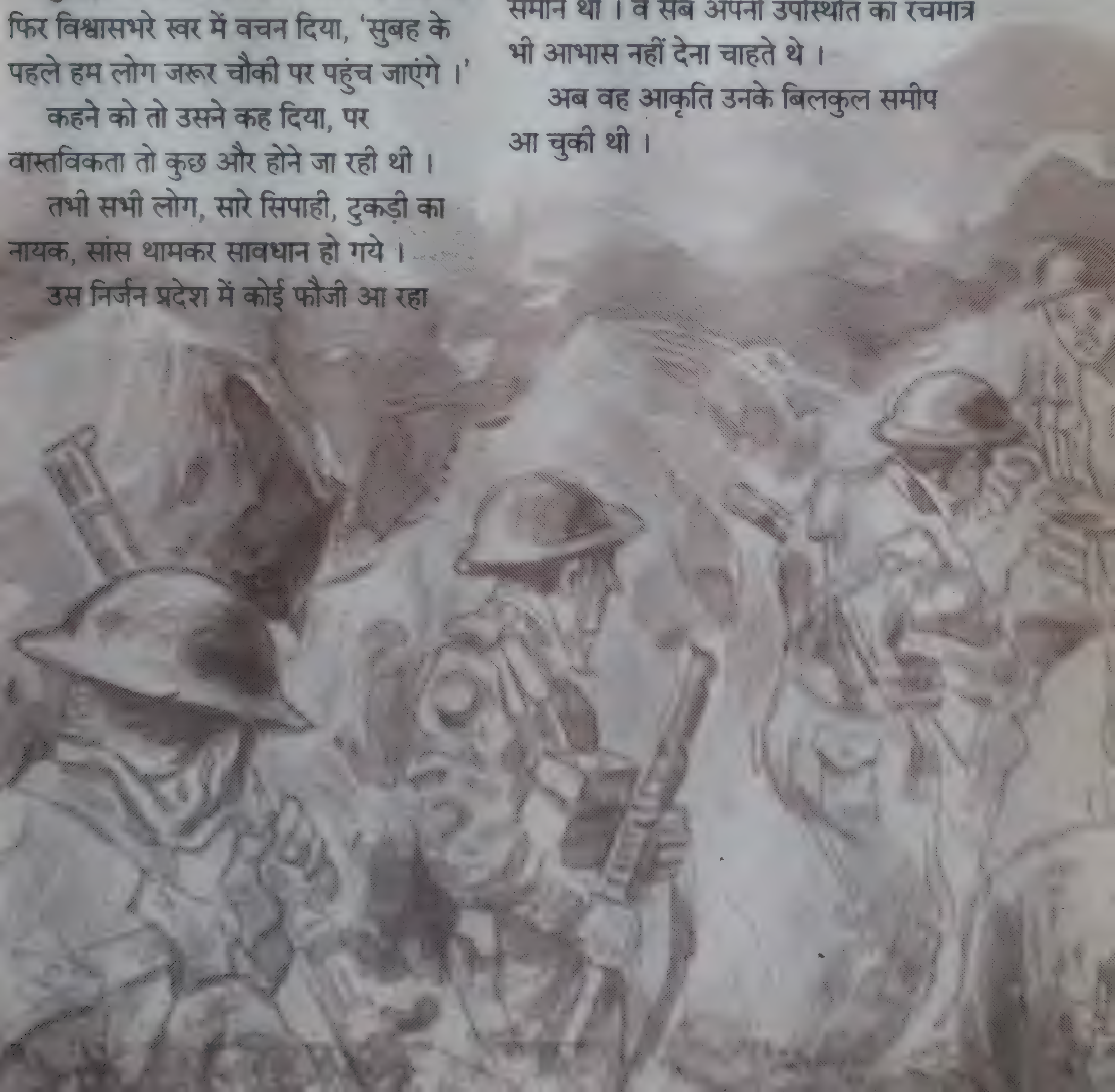
क्या दुश्मन का कोई भटका हुआ सिपाही है ?

सभी चौकन्ने हो उठे । हाथों में हथियार संभाल लिये ।

कदमों की आहट निरंतर पास आती जा रही थी, उन्हीं की ओर !

अब सांस लेना भी मुसीबत को न्यौतने के समान था । वे सब अपनी उपस्थिति का रंचमात्र भी आभास नहीं देना चाहते थे ।

अब वह आकृति उनके बिलकुल समीप आ चुकी थी ।



उसके साथ और कोई नहीं था।

दूसरे शब्दों में उससे कोई तात्कालिक भय नहीं था।

आकृति एक थी, और वे पच्चीस-तीस !

सहसा टॉर्च की तेज रोशनी पानी की धार-सी उस आकृति पर जा पड़ी।

पर इस अचानक, चकाचौंध प्रकाश का उस पर रंचमात्र भी प्रभाव न पड़ा। वह उसी तरह उनकी ओर बढ़ती रही।

टुकड़ी के नायक ने ही नहीं, सभी सिपाहियों ने देखा, उनके सामने एक भारतीय लेफ्टिनेंट खड़ा था। तेजस्वी चेहरा ! सुगठित शरीर !

कश्मीर की पहाड़ियों में वे सब खो से गये थे। उन्हें सुबह होने के पहले अगली चौकी तक हर हालत में पहुंचना था। और इधर वे सब रास्ता ही भूल गये थे। चारों ओर गहरा अंधकार और बर्फ ही बर्फ ! उन्हें हताशा और निराशा घेरने लगी थी। तभी...

टुकड़ी का नायक कुछ कहता कि वह अपरिचित लेफ्टिनेंट बोल उठा, "आगे का रास्ता बेहद खतरनाक है। खाइयां हैं। बर्फ के कारण सब छिप गयी हैं। आप मेरे साथ आइए। मैं आपको रास्ता दिखा दूंगा। अगली चौकी पर ही तो जाना है न आप सबको !"

टुकड़ी के नायक ने उत्तर दिया, "हां ! सुबह के पहले ही वहां पहुंचना जरूरी है।"

"हां, मुझे मालूम है। कल 'एक्शन' हुआ था। अपनी भी क्षति हुई, पर दुश्मन का तो जबर्दस्त नुकसान हुआ। फिर भी उस चौकी को कुमुक की बेहद जरूरत है। अच्छा हुआ आप लोग आ गये।" उस लेफ्टिनेंट ने कहा। फिर क्षणभर रुककर वह बोला, "मेरे पीछे-पीछे आइए। मैं इधर कई दिनों से पोस्टिंग पर था। इसलिए चप्पा-चप्पा जाना-पहचाना है !"

वह आगे-आगे चलने लगा। उसके ठीक पीछे नायक था।

लेफ्टिनेंट उससे बातें करने लगा। उसने बताया कि कल दुश्मन ने भीषण गोलाबारी की थी। कई लोग मारे गये ! हैवी कैज्यूल्टी हुई दोनों ओर ! फिर उसने नायक से पूछा, "क्या आपने कभी मृतात्मा देखी है ?"

नायक के मन में उस समय तरह-तरह के विचार आ-जा रहे थे। उसे समय पर चौकी पहुंचने की चिंता थी। सुबह की योजनाएं बनानी थीं। पता नहीं, कल क्या हो ? शायद, सुबह से ही गोलाबारी शुरू हो जाए ! वह इन्हीं चिंताओं में डूबा था। साथ ही कभी-कभी आगे-आगे चल रहे युवा लेफ्टिनेंट का भी उसे खयाल आ जाता।

'कौन है यह ? 'नाम भी नहीं बताया। पता नहीं किस यूनिट में है।' वह उससे यह सब पूछने ही वाला था कि उस लेफ्टिनेंट ने यह अप्रत्याशित प्रश्न कर दिया, "क्या आपने कभी मृतात्मा देखी है ?"

नायक ने वातावरण को हलका करना चाहा। "देखी तो नहीं, पर शायद कल तक मैं स्वयं मृतात्मा बन जाऊं।"

लेफ्टिनेंट ने कहा, "मृतात्माएं होती हैं। पर सभी मृतात्माएं बुरी नहीं होतीं। वे संकट में पड़े लोगों की मदद भी करती हैं।"

नायक क्षणभर के लिए चौंक उठा।

संकट में लोग !

मृतात्माओं द्वारा सहायता !

फिर एक प्रश्न कौंधा—

'क्या यह कोई मृतात्मा है ?' पर दूसरे ही क्षण उसे अपने विचार पर ग्लानि हुई ! उसने बातचीत का विषय बदलने की कोशिश की । उससे उसका नाम, उसकी यूनिट पूछी ।

लेफ्टिनेंट उत्तर टाल गया । बोला, "चौकी तो पास ही आ गयी है । इधर पौ भी फटनेवाली है ! बस, चौकी पर ही आपको सब पता चल जाएगा ।"

सचमुच, कुछ देर बाद वे अपनी चौकी के बिलकुल करीब थे । सुबह के झुरपुटे में उनकी अभ्यस्त आंखें उसे देख पा रही थीं । एक भारी बोझ उनके दिल-दिमाग से उतर गया था ।

उस लेफ्टिनेंट ने कहा, "वह देखिए, सामने चौकी है । आप लोग सही-सलामत समय पर पहुंच गये, खुशी है । जाइए ।"

"अरे, आप भी तो साथ चल रहे हैं ।" टुकड़ी के नायक ने कहा ।

"नहीं, चौकी पर नहीं जाऊंगा, माफ कीजिएगा ! कुछ और जरूरी काम है ।"

टुकड़ी का नायक कुछ कहता कि लेफ्टिनेंट मुड़कर जाने लगा !

टुकड़ी का नायक, सारे सिपाही उसे लौटता देखने लगे । कई प्रश्न थे उन सबके मन में । सहसा, उन सबका शरीर सिहर-सा गया । सुबह के प्रकाश में लेफ्टिनेंट की पीठ पर उनकी नजर पड़ी । ठंड से बचाव के लिए पहनी गयी उसकी फौजी जर्सी में एक बड़ा-सा छेद था । मानो, गोली लगी हो ! आसपास का हिस्सा काला-सा पड़ गया था । शायद, जलने से या गोली के घाव के कारण बहे खून के जमने से !

टुकड़ी का नायक स्तब्ध खड़ा था । उसके साथियों की भी यही हालत थी ।

सहसा टुकड़ी के नायक को कुछ देर पहले ही राह में कही गयी लेफ्टिनेंट की बातें याद आयीं कि— 'सभी मृतात्माएं बुरी नहीं होतीं । वे संकट में पड़े लोगों की सहायता करती हैं ।'

तो ! ये ! क्या लेफ्टिनेंट कोई मृतात्मा थी ।...

वे सब चौकी पर पहुंचे । टुकड़ी के नायक ने चौकी के कमांडर को सारा घटनाक्रम कह सुनाया । वह चौंक पड़ा ! "नहीं ! ऐसा नहीं हो सकता ।" फिर उसने उस लेफ्टिनेंट का संक्षिप्त परिचय देते हुए नायक को बताया कि कल के एक्शन में उसे पीठ पर गोली लगी थी । वह बच नहीं पाया । कल शाम ही तो हमने उसका अंतिम संस्कार किया है ।

नायक का गला भर आया । बोला, 'सर वही था ! वही हमारी सहायता के लिए आया । यहां तक वही हमें पहुंचा गया । सर, उसने मुझसे कहा था कि चौकी पर पहुंचने के बाद सब पता लग जाएगा । वही हुआ, सर !'

क्षणभर रुककर उसने पूछा, "सर, यह संभव है क्या ? क्या मृतात्माएं होती हैं ! वे सहायता भी करती हैं ? कुछ समझ में नहीं आता ।"

कमांडर बोला, "विश्वास तो मैं भी नहीं करता ! पर पिछली रात जो हुआ, उसका क्या रहस्य !" ●

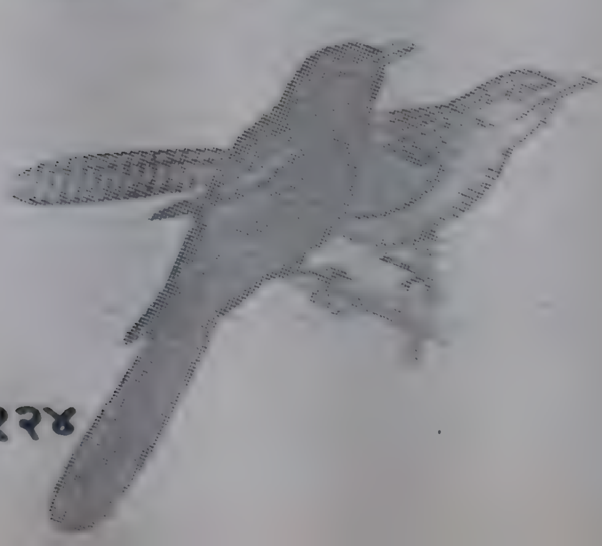
(युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा द्वारा प्रकाशित, पं. आचार्य श्री राम शर्मा एवं डॉ. प्रणव पंड्या लिखित, 'पिता हमारे अदृश्य सहायक पर आधारित)



कोयल

कोयल (एशियन कोयल) कौवे जैसे कद-काठी का पक्षी होता है । कुल लंबाई ४३ सेंटीमीटर, पूंछ लंबी होती है । नर कोयल का रंग काला चमकीला और आंखें रतनार, चोंच व पंजे पीले-हरे । मादा कोयल चीतल भूरी । 'कुअ्...कुअ्...' आरोही मधुर आकुल स्वर में बोलता है ।

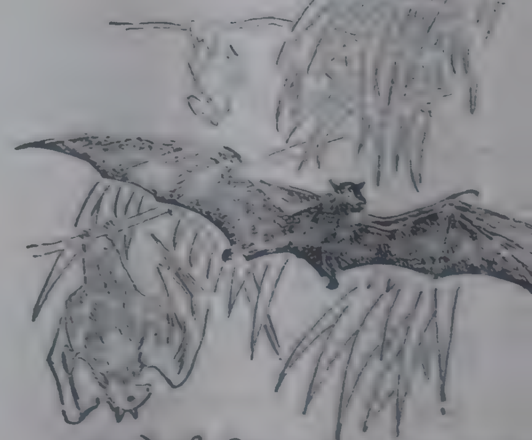
सरदी के मौसम में दक्षिण भारत में रहता है और बसंत में प्रजनन के लिए उत्तर में आ जाता है, इसीलिए यह कहा जाता है कि कोयल बसंत ऋतु में ही कूंकती है । यह चालाक इसलिए माना जाता है कि अपने अंडे सेने और शिशु-पालन का काम कौवों से कराता है । अधिकांश पक्षी अपने अंडों को उसके रूप-रंग से पहचानते हैं, लेकिन कोयल और कौवे के अंडे आकार और रंग में प्रायः एक-जैसे होते हैं—पीताभा लिये हरित धूमिल रंग पर कत्थई धब्बे । कौवे के अंडे बस जरा से छोटे होते हैं । कौवों को अंडे सेने में सोलह-सत्रह दिन लगाते हैं और कोयल के अंडों को सेने में तेरह-चौदह दिन । फलस्वरूप बड़ा शावक आहार का अधिकारी होने के नाते फलता-फूलता है । मादा कोयल की मदद के लिए नर कोयल कौवों को आक्रमण के लिए अपने पीछे लगाकर दूर ले जाता है ।



चमगादड़

चमगादड़ अपने पक्षों की मदद से उड़ता अवश्य है, किंतु यह पक्षी न होकर स्तनपायी है । इसकी मादा अंडे न देकर शावकों को जन्म देती है, उनको दूध पिलाती है । इसके पक्ष परों से नहीं वरन् चमड़े की पतली झिल्ली के बने होते हैं । इसके रीढ़ की हड्डी वाले शरीर के चमड़े पर बाल होते हैं । चमगादड़ अंधे भी नहीं होते, यद्यपि वे रात्रि के अंधकार में, अपने ध्वनि रेडार के माध्यम से अपने भोजन कीड़ों या अन्य वस्तुओं का पता लगाते हैं ।

कीट-भक्षी चमगादड़ अधिकतर रात में निकलते हैं तथा फलाहारी दिन में । ये घोंसले नहीं बनाते, इन्हें तो आराम करने के लिए कोई अंधेरी गुफा सरीखे स्थान में (सुरक्षा के लिये) उल्टा लटकने के लिये एक 'पकड़' भर चाहिये ।



उड़न-लोमड़ी: विश्व का विशालतम चमगाद



अश्वगंधा

अश्वगंधा सोलानासिए कुल की झाड़ी है, सका वैज्ञानिक नाम विदानिआ सोम्निफेरा है । की ऊंचाई एक-डेढ़ मीटर तक होती है । तने र शाखाओं पर सूक्ष्म, ताराकार रोम होते हैं । दस मीटर लंबे, अंडाकार तथा रोमयुक्त होते । इसके फूल एक सेंटीमीटर व्यास ले, हलके पीले रंग के गुच्छों में लगते हैं । ल छह मिलीमीटर व्यास का गोल और कना लाल रंग का होता है ।

चिकित्सा के लिए अत्यंत उपयोगी अश्वगंधा उपयोग आयुर्वेदिक औषधियों में काफी या जाता है । इसकी जड़ों से निर्मित षधियां क्षय रोग, दुर्बलता तथा गठिया रोग रामवाण मानी जाती हैं । इसमें स्वापक (नींद ने वाले) तथा स्वास्थ्यवर्धक गुण होते हैं । ह मूत्रल यानी पेशाब बढ़ाने वाली भी है । ड़ों को पीस कर फोड़ों, जख्म व सूजन पर गाने से लाभ मिलता है ।

अश्वगंधा की जड़ों और पत्ते एंटीबायोटिक र एंटी-बैक्टीरियल होते हैं ।

इसके वंश का एक अन्य पौधा 'आकरी' दानिआ कोअगुलेंस, पंजाबी नाम जीरा) उत्तर-पश्चिमी भारत में बहुतायत में ा जाता है । इसका फल पाचन व जिगर ारों में बहुत उपयोगी है ।



गलगल

गलगल का वृक्ष, जिसे अंगरेजी में यलो सिल्क कॉटन ट्री कहते हैं, पतझड़ी वनों में पाया जाता है । यह गरमियों में ठंडक, हरियाली तथा सुनहली आभा देता है । यह वृक्ष पांच मीटर ऊंचा तथा तीस सेंटीमीटर व्यास के चिकने तथा भस्मी तने वाला होता है । अप्रैल में इसकी सारी पत्तियां झड़ जाती हैं, किंतु हथेली के बराबर सुनहले फूलों से यह लदा रहता है । मई में आठ से तीस सेंटीमीटर लंबी, हथेली के आकार की फैलाव वाली चिकनी तथा चमकदार पत्तियां इसमें झूलने लगती हैं । जून-जुलाई तक पांच से आठ सेंटीमीटर लंबी अंडाकार फलियां तैयार हो जाती हैं ।

गलगल या गनियार के बीज से तेल तथा रंग निकाला जाता है, तत्पश्चात बची हुई खली उर्वरक का काम करती है । इस वृक्ष की गोंद खांसी में फायदा करती है तथा अनेक दवाएं बनाने के काम आती है । बीज को चने की तरह भूनकर भी खाया जाता है । इसके पुष्पों की चाय ताजगी देती है । इसकी छाल की बनी रस्सी बहुत मजबूत होती है ।

—विक्रम

तनाव से मुक्ति

• डॉ. सतीश मलिक

पटाखों से डर

ज., शिवनी (म. प्र.) : २३ वर्षीय एम. एस-सी. की छात्रा हूं । समस्या है कि पटाखों से बहुत डर लगता है । चलाना तो दूर उन्हें जलते हुए भी नहीं देख सकती । दिवाली के समय जब अन्य बच्चे इस कारण छेड़ते हैं, तब आत्महत्या तक के विचार आते हैं । कुछ ही महीनों में शादी होनेवाली है । इसलिए काफी चिंतित हूं कि यह मेरी क्या बीमारी है तथा इसका उपचार क्या है । कृपया शीघ्र मार्गदर्शन करें ।

आपकी बीमारी का नाम 'फोबिया' है । यह बच्चों में तो स्वाभाविक तौर पर होती है, परंतु यदि बचपन में किसी कारणवश या किसी दुर्घटना के घटने के कारण या मां-बाप के अधिक संरक्षण व लाड़-प्यार के कारण बाहरी दुनिया की चुनौतियों से आपको जूझना नहीं आता तो इसके इलाज के लिए आपको वास्तव में मनोचिकित्सक द्वारा 'विहेवियर थैरेपी' की चिकित्सा की आवश्यकता है ।

आप पहले घर में ही स्वयं इस प्रकार कोशिश करें । अपने परिवार के लोगों के साथ तथा किसी ऐसे व्यक्ति के साथ जिस पर आपको विश्वास हो, के साथ स्वयं ही एक हल्का-सा पटाखा जलाएं और इस प्रकार स्वयं को इस डर से बाहर निकालें । धीरे-धीरे बड़े पटाखे पर पहुंचें और अधिक मात्रा में इस प्रकार प्रतिदिन के प्रयास से स्वयं ही पटाखों के डर से बाहर आ सकेंगी । साथ ही अपने को सामाजिकता की ओर बढ़ाएं । और आत्मनिर्भरता की ओर कदम रखें । इस प्रकार के प्रयास से आप फोबिया से निकल पाएंगी ।

शादी से दुःख

पुष्पा पाण्डेय, अकबरपुर (उ. प्र.) : २१ वर्षीय एम. ए. की अध्ययनरत छात्रा हूं । १० महीने पहले मेरी शादी हुई । शादी के दिन पता नहीं क्यों मुझे बहुत दुःख हुआ । इतने दुःख की अनुभूति मुझे पहले कभी नहीं हुई थी । छोटी-छोटी बात पर गुस्सा आना तथा चिड़-चिड़ी होती जा रही हूं । शारीरिक कमजोरी महसूस होती है । चक्कर आता है । हल्का सिर दर्द बना रहता है । हृदय की धड़कन बहुत तेज हो जाती है । लगता है जान ही निकल जाएगी । ध्यान एकाग्र नहीं होता । पढ़ने बैठती हूं तो मन इधर-उधर भटकता है । नींद-सी आने लगती है । लगता है मेरी जिंदगी में खुशी कभी नहीं आएगी । बहुत परेशान हूं । डॉक्टर साहब कृपया कोई उचित मार्ग मुझे सुझायें ।

शादी जीवन की एक बहुत बड़ी घटना है । इसका महत्त्व आपके लिए औरों से भिन्न रहा है । लगता है आपको स्वयं इस बारे में ज्ञान नहीं कि यह घटना आपके

दुखद व तनावपूर्ण क्यों रही ? क्या
को सैक्स संबंधी समस्या है अथवा
ह के बाद नये वातावरण में ढालने में
मर्थ रहीं । या आप अभी और
यनरत ही रहना चाहती थीं । या
ाप के दबाव से शादी की । यह आप
ारपूर्वक चिंतन करें क्योंकि तनाव का
ण ढूढ़ना उसके हल पाने के लिए
श्यक है । आपने जिन शारीरिक व
सिक लक्षणों का उल्लेख किया है,
नावग्रस्त स्थिति या अवसाद के हैं ।
अंतर्द्वंद्व के रहते ऐसे लक्षण प्रायः
यी देते हैं । अभी आपकी इस
स्थिति ने रोग का रूप धारण नहीं
। इसलिए आप स्वयं ही
विश्लेषण द्वारा अपने को नयी स्थिति
लने का प्रयास कर इस स्थिति से
सकती हैं ।

पत्नी से ऐसा व्यवहार

जय कुमार, हसपुरा : २० वर्षीय बी. ए.
त्र हूं । समस्या यह है कि जब भी मेरी
कसी महिला या लड़की पर पड़ती है, तब
द्धा से नतमस्तक हो जाता हूं, चाहे वह
में कुछ भी लगती हो । मुझे डर है कि
में पत्नी के साथ ऐसा ही व्यवहार न कर
कृपया,उचित सलाह दें ।

ब भी कोई व्यक्ति किसी महिला से
ता है, तब प्रारंभ में उसके मन में जिस
र के विचार होते हैं उनको लेकर वह
हारिक संबंध प्रारंभ करता है । श्रद्धा
ावना कोई बुरी बात नहीं, परंतु
है आप अधिक व्यावहारिक न

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आय, पद, आयु एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें ।

—संपादक

होकर एक काल्पनिक जीवन में जीनेवाले व्यक्ति हैं । आपको व्यवहार कुशल होने की आवश्यकता है । इससे जो आपके मन में आशंका है, स्वयं ही दूर हो जाएंगी ।

घटनाओं से विचलित

विजय, जोधपुर (राजस्थान) : मैं २२ वर्षीय युवक हूं । मेरी परेशानी मन की अस्थिरता है । आध्यात्म और सृष्टि संबंधित प्रश्न मस्तिष्क में उठते रहते हैं । इन प्रश्नों से परेशान हो जाता हूं । अतिभावुक व संवेदनशील हूं । शीघ्र ही घटनाओं से विचलित हो जाता हूं । मनोचिकित्सक के पास जाने से डरता हूं, क्योंकि किसी ने बताया कि वह ऐसी दवा देते हैं कि मरीज बैठा है तो बैठा ही रहेगा । कहीं देख रहा है तो देखता ही रहेगा । उसके सोचने-समझने की शक्ति नष्ट हो जाती है । निराशा की भावना अधिक है । आत्महत्या की असफल कोशिश भी की है । डॉक्टर साहब इस परिस्थिति में मैं क्या करूं ?

आपके पत्र से लगता है कि आपको 'ऑव्सेशनल पर्सनिलिटी डिस ऑर्डर' है । परंतु इससे घबराने की आवश्यकता नहीं । आपको मनोचिकित्सकों के बारे में काफी गलत धारणाएं हैं । इस गलत धारणा में रहने की वजह से स्वयं की सोचने-समझने की शक्ति पर अंकुश लगा

दिया है । आपको शायद दवा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी । आप अपनी समस्या को अच्छी प्रकार से व्यक्त कर पाने पर उसके मूल कारणों को समझकर उस पर नियंत्रण पा सकते हैं । निराश न हों । बेहिचक मनोचिकित्सक से संपर्क स्थापित कर अपने भय को मन से निकाल दें ।

वह रोया नहीं

अरबिंद सर्वटे, जबलपुर : समस्या मेरे छोटे साले की है । यह एम. काम. कर चुका है । छह वर्ष पूर्व पहले पिता का फिर मां का देहांत हो गया । दोनों की मृत्यु पर रोया नहीं, न ही आंसू आये । घर में हमेशा माता-पिता में तनाव रहता था । इस घटना के एक वर्ष बाद वह मानसिक संतुलन खो बैठा और एकदम आक्रामक हो गया । इसके बाद उसको बिजली की चिकित्सा दी गयी व डेढ़ वर्ष दवाई के बाद ठीक हुआ । तीन वर्ष ठीक रहने के बाद अब फिर वही स्थिति उत्पन्न हो गयी है । क्या योग या ध्यान द्वारा स्थायी लाभ मिल सकेगा या फिर किसी अन्य चिकित्सा पद्धति से अवगत करायें।

आपके छोटे साले की समस्या वास्तव में पहले पिता फिर माता के आकस्मिक देहांत से प्रारंभ हुई । उनकी मृत्यु पर दुःख न प्रकट करना अत्यधिक शोक की स्थिति का कारण रहा । मानसिक संतुलन का खोना कई बीमारियों के कारण से होता है । यह जान लेना भी आवश्यक है कि यह रोग आनुवांशिक तो नहीं । आजकल ऐसी दवाएं उपलब्ध हैं, जिसमें बिजली के इलाज की आवश्यकता नहीं रहती । रोग के लक्षणों से उसका निदान कर लेने के पश्चात ऐसी दवाएं उपलब्ध हैं जो स्थायी रूप से रोग को दुबारा उबारने से रोकती हैं । ऐसे रोगी योग व ध्यान द्वारा कभी-कभी अधिक बीमार हो जाते हैं । इस कारण हम उन्हें ध्यान या योग करने की अनुमति नहीं दे सकते । आशा है आप इस परामर्श से अपने साले के लिए सही चिकित्सा पाने में समर्थ होंगे । ●

त्वचा कैंसर का नया उपचार

तेल-अवीव तथा जेजरील घाटी में स्थित इचिलोव चिकित्सा केंद्रों में त्वचा कैंसर उपचार की नयी विधि का विकास किया गया है ।' 'परिस्थिति विज्ञान संस्थान' द्वारा किये गये प्रयोगों से पता चला है कि 'इंटरफिरोन अल्फा' नामक पदार्थ इस रोग को दोबारा बढ़ने से रोक देता है । इस विधि से लगभग ४० रोगियों का उपचार किया गया है जिनमें केवल ६ रोगियों में पुनः कैंसर के लक्षण दिखायी पड़े । इस प्रकार यह विधि काफी हद तक सफल रही । चिकित्सकों की सतर्कता के कारण 'मैलानोमास', जिसके कारण त्वचा कैंसर का जन्म होता है, का जल्दी पता लगाकर इस नयी विधि द्वारा उपचार किया जाता है । इस संबंध में विस्तार से 'राजदूत इजराइल एम्बेसी से संपर्क किया जा सकता है ।



आवाजें कहां से आ रही हैं !

• सुशीला

अमरीकी अंतरिक्ष यान अपोलो-११ अपना लक्ष्य पूरा कर तेजी से पृथ्वी की ओर ट रहा था । यान में थे, चंद्रमा के धरातल पर दम रखनेवाले नील आर्मस्ट्रांग और एडविन ल्ड्रिन के अतिरिक्त माइकेल कार्लिस ।

जब पृथ्वी से दूर

ह्यूस्टन स्थित 'नासा' के नियंत्रण कक्ष का अंतरिक्ष यात्रियों से निरंतर संपर्क बना हुआ ।

इस समय अपोलो-११ पृथ्वी से दो लाख ६ हजार किलोमीटर की दूरी पर था । पोलो-११ की सफलता से नियंत्रण-कक्ष के भी वैज्ञानिक-कर्मचारी प्रसन्न थे ।

सहसा नियंत्रण-कक्ष में लगे उच्चतम किस्म टेप रिकार्डरों पर विचित्र-सी ध्वनियां 'टेप' ने लगीं । ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो हजारों रेड इंडियन युद्ध के अपने परंपरागत वाद्य बजा रहे हैं यही नहीं, इस रण-संगीत के मध्य कभी-कभी तीव्र अट्टहासों के स्वर भी सुनायी दे रहे थे ।

वैज्ञानिक ने समझा, संभवतः अपोलो यान-११ में किसी प्रकार की कई यांत्रिक त्रुटि उत्पन्न हो गयी हैं और ये आवाजें शायद त्रुटि के कारण हैं । उन्होंने तीनों अंतरिक्ष यात्रियों से संपर्क कर उन्हें इन आवाजों के बारे में बताया और पूछा कि क्या कोई यांत्रिक खराबी हो गयी है ? उत्तर पाकर वे और चौंक पड़े । तीनों यात्रियों ने बताया कि यान के सारे यांत्रिक उपकरण ठीक-ठीक काम कर रहे हैं ।

उस दिन रेकॉर्ड की गयी ये ध्वनियां आज भी रहस्य बनी हुई हैं ।

●



नंदादेवी

● प्रकाश पुरोहित 'जयदीप'

नंदादेवी चोटी हिमालय के गढ़वाल क्षेत्र में, आकाश को छूनेवाली—७,८१७ मीटर ऊंची चोटी है । यह दुनिया की सुंदर, मोहक व रोमांचक चोटियों में से एक है, जो सुंदरता के लिए 'हिमालय का मोती' नाम से प्रसिद्ध है । यह अपने नाम के अनुरूप आनंदमयी है । नंदादेवी का अर्थ है—आनंदमयी देवी (आनंदेतिलोकान इति नंदा) ।

उत्तराखंडवासियों की इष्ट देवी भी है यह और आदि –महाशक्ति भी । किसी पर्वत चोटी के साथ इस तरह जीवित रिश्ते की शायद ही, कहीं मिसाल मिले । उत्तराखंड के सीमांत इलाकों में यह देवी 'ध्याण' (बेटी) की तरह मानी जाती है । उत्तराखंड के अनेक शिखर-पर्वत-गांव-क्षेत्र-नदी व देवस्थल इसी के नाम से हैं । जैसे, नंदादेवी, नंदाघुंटी, नंदाखाट, नंदाकोट (पर्वत शिखर), नंदाक क्षेत्र, मंदाकिनी नदी, अलकनंदा नदी, नंदप्रयाग, नंदकेशरी, नंदासैंण, नंदाशिला (चमोली गढ़वाल) आदि । उत्तराखंड के गढ़वाल क्षेत्र में नंदादेवी के प्रमुख मंदिर हैं—लाता, नौटी, कुरुड़, कांसुवा, मींग, को[...] कुलसारी, भगोती और कुमाऊं क्षेत्र में अल्मो[...] नैनीताल, रणचूला, सनेती, मागर आदि । अल्मोड़ा व नैनीताल के नंदादेवी के मेलों का कहना ही क्या ? नंदाष्टमी को तो पूरा उत्तराख[...] नंदामय हो जाता है । नंदादेवी राज जात तो हिमालय क्षेत्र में सबसे लंबी, १६४ किलोमी[...] लंबी धार्मिक पदयात्रा है, जो प्रत्येक १२ वर्ष [...] बाद होती है और इसमें हजारों श्रद्धालु भाग [...] हैं । इसके अलावा कुछ क्षेत्रों में प्रतिवर्ष नंदा [...] जात (नंदा यात्रा) का आयोजन होता है । नंदाष्टमी (भादों माह के शुक्ल पक्ष की अष्टमी) का पर्व नंदादेवी का शिवजी से इसी [...] दिन हुए विवाह के उपलक्ष्य में मनाया जाता है । पुराणों में शिवजी के आदि-शक्ति से वि[...]

प्रसंग विभिन्न स्वरूपों में मिलते हैं।

संध्या-सुंदरी देवी नंदा

नंदादेवी चोटी का क्षेत्र सत्तर मील लंबाई में ला और कई अनाम शिखरों व विराट शियरों से घिरा हुआ अलौकिक हिम क्षेत्र । आकाश को छूती हुई अपनी पूर्णरूपेण काकार भव्य जुड़वा चोटियों के कारण नंदादेवी री चोटियों से अलग ही लगती है। शाम सिंदूरी धूप में तो यह चोटी स्वर्णिम चुनरी ढ़े देवी-सी लगती है।

यह चोटी युगों तक आदमी की पहुंच से हर रही है। पर्वतारोहण भी यहां देर से शुरू भा। अब फिर से यह चोटी पर्वतारोहण हेतु द है। अतीत में झांकें तो पता चलता है कि बसे पहली बार विदेशी पर्वतारोही डब्लू. ग्राह्म सन् १८८३ में दो स्विस साथियों के साथ इस त्र में पहुंचने का प्रयास किया था। ग्राहम ने ी गांव से नीती दर्रे का रास्ता चुना था। वह गे रामणी और ऋषिगंगा नदी के संगम तक पहुंच पाया। इससे आगे खड़ी विशाल लंघ्य चट्टानों ने उनका रास्ता रोक दिया।

प्रयास-दर-प्रयास

फिर सन् १९०५ में एन.टी.जी. लौंगस्टाफ क्षेत्र में आया। वह भी इस दुर्गम क्षेत्र के हरी भाग तक ही पहुंच सका। भीतरी भाग दृश्य वह तीन हजार फुट की ऊंचाई से एक ली बर्फीली दीवार से ही झांककर देख का। तभी से इस हिस्से का नाम 'लांग स्टाफ ल' पड़ गया। सन् १९०७ में लांगस्टाफ ने देवी आरोहण के लिए दो बार पूरे जोखिम साथ प्रयास किया पर भू-आकृतिक टलता ने उसे आगे नहीं बढ़ने दिया।

अल्मोड़ा के तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर ह्यूजर टल्वेजने भी बाहरी क्षेत्र से लौट गया।

अगले पचास सालों तक पर्वतारोही आते रहे व बाहरी भाग से वापस लौटते रहे। सन् १९३४ में केन्या के दो पर्वतारोही इन चट्टानों को लांघकर भीतरी हिस्से में तो पहुंच गये, फिर भी वे नंदादेवी के आधार शिविर तक ही पहुंच पाये।

सन् १९३६ में पहली बार सफलता मिली दो ब्रिटिश पर्वतारोहियों—एच. डब्लू. टिलमैन व ई. ओडेले को। २९ अगस्त को ये दोनों नंदादेवी चोटी पर पहुंचे। उनका अनुमान था कि भीतरी भाग में उन्हें निहायत नीरस स्थान देखने को मिलेगा, लेकिन उनके सामने एक ऐसा स्वप्निल बुग्याल (चारागाही मैदान) था जो फूलों से खचाखच भरा था, वहां छोटी-बड़ी अनेक मनोहारी झीलें थीं और निकट ही बर्फीले ढालों पर हिम-प्रपात। घाटी में थार, हिरन, कस्तूरा मृग जैसे वन्य-पशु निर्भय विचरण कर रहे थे।

इसी तरह नंदादेवी की पूर्वी चोटी पर चढ़ने में सन् १९३९ में पौलेंड के एक पर्वतारोही दल को पहली बार सफलता मिली। इसके बारह वर्ष बाद रोजर डुप्ला के नेतृत्व में एक फ्रैंच दल आया, जिसकी योजना मुख्य चोटी पर अभियान की थी, पर इस अभियान का परिणाम बहुत दुःखद रहा। डुप्ला व उसका साथी वापस नहीं लौट सके।

बेटी नंदादेवी

अमरीका का विलियम उनसेल्ड सन् १९४८ में जब पर्वतारोहण के लिए पहली बार भारत आया तो उसने नीलकंठ शिखर से नंदादेवी

शिखर को देखा और इतना भाव-विभोर हो गया कि उसने उसी क्षण तय कर लिया कि उसकी यदि बेटी हुई तो उसका नाम नंदा ही रखेगा और उसके बड़े होने पर उसे साथ लेकर नंदादेवी शिखर पर चढ़ेगा ।

और ऐसा ही हुआ । उसके बेटी हुई । नाम रखा नंदादेवी उनसेल्ड । संयोग से उसकी जिंदगी का काफी बड़ा हिस्सा गढ़वाल में बीता । निर्भय होकर पहाड़ों पर घूमती हुई वह बड़ी हुई और बाइस वर्ष की उम्र में , सन् १९७६ में वह भारत-अमरीका संयुक्त नंदादेवी अभियान दल में चुन ली गयी । पहली बार किसी महिला का चुनाव हुआ था । अभियान का लीडर एडम कार्टर था, तो डिप्टी लीडर नंदा का पिता ।

एक अमरीकी पर्वतारोही ने जब नंदादेवी शिखर को देखा तो वह इतना भाव-विभोर हो गया कि उसने उसी क्षण तय किया कि यदि उसके बेटी हुई तो उसका नाम नंदा ही रखेगा और उसके बड़े होने पर उसे साथ लेकर नंदादेवी शिखर पर चढ़ेगा । और ऐसा ही हुआ...

अभियान प्रारंभ हुआ तो सुनहरे बालोंवाली युवती नंदा के चेहरे पर विशेष मुसकान थी । वह अन्य सदस्यों से कहती—'इस चोटी से उसका करीबी रिश्ता है । वह मुझे बार-बार बुलाती है ।'

दल मंजिल की ओर बढ़ता जा रहा था । कैंप ४ तक सब निर्विघ्न पहुंचे लेकिन, कैंप ४ ही उसके लिए अंतिम पड़ाव साबित हुआ । अभियान दल के नेता व नंदा के पिता की डायरी के अनुसार नंदा ७ सितंबर की रात को बेतरह दर्द से तड़पती रही । उसे पेचिश हो गयी थी । कै भी करती रही । दवाओं का कुछ भी असर नहीं हुआ । ८ सितंबर की सुबह को सूरज की किरणें फूटी ही थीं कि वह हमेशा के लिए नंदादेवी की गोद में सो गयी ।

नंदादेवी का प्रवेश-द्वार जहां सन् १९३४ में पर्वतारोहियों के लिए खुला, वहीं सन् १९८२ में बंद कर दिया गया । यह प्रतिबंध अब भी है । ऐसा यहां की जैविक विविधता को बनाये रखने पारिस्थितिकीय पुर्नस्थापना व पर्यावरण संरक्षण के लिए किया गया है ।

जनवरी १९३९ में इस क्षेत्र के ६३० वर्ग कि.मी. को नंदादेवी पशु विहार क्षेत्र घोषित किया गया । १९८२ में इस क्षेत्र को बढ़ाकर ८०० वर्ग कि.मी. कर दिया गया । साथ ही नंदादेवी राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना की गयी । १९८६ में भारतवर्ष के घोषित ३ बायोस्फेयर रिजर्व क्षेत्रों में एक इस क्षेत्र को सम्मिलित कर लिया गया ।

यह एक चुभनेवाली बात है कि पूर्ण प्रतिबंध के बावजूद नंदादेवी अभयारण्य में तस्करी व अवैध शिकार की घटनाएं सुनी जा रही हैं । स्थानीय लोगों को कड़े वन कानून के तहत कई परेशानियां उठानी पड़ रही हैं ।



पर्वतारोहण व्यवस्था से जुड़े युवक बेरोजगार हो गये हैं । पर्वतीय क्षेत्र में स्थानीय जनता व प्रबुद्ध नागरिक नन्दादेवी के क्षेत्र में जाने पर लगी रोक को हटाने की मांग कर रहे हैं । उल्लेखनीय है कि नन्दादेवी जाने के मार्ग पर पहले पड़नेवाले गांव रैणी में ही सातवें दशक में विश्वविख्यात 'चिपको आंदोलन' पैदा हुआ था । उन्हीं पर्यावरण संरक्षक लोगों पर इस क्षेत्र में अब पाबंदी है । आज इन लोगों की व्यथा अकेले में पड़ गयी है ।

—मंदिर मार्ग, गोपेश्वर-२४६४०१
चमोली गढ़वाल

▲ नंदादेवी की चोटियों में पर्वतीय जीवन



▲ नंदादेवी का घूंघट : नंदाघुंटी पर्वत



← स्वर्णिम किरणों की छटा में नन्दादेवी चोटी अथाह हिमराशि

(चित्र : प्रकाश पुरोहित जयदीप)





↑ मार्शल आर्ट का एक सशक्त आधार फ्लाइंग किक

उस समय की यात्राएं जोखिम व संघर्षपूर्ण थीं । उन्होंने शारीरिक-रक्षा व मानसिक संतुलन बनाये रखने के लिए बौद्ध शिक्षा के एक अध्याय 'एकीन सूत्र' का लगातार अभ्यास किया । बाद में यही कला शोरिन जी के नाम से प्रसिद्ध हुई । धीरे-धीरे यह

↑ शारीरिक व मानसिक संतुलन का सूत्र कराटे



→ कराटे प्रशिणार्थी

सभी चित्र : पी.के. आर्य

कराटे

भारत लौटी–भारत से गयी कला

● पी.के. आर्य

कला रियोक्यद्वीप में पहुंची और 'ओकीनावाते' के नाम से जानी गयी ।

कई शताब्दियों तक 'ओकीनावाते' ने काफी विकास किया, जबकि कई जगह यह कला 'टोट' के नाम से भी प्रसिद्ध हुई । सन् १४२९ में जब सोहाशी रियोक्यू द्वीप का सम्राट बना तो उसने समस्त द्वीप वासियों पर हथियार रखने का कड़ा प्रतिबंध लगा दिया । यह प्रतिबंध सन् १६०९ तक लागू रहा । यह काल इन कलाओं का स्वर्णयुग कहा जा सकता है । हथियार रखने पर लगी पाबंदी के फलस्वरूप लोगों ने अपने शरीर को कड़े परिश्रम व अभ्यास के बाद एक चलते-फिरते हथियार के रूप में परिणत करना शुरू किया और ये कलाएं घर-घर, गली-गली में सीखी सिखायी जाने लगीं ।

जापानी योद्धाओं ने बौद्ध गुरुओं की इन कलाओं को अपने ढंग से विकसित करके उन्हें पूरी तरह जापानी खेल बना लिया तथा फिर शताब्दियों तक जापान के ये खेल समयानुसार बदलते रहे । ये कलाएं जापान की राष्ट्रीय धरोहर के रूप में जानी जाने लगीं । जापानी सभ्यता के साथ जापानी खेल पनपे । लगभग एक हजार वर्ष पूर्व राजदरबारों में कुलीन वंश के योद्धा शौर्य प्रदर्शन के लिए 'कमारी' (जापानी फुटबाल) का प्रयोग व प्रदर्शन करते थे, जब धीरे-धीरे कला दरबार और कुलीनों के हाथ से योद्धाओं के हाथों में आ गयी तो जापान में शौर्य-कलाओं का महत्व स्वतः ही बढ़ गया ।

सामुराई और जुजुत्सु

सामंती युग में बड़े घराने के लोग 'सामुराई' रखते थे । सामुराई से तात्पर्य लड़ैतों व लड़ने का ही काम करनेवाले एक समूह से था । ये लोग अपने मालिक के लिए लड़ते थे । सामुराई प्रभुत्व कायम करने के लिए लड़ाकों ने पारंपरिक खेलों का सहारा लिया और इस तरह खेल तथा युद्ध एक-दूसरे का पर्याय बन गये । कुछ लोगों ने जूडो को आरंभ में 'जुजुत्सु' के रूप में संबोधित किया । प्राचीन काल में सेनापतियों ने अनुभव किया कि युद्ध स्थल में अक्सर खाली हाथ भी विरोधी से लड़ना पड़ता है । इसी जरूरत ने जुजुत्सु को नये आयाम दिये फलतः उसका विकास होता चला गया ।

आत्मरक्षा की इन रोमांचक युद्ध कलाओं में से अधिकांश का जन्म भारत में ही हुआ था । अतीत का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि प्रारंभ में निजी बचाव व आत्मरक्षा के लिए प्रयोग में लायी जानेवाली ये तकनीकें बाद में जूडो-कराटे के रूप में विख्यात हुईं । लगभग १४०० वर्ष पूर्व एक बौद्ध साधु 'बौद्धि धर्म' ने दक्षिण भारत से चीन की ओर प्रस्थान किया था ।

सन् १५३२ में एक साधु ने ताके नोउची के जंगल में पहला जुजुत्सु विद्यालय खोला । इडोकाल (सन् १६०३-१८६७) में जुजुत्सु के अनेक विद्यालय खुल गये तथा इसे आत्मा और शरीर के एकात्म का रूप मान लिया गया । सन् १८६७ में आधुनिक कराटे के संस्थापक गोचिन फूनाकोशी का जन्म हुआ । उधर सन् १८८२ में आधुनिक जूडो के जन्मदाता जुगारो कानो ने जुजुत्सु के गहन अध्ययन व कठिन अभ्यास के बाद सभी जुजुत्सु स्कूलों को मिलाकर सन् १८८५ में टोक्यो कोटोकान हाल शुरू किया । जुजुत्सु को शालीनता प्रदान की तथा खेल के लिए कुछ नियम भी प्रतिपादित किये और इस तरह जूडो-कराटे के रूप में जानी जाने वाली ये कलाएं अपने-अपने तरीके से विकसित होती रहीं । जूडो को शीघ्र अनेक विश्वविद्यालयों ने अपना लिया । सन् १८८७ में नेवी अकादमी और सन् १८८९ में केनो विश्वविद्यालय में इसे बाकायदा पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया गया तथा सन् १९३१ में इसे हाई स्कूल का अनिवार्य विषय घोषित कर दिया गया । जुगारो कानो ने जूडो को खेल के रूप में विश्वभर में प्रचारित किया । सन् १८८९ में जब कानो इंगलैंड गये तो उनकी भेंट अपने पहले विदेशी शिष्य एक अंगरेज सैनिक अधिकारी से हुई । सन् १९५१ में जूडो की अंतरराष्ट्रीय संस्था की स्थापना हुई ।

जूडो : विश्व चैंपियनशिप में

सन् १९५६ और १९५८ में पहली व दूसरी विश्व चैंपियनशिप हुईं जिनमें जापान का वर्चस्व रहा लेकिन विदेशी जूडो विशेषज्ञों ने अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करके जापानी खिलाड़ियों को लगभग चुनौती देनी शुरू कर दी थी । वर्ष १९६३ की आठवीं विश्व प्रतिस्पर्धा में भी जापान का ही बोलबाला रहा । सन् १९६४ के टोकियो-ओलंपिक खेलों में जापान की प्रतिष्ठा प्रभावित हुई और जूडो की हर स्पर्धाओं में से जापान सिर्फ तीन ही हासिल कर पाया । भारी वजन वर्ग में हालैंड के विम रुस्का ने दो तथा रूस के ए. शोशोश्विली ने एक पदक जीता, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान एशिया में जापानी सैनिक टुकड़ियों से लड़नेवाले मित्र राष्ट्रों के सैनिकों को एक खास चेतावनी दी गयी थी कि वो जापानी सैनिकों से आमने-सामने लड़ने के प्रयासों से बचे, यदि आमना-सामना आवश्यक भी हो जाए तो जापानी सैनिकों के निकट न जाएं । इन चेतावनियों का एकमात्र कारण



मार्शल आर्ट का अभ्यास

जापान की शौर्य-कलाएं (मार्शल आर्ट) ही थी, ये शौर्य-कलाएं जापानी फौजियों के लिए खेल और मनोरंजन का साधन होने के साथ-साथ उनके युद्ध कौशल का भी एक प्रमुख अध्याय रही है। मूलतः जापानियों द्वारा शिकार और रोजमर्रा की जिंदगी में अपनी हिफाजत के लिए विकसित की गयी शौर्य-कलाएं क्यूदो, सूमो, जूडो, नगीनाता तथा कराटे कैसे भी बलिष्ट, शक्तिशाली, और दुस्साहसी व्यक्ति पर काबू पाने का बेहद कारगर नुस्खा है।

जापान में आधुनिक खेलों के साथ-साथ वहां के पारंपरिक खेलों की लोकप्रियता आज भी बनी हुई है। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद इन दाव-पेचों पर मित्र राष्ट्रों की आधिपत्य सेना ने प्रतिबंध लगा दिया था परंतु सन् १९५१ के बाद जापानियों को इन कलाओं को सीखने और प्रयोग करने की पूरी छूट मिल गयी। आज इन कलाओं में सिर्फ जापानी लोग ही नहीं विश्व के अनेक देशों के लोग दिन-ब-दिन पूरी रुचि से जुड़े हैं।

आज अंतरराष्ट्रीय जूडो संघ के १०० देश सदस्य हैं। ये अंतरराष्ट्रीय खेल विश्व के स्मृति पटल पर तेजी से अपनी पहचान कायम कर रहे हैं। हजारों लाखों युवक-युवतियां इस कला को तेजी के साथ अंगीकार कर रहे हैं। आज यह स्मरण कर भी आश्चर्य होता है कि आत्मरक्षा की ये लाजवाब कला उस युग में जन्मी-पनपी जब जापान में मारपीट के नाम पर सिर्फ घूंसों, चाकुओं, छड़ों, लकड़ी की फट्टी, तलवारों, भालों और तीर-कमान का प्रयोग होता था। आज किसी भी देश में स्वरक्षा की ये विधाएं परिचय की मोहताज नहीं हैं। भारत के सभी प्रांतों में इन खेलों के प्रति युवक-युवतियों का रुझान बढ़ा है।

वैसे जूडो शब्द का अभिप्राय है 'कोमल मार्ग'। इसके प्रमुख अंग हैं 'पटक' (प्रेशर), नकड (सेल्ड)। जूडो-कराटे की विभिन्न शैलियों की राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा समय-समय पर आयोजित होती रहती है। जिसमें प्रतिभाशाली खिलाड़ी अपने करतबों का बढ़-चढ़कर प्रदर्शन करते हैं।

— आर्य-भवन

फलावदा—मेरठ २५०४०१ (उ. प्र.)

व्यंग्य

पटेल शहर घूमकर गांव आया तो उसकी पत्नी ने पूछा, ''तुमने वहां कौन-सी अजीबो-गरीब चीज देखी ?''

पटेल, ''वहां ऊंची-ऊंची इमारतें हैं और हर मंजिल के लिए एक कमरे में अलग-अलग बटन लगे हुए हैं । जिस मंजिल पर जाना हो, उसका बटन दबाओ और जब तक वह मंजिल खिसककर खुद नीचे नहीं आ जाती वहीं खड़े इंतजार करो !''

●

मंजू, ''एक तुम हो, और एक सुनीता के पति, जो रोज बिस्तर पर उसे चाय का प्याला लाकर देते हैं ।''

पति, ''ठीक है, मैं कोशिश करके देखता हूं ।''

मंजू, ''क्या कोशिश करोगे ?''

पति, ''यही कि, सुनीता के पति एक प्याला चाय रोज तुम्हें भी दे जाया करे !''

●

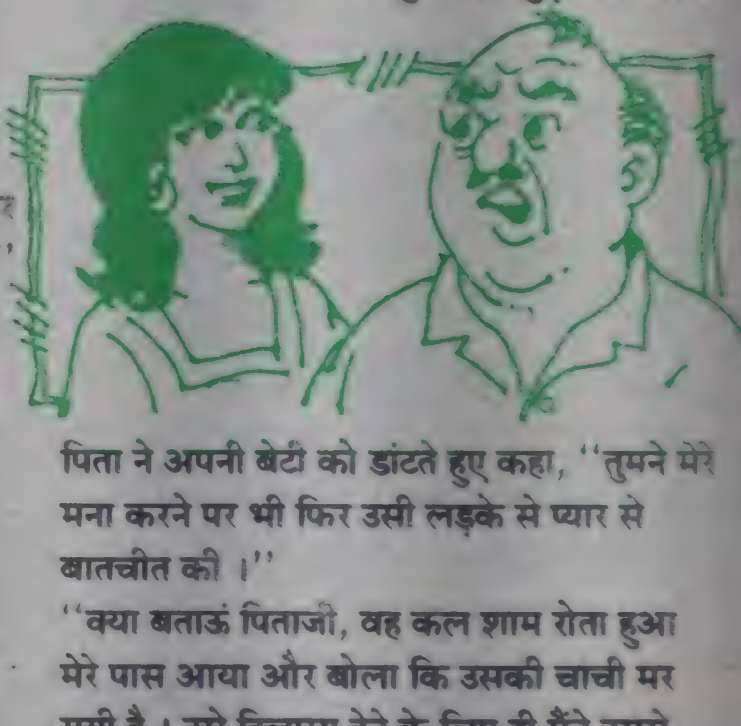




''शादी के बाद क्या आप मेरा फिल्मों में काम करते रहना पसंद करोगे ?'' हीरोइन ने पूछा ।

पति, ''पसंद... ? अरे, मैंने शादी ही इसी आशा पर की है !''

● सुभाष बुड़ावनवाला



पिता ने अपनी बेटी को डांटते हुए कहा, ''तुमने मेरे मना करने पर भी फिर उसी लड़के से प्यार से बातचीत की ।''

''क्या बताऊं पिताजी, वह कल शाम रोता हुआ मेरे पास आया और बोला कि उसकी चाची मर गयी है । उसे दिलासा देने के लिए ही मैंने उससे प्यार से बातचीत की ।'' बेटी, इस तरह धीरे-धीरे वह अपने सभी घरवालों को मार डालेगा ।

●

एक गांव का मुखिया दूसरे गांव में आया तो वहां के मुखिया से पूछा, ''क्या तुम्हारे गांव के सभी लोग ईमानदार हैं ?''

जी हां, ईमानदार भी हैं और नेक भी ।''

''फिर तुमने कंधे पर बंदूक क्यों लटका रखी है ?''

''उन्हें ईमानदार और नेक बनाये रखने के लिए ।''

● पुष्पेश कुमार पुष्प

तरंग

अंतर

सांप जहर—
निकालते हैं
दांतों से ।
और नेता—
यही काम करते—
भाषण-बातों से ।



मान-सम्मान

दूरदर्शन की पहेली में
विजेता के नाम ।
पांच हजार के—
जूते दिये ईनाम ।

—गफूर स्नेही

भाग्य

मेरे
भाग्य का
घड़ा फूटा
फिर भी
छींका नहीं टूटा ।

आंसू

आंसू
कोरों को नम
करता है
कुछ भी हो
दुःख
कम करता है ।

— गीता वर्मा

युद्ध

पत्नी बनी अमरीका
पति सद्दाम बना
रो रहा है,
वहां पर खाड़ी
तो यहां साड़ी-युद्ध
हो रहा है ।



समानता

''चुनाव मैदान में
आना, या
स्वेटर बनाना
एक समान है ।''
इस महिला पर
सवार थी
चुनाव लड़ने की धुन
कहती है,
''यहां भी तो
करनी होती है
उधेड़-बुन ।''

—पीयूष 'पाचक'

सात मई सन् १८९६ की बात है। फिलडेलफिया की मोयनसिंग जेल के अहाते में उसे फांसी पर चढ़ते देखने के लिए भारी भीड़ लगी थी। उसे अपने एक साथी बी.एफ. पिटजेल के बीमे की राशि को हड़पने की जालसाजी करते पकड़ा गया था। और तभी पता चला कि पिटजेल की हत्या भी उसने ही की है। हत्या भी इस सफाई से कि दुर्घटना लगे। जब उसे फांसी पर चढ़ाया जा रहा था, तब उसने लिखित रूप में स्वीकारा कि उसने सत्ताइस हत्याएं और की हैं।

जहां से कोई अमीर औरत जीवित नहीं लौटी!

हत्यारे की जिंदगी

हालांकि, उसने सत्ताइस हत्याएं कबूल कीं, लेकिन खोज-बीन से पता चला कि उसने कम-से-कम दो सौ लोगों की हत्याएं की। वह अमरीका का पहला हत्यारा था, जिसने इतनी अधिक संख्या में हत्याएं की थीं और इस कुख्यात हत्यारे को एच. एच. होल्मस के नाम से ज्यादा जाना गया, जबकि उसके और भी कई छद्म नाम थे, जिससे वह अमरीका के भिन्न-भिन्न प्रांतों में धोखाधड़ी, जालसाजियां और हत्याएं करता रहा। उसका असली नाम था हरमन वेब्स्टर मडगेट। उसका जन्म सन् १८६० को न्यू हेंपशायर के गिल्मेंटीन नामक गांव में हुआ था। उसका पिता गांव का पोस्टमास्टर था। पिता चाहता था कि बेटा पढ़-लिखकर बड़ा आदमी बने तथा संभ्रांत जिंदगी जिये। वह पढ़ा-लिखा भी और सन् १८८४ में उसने मिशीगन यूनीवर्सिटी से मेडीकल डॉक्टर की डिग्री भी प्राप्त कर ली, फिर न्यूयार्क में उसने अपना क्लीनिक भी खोला। प्रैक्टिस भी अच्छी चली, लेकिन कुछ समय के लिए ही। बस, यही उसकी जिंदगी में कुछ महीनों का समय था, जब उसने ईमानदारी की कमाई की और संभ्रांत जिंदगी बितायी, बाकी तो वह जब तक जिया, धोखा-घड़ी, जालसाजी, बेइमानी और हत्यारे की जिंदगी ही जीता रहा।

वह कुशाग्र बुद्धि तो था ही साथ ही उसका व्यक्तित्व, रहन-सहन भी उच्चवर्गीय था। देखने में सुंदर और आकर्षक हमेशा विक्टोरियन जमाने के फेमिली डॉक्टरों जैसी पोशाक पहने रहता। सोने की जंजीर से बंधी घड़ी उसकी ऊपरी जेब में रहती। घनी मूंछें, भूरी आंखें, काले बाल—कुल मिलाकर उसका व्यक्तित्व ऐसा सुदर्शन था, जिस पर औरतें मर मिटतीं।

उस पर मर-मिटनेवाली पहली लड़की क्लारा लोवरिंग थी। क्लारा उसे तभी प्यार

करने लगी, जब वह मेडीकल कॉलेज में पढ़ रहा था । अठारह साल की उम्र में ही उसने क्लारा से शादी कर ली । कुछ साल उसके साथ अच्छी तरह रहा । एक बच्चा भी हुआ । फिर क्लारा और बच्चे को छोड़कर वह शिकागो भाग गया ।

शिकागो में वह मार्था वेल्कनेप नामक एक औरत के संपर्क में आया, जिसके परिवार के पास इलिनोइरन में काफी बड़ी जमीन-जायदाद थी । उसे मार्था की सुंदरता ने नहीं, बल्कि उसकी धन दौलत ने आकर्षित किया था । मार्था के अनाकर्षक और गहरे रंग-रूप के बावजूद, और पहली पत्नी के तलाक दिये बिना, उसने अपना नाम बदलकर दूसरी शादी कर ली । अब उसका नाम था एच. एच. होल्मस । उसने मार्था के दादा को जताया कि वह बहुत धनी व्यक्ति है । उसने मार्था के लिए मकान बनवाने के नाम पर उनसे काफी बड़ी रकम झपट ली और फिर यहीं से शुरू हो गयी उसकी जालसाजी की करतूतें । सबसे पहला शिकार बना मार्था का दादा, जिसके जाली दस्तखत बनाकर उसने एक बड़ी रकम बैंक से निकाल ली । इस जालसाजी का पर्दाफाश न हो, इसके लिए उसने मार्था के दादा को खत्म करने की योजना बनायी, जो सफल न हो सकी । जालसाजी के मामले को अदालत में ले जाकर अपनी बदनामी कराने के बजाय मार्था परिवार ने उससे संबंध तोड़ लिये, पर मार्था का सम्मोहन उससे नहीं टूटा ।

इसी बीच एक अखबार में छपे विज्ञापन पर उसकी नजर पड़ी । होल्डेन नामक हाल ही में विधवा हुई एक महिला को अपने दवाई के स्टोर के लिए एक कैमिस्ट चाहिए था । वह स्टोर शिकागो के एक उपनगर एंगलवुड की ६३वीं स्ट्रीट और वैलेस के नुक्कड़ पर था । होल्मस को यह नौकरी मिल गयी । उसने मेहनत की और व्यवसाय को काफी बढ़ा दिया । इससे होल्डेन भी उस पर मर मिटी । होल्मस अपनी आदत के अनुसार हेरा-फेरी करने लगा । जैसे ही होल्डेन को हेरा-फेरी का पता चला तो उसने होल्डेन को गायब कर दिया और लोगों को यही कहकर बहकाता रहा कि वह लंबी छुट्टियां मनाने के लिए कैलीफोर्निया गयी हुई है । लेकिन फिर होल्डेन कभी नहीं लौटी ।

होल्मस ने अब अपने दवाई के व्यवसाय में बड़ी कंपनियों की नकली दवाइयों का बनाना और बेचना शुरू कर दिया और खूब पैसा बनाया ।

वह कुशाग्र बुद्धि तो था ही साथ ही उसका व्यक्तित्व, रहन-सहन भी अनुकरणीय था । देखने में सुंदर और आकर्षक हमेशा विक्टोरियन जमाने के फैमिली डॉक्टरों जैसी पोशाक पहने रहता । सोने की जंजीर से बंधी घड़ी उसकी ऊपरी जेब में रहती । उसका व्यक्तित्व ऐसा सुदर्शन था, जिस पर औरतें मर मिटतीं ।

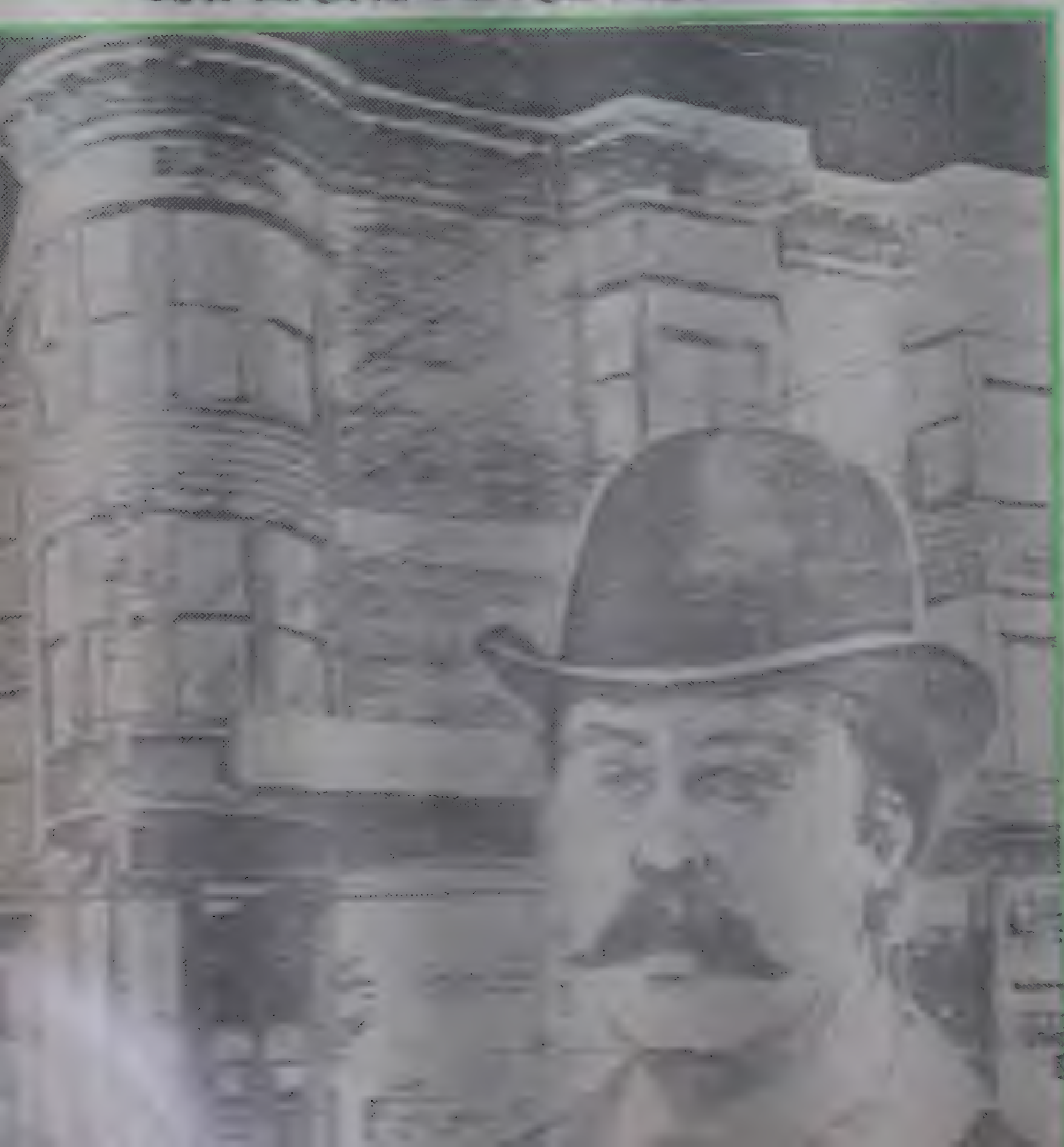
इसी दौरान उसने मार्था को भी छोड़ दिया क्योंकि, मार्था की संपत्ति उसके हाथ लगनेवाली नहीं थी। मार्था को छोड़कर वह स्टोर के ऊपर के एपार्टमेंट में रहने लगा, जहां उसे उसकी प्रेमिकाएं घेरे रहतीं।

इन्हीं दिनों उसके संपर्क में आया इसीलिअस कोनर, जो आईओवा प्रांत के डेवेनपोर्ट का जौहरी था और अपना व्यवसाय डेवेनपोर्ट से हटाकर यहां जमाना चाहता था। होल्मस ने उसे अपने स्टोर के एक हिस्से में रहने की जगह दे दी। होल्मस उस पर इसलिए भी मेहरबान था कि उसके साथ उसकी सुंदर पत्नी जूलिया और अठारह साल की जवान बहन गेर्टी भी थी। कोनर दंपति की एक आठ साल की लड़की पर्ल भी थी।

कोनर जब अपने काम में व्यस्त होता, तब उसकी पत्नी होल्मस के साथ होती। उसने होल्मस की सेक्रेट्री बनकर उसका सारा काम संभाल लिया था और होल्मस को उसकी अगली योजना पर काम करने के लिए खुला छोड़ दिया था।

होटल बनाम किला

सन् १८९३ में शिकागो में पहला विश्व व्यापार मेला— 'कोलम्बियन एक्सपोजिशन' होनेवाला था, जिसमें भाग लेने सभी देशों से हजारों लोगों के आने की उम्मीद थी। इसलिए होल्मस को लगा कि उचित यही रहेगा कि एक होटल खोला जाए। उसके स्टोर के सामने ही एक बड़ा-सा भू-खंड खाली पड़ा था, उसने अपने एक और छद्म नाम एच.एस.कैंपबेल के नाम से खरीद लिया और होटल बनवाना शुरू कर दिया। इसी दौरान पिटजेल उसका साथी बना। वह भी उसी की तरह धोखेबाज और तिकड़मी था। होटल बनवाने में उसने ठेकेदारों, बढ़ई और फर्नीचरवालों के साथ जमकर धोखाधड़ी की। यह होटल— 'होल्मस केसल' दरअसल, एक रहस्यमय किलेनुमा था, जिसमें तहखाने-दर-तहखाने और ऐसे गुप्त स्थान थे जहां पर पहुंचने के बाद आदमी का पता न चले। इसमें सबसे पहले गुम होनेवाला उसका शिकार था जौहरी कोनर, जिससे उसकी पत्नी



े लेकर होल्मस का झगड़ा हुआ था । कोनर
े गायब कर वह इसी होटल में जूलिया
सकी बेटी और गेर्टी के साथ रहने लगा ।
अगले दो सालों में इस होटल में बहुत-से
ोग गायब हुए, जिनमें पहले गेर्टी गायब हुई,
सके बाद जूलिया और उसकी बेटी पर्ल भी
ायब हो गयी । इसी दौरान उसके संबंध
मिलिन सीग्रंड नामक युवती से हुए । कुछ
िन बाद वह भी गायब हो गयी । पूछने पर
सने लोगों को कह दिया कि वह एक कॉन्वेंट
ं नन बन गयी है ।

जब होल्मस पर पिटजेल की हत्या का
ुकदमा चल रहा था, तब गवाहों ने बताया कि
िश्व व्यापार मेले के दौरान सैकड़ों की संख्या
, अधिकतर अमीर महिलाओं को होल्मस के
टल में घुसते तो देखा, लेकिन उनमें से
अधिकांश को जीवित निकलते कभी नहीं
खा होल्मस का व्यक्तित्व ही ऐसा था कि
च्छी-से-अच्छी औरतें उस पर मरती थीं ।
ौर जो उस पर मरती थीं, वे सचमुच ही मर
ाती थीं । ऐसी ही दो अनाथ बहनें मिन्नी और
न्नी तथा उसका भाई हेरोल्ड विलियम था । इन
नों के नाम मिसीसिपी में उस समय बीस से
कर पचास हजार डालर की जमीन-जायदाद
ी । उसने मिन्नी को बताया कि वह एक अमीर
पर्टी डीलर है । मिन्नी उसके झांसे में आ गयी
ौर उसके होटल में स्थायी तौर पर रहने
गी । इसी बीच उसे पता चला कि मिन्नी की
ायदाद में उसकी छोटी बहन नन्नी और भाई
ोल्ड भी शामिल है, तो उसने नन्नी को
लवाकर फुसलाया कि वह उसे तथा मिन्नी को
पने न्यूयार्क तथा पेरिस ले जाएगा । पेरिस में
वह उसे किसी कला महाविद्यालय में दाखिला
दिला देगा । उसके झांसे में आकर नन्नी ने
अपने भाई को पत्र में बड़े उत्साह के साथ सारी
बातें लिखीं और आगे लिखा कि 'वह हम दोनों
बहनों के लिए बिलकुल चिंतित न हो ।'

इस पत्र के रवाना होने के बाद नन्नी का कोई
पता-ठिकाना कभी नहीं मिला । वह कहां
गायब हो गयी ।

जारी रहा सिलसिला

इसके बाद से होल्मस और पिटजेल ने कई
जालसाजियां और ठगी के धंधे किये । एक बार
पिटजेल को जेल हो गयी, तो होल्मस एक
संभ्रांत कांग्रेसमैन बनकर पहुंचा और उसे
जमानत पर छुड़ा लाया । कहने की
आवश्यकता नहीं कि कांग्रेसमैन के प्रमाणपत्र
भी जाली थे ।

शिकागो लौटकर होल्मस ने और भी कई
धंधे किये, लेकिन चले नहीं, तो उसने बीमे का
पैसा हड़पने के लिए अपने होटल की ऊपरी
मंजिल पर आग लगा दी और छह हजार डालर
का दावा पेश कर दिया । पर उसकी यह चाल
चल नहीं सकी । उसे कोई मुआवजा नहीं
मिला ।

इसके बाद होल्मस का शिकागो में रहना
मुश्किल हो गया । वह मिन्नी को लेकर दक्षिण
की ओर चल पड़ा । रास्ते में एक संभ्रांत धनी,
अत्यंत सुंदर युवती जोर्जियाना योक मिली ।
होल्मस ने उसे अपना नाम हेनरी मैंसफील्ड
हावर्ड बताया और बताया कि वह एक धनी
पेटेंट ब्रोकर है । होल्मस ने उसे ऐसा फांसा कि
उसने उससे शादी कर ली । इसी दौरान उसने
मिन्नी को भी गायब कर दिया ।

हालांकि, उसने मित्री को गायब कर दिया लेकिन, टेक्सास में फोर्ट वोर्थ स्थित उसकी संपत्ति पर उसकी निगाह गड़ी रही। वह पिटजेल को लेकर टेक्सास पहुंचा और वहां अपना जाल बिछाया, लेकिन एक चोरी के अपराध में पकड़ा गया। फिर वह टेक्सास छोड़कर लुंइस की ओर चल पड़ा। यहां भी धोखाधड़ी के एक मामले में उसे जेल हो गयी। पता नहीं, उसने जोर्जियाना योक को क्या समझाया कि उसने उसकी जमानत दे दी। वह जब जेल में था, तब उसकी दोस्ती मरीओन हेडगेपाथ नामक एक ट्रेन लुटेरे से हो गयी। उसके साथ उसने बीमे की धोखाधड़ी की एक योजना बनायी, जिसके पूरा होने पर मरीओन को पांच सौ डॉलर देने का वायदा किया।

योजना कारगर तो हुई पर...

योजना यह थी कि फिलडेफिया में पिटजेल फर्जी नाम से पेटेंट ब्रोकर का काम करेगा। उसकी पत्नी उसका चालीस हजार डॉलर का बीमा करायेगी। पिटजेल और होल्मस मिलकर एक नकली एक्सीडेंट करेंगे, जिसमें मुर्दाघर से लाश चुराकर लायी जाएगी और उस लाश को पिटजेल की लाश बताकर बीमे की रकम वसूल की जाएगी। और ऐसा ही हुआ। शहर में एक बुरी तरह जली हुई लाश मिली, जिसे देखने पर यही लगता था कि वह विस्फोट में जली है वास्तव में, वह पिटजेल की ही लाश थी। होल्मस और पिटजेल की बड़ी लड़की एलिस ने लाश की शिनाख्त की। बीमा कंपनी ने उन्हें पैसा दे दिया। मरीओन ने वायदे के अनुसार अपना हिस्सा मांगा, जिसे देने से इनकार करने पर मरीओन पुलिस के पास चला गया।

पुलिस से बचने के लिए होल्मस अपनी बीवी जोर्जियाना, पिटजेल की बीवी और उसके पांच बच्चों के साथ शहर-शहर भागता रहा। इसी बीच पिटजेल के पांच बच्चों में से तीन बड़े बच्चे गायब हो गये। जिनकी लाशें बाद में उस मकान में दबी मिलीं, जिसे किराये पर लेकर कुछ समय के लिए होल्मस रहा था।

अंततः होल्मस पकड़ा गया। उसे फिलडेलफिया लाया गया, जहां उस पर बीमा कंपनी के साथ धोखाधड़ी का मुकदमा और दूसरा, पिटजेल की हत्या का मुकदमा चलाया गया। पुलिस के गुप्तचर विभाग ने उसके खिलाफ ढेर सारे सबूत इकट्ठे किये। उसके होटल की तलाशी लेने पर तहखानों में से कई महिलाओं के अस्थिपंजर मिले। डॉक्टरी चीरफाड़ के औजार, यातना देनेवाले उपकरण भी मिले। तेजाब की बोतलें आदि भी मिलीं। पुलिस ने शिकागो के एक मैकेनिक को भी गवाह के रूप में पेश किया, जिसने बताया कि होल्मस ने उससे तीन औरतों के शवों का मांस छीलकर पूरे अस्थिपंज़र निकलवाये थे और वे अस्थिपंजर एक मेडीकल कॉलेज को ३६ डालर की दर से बेचे थे।

पुलिस ने उसे कई हत्याओं का दोषी ठहराया, लेकिन जज ने उसे पिटजेल की हत्या के चल रहे मुकदमे तक ही सीमित रखा और फांसी की सजा सुनायी।

फांसी पर चढते समय उसने सत्ताइस हत्याओं को खुद-ब-खुद स्वीकारा और जल्लाद से कहा कि उसके गले में जल्दी से फंदा डाल दे।

— प्रस्तुति : ज. चं



आत्मा का वजन ३० ग्राम है ?

• विवेक शुक्ल

ग्रामोफोन विद्युत बल्ब और चलचित्र के आविष्कारक इस शताब्दी के महानतम अमरीकी वैज्ञानिक टामस अल्वा एडीसन का मानना था कि मदुष्य देह नश्वर है, किंतु उसकी चेतना (आत्मा) अजर-अमर है । एडीसन ने अपने जीवनकाल में १००० से अधिक आविष्कारों को पेटेंट कराया था ।

उन्होंने आत्मा की अमरता पर भी अनुसंधान कार्य किया था । एडीसन का मत था कि प्रत्येक प्राणी की ६०० खरब कोशिकाओं में विद्युत कणों का वास है और मनुष्य इन खरबों विद्युत कणों का एक समूह मात्र है । एडीसन के अनुसार मनुष्य की मृत्यु के बाद ये विद्युत कण मृत देह का परित्याग कर शून्य में प्रवाहित हो जाते हैं,

जहा से कालांतर में ये विभिन्न रूप आकार में पुनः जीवन धारण करते हैं । कहने का आशय यह है कि मनुष्य की दैहिक मृत्यु के बाद उसके ये विद्युत कण मधुमक्खियों के झुंड की तरह शून्य में स्थानांतरित हो जाते हैं, जहां पर इनका अस्तित्व विद्यमान रहता है ।

विश्व के प्रायः सभी धर्म आत्मा की अमरता को किसी न किसी रूप में स्वीकारते रहे हैं । किंतु वैदिक धर्म और जैन धर्म ने आत्मा की अमरता को कुछ ज्यादा ही महत्त्व दिया है । गीता में भगवान कृष्ण ने अर्जुन को आत्मा की

मैक्डूगल अपने इस प्रयोग पर आंखें गड़ाये रहे । उन्होंने और उनके सहकर्मी वैज्ञानिकों ने देखा कि जब तक रोगी जीवित रहा, तब तक वह यांत्रिक तराजू एक ही वजन बताती रही । उसकी मापक सुई में तनिक भी अंतर नहीं दिखा । किंतु जिस क्षण रोगी के प्राण निकले उसी क्षण वजन मापक सुई पीछे घूम गयी और उसने इंगित किया कि रोगी का वजन पूर्वापेक्षा ३० ग्राम कम हो गया है ।

अमरता का ही उपदेश दिया था । समस्त वैदिक वांङ्मय आत्मा की नित्यता का बखान करता है । शरीर के मिटने के बाद भी आत्मा का अस्तित्व विद्यमान रहता है और वह अपने कर्मों, स्वभाव-संस्कार के अनुरूप पुनः शरीर धारण करता है । वृहदारण्यक उपनिषद् के अनुसार देहांत के बाद आत्मा अपने पूर्व शरीर की समस्त ऊर्जा व अनुभूतियों को अपने साथ ले जाता है, जिसके आधार पर वह नया शरीर (पुनर्जन्म) ग्रहण करता है ।

विलियम मैक्डूगल का विलक्षण प्रयोग

अधुनिक जीव वैज्ञानिकों का अब यह मानना है कि मानव शरीर में कोई ऐसा सूक्ष्म पदार्थ अवश्य है, जो देह के नष्ट हो जाने के बाद भी विनष्ट नहीं होता । इस सूक्ष्म तत्त्व को वैदिक दर्शन आत्मा कहता है । कुछ समय पूर्व अमरीकी वैज्ञानिक विलियम मैक्डूगल ने आत्मा के संदर्भ में जो गहन अनुसंधान किया था, उसके नतीजे चौंकानेवाले हैं ।

मैक्डूगल का कहना है, ''यह मानना कि शरीर के नष्ट हो जाने के बाद कुछ शेष नहीं रहता पूरी तरह बकवास है । शरीर के मिट जाने के बाद भी आत्म तत्त्व का अस्तित्व रहता है ।'' इस क्रम में आश्चर्य की बात तो यह है कि मैक्डूगल ने आत्मा के वजन को तौलने का भी एक दिलचस्प प्रयोग किया ।

विलियम मैक्डूगल ने एक ऐसी यांत्रिक तराजू का आविष्कार किया, जिसके जरिये ग्राम के हजारहवें भाग तक का भार मापा जा सकता था । मैक्डूगल ने एक मरणासन्न रोगी के बिस्तर पर इस यांत्रिक तराजू को फिट कर दिया । इस तराजू से न सिर्फ रोगी का वजन लिया गया, बल्कि उसके पलंग, वस्त्र, दी जानेवाली दवाइयों तक का वजन लिया गया । और-तो-और इस तराजू के जरिये रोगी द्वारा ली और छोड़ी जानेवाली सांसों तक का वजन लिया जाता रहा । मैक्डूगल अपने इस प्रयोग पर आंखें गड़ाये रहे । उन्होंने और उनके सहकर्मी वैज्ञानिकों ने देखा कि जब तक रोगी जीवित रहा, तब तक वह यांत्रिक तराजू एक ही वजन बताती रही । उसकी मापक सुई में तनिक भी अंतर नहीं दिखा । किंतु जिस क्षण रोगी के प्राण निकले उसी क्षण वजन मापक सुई पीछे घूम

गयी और उसने इंगित किया कि रोगी का वजन पूर्वापेक्षा ३० ग्राम कम हो गया है ।

विलियम मैक्डूगल ने इस प्रकार के परीक्षण ५०० से अधिक मरणासन्न रोगियों पर किये, किंतु प्रत्येक अवस्था में निष्कर्ष वही रहा । यानी रोगी की दैहिक मृत्यु पर उसके वजन में ३० ग्राम की कमी आ गयी ।

रहस्यमय रहस्य—जैव प्लाज्मा

रूसी वैज्ञानिकों ने पिछले दो दशकों में दूरबोध और मानवीय चेतना सरीखे परामनोविज्ञान के विषयों पर गहन शोधकार्य किया है । आस्ट्रेडर तथा सुफ्रोडर नामक वैज्ञानिकों का मत है कि प्रत्येक प्राणी के अंदर कोई प्रकाश पुंज या कोई सूक्ष्मातिसूक्ष्म ऊर्जा, जिसे उन्होंने अदृश्य माना है, निहित होती है यह प्रकाश पुंज ही मनुष्य के दैहिक शरीर को आवृत्त किये रहता है । आस्ट्रेडर और सुफ्रोडर ने इलैक्ट्रॉनिक सूक्ष्मदर्शी के जरिए मरणासन्न व्यक्ति के शरीर से इस प्रकाश पुंज को बाहर निकलते देखा है । रूसी वैज्ञानिक बी. एल. ग्रिश्चैंको ने पदार्थ की चार अवस्थाओं— ठोस, द्रव, गैस के अतिरिक्त एक अन्य अवस्था—जैव प्लाज्मा की खोज की है । ग्रिश्चैंको के अनुसार जैव प्लाज्मा ही 'प्राण' है तथा इसके शरीर से बाहर हो जाने का नाम ही मृत्यु है ।

जैव प्लाज्मा में स्वतंत्र इलेक्ट्रान और स्वतंत्र प्रोटान पाये जाते हैं, जिनका नाभिक से कोई सरोकार नहीं होता । मनुष्य की मृत्यु के बाद भी जैव प्लाजमा सक्रिय रहता है । आधुनिक जैव वैज्ञानिकों के अनुसार जैव प्लाज्मा मनुष्य की सुषुम्ना नाड़ी में विद्यमान होता है । क्या जैव प्लाज्मा वह सूक्ष्मातिसूक्ष्म तत्त्व तो नहीं है, जिसे आत्मा या रूह की संज्ञा दी जाती है ?

अमरीका के विख्यात जीव वैज्ञानिक डॉ. इर्वन कैमरान ने कोशिकाओं के नाभिक में पाये जाने वाले न्यूक्लिक एसिड पर गहन अनुसंधान कार्य किया है । केमरान का मानना है कि न्यूक्लिक एसिड एक अभौतिक तत्त्व है, जिसका अस्तित्व शरीर से पृथक हो जाने के बाद भी बना रहता है । केमरान के अतिरिक्त अब प्रायः सभी जीव वैज्ञानिक इस तथ्य को मानते हैं कि मानव शरीर की प्रत्येक कोशिका में ऐसा तत्त्व मौजूद है, जिसका कभी नाश नहीं होता । क्या आत्मा की अमरता के संदर्भ में वैज्ञानिकों की यह स्वीकारोक्ति खरी नहीं उतरती है ?

— ७२/६३, महावीरन गली
कटघर, मुट्ठीगंज इलाहाबाद (२११००३)

सबसे चौड़ी सड़क

संसार की सबसे चौड़ी सड़क ब्राजील में है । इस सड़क का नाम है— 'द मांयूमेंटल ऐक्सिस' । इस चौड़ी सड़क पर पास-पास सटे १६० मोटर गाड़ी (कारें) चलायी जा सकती हैं । इसके विपरीत इटली के रोम शहर में सबसे कम चौड़ी सड़क है । इस तंग सड़क का नाम है— 'सेंट जोंस लेन' और इसकी चौड़ाई मात्र ४८ सेंटीमीटर है ।

● मनोज राय

आस्था के आयाम

वे गांधीजी को जीवित जला देना चाहते थे

सन् १८९६ का नवंबर महीना । सुरेन्द्रनाथ बनर्जी और ज्योतीन्द्र मोहन ठाकुर, 'इंगलिश मैन' के संपादक मि. सांडर्स से मिलकर गांधीजी कलकत्ते में सभा की तैयारी कर रहे थे कि उन्हें नेटाल (अफरीका) से तार मिला, 'अविलंब आइए ।' यह सोचकर कि हिंदुस्तानियों के खिलाफ कोई नया आंदोलन उठा होगा, गांधीजी ने कलकत्ते का कार्य अधूरा छोड़ दिया और 'कोलैंड' नामक जहाज, जिसे नेटाल के भारतीय व्यापारी दादा अब्दुल्ला की फर्म ने खरीद लिया था, पर परिवार सहित सवार होकर नेटाल के लिए रवाना हुए । इसके बाद तुरंत ही पर्सियन स्टीम नेविगेशन कंपनी का स्टीमर 'नादरी' भी नेटाल के लिए चल पड़ा । दोनों 'जहाजों' में लगभग ८०० यात्री थे ।

भारत में गांधीजी ने नेटाल के गोरों की छीछालेदर की थी और बताया था कि इन गोरों के अत्याचार से वहां के हिंदुस्तानी कितने पीड़ित एवं आतंकित हैं । इस कारण नेटाल के गोरे गांधीजी से बहुत क्रुद्ध थे । उन्होंने सभा की और प्रस्ताव पारित किया कि नेटाल में दोनों स्टीमरों के मुसाफिरों के साथ गांधीजी को उतरने न दिया जाए । बहाना बनाया गया प्लेग की बीमारी का, क्योंकि १८९६ में भारत में प्लेग का प्रथम दर्शन हुआ भी था । जहाजों में कोई छूत का रोगी नहीं था, परंतु उन्हें २३ दिनों तक डरबन के बंदरगाह के प्रवेश पथ में रोके रखा गया । दादा अब्दुल्ला, जो 'कोलैंड' के मालिक और 'नादरी' के एजेंट थे, को गोरों ने खूब धमकाया, जहाजों को लौटा देने का लोभ भी दिखाया, पर वे और उनके साथी डरपोक न थे । उन्होंने धमकी देनेवालों को उत्तर दिया, "बरबादी के अंतिम चरण में पहुंचकर भी हम लड़ते रहेंगे, मगर निर्दोष यात्रियों को लौटा देने का पाप नहीं करेंगे । आप लोगों की तरह हमें भी अपने देश पर अभिमान है ।" दादा अब्दुल्ला की कोठी के वकील मि. एफ. ए. लाटन भी साहसी और बहादुर व्यक्ति थे । उन्होंने भी अन्याय के सामने सिर न झुकाने के लिए प्रेरित किया । गोरों की कमेटी की ओर से प्रेषित सूचना को जहाज के कप्तान ने पढ़कर यात्रियों को सुनाया, 'नेटाल के गोरे बहुत उत्तेजित हैं और उनके मिजाज की हालत जानते हुए भी अगर हिंदुस्तानी यात्री उतरने की कोशिश करेंगे तो बंदरगाह के ऊपर कमेटी के आदमी खड़े रहेंगे और एक-एक भारतीय को उठाकर समुद्र में फेंक देंगे ।' इस सूचना का भी यात्रियों पर असर नहीं हुआ और उन्होंने वापस जाने से इनकार कर दिया । अंततः नेटाल की सरकार ने

कर अनुचित प्रतिबंध को समाप्त करने की
णा की ।

मि. एस्कंब ने गांधीजी के पास संदेश भेजा,
प दिन में जहाज से न उतरें । शाम को मैं
गाह के सुपरिंटेंडेंट को भेजूंगा । उनके साथ
आपको घर जाना उचित रहेगा । आपके
वार के अन्य सदस्य जब चाहें उतर सकते
" इस सूचना से गांधीजी को खतरे का
सास हुआ, उन्होंने इसे चेतावनी के रूप में
ण किया । बाल-बच्चों को उन्होंने अपने
ी एवं मुवक्किल पारसी रूस्तमजी के यहां
दिया । दूसरे यात्री भी उतर गये । कुछ
य उपरांत मि. लाटन वहां आये और जब
गांधीजी के अब तक न उतरने का कारण
हुआ तो उन्होंने कहा, "आपको भय न हो
मेरे साथ चलिए । कहीं कुछ नहीं होगा ।"

गांधीजी ने उत्तर दिया, 'मुझे किसी प्रकार
डर नहीं । मैं मात्र इतना सोच रहा हूं कि मि.
कंब की सूचना का आदर करूं या न
? "मि. लाटन ने कहा, "मि. एस्कंब की
ना में छल-कपट नहीं हैं, ऐसा मानने का
धार क्या है ? वे विशेष विश्वसनीय नहीं हैं
यदि मान भी लिया जाए कि उन्होंने अच्छे
दे से सलाह दी है, तो भी उसे मान लेने से
पकी प्रतिष्ठा पर आंच आती है । अतः
पको अभी चलना चाहिए ।"

गांधीजी ने सिर पर पगड़ी रखी और मि.
टन के साथ चल पड़े । बंदरगाह से सेठ
म जी के मकान की दूरी पैदल चलने पर
घंटे में तय की जा सकती थी । बंदरगाह
अधिक भीड़ नहीं थी , परंतु पगड़ी के
ण लड़कों ने गांधीजी को पहचान लिया
और 'गांधी', 'गांधी', इसको मारो, 'घेरो',
चिल्लाते हुए उनकी ओर लपके । धीरे-धीरे
शोर बढ़ने लगा । अतः उन्होंने रिक्शा
बुलाया । रिक्शा, जिसे आदमी खींचते हैं ।
रिक्शावाले हब्शी को गोरों ने धमकाया ।
रिक्शावाला डर गया, बोला— 'खा' अर्थात
'ना' और चला गया ।

अब पैदल चलने के अलावा और कोई
रास्ता नहीं रहा । आगे-आगे गांधी जी,
पीछे-पीछे भीड़ । मुख्य मार्ग, वेस्ट स्ट्रीट पहुंचने
पर छोटे-बड़े सैकड़ों लोग उस भीड़ में शामिल
हो गये । एक तगड़े आदमी ने मि. लाटन को
दोनों हाथों से पकड़कर गांधीजी से अलग कर
दिया । अब वे सरलता से गांधीजी की सहायता
नहीं कर सकते थे । गांधीजी पर गालियों की
बौछार और पत्थरों की वर्षा होने लगी । चक्कर
खाकर गांधीजी गिरने ही वाले थे कि उनके हाथ
में एक मकान के आंगन की रेलिंग आ गयी ।
थोड़ा दम लेकर उन्होंने पुनः चलना प्रारंभ
किया ।

सूर्यास्त होते-होते गांधीजी सही सलामत
रूस्तमजी के निवास स्थान पर पहुंच गये ।
डॉक्टर ढाजी बरजोर ने उनकी मरहम-पट्टी की ।

पुलिस सुपरिंटेंडेंट अलेक्जेंडर खबर पाते ही
खुफिया पुलिस के साथ दौड़े और चुपके से घर
के दरवाजे पर अधिकार कर लिया, ताकि
दरवाजे को तोड़कर कोई अंदर न घुस सके ।

ब्रिटिश शासन ने हमलावरों पर मुकदमा
चलाने के लिए गांधीजी से कहा, परंतु गांधीजी
ने उन्हें निर्दोष बताते हुए इनकार कर दिया ।

—डॉ. रामनारायण सिंह 'मधुर'

गोष्ठी

भावना चतुर्वेदी, नीमच

● तंत्र शास्त्र में यंत्र से क्या अभिप्राय है ?

☐ ज्यामितीय रेखाचित्रों पर आधारित यंत्र शब्द संस्कृत की 'यम' धातु से बना है जिसका अर्थ है धारण करना । यंत्र वस्तुतः देवता की शक्ति और ऊर्जा को स्वयं धारण करता है । कुलार्णव तंत्र (५.८६) में कहा गया है कि जो संबंध आत्मा का शरीर के साथ है, तेल का दीपक के साथ है, वही यंत्र का देवता के साथ है । यंत्र देवता का मानवीय रूप न होकर ज्यामितीय रूप है । विशेष विवरण के लिए कृपया 'कादम्बिनी' के नवंबर'९५ के तंत्र विशेषांक में पृष्ठ ४० के लेख को पढ़ें ।

सरला शुक्ल, नासिक

● दिल्ली में निर्मित कमलदल सदृश ध्यान केंद्र किसका है ?

☐ यह बहाई धर्म का ध्यान केंद्र है जो २६ एकड़ भूमि में निर्मित है । इसका निर्माण कार्य सन् १९८० में प्रारंभ हुआ था और दिसंबर १९८६ में कुल दस करोड़ रुपयों की लागत पर बनकर तैयार हुआ था ।

संजय श्रीवास्तव, सतना

● अकबर ने कुल कितने विवाह किये थे, क्य किसी विधवा से भी किया था ?

☐ 'कादम्बिनी' के जनवरी'९६ अंक (गोष्ठी) में इस प्रश्न का विस्तार से उत्तर दिया गया है । अकबर ने बैरम खां की विधवा सुल्तान सलीमा बेगम से भी विवाह किया था । वह अवस्था में अकब से कुछ वर्ष बड़ी थी ।

अखिलेश जोशी, बड़वाह

● कुतुब मीनार का निर्माण कब हुआ था ?

☐ इस ७३ मीटर ऊंची मीनार का निर्माण कुतुब-उद-दीन ऐबक (मृत्यु सन् १२१०) ने ११९३ में प्रारंभ कराया था, जिसे



हरिवंश गहलोत, सीकर

● कपास संबंधी अनुसंधान की भारत में क्या व्यवस्था है ?

☐ भारत सरकार ने केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान की स्थापना अप्रैल १९७६ में नागपुर में की थी, इसके दो क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र भी हैं, एक कोयंबटूर (तमिलनाडु) में और दूसरा सिरसा (हरियाणा) में है ।



बलजीत बेरी, दिल्ली

● सोयाबीन किस प्रकार स्वास्थ्य के लिए अच्छा माना जाता है ?

□ सोयाबीन में लगभग ४० प्रतिशत उत्तम गुणवत्ता वाली प्रोटीन, २३ प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, २० प्रतिशत कोलेस्ट्रोल मुक्त तेल और संतुलित मात्रा में खनिज और विटामिन होते हैं ।सोयाबीन में दाल, मूंगफली, मांस और मछली से दोगुना, अंडे से तीन गुना और दूध से १० गुना अधिक प्रोटीन होता है । मधुमेह के रोगियों के लिए सोयाबीन संतुलित आहार है ।

उसके उत्तराधिकारी ने पूरा कराया ।

प्रह्लाद जसवानी, मांडला

● नाखून काटने से दर्द क्यों नहीं होता ?

□ नाखूनों का उद्गम क्षेत्र शरीर की त्वचा है । ये एक विशेष अवयव से निर्मित होते हैं जिसे केराटिन कहते हैं जो एक मृत कोशिका (प्रोटीन)है । इसीलिए नाखून काटने में दर्द नहीं होता ।

भागीरथ कुशवाहा, हजारीबाग

● जुगनू कैसे चमकता है ?

□ जुगनू में प्रकाश का उत्सर्जन पेट के नीचे स्थित भाग से होता है । इसमें 'लुसीफेरिन'और 'लुसी फेराज' नामक दो रसायन होते हैं । 'लुसीफेरिन' ही वह रसायन है जो ऑक्सीजन के साथ मिलकर प्रकाश उत्पन्न करता है । ऑक्सीजन और 'लुसीफेरिन'के मिश्रण में 'लुसीफेराज' उत्प्रेरक का काम करता है ।

राजेंद्र कुमार उरांव, रांची विजय कुमार कर्ण, औरंगाबाद

● जम्मू-तवी कन्याकुमारी हिमसागर एक्सप्रेस और गुवाहाटी-त्रिवेंद्रम एक्सप्रेस में कौन अधिक लंबी यात्रा की है ?

□ जम्मू-तवी-कन्याकुमारी हिमसागर एकसप्रेस ३,७३० किलोमीटर की दूरी तय करती है, जबकि गुवाहाटी-त्रिवेंद्रम एक्सप्रेस ३,५७४ किलोमीटर चलती है ।

चित्रा सिंह, रांची

● अगली शताब्दी का पहला 'एशियाड' कब और कहां होगा ?

□ कोरिया के दूसरे सबसे बड़े शहर तथा विशालतम बंदरगाह नगर पूसन में १४वें एशियाई खेल सन् २००२ में आयोजित किये जाएंगे । कोरिया में इससे पहले सन् १९८६ में राजधानी सोल में एशियाड हो चुका है । पूसन में २१वीं शताब्दी का

प्रथम एशियाड सितंबर २९ से अक्तूबर १४ तक १६ दिन चलेगा । इसमें ४३ सदस्य-देशों के १०,००० एथलीट और पदाधिकारी भाग लेंगे ।

निर्मल भगत, धनबाद

● ढाक और टेसू के फूल कहां होते हैं और रंग कैसा होता है ?

□ ढाक, पलास और टेसू एक ही फूल के नाम हैं । इसका वैज्ञानिक नाम ब्यूटिया मोनोस्पर्मा है तथा यह पैपिलियोनेसी कुल का सदस्य है । समुद्रतल से लेकर शिवालिक पहाड़ियों तक ये पाये जाते हैं । यह सरदियों में पतझड़ का शिकार हो जाता है । चालीस फुट तक ऊंचे ढाक के वृक्षों में बसंत के आगमन पर फूल खिलते हैं ।

संजय डबास, रोहतक

● भारतीय सेना की जाट रेजिमेंट का इतिहास क्या है ?

□ जाट रेजिमेंट की स्थापना सन् १७९५ में की गयी थी । इसने सन् १८४२ के प्रथम आंग्ल-अफगान युद्ध तथा सन् १८४८ के द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध में वीरता का प्रदर्शन करके शौर्य पदक प्राप्त किये थे । भारतीय स्वाधीनता के पश्चात हुए समस्त युद्धों में इसने हिस्सा लिया । स्वाधीनता पूर्व के युद्धों में यह ३० रण सम्मान और एक विक्टोरिया क्रॉस, तीन जॉर्ज क्रॉस के अतिरिक्त कई अन्य शौर्य सम्मान ले चुकी है । इसी प्रकार स्वाधीन भारत में यह चार रण सम्मान, ७ महावीर चक्र, ५ कीर्ति चक्र, ३४ वीर चक्र और १० शौर्य चक्र प्राप्त कर चुकी है । इस रेजीमेंट में अफसर और जवान 'राम राम' से आपस में अभिवादन करते हैं ।

इंद्रदेव मोहन, जयपुर

● आखिर डायनासौर लुप्त क्यों हुए ?

□ लगभग १८ करोड़ वर्ष पूर्व डायनासौरों का पृथ्वी पर वर्चस्व था । वे पृथ्वी पर उत्पन्न विशालतम जंतु थे । फिर भी लगभग ९ करोड़ वर्ष पूर्व वे लुप्त हो गये । वैज्ञानिकों का मत है कि शरीर से अत्यधिक भारी होने के कारण वे पृथ्वी पर खड़े नहीं हो पाते थे और पानी अथवा दलदल में रहते थे, उनमें इतनी समझ नहीं थी कि वे समय के परिवर्तन के साथ किस तरह अपने जीवन को ढालें । मौसम में परिवर्तन होने लगे थे, जिससे धीरे-धीरे दलदल समाप्त हो गये, पर्वत उभर आये तथा कुछ किस्म के डायनासौर खुश्क भूमि पर रह नहीं सके । मौसम में परिवर्तन के कारण वनस्पति उत्पादन भी बंद हो गया, जिन पर ये विशाल जंतु जीवित रहते थे । मौसम गरम से बदलकर सर्द भी होने लगा जो उनके अनुकूल नहीं रह गया ।

चलते-चलते

प्रश्न : आपकी दृष्टि में इस माह, इस मौसम में नया क्या हो रहा है ?

उत्तर : इन दिनों नये बैल खेतों को जोत रहे हैं ।

—सूत्रधार

सत्यकथा

प्रेतात्मा ने संत के जीवन को मोड़ा

● श्याम सुंदर भट्ट

लगभग छह फुट की ऊंचाईवाला हृष्ट-पुष्ट, हल्का, श्याम शरीर, श्वेत दाढ़ी, सिर के लगभग श्वेत बालों में से बिखरती दो गंगा-यमुना जैसी काली लटें, कटीली आंखें, बिना सिले वस्त्रों में लिपटा वह व्यक्तित्व आज भी जब कभी स्मृति पटल पर उभरता है तो मेरा मन उस दिव्यात्मा के श्री चरणों में सहसा नमन कर बैठता है ।

न केवल स्वरूप से अपितु मन, कर्म एवं वचन से भी वे सच्चे साधु थे । भाषण देते नहीं थे । उन्होंने किसी को भी मंत्र नहीं दिया, कभी कोई मठ या आश्रम नहीं बनाया । केवल उन ब्राह्मणों के पांच घरों से दिन में एक बार भिक्षा मांग कर अपनी उदरपूर्ति किया करते थे, जिनकी आय के स्रोत शुद्ध हुआ करते थे । जब वृद्धावस्था के कारण भिक्षा मांगने जाना संभव नहीं हुआ, तब उनके द्वारा निर्दिष्ट पांच-सात सद्-ब्राह्मण परिवारों से दस-बीस रुपया मासिक चंदा एकत्रित कर एक पंडित उनके लिए दो-तीन टिक्कड़ बना देता था, कभी पैसे छुए नहीं । मेवाड़ के तत्कालीन नरेश महाराणा फतहसिंह, भोपालसिंह एवं उनके कई सामंतों द्वारा बार-बार आग्रह करने पर भी वे उनके राजप्रासाद में भिक्षा लेने नहीं गये ।

उनकी उम्र का मुझे पता नहीं था । उदयपुर के वृद्धतम लोगों से भी यही सुना गया कि उन्हें जब भी देखा.तब भी वे ऐसे ही थे । मेरा संपर्क उनसे जीवन के अंतिम दशक में हुआ । यह अवधि ऐसी थी, जिसमें वह सिद्धमहापुरुष समस्त चमत्कारिक घटनाओं से हटकर शास्त्रों में की गयी मिलावट का पता लगाने तथा उसे शुद्ध करने के प्रयास में संलग्न था । उनके भक्तों ने उनकी सिद्धियों के कई चमत्कार भी सुनाये । केवल दृष्टि निक्षेप से ही रोगों को दूर कर देना, चीनी को नमक में बदल देना, व्यक्ति को देखने मात्र से उसकी आय के स्रोत, उसकी आदतों का पता लगा लेना, यज्ञ के समय बिना बाजार से मंगवाए समस्त सामग्री एक गुफा में से प्रकट कर देना आदि-आदि ।

सदा उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठे रहनेवाले उस परंपरा प्रिय महापुरुष से मैंने एक दिन पूछा—

"महाराज, क्या भूत-पिशाच आदि का अस्तित्व होता है ?"

"हां ।"

"क्या आप हमें अपना संस्मरण सुना सकते हैं ?"

स्वामी ने आरंभ किया—

"दुर्गा सप्तशती में श्लोकों की गिनती पूरी करने में 'उवाच' जैसे शब्दों को भी पूरा श्लोक

मान लिया गया है । इस तथ्य के प्रति मेरे मन में संदेह था क्योंकि हमारे पूर्वजों को श्लोकों का ज्ञान था । अतः 'उवाच' को पूरा श्लोक मान लिया जाना मुझे पच नहीं रहा था । यद्यपि मैं स्वयं पाठ करता था, फिर भी मन में संदेह अवश्य था । इस संदेह की निवृत्ति होगी, इस संकल्प को लेकर मैंने एक बार गंगोत्री से गंगासागर तक की पैदल यात्रा का निश्चय किया । मैं प्रायः मौन ही रहता था । पैदल ही संपूर्ण यात्रा करनी थी । कहीं भीख भी नहीं मांगता था । जो कुछ मुझे कोई दे जाता, यदि उस अन्न के पीछे शुद्ध आय का स्रोत होता तो मैं खा लेता अन्यथा भूखा ही रह जाता ।''

''मेरी यात्रा प्रयागराज तक बिना किसी क्षेपक के चलती रही । वहां मैं गंगा के किनारे एक ब्राह्मण के बगीचे में ठहरा हुआ था, प्रयाग में कई लोग मेरे परिचित थे । अतः उनके आग्रह के कारण लगभग एक सप्ताह तक वहीं रुका रहा ।''

''उस बगीचे में एक छोटा-सा देवालय था । उस देवालय में मालिक का पंद्रह-सोलह वर्ष का बालक संध्या-पूजा किया करता था । एक दिन मेरी निगाह उस बालक पर जम गयी । जब वह अर्चना पूरी कर उठा, तब मैंने उसे बुलवाया और उसकी उपासना का क्रम पूछा । उस बालक ने 'अपवित्रः पवित्रो वा' से लेकर संकल्प, अघमर्षण, न्यास, ध्यान अर्घ्य, उपस्थान आदि सभी क्रम बता दिये । उसके पूजा क्रम में मुझे कुछ ऐसा लगा कि वह त्रुटि पर था । अतः मैंने उसे सुझाया कि अमुक कार्य पहले कर लिया करो और अमुक कर्म इसके बाद । इस प्रकार उसे पूरा क्रम बता दिया ।''

''बात आयी-गयी हो गयी, किंतु तीन दिन बाद, वही बालक हाथ में लंबा छुरा, गले में रेशमी रुमाल और रौद्ररूप में उस बगीचे में प्रविष्ट हुआ । संभवतया वह किसी आवेश में था । मैं जहां बैठा था, उसके पांच कदम दूर वह छुरे का अग्रभाग जमीन में गाड़कर अकड़कर बैठ गया और कहने लगा —

''ऐ संन्यासी ।'' उसके संबोधन से ही मैं समझ गया कि इस बालक पर कोई प्रेतबाधा थी ।

''आप कौन हैं ?'' मैंने परिचय की जिज्ञासा से पूछा ।

''संन्यासी, तू मेरा भोजन क्यों छीनना चाहता है ?'' उसने मेरे प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया और प्रश्न कर डाला ।

''आपका मैंने कौन-सा अहित किया है ? आप अपना नाम तो बताइए ?''

''मेरा नाम शहंशाह... ।'' उसने अपना एक मुसलमान नाम बताकर परिचय दिया ।

''शहंशाह, अब आप मेरा अपराध बतायें ।''

''तूने इस ब्राह्मण के लड़के को उल्टा क्रम बता दिया । उसे फिर से कहो कि जिस क्रम से वह पूजा किया करता था, उसी क्रम से वह करता रहे ।'' प्रेतात्मा ने मुझे आदेश दिया ।

''किंतु उसका पुराना क्रम तो ठीक नहीं है ।''

''यह मुझे भी पता है कि वह क्रम ठीक नहीं है । उसके ठीक से उपासना न करने का लाभ हमें मिलता है । यही हमारा भोजन है । उपासना का क्रम ठीक से करने के कारण हम अपने भोजन से वंचित हैं ।''

"परंतु मैं आपका यह आदेश कैसे मान सकता हूं, क्योंकि वर्णों का गुरु ब्राह्मण होता है और ब्राह्मणों का गुरु संन्यासी होता है । संन्यासी होने के कारण सदुपदेश देना मेरा धर्म है । मैं आपकी सलाह मानने में असमर्थ हूं ।"

"कुछ पैसा चाहिए तो मुझसे ले लो, संन्यासी ।" उसके तेवर अभी तक भी वैसे ही थे ।

"आप कितना दे सकते हैं ?" मैंने विनोद में पूछ लिया ।

"जितना तू मांगना चाहे ।"

"फिर भी अपनी सीमा तो बतायें ।"

"मैं बारह वर्ष तक पूरे हिंदुस्तान को भोजन करा सकता हूं । बोल, तुझे कितना चाहिए ?"

"शहंशाह, यदि मुझे पैसों की ही आवश्यकता होती तो फिर संन्यासी क्यों बनता ? न मुझे पैसा चाहिए न आपकी सलाह मानने का आदेश ।"

कुछ क्षणों तक वह मौन हो गया । इसी समय मुझे एक तर्क सूझा । मैंने पूछा, "आपके नाम से लगता है कि आप मुसलमान हैं । आप जिसे भोजन बता रहे हैं, वह सनातनधर्मियों द्वारा की गयी उपासना की त्रुटियों का फल है । क्या यह अपने आपमें विसंगति नहीं है ?"

"संन्यासी, हम जन्म से मुसलमान नहीं थे । मेरा जन्म बनारस के एक विद्वान ब्राह्मण कुल में हुआ था । उस समय जब बनारस पर आक्रमण हुआ, तब मुझे भी मुसलमान बनना पड़ा ।"

"यह किस समय की घटना है ।"

"लगभग सात सौ वर्ष पुरानी ।"

"इसका अर्थ है आपने तत्कालीन संस्कृत ग्रंथों का अध्ययन किया होगा ।"



"हां ।" शहंशाह का उत्तर था ।

"तो फिर आप बतायें कि दुर्गा सप्तशती के श्लोकों में कौन-से श्लोक लुप्त हो गये और क्यों लुप्त किये गये ।"

मेरे इस प्रश्न का उसने कोई उत्तर नहीं दिया । कुछ क्षणों के मौन के बाद वह पुनः बोला—

"तुम इस ब्राह्मणपुत्र को पुराने क्रम से उपासना करने का आदेश दे दो और मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दे दूंगा ।"शहंशाह ने शर्त रखी । मेरे समक्ष द्वंद्व था । एक ओर मेरे अभीष्ट संदेह का उत्तर था तो दूसरी ओर ब्राह्मणपुत्र को गलत सलाह देने का अधर्म आचरण । मैंने तत्काल कहा, "आप उत्तर दें या नहीं, मैं इस बालक को वह आदेश नहीं दे सकता हूं, जो आप दिलवाना चाहते हैं ।"

"अच्छा— संन्यासी ! अब मेरा वक्त हुआ । मैं तेरे उत्तर से संतुष्ट हुआ ।"

"मेरी आपसे विनती है, इस ब्राह्मणपुत्र को अब छोड़ दें । इसके शरीर को अपना माध्यम नहीं बनायें ।"मैंने उस शहंशाह की प्रेतात्मा से अनुनय करते हुए कहा ।

"तूने मुझे प्रसन्न किया । मैं इस किशोर को भी छोड़ रहा हूं और तुम्हें सलाह देता हूं कि तेरे

प्रश्न का उत्तर विंध्यवासिनी के मंदिर में मिलेगा ।'' आपसी अभिवादन के बाद वह आवेशित किशोर बगीचे से बाहर चला गया ।

मैंने रातभर इस घटना पर विचार किया । दूसरे दिन मैंने अपनी शेष यात्रा स्थगित कर विंध्यवासिनी के मंदिर की ओर प्रस्थान किया । सप्तर्षियों एवं अगस्त्य जैसे महर्षियों द्वारा सेवित यह सिद्ध शक्तिपीठ है । वहां पहुंचकर मैंने दुर्गासप्तशती की एक सौ आठ आवृतियां पूरी कीं । किंतु किसी भी प्रकार का संकेत या आदेश नहीं मिला । उस समय मन में बार-बार यही प्रश्न उठा था कि मैं एक प्रेतात्मा की बात के प्रभाव में आकर अपनी सात्विक पदयात्रा बिना पूरी किये यहां आ गया । इस उहापोह की स्थिति में मैंने मां विंध्यवासिनी को रात्रि में अपना निश्चय सुना दिया कि अगले दिन सूर्योदय होते ही मैं चल दूंगा । उन दिनों मेरा डेरा विंध्यवासिनी की परिक्रमा में मंदिर के पिछवाड़े की ओर था । वहां कई अन्य साधु भी पड़े हुए थे ।

लगभग अर्द्धरात्रि का समय होगा, मुझे हल्की-सी तंद्रा आ गयी । वहीं मंदिर की परिक्रमा में बैठे-बैठे ही ऊंघने लगा था । उसी समय पता नहीं कहीं से एक वृद्ध महाशय का पदार्पण हुआ । श्वेत परिधान एवं श्वेत दाढ़ी वाला वह व्यक्ति मेरा नाम लेकर पुकार रहा था । मेरी तंद्रा टूट गयी । मैंने उसे संकेत से अपनी ओर बुलवाया । वह वृद्ध मेरी ओर मुड़कर कहने लगा—

''स्वामीजी आपको नेपाल जाना है ।'' बस इतना कहते ही वह मुड़ गया और तेज गति से चल दिया । मैं उठकर उसकी ओर भागता हुआ पीछा करने लगा, क्योंकि मन में कई प्रश्न एक साथ उठ खड़े हुए थे । कहां जाना है, किससे मिलना है, रास्ता कौन-सा है ? मुझे कुछ भी नहीं पता था । वह वृद्ध मंदिर के मुख्य द्वार तक तो मुझे दिखायी दिया, किंतु उसके बाद वह लुप्त हो गया ।

अब मैं क्या करूं और क्या नहीं करूं की स्थिति में आ गया । पैसा मैं छूता नहीं था । किसी से सहायता मांगना मैं चाहता नहीं था । नेपाल का नाम तो सुना था, किंतु न मुझे मार्ग का पता था न वहां मेरा कोई परिचित था । फिर भी यह निश्चय किया कि नेपाल जाकर देखा जाए कि वहां मुझे मेरे प्रश्न का उत्तर मिलता है या नहीं । मां को प्रणाम कर अगले दिन नेपाल की ओर चल पड़ा । नेपाल की ओर पैदल ही चल पड़ा । सड़कों के घुमावदार मार्ग की अपेक्षा मैंने सीधा मार्ग अपनाया । रास्ते के गांववालों से मार्ग पूछता-पूछता चलता ही गया । जैसे-तैसे करके नेपाल की सीमा पार कर गया । सीमा पार के बाद एक दिन एक पड़ाव पर नेपाल के सुरक्षा कर्मियों ने मुझे गिरफ़ार कर दिया ।''

''वहां से आप कैसे मुक्त हुए ?''

''नेपाल का एक सुरक्षा अधिकारी मेरी विचित्र आदत से संभवतया प्रभावित हुआ था । एक दिन उसने मुझे छोड़ दिया । मैंने अपनी यात्रा पुनः प्रारंभ की और किसी प्रकार चलते-चलाते अपनी यात्रा आरंभ करने के छह महीने बाद पशुपतिनाथ के मंदिर तक पहुंच गया । कुछ दिन मंदिर परिसर में ही पड़ा रहा । उस मंदिर में मेरा परिचय नेपाल के राजपुरोहित से हुआ । सामान्य परिचय धीरे-धीरे घनिष्ठता में

"हां कई बार । जब मैं जंगलों में मार्ग भूल जाता, तब वह प्रेतात्मा आगे-आगे चलकर मुझे रास्ता बताता था । पेड़ों की पत्तियों के चयन में भी वह मेरी सहायता करता था, यहां तक कि महाराजा के पुस्तकालय में वह मुझे यह भी बताता कि कौन-सी पुस्तक मुझे पढ़नी चाहिए ।"

बदल गया । कुछ ब्राह्मण युवकों से भी परिचय हो गया । उन्होंने मेरे लिए एक कमरे का भी प्रबंध कर दिया । वहां के कुछ सद्गृहस्थों से भी मेरा परिचय हो गया । उनके आग्रह पर मैंने पत्तियां छोड़कर भिक्षा लेनी भी आरंभ कर दी ।"

"मेरी प्रार्थना को सुनकर राजपुरोहितजी ने कई महीनों के बाद मुझे महाराजा के निजी पुस्तकालय में पढ़ने की अनुमति दिलवा दी । किंतु वहां भी भाषा की समस्या आ गयी, कई पुस्तकें नेपाली भाषा में थीं । अतः मैंने नेपाली भाषा भी सीखी ।"

"क्या आपको दुर्गा सप्तशती संबंधी आपकी जिज्ञासा का उत्तर मिला ?" इसके संबंध में मैंने एक देवीभक्त को उसे पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने हेतु कहा है ।"

"क्या आपको कभी उस शहंशाह नामक प्रेतात्मा के पुनः दर्शन हुए ।"

"हां कई बार । जब मैं जंगलों में मार्ग भूल जाता, तब वह प्रेतात्मा आगे-आगे चलकर मुझे रास्ता बताता था । पेड़ों की पत्तियों के चयन में भी वह मेरी सहायता करता था, यहां तक कि महाराजा के पुस्तकालय में वह मुझे यह भी बताता कि कौन-सी पुस्तक मुझे पढ़नी चाहिए ।"

प्रेतात्मा के कारण, स्वामीजी ने अपना मार्ग ही बदल दिया और लगभग अठारह वर्ष तक वे नेपाल में रहे । संपूर्ण संन्यासी समाज उनके नाम एवं यश से परिचित है । बचपन में जब उन्होंने संत बनने का मार्ग अपनाया, तब उनकी अध्ययन की ओर विशेष रुचि को देखकर उनके गुरुदेव ने उन्हें नाम दिया था— विधारण्य किंतु एक बार किसी बात पर उनके गुरुदेव ने उन्हें मजाक में कह दिया, "तू तो मूर्ख का मूर्ख ही रहा ।" बस उसी दिन से उन्होंने अपना नाम रख लिया—मूर्खारण्य ।

सामान्यजन उन्हें मूर्खानंदजी महाराज के नाम से भी पुकारते थे । आद्य शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित अरण्य संप्रदाय का वह एक अनमोल रत्न था । उसके असंख्य भक्त आज भी उदयपुर, ब्यावर, जयपुर, प्रयाग कलकत्ता में उनके निर्देशों के अनुसार अपनी उपासनाएं संपन्न कर रहे हैं ।

लगभग १२ वर्ष पूर्व उस महापुरुष ने अपनी इहलीला समाप्त कर दी । प्राचीन ग्रंथों की प्रामाणिकता के प्रति समर्पित वह महान संत जीवनभर खपता रहा ।

— १५/६, सागर एंक्लेव
विद्या भवन रोड, उदयपुर

ज्योतिष : समस्या और समाधान



—अजय भाम्बी

बाबूराम वोहरा, शामली
प्रश्न : लोकसभा में स्टैनो हेतु ज्वाइनिंग कब होगी ? उपाय बतायें ?
उत्तर : इसी वर्ष कार्य सिद्ध होगा । पुखराज पहनें ।

सुरेन्द्र झा, निपनिया (बेगूसराय)
प्रश्न : आध्यात्म जीवन जी पाऊंगा या नहीं ?
उत्तर : मिश्रित जीवन ही जी पाएंगे ।

डॉ. मनोज अवस्थी, लखीमपुर-खीरी
प्रश्न : वाहन का योग कब तक ?
उत्तर : या तो इस वर्ष, वरना १९९८ में ।

अभिषेक जैन, जम्मू तवी
प्रश्न : शुक्र दशा में कौन-से कार्य संपन्न होंगे ?
उत्तर : पढ़ाई संपन्न होगी, रोजगार मिलेगा । पत्नी और संतान सुख भी इसी दशा में मिलेगा ।

जगदीश नारायण शर्मा, अलीगढ़
प्रश्न : शारीरिक एवं आर्थिक कष्टों से मुक्ति कब होगी ?
उत्तर : जुलाई से आपका अच्छा समय प्रारंभ हो रहा है । सारे सुख मिलेंगे ।

ओ. पी. गुप्ता, दिल्ली
प्रश्न : विदेश में बसे पुत्र, पुत्रवधु का हमें सुख मिलेगा या नहीं ?
उत्तर : सन् १९९८ से यह सुख मिलेगा ।

कविता जैन, जयपुर
प्रश्न : शादी कब होगी ?
उत्तर : अगले वर्ष के पूर्वार्ध में ।

डॉ. शिव प्रसाद सिंह, मथुरा
प्रश्न : पदोन्नति किस सन् में होगी ?
उत्तर : योग तो इसी वर्ष बन रहा है ।

यश शर्मा, चुरु (राजस्थान)
प्रश्न : नया काम किस लाइन में करूं ? पुराना बंद हो गया है ।
उत्तर : कमीशन का कार्य करना सबसे उत्तम रहेगा ।

पुष्पा कुमारी, मुलताई (म. प्र.)
प्रश्न : क्या डॉक्टर बनूंगी ?
उत्तर : अत्यधिक प्रयत्नों के बल पर बन सकती हैं ।

अबु असगर, मोतिहारी (बिहार)
प्रश्न : भाग्य उदय हेतु रत्न सुझायें ?
उत्तर : पुखराज और मूंगा दोनों धारण करें, भाग्य उदय हो जाएगा ।

राजेन्द्र शर्मा, करौली
प्रश्न : मैंने राजस्थान में हिंदी व्याख्याता हेतु आवेदन किया है, वर्तमान में दिल्ली में अध्यापक पद पर कार्यरत हूं । क्या राजस्थान में व्याख्याता बन सकूंगा ? यदि हां तो कब तक ?
उत्तर : चंद महीनों में यह शुभ सूचना आपको मिलेगी ।

मीनाक्षी, चंडीगढ़
प्रश्न : सफेद दाग की समस्या से छुटकारा कब तक मिलेगा ? कोई रत्न बतायें ?

तर : लहसुनिया और मोती धारण करें, ाभ की संभावना है ।

ा, अजमेर

न : विवाह होगा या नहीं ? यदि हां तो कब क ?

र : विवाह होने की संभावना सितम्बर बाद प्रबल हो रही है ।

ुलिका कुमारी, खगड़िया

: मुझे नौकरी कब मिलेगी ?

र : नौकरी इसी वर्ष मिलेगी ?

ा कुमार शर्मा, मेरठ

: मेरे ऊपर चल रहे ३७६ के केस में क्या ा ?

र : बरी हो जाएंगे ।

चंद जैन, दिल्ली

: अपना मकान व अच्छा स्वास्थ्य कब तक ?

उत्तर : मकान अगले वर्ष, स्वास्थ्य में लाभ शीघ्र होना चाहिए । योग्य चिकित्सक को भी दिखायें ।

निर्मल कुमारी, सोनीपत

प्रश्न : तलाक होगा या नहीं ? आपसी राजीनामा या कोर्ट के द्वारा और कब तक होगा ?

उत्तर : तलाक आपसी सहमति से भी हो सकता है ।

अभय कुमार, [illegible] ([illegible])

प्रश्न : सी. ए. कब तक पूर्ण होगा ? रत्न बतायें ?

उत्तर : अब शिक्षा में व्यवधान नहीं आना चाहिए । नीलम धारण करें ।

प्रविष्टि—१७१



नाम

जन्म-तिथि (अंग्रेजी तारीख) .... महीना.................. सन्..................

जन्म-स्थान.................................... जन्म-समय ....

वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण..

पता..

आपका एक प्रश्न ....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें..

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि १७१) 'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

अंतिम तिथि : २० जून, १९९६

पुत्र का पुनर्जन्म

● रतनलाल जोशी

कुछ जिंदगियां ऐसी होती हैं कि न चाहते हुए भी चमत्कार पर चमत्कार देखने को मिलते हैं। वैसे कुछ लोग जीवनभर चमत्कार देखने के लिए तरसते रहते हैं। मैंने चमत्कारों एवं दैवीय विधानों में कभी विश्वास नहीं किया है और न करना चाहता हूं। किंतु बार-बार चमत्कारों के ऐसे प्रसंग सामने चुनौतियों के रूप में आये हैं कि विश्वास का अडिग बांध या तो हिलने लगा या बाढ़ में बह गया है।

सुनते ही स्तब्ध

'बाबा' के साथ मेरी पहली भेंट बंबई में हुई थी। स्व. कन्हैयालाल मुंशी के साथ हम लोग भी बाबा के दर्शनार्थ गये थे। वे एक मंत्री के घर पर ठहरे हुए थे। जैसे ही मैंने उन्हें नमस्कार किया, उन्होंने अपनी मोहक मुसकान के साथ मेरे कंधे पर हाथ रखा और सहज भाव से कहा, ''अपेंडिक्स का ऑपरेशन नहीं कराया, अच्छा किया। तुम्हारी अपेंडिक्स में कुछ भी तो खराबी नहीं है। डॉक्टर नहीं जानते, जो दर्द रहता है, वह आंतों की सूजन के कारण है। खीर का भोजन करो, दो हफ्ते में दर्द मिट जाएगा।'' मैंने सुना तो आश्चर्य-स्तब्ध रह गया। करीब सालभर से मेरे पेट में अपेंडिक्स के स्थान पर निरंतर दर्द रहता था और एक्स-रे कराकर डॉक्टर ने ऑपरेशन का निर्णय भी कर लिया था। किंतु मैं रजामंद नहीं था। मेरे सिवाय अन्य किसी को भी इस प्रसंग का परिचय नहीं था। मैं सोचता रह गया कि बाबा मेरे इन निजी रहस्य तक कैसे पहुंचे? भेंट के समय भी मेरे मन में यह प्रसंग नहीं था, जिससे मेरे मन की बात वह पढ़ लेते, क्योंकि 'मन की बात पढ़नेवालों' को देश-विदेश में मैंने कई ऐसे चमत्कार करते हुए देखा है।

एक बार मैं मिस्र की राजधानी काहिरा नगर में था। जिस होटल में मैं ठहरा हुआ था, वहां पर एक सुप्रसिद्ध 'साइकिक' लड़की जैन गूल्ड का दफ़्तर भी था। जैन गूल्ड अपने साइकिक चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध थी। प्रथम भेंट में ही वह आपको अपनी 'रीडिंग' से चमत्कृत कर देती थी। आपके जीवन की कोई न कोई ऐसी घटना वह बता सकती थी कि आप आश्चर्य में पड़ जाते। मनोविनोद के लिए विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर हमें उसके दफ़्तर में ले गये। समय उन्होंने पहले ही तय कर रखा था। हमारे

हुंचते ही उसने मुसकराते हुए कहा, "आपको रसों लंदन पहुंचना है, साढ़े तीन बजे शाम को र्टेंड रसेल से आपकी भेंट होनी है। मगर आप दो रोज बाद मंगल को ८.३० बजे से हले उनसे नहीं मिल पाएंगे ।"

दैवीय व्यक्तित्व

किंतु 'बाबा' के पास ऐसा कोई जादू नहीं है। वह चमत्कृत करने के लिए अपने दैवीय यक्तित्व को प्रकाशित नहीं करते। उनका उद्देश्य आध्यात्मिक है और पूछनेवाले की श्रद्धा के अनुसार समस्याओं का समाधान करने का होता है। मुंबई की ही बात है मेरे एक डॉक्टर साथी मेरे साथ उनसे मिलने के लिए गये। अलौकिक दैवीय और अतिमानवीय चमत्कारों के वे घोर निंदक थे। उनकी दृष्टि में प्रकृति के याय के सम्मुख भगवान भी, यदि वह कहीं है, अंगुली नहीं उठा सकता। साधु-संत अध्यात्म-सत्संग, सब को वे ढोंग मानते थे। कहते थे कि इस सब से तो मार्फिया का एक इंजेक्शन लगाकर दिमाग को सुन्न कर देना बेहतर है। पूर्व निश्चित समय पर जब वे सत्य साई बाबा के दर्शनार्थ पहुंचे तो मुसकराते हुए बाबा ने मुझसे कहा, "तुम्हारे मित्र तो हठ को ही ईश्वर मानते हैं। इसलिए इनकी मत सुनना।" फिर उन्होंने सदैव की भांति हाथ घुमाते हुए चुटकी से विभूति मेरी हथेली पर रखी और कहा, "बाबा की यह विभूति इनकी पत्नी को देना, वह पूना में छह महीने से बीमार अस्पताल में पड़ी हुई हैं। उनकी हृदय नली सड़ी नहीं है, बिलकुल ठीक है। फेफड़ा फूल जाता है, हृदय पर दबाव पड़ता है। एक फेफड़े में पानी भरा हुआ है।" साथ ही मेरे मित्र की ओर अनिमेष सम्मोहन-दृष्टि से देखते हुए कहने लगे, "एक चिड़िया समुद्र की सीमा खोजने के लिए निकली। हठ से प्रेरित इतनी उड़ी कि बीच में थक गयी। क्या करे ? लौटे भी तो किधर लौटे ? कैसे लौटे ? किंतु जिस परमेश्वर ने जीवन उत्पन्न किया है, उसे तो घट-घट का पता है। चिड़िया जब जीवन की आशा खो बैठी तो क्या देखती है कि एक जहाज तेजी से उसके पास से गुजर रहा है। समुद्र के ओर-छोर की खोज का हठ छोड़कर जहाज पर जा बैठी। जीवन में ऐसा ही होता है। आदमी भटक जाता है, किंतु भगवान किसी को हमेशा भटकने नहीं देता है।" हमारा मित्र विस्मय-विमुग्ध था। बाबा ने जो रहस्योद्घाटन किया था, वह सही था। उनकी पत्नी पूना के अस्पताल में बीमार पड़ी थी और अगले पखवाड़े में ही डॉक्टर लोग 'सड़ी हुई' नली पर ही सारा दोष मढ़कर उसे काटने की सोच रहे थे।

हमारे उक्त मित्र अच्युत दामोदर टैम्बे हमें लेकर पूना पहुंचे और अपने डॉक्टरों से बाबा की बात बतायी। तीन में से दो डॉक्टरों ने सारी बात हंसी में उड़ा दी, मगर एक नवयुवक डॉक्टर ने आग्रह किया कि क्यों ने फिर से जांच कर ली जाए। जांच हुई। बाबा की बात सही निकली। टैम्बेजी डेढ़ महीने बाद अपनी पत्नी को लेकर हमारे मुंबई निवास पर आये तो लगा जैसे वे बुद्धि के नये सांचे में ढल गये हों। प्रणाम करते ही बोले, "बाबा की चिड़िया तो समुद्र की सीमाएं खोजने निकली थी और उसके लिए भगवान ने जहाज भेज दिया। मगर मैं तो आसमान को नापने के लिए चल पड़ा था।

"मेरे पुत्र का पुनर्जन्म बाबा की कृपा का फल है । बाबा ने मेरे परिवार का वंश बुझने से बचाया । इसलिए इस लड़के पर बाबा का हक ही सर्वोपरि है, वे ही इसके पिता हैं । आज से मेरा जीवन बाबा के ऋण को चुकाने में ही व्यतीत होगा और मेरे मरने के बाद मेरी सारी चल-अचल संपत्ति नये अस्पतालों के निर्माण में लगायी जाए ।"

थक भी गया था, लेकिन अहंकार आगे ही खदेड़ता जाता था । बाबा की दया देखिए कि स्वयं जहाज बनकर उन्होंने मुझे उबार लिया ।"

दुष्टों का विनाश

पिछले बीस वर्षों के अंतर्गत 'बाबा' से इसी प्रकार अनेक बार भेंट हुई और हर बार कुछ नयी चमत्कृति मेरे अनुभव में आयी । एक बार दिल्ली में एक मित्र के निवास पर जब वे ठहरे हुए थे तब मैं उनसे भेंट करने गया । बाहर हजारों व्यक्तियों की भीड़ थी । अंदर एक बड़े हॉल में देश के विभिन्न क्षेत्रों के करीब सौ प्रख्यात महानुभाव बैठे हुए थे । उपराष्ट्रपति, केंद्रीय मंत्रिमंडल के सदस्य, मुंबई से आये हुए कई हीरो-हीरोइन और अनेक उद्योगपति उस हॉल में संपूर्ण श्रद्धा में विजड़ित बैठे थे । मैं भी जाकर एक कोने में बैठ गया । निश्चित समय पर बाबा बाहर आये और सस्मित किंतु तीव्र दृष्टि से मेरी ओर देखते हुए सीधे मेरे पास पहुंचे । मुझे विभूति दी और कहा, "अभी जाओ, अढ़ाई घंटे बाद मैं तुम्हें बुलाऊंगा । तुम्हारे प्रश्न का उत्तर तुम्हें मिल गया है ।" मैं उठकर चला गया । अढ़ाई घंटे बाद उसी भवन में अपने निजी कक्ष में उन्होंने मुझे बुलाया । मैं अंदर पहुंचा तो श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित बाहर निकल रही थीं । मुझे बड़े प्रेम से पास बैठाते हुए कहा, "पाकिस्तान से लड़ाई होगी । बाबा विचलित नहीं हैं । सारा प्रबंध हो गया है । राष्ट्र की रक्षा का दायित्व बाबा ने ले रखा है । सुकर्म का मार्ग है, विजय होगी, दुष्टों का विनाश करने के लिए ही तो बाबा ने अवतार लिया है ।" फिर वे बोले, "कभी कुछ व्यक्तिगत भी पूछा करो ।" मेरे मन में वास्तव में कोई प्रश्न नहीं था । बाबा बोले, "जानते हो जब मन के आकाश पर प्रश्नों के अंधड़ उत्पात नहीं मचाते, तब आसमान कितना निर्मल, कितना मनोरम रहता है । वह प्रभु का ही तो स्वरूप है ।"

दिल्ली-निवास के समय ही बाबा के पास एक मंत्रीजी आये । चरण पकड़कर बैठ गये । बाबा से अनुमति पाकर अपनी विपदा सुनाने लगे, "प्रधानमंत्रीजी मुझसे अप्रसन्न हैं, मेरी संपत्ति की जांच-पड़ताल की जाएगी, मुझे निकाला भी जा सकता है । बाबा, कृपा कीजिए, मुझे इस विपत्ति से बचाइए ।" बाबा ने टकटकी लगाकर मंत्रीजी की तरफ देखा । गंभीर किंतु मधुर स्वर में कहा, "यह तो कोई विपत्ति नहीं है । इससे कहीं बड़ी विपत्ति तुम्हारे घर में है, जिससे उद्धार की तुम जरूरत महसूस नहीं करते । अपनी पत्नी को वापस घर में

बुलाओ, सद्‌गृहस्थ का जीवन फिर से अपनाओ। तुमने अपनी पत्नी और परिवार को बहुत कष्ट दिया है। पागल पशु की भांति यहां-वहां भागते रहते हो। मनुष्य की तरह से रहो। तुम्हारी अनीति भगवान कब तक बर्दाश्त करेगा? यदि आनेवाले सर्वनाश से बचना चाहते हो तो जीवन का क्रम बदलो। गटर से उठकर गंगा में नहाओ। क्या भगवान की ऐसी अपरिमित दया और आश्वासन को भी तुम्हारे बहरे कान सुन नहीं रहे हैं?" श्रीकृष्ण गीता में भुजा उठाकर कहते हैं—

स्वल्पमस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्।

—अत्यल्प धर्म का आलंबन भी बड़े-से-बड़े भय निवारण कर देता है।

ब्लड कैंसर से मुक्ति

मंत्रीजी बाबा की चेतावनी को माने या नहीं, किंतु एक व्यापारी ने बाबा के इस प्रवचन के प्रत्येक शब्द को अपनी श्रद्धा में अंकित कर लिया। हृदय के घट को उसने काफी मांजकर उसमें विश्वास का जल भी लबालब भर लिया। यह व्यापारी भारत के पड़ौसी देश का निवासी था और तस्करी के धंधे में वर्षों से लिप्त रहा था। लाखों रुपये की संपत्ति उसने अर्जित की थी और धन के बल से उसकी तुलना भी प्रतिष्ठित व्यापारियों में होती थी। उसका एक चौबीस बरस का लड़का था, जो उसकी ही तरह इस व्यापार में निष्णांत हो गया था। थोड़े दिन बाद लड़का बीमार हुआ और डॉक्टरों ने जांच-पड़ताल के बाद ब्लड कैंसर का निदान किया। व्यापारी के होश उड़ गये। इकलौते जवान बेटे को मृत्यु के मुख में देखकर उसने सारे छल-प्रपंच और हथकंडे उसे विषैले सर्पों की भांति भयावने लगने लगे। विदेशों में चिकित्सा की योजना बनायी, किंतु डाक्टरों ने आगाह किया कि तुम्हारे बेटे अविनाश को अब कोई डॉक्टर बचा नहीं सकता। सब तरफ से निराश जीव आखिर कहां जाएगा, अपने परम मूल की तरफ ही तो भागेगा। कुछ पूर्वजन्म के सुकर्म कहिए या प्रचलित जीवन का गंदगियों को तिलांजलि देने का संकल्प। उक्त व्यापारी बाबा का प्रवचन सुनने के लिए सभा में आ गया।

छह-सात महीने बाद वह अपने लड़के की डॉक्टरी जांच के लिए वापस जब दिल्ली आया, तब वह पहले-जैसा कीचड़ में सड़ रहा कीड़ा नहीं था, बुद्धि एवं भावना में पवित्र एक सांगोपांग परिवर्तित व्यक्तित्व था। अपनी संपत्ति उसने कुछ तो एक धार्मिक मिशन को दे दी थी और कुछ दो अस्पताल बनवाने के लिए एक ट्रस्ट को दान कर दी थी। डॉक्टरों की जांच के बाद व्यापारी का लड़का रोग से सर्वथा मुक्त साबित हुआ। डॉक्टरों ने अपने इलाज का श्रेय लिया। लोगों ने व्यापारी के पुण्य-कार्यों की महिमा गायी, किंतु व्यापारी ने अपनी वसीयत में लिखा, "मेरे पुत्र का पुनर्जन्म बाबा की कृपा का फल है। बाबा ने मेरे परिवार का वंश बूड़ने से बचाया। इसलिए इस लड़के पर बाबा का हक ही सर्वोपरि है, वे ही इसके पिता हैं। आज से मेरा जीवन बाबा के ऋण को चुकाने में ही व्यतीत होगा और मेरे मरने के बाद मेरी सारी चल-अचल संपत्ति नये अस्पतालों के निर्माण में लगायी जाए।" ●

—१२, फीरोज गांधी मार्ग
लाजपतनगर-III, नयी दिल्ली-११००२४



धमकी से डर गये

प्रदीपकुमार गुप्ता, बुलंदशहर : सन १९९१ में एक व्यक्ति ने मेरे पिताजी को अपने सुअर फार्म में बीस हजार रुपये लेकर भागीदार बना लिया । बाद में वह गड़बड़ी करने लगा तो पिताजी ने उसे हिसाब दिखाने और भागीदारी खत्म करने को कहा । उसने पैसा वापस करने से भी इनकार कर दिया । पंचायत हुई, जिसमें उसने पैसा लौटा देने का वायदा किया, लेकिन पैसा आज तक नहीं दिया । उस व्यक्ति का पिता पशु चिकित्सालय में चपरासी है और पिछड़ी जाति विशेष का है । वह हमें डराता है कि वह पुलिस से मिलकर हमें झूठे केस में फंसा देगा । हम क्या करें ?

डरते रहने से किसी भी बात का निर्णय नहीं हो सकता । पंचायत में हुए फैसले का क्या प्रमाण है ? क्या पंचायत के समक्ष पैसा वापस करने का वायदा लिखकर किया गया ? साझेदार को अपना साझा समाप्त करने तथा लाभ-हानि का हिसाब कराने का अधिकार है ।

यदि पंचायत का लिखित निर्णय उपलब्ध है, तो उस आधार पर रकम वसूल करने की कार्यवाही की जा सकती है । ऐसा न होने पर साझेदारी समाप्त करने तथा हिसाब करने के लिए कार्यवाही की जा सकती है

जहां तक धमकी देने का प्रश्न है, आप पहले ही पुलिस में रिपोर्ट लिखवा दें । इससे आपका पक्ष मजबूत हो सकेगा ।

अपील में देरी

एक मुकदमे का निर्णय हमारे खिलाफ हो गया । नियमानुसार अपील के लिए निर्धारित समय के बाद, दस दिन देर से दाखिल की गयी । दरअसल, वकील साहब के मुंशी अपील दाखिल करना भूल गये । अपनी भूल छिपाने के लिए मुंशी ने किसी को कुछ नहीं बताया और देरी के लिए कोई अलग से दरख्वास्त भी नहीं लगायी । अब सुनवाई की तारीख आनेवाली है । मुझे डर है कि कहीं देरी के कारण अपील रद्द ही न कर दी जाए । मुझे क्या करना चाहिए ?

दीवानी प्रक्रिया संहिता के आदेश-४१ नियम ३ए (१) के अंतर्गत यह व्यवस्था है कि यदि कोई अपील निर्धारित समयावधि के बाद प्रस्तुत की जाए तो उसके साथ, उन कारणों का वर्णन करते हुए, जिनके आधार पर अपीलकर्ता न्यायालय को यह विश्वास दिलाना चाहे कि अपील समय पर न जमा करने के लिए उपयुक्त कारण से तथा अपील को देर होने के बाद भी विचारार्थ स्वीकार कर लिया जाए, एक आवेदन भी प्रस्तुत करे । इस आवेदन के साथ एक शपथ-पत्र भी होना चाहिए । इस प्रकार का आवेदन व शपथ-पत्र

ील के साथ दिया जाना चाहिए ।

ील समय पर तैयार होने के बावजूद, कील के मुंशी की भूल से अपील समय जमा नहीं कराया जाना, स्वीकार योग्य धार है ।

यह आवेदन आप अब न्यायालय में दे कते हैं । आवेदन समय-सीमा धिनिमय (१९६३) की धारा ५ व ानी प्रक्रिया संहिता के आदेश ४१ मम ३ ए (१) अंतर्गत दिया जाना हिए । देश के उच्च न्यायालय, विशेष से ए.आई.आर. के १९८१ केरल ०, १९८६ कर्नाटक १९९, १९८४ ई ३९० व १९८७ उच्चतम न्यायालय ५३ में वर्णित निर्णयों का आप लाभ सकते हैं ।

नियमानुसार है ?

कुमार जैन, अलीगढ़ : सेवा में मितीकरण तथा स्थायीकरण क्या एक ही क को किया जा सकता है ? यदि किया है तो क्या यह नियमानुसार सही है ?

सेवा में नियमित करने तथा स्थायी ने का आदेश एक ही दिन में दिया जा ता है और इसे अनुचित नहीं कहा जा ता । नियमित करने का आदेश तथा में स्थायी करने का आदेश एक ही तथा एक ही आदेश द्वारा भी दिया जा ता है ।

डॉक्टरेट उपाधि चाहिए

रेलाल दास, सुलतानगंज : मैं मैट्रिक पास

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ

—रामप्रकाश गुप्त

हूं । मैट्रिक किये हुए मुझे पच्चीस साल हो गये । मैं स्थानीय विश्वविद्यालय से हिंदी में पी-एच. डी. करना चाहता हूं । विश्वविद्यालय के किस अधिनियम के अंतर्गत मैं उक्त उपाधि हासिल कर सकता हूं ? ज्ञातव्य है कि श्रीमती इंदिरा गांधी, आशा भोंसले और पक्षी-विज्ञानी सालिम अली आदि को बी. ए., एम.ए. किये बिना ही डॉक्टरेट की उपाधि दी जा चुकी है ।

आप मैट्रिक पास हैं और अब सीधे हिंदी में डॉक्टरेट (पी-एच.डी.) करना चाहते हैं । डॉक्टरेट उपाधि के लिए विश्वविद्यालयों के नियम हैं । उसके लिए आपको स्नातक, एम. ए., एम-फिल की परीक्षाएं उत्तीर्ण करनी होगी और उसके बाद आप पी-एच. डी. करने की सोच सकते हैं ।

आपने कुछ विशिष्ट व्यक्तियों को डॉक्टरेट की उपाधि देने का उल्लेख किया है । ये मानद उपाधियां हैं । उन्हें सम्मान स्वरूप दी गयीं मानद उपाधियां किसी परीक्षा के आधार पर नहीं दी गयीं । बल्कि उनके विशिष्ट योगदान के लिए दी गयी हैं । मानद उपाधियां देने का निर्णय विश्वविद्यालय द्वारा अपने नियमों के अंतर्गत किया जाता है ।

बार कौंसिल में पंजीकरण

मदन शर्मा, बीकानेर : कादम्बिनी के अगस्त १९९५ के अंक में पृष्ठ ८३ पर 'कुछ विशेष पदों पर कार्य कर रहे सरकारी कर्मचारी सेवाकाल में बार कौंसिल में वकील के रूप में पंजीकरण करा सकते हैं,' छपा है। कृपया, मुझे अवगत कराएं कि क्या पब्लिक सेक्टर के एक बैंक का लिपिक-कैशियर ऐसा पंजीकरण करा सकने में योग्य है या नहीं? यदि है तो इससे संबंधित दस्तावेज की फोटो प्रति या संदर्भ पुस्तक का ब्योरा लिखें।

किसी भी अन्य सेवा के व्यक्तियों को साधारणतया बार कौंसिल में वकील के रूप में पंजीकरण नहीं किया जाता। विधि अधिकारी के रूप में कार्यरत व्यक्ति को इसका अपवाद माना जाता है। इसका कारण उक्त पद के व्यक्ति का विधि-कार्य से सीधा संबंध होना है। बैंक के लिपिक या खजांची का विधि-कार्य से सीधा संबंध नहीं होता। इसलिए उनका सेवाकाल में वकील के रूप में पंजीकरण नहीं किया जाता।

उपहार में प्लाट

सत्य प्रकाश पाल, कानपुर : विकास प्राधिकरण का रजिस्टर्डशुदा चालीस गज का प्लाट मैं अपनी भाभी को उपहारस्वरूप देना चाहता हूं। इस तरह उपहार दी गयी जमीन को भाभी के नाम रजिस्ट्री कराने में क्या स्टांप का खर्चा लगेगा? और प्रक्रिया क्या होगी?

उपहार में दी जानेवाली संपत्ति का हस्तांतरण होता है— इसलिए इस प्रकार के हस्तांतरण में मूल्य नहीं दिया जाता है स्टांप पेपर पर लिखवाकर ही पंजीकरण के लिए प्रस्तुत किया जा सकता है। उपहार पत्र निश्चित मूल्य के स्टांप पेपर प[र] न होने की स्थिति में उक्त मूल्य से ग्यारह गुना तक का दंड लगाया जा सकता है।

उपभोक्ता से धोखा

भरत गुप्ता, कानपुर : एक दुपहिया वाहन खरीदा, जिसके साथ एक चश्मा कीमत ९९.० रुपये का मुफ्त मिलना था, जैसा कि निर्माता कंपनी ने विज्ञापन दिया था, जो मुझे नहीं मिला। मैंने अधिकृत विक्रेता से कई बार संप[र्क] किया परंतु उसने हर बार बहाने बनाकर टाल दिया कि स्कीम खत्म हो गयी।

आपके दुपहिया वाहन खरीदते समय उसके साथ एक चश्मा लेने की योजना थी। योजना के चालू रहते वाहन खरीदनेवाले को चश्मा प्राप्त करने का अधिकार है। यदि यह ठीक है कि आप[के] वाहन खरीदने के दिन उक्त योजना चालू थी और अन्य क्रेताओं को चश्मा दिया [जा] रहा था, तो आपको भी चश्मा मिलना चाहिए। चश्मा नहीं दिए जाने की शिकायत आप उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत स्थापित जिला पी[ठ] में कर सकते हैं तथा विक्रेता को घोषणानुसार चश्मा या उसका मूल्य देने [के] लिए आवश्यक आदेश देने की प्रार्थना कर सकते हैं। इस कार्यवाही में हुए आपके खर्च की भरपाई का आदेश भी जिलापीठ दुपहिया निर्माता या विक्रेता [को] दे सकता है।

सड़कें सड़कें जांदिये पुटियारे वी
कंडा चुभा तेरे पैर बांकिये नारे वी
शाबा... होए...

जगत चाची ने फिर मोरचा संभाल लिया था । सुरेंद्र मासी ने ढोलक करारी कर दी । विमला भाभी और उनकी दोनों लड़कियां ढोलक को घेरे बैठी थीं और छोटू अठन्नी से ढोलक पर ठेका दे रहा था । कल बारात आनी थी, इसलिए आज गाने-बजाने का पूरा जोर था । भाबो बड़े सोफे पर फैली बैठी थी । जीता रहे अशोक, दस साल के अंदर-अंदर कितनी लहर-बहर कर दी थी । रात-दिन की मेहनत और फैक्ट्रियों की बरकत से आज भगवानजी की कृपा बनी हुई है । भाबो प्यार से अशोक को पुकारती बोली, ''बेटा, आ इधर मेरे पास बैठ जा, नये सोफे पर, बड़ा आराम मिलता है ।'' भाई— अशोक बड़े हॉल के दूसरे कोने में व्हिस्की की बोतल पर झुका था । उसे पीने से

कहानी

भंवर

● निर्मला अग्रवाल



ज्यादा पिलाने में मजा आता था । वहीं से बोला, ''नहीं भाबो, अभी तो मैंने इस पाजी सतीश को नचाना है । इसे आज पेटभर विलायती पिलाने दे ।'' भाबो थुल-थुल हंसने लगी । संतोष और शांति की आभा से चेहरा दमक उठा । बस, एक कसर रह गयी थी । अशोक के बाऊजी बिचारे तड़प-तड़प के मर गये । कैसे भुखमरी के दिन थे । पेंशन में घर का राशन भी चलता नहीं था । बड़ी लड़की की शादी हुई थी, बाकी दोनों, अशोक और पाशी न्याने थे और तोशी तो बिलकुल पानी का बुलबुला । शुक्र भगवान का कि दिन फिरे । बड़ी बहू विमला तो गऊ-जैसी आयी । लगी रहती है,सबकी सेवा में । भाबो ने आत्मसंतोष से खचाखच भरे हॉल में निगाह घुमायी । तीनों सोफे, दसियों कुरसियां भरे थे । नीचे कालीन पर औरतें मस्ती में गा रही थीं । कोने में बार फिट थी । बीसियों विलायती बोतलें अटी पड़ी थीं । फिर भी जाम थे कि खाली होते जाते थे । इतने में भाबो की निगाह मुझ पर पड़ी, ''अरे सुरजीत, तू वहां क्या अकेला गुमसुम बैठा है । आ बेटा यहां बैठ मेरे पास ।''

इतने में जगत चाची झूमते हुए उठीं । वे न जाने किस रिश्ते से किसकी चाची थीं । मैंने तो उन्हें कई शादियों की रौनक बढ़ाते देखा था । साठ के पेटे में भी चाची गजब का नाचती थीं और गाने का तो जवाब ही नहीं । उन्होंने एक झटके से मेरा हाथ खींच मुझे उठाया । पूरी महफिल सांस खींच, यह नया कौतुक देखने लगी । खिसियाती हंसी हंसता मैं कुछ बोलूं, कि बोलूं, चाची ने महफिल से मुखातिब होकर फरमाया, ''वे डॉक्टर पुत्तर, रस गया है—नी ।''

फिर मेरी कमर में अपनी लकड़ी-सी बांह डालकर मुझे अपने से सटाकर बुल्लेशाह की काफी शुरू कर दी—

''मेरा रूटठड़ा यार मनावा नी मैं कैनूं आखां,
कैनूं आखां, कैनूं आखां...''

और वे जोर से मेरे कान में चिल्लायी । सब खिलखिलाकर हंस पड़े । मैं भी बुद्धू-सा हंसने लगा । मेरी आंखें, रंगी-पुती, हीरे चमकातीं, तराशी भंवें मटकातीं, बेहूदे ठहाके लगातीं औरतों की भीड़ में उस ओस में भीगे ताजा गुलाब को ढूंढ़ने लगी । वह अब भी नहीं हंस रही थी । मरे-मरे हाथों से अपने तीसरे लड़के को गोदी में लिटाये थपक रही थी ।

मैं भाबो की बगल में बैठकर बेमन से काजू कुतरने लगा । अशोक अभी बार पर ही जमा था, भुक्खड़-पियक्कड़ रिश्तेदारों से घिरा हुआ । विमला भाभी बहादुर और चेतसिंह के हाथ काजू, तली मछली और सीख-कबाब बंटवा रही थीं । पाशी दूर कोने में लुढ़का पड़ा था । अभी पांच-छह साल ही तो हुए थे, जब ऐसा ही लेडीज संगीत उसकी शादी का हुआ था और अब तोशी की शादी का है । लेकिन पाशी की शादी में तो मैं भी इन पागलों में से एक पागल-सा झूमता रहा था । मरभुक्खों की तरह कबाब और काजू की प्लेटों पर टूट पड़ता था । सरकारी अस्पताल के डॉक्टर की तनख्वाह में भला ये नियामतें रोज-रोज कहां मिलतीं ? पाशी की शादी के बाद मैं बिलकुल बदल गया । अब मुझे उबकाई आती है शराब देखकर । तरह-तरह के पकवानों के यूं ढेर देखकर जी मिचलाता है । पाशी की शादी हुई और मेरी दुनिया बदल गयी ।

उफ् मैं भी तो बारात में शान के साथ जालंधर गया था। पाशी के बड़े भाई अशोक ने कपड़ों और भारतीय हस्तकला के निर्यात में खूब पैसा कमा लिया था। उसकी शादी एक बड़े व्यापारी परिवार में हुई थी। जिन्होंने दामाद के व्यापार को भी अच्छा जमा दिया था। लेकिन विमला भाभी बिचारी देखने में मामूली थीं। नतीजा यह हुआ कि अशोक की दोनों लड़कियां और छोटा लड़का भी बस ऐसे ही देखने में मामूली-से थे। खुद भाबो सुंदर रही होंगी, लेकिन अशोक और पाशी दोनों अपने पिता केवलचंदजी-जैसे काले आबनूस और तोंदू थे। जब पाशी की शादी का वक्त आया, तो अशोक को पैसे की कमी न थी। उसने सोचा पाशी के लिए कोई सुंदर मुटियार लायी जाए, ताकि खानदान की अगली नस्ल में कुछ रद्दोबदल हो। उफ् ! यहीं से मेरी जिंदगी ने दर्दनाक मोड़ लिया। पाशी की बारात में भंगड़ा डालते-डालते हमारा पसीना बह रहा था, लड़कीवालों के छोटे-से घर के आंगन में हम जयमाला का इंतजार कर रहे थे कि जैसे बिजली चमकी। पूरी बारात में खामोशी छा गयी। लड़की थी कि चांद का टुकड़ा। छिः-छिः ! चांद कहना तो अमृत का अपमान करना था। वह तो सरापा हुस्न, एक कहर का टुकड़ा थी। तराशा संगेमरमर। झुकी-झुकी कांपती पलकें, ऊंची-तीखी नाक, गुलाब-से नाजुक गाल और भीगे-भीगे रसभरे होंठ। मेरे साथ खड़े सतीश ने मुझे जोर की चिकोटी काटी और आंख मारते हुए बोला, "भई वाकई बढ़िया माल मिला है कलुए पाशी को।" मेरा जी चाहा चांटा मारूं साले को। पाशी का तो



बुरा हाल था। जैसे किसी ने जूते मारे हों। गोरी-चिट्टी, सुंदर दुल्हन को देख, खुश होने की जगह चिढ़-सा रहा था। झिलमिलाते सलमे-सितारेभरे लाल दुपट्टे में सजी गोल-सुडौल दूधिया बांहों से जयमाला पहन पाशी झेंपने लगा।

पाशी की शादी के बाद मैंने फिर एक बार अपने को बीमारों की कराहती-घिसटती मायूस भीड़ में खोना चाहा। और नये जोश से मैं चिकित्सा-अभियान में जुट गया। लेकिन मेरी फूटी किस्मत, बड़ी कोठी से बुलावा आ गया। 'अमृत' यानि नयी बहू बीमार थी। देखते ही मैं समझ गया हिस्टीरिया है। लेकिन फिर भी बाकायदा मुआयना शुरू किया। हाय कुछ ही दिनों में रंग मुरझा गया था, होंठ पपड़िया गये थे और आंखों के नीचे काले साये फैल चुके थे। अब वह चुपचाप पड़ी थी। सिर्फ पलकों की घनी बरौनियों पर मोती-से आंसू झिलमिला रहे थे। चंपई कलाई थामकर नब्ज देखी। स्टेथैस्कोप से दिल की धड़कनों का हिसाब लगाते-लगाते मेरा दिल बाहर उछलने को हुआ। दिमाग की नसें फटने लगीं। वह

हड़बड़ाकर उठ गयी ।

"मुझे कुछ नहीं हुआ भ्राजी ।" भाबो पानी लेकर दौड़ी । बिमला भाभी ने सहारा दिया । पाशी चोर की तरह बरांडे में चला गया ।

दो-तीन बार फिर अमृत को दौरा पड़ा । पहला लड़का होने के बाद वह कुछ-कुछ संयत हो चली । दो और लड़के हुए और वह बिलकुल खामोश होती गयी । तीनों बच्चे पाशी के नमूने थे । काले-स्याह और थुलथुल । उसकी गोरी बांहों में झूलते हुए बेचारे और भी भोंडे लगते ।

कई बार सोचा मैं बड़ा बेवकूफ हूं । दूसरे की बीवी से मुझे क्या लेना ? पाशी जाने, वह जाने । मुझे क्यों फिकर है कि अमृत मुरझा रही है, उसका शरीर घुल रहा है, उसकी आंखों के नीचे काले गड्ढे गहरे हो रहे हैं । पाशी फिकर करे उसकी । मैं क्यों घुलता जाऊं साथ-साथ ? और एक दिन सचमुच पाशी भागा आया बदहवास, "सुरजीत— अभी चल घर ।"

"क्या हुआ— अभी बैठ यार, देख कितनी भीड़ है बाहर मरीजों की । अभी निपटाकर चलता हूं । ले चाय पी तू तब तक ।"

"नहीं यार— मार गोली इन सबको— तू जल्दी बैग उठा अपना— उस कमीनी ने कुछ खा लिया है ।"

अमृत तो नर्सिंग होम में ठीक हो गयी । लेकिन मेरे अंदर की आग और भड़क गयी । एक दिन खाना खाते हुए मैंने सबके सामने ही पूछा, "भाबो, कुछ खाती भी हो या यूं ही खेलती हो रोटी से । ऐसे तो बड़ी कमजोर हो जाओगी ?" जवाब भाबो ने दिया, "सुरजीत, यह तो मार डालेगी अपने आप को ।" मैंने हिम्मत करके सुझाव दिया, "भाभी, मेरी क्लिनिक में आ जाओ न, किसी दिन बारह, साढ़े बारह बजे । भीड़ कम होगी । मैं खून वगैरह टैस्ट करवा दूंगा ।" "बेटा, मैं इसे जरूर भेजूंगी । पता तो चले कौन-सा चोर मरज इसे खा रहा है । न खाती है, न पीती है । न पहनने-ओढ़ने का शौक है ।"

और सचमुच दो-तीन दिन बाद वह आयी । अशोक ने ड्राइवर के हाथ भिजवा दिया था । पहली बार अकेले में, अपनी क्लिनिक की बंद दीवारों में, अपनी प्रेम प्रतिमा से साक्षात्कार । मैं ढंग से बोल भी न सका, हकलाने लगा । कुरसी पर चुपचाप बैठी वह अपने दुपट्टे का कोना मरोड़ती रही । कई मिनट हो गये, तो उसने बेचैन होकर निगाहें उठायीं ।

"अमृत ।"

"जी ।"

"किस नरक में पड़ी हो ?"

"अपनी किस्मत ।"

"किस्मत बदली भी तो जा सकती है ?"

"......"

"अमृत ।"

"चलिए, खून टैस्ट करवाइए ना । फिर मुझे देर हो जाएगी । ड्राइवर बाहर इंतजार कर रहा है । फिर उसे उन लोगों के लिए लंच लेकर जाना है ।"

"तुम पत्थर हो क्या ? मेरी आत्मा, मेरे दिल को कैसे मोह में जकड़ रखा है तुमने ? कभी खयाल आया है ? इस कदर तड़पाया है मुझे ! अब कुछ मिनट बैठना भी नहीं चाहतीं ? इतनी बेरहम हो ?"

"भ्राजी, क्या कह रहे हो ? यह भी कोई

मजाक का वक्त है ?''

मैंने उसकी ठोढी के गड्ढे को छूते हुए चेहरा ऊपर किया । बड़ी-बड़ी आंखें और फैल गयीं । मैं संतुलन खो बैठा । पास जाने की कोशिश की तो करारा थप्पड़ पड़ा । दर्द से छटपटाकर होश में आया— वह फुफकार रही थी—

''कमीने, बेशर्म, फिटे मुंह अपनी भाभी की बेइज्जती करता है । जा डूब मर कहीं— तेरे-जैसे बदमाश डॉक्टर हों तो बहू-बेटियां कहां जाएं— बदतमीज !''

मैं सुन्न-सा हो गया । धीरे-धीरे जुनून के बादल छटने लगे— अमृत मेरे मुंह पर थूककर चली गयी और मैं निर्जीव-सा पड़ा अपने भंवर में डूबता रहा ।

—डायरेक्टर प्रोग्राम्स
ऑल इंडिया रेडियो,
आकाशवाणी भवन, नयी दिल्ली-११०००१

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. क. क्रमशः लुंबिनी, बोधगया, सारनाथ और कुशीनगर, ख. सारनाथ में प्रथम उपदेश, २ क. ६८ अंश पूर्व तथा ९७ अंश पूर्वी, ख. 'इंदिरा प्वाइंट' (बड़ा निकोबार में), ३. क. बीरबल, ख. दुर्गावती, ४. क. मदाम क्यूरी, ख. भौतिकी (१९०३) तथा रसायनशास्त्र (१९११), ५. क. चैनल टनल, ख. ६ मई, १९९४ को, ६. क. पी.एस.एल.वी.डी-३ का श्रीहरिकोटा अंतरिक्ष-केंद्र के प्रक्षेपण-स्थल से, ख. आई.आर.एस.पी.-३, ग. मौसम, समुद्री संसाधन, वन-संपदा, वनस्पति, खेतीबाड़ी आदि के बारे में सूचनाएं एकत्र करना, ७. क. ७५ करोड़ ४० लाख किलोग्राम, ख. ७१ करोड़ ३० लाख किलोग्राम, ८. क. श्रीलंका ने, आस्ट्रेलिया को हराकर, ख. दक्षिण अफरीका के गैरीकर्स्टन ने विश्व कप के इतिहास में सर्वाधिक अविजित १८८ रन का रेकॉर्ड बनाया, ग. भारत (१९८३) में, पाकिस्तान (१९९२ में), श्रीलंका (१९९६ में), ९. माइक टायसन ने फ्रैंक ब्रूनो को हराकर (३ करोड़ डॉलर की राशि प्राप्त हुई), १०. यशदेव शल्य को (कृति— 'मूलतत्त्व की मीमांसा'), ११..ब्रेन ट्यूमर

● मई अंक के बुद्धि विलास के उत्तर

१. १२, २. क. २०० सूक्तों में, ख. ऋग्वेद में, ३. चंद्रगुप्त मौर्य (३२१-२९८ ई.पू.), ४. क. १८८४ ई. में ८ घंटे काम के दिवस की मांग के लिए शिकागो में मजदूरों और पुलिस में हिंसात्मक संघर्ष हुआ । कुछ मजदूर नेताओं को मृत्युदंड दिया गया । उसी की याद में पहले अमरीका में और बाद में दुनिया के अन्य देशों में मई-दिवस मनाया जाने लगा, ख. १९२३ ई. से, ५. स्वामी विवेकानंद, ६. क. २६ जनवरी, १९५० को, ख. १९७६ में, ७. क. जेरिखो— समुद्र तल से २५८ मीटर नीचे, ख. फिलिस्तीनी स्वशासन, ८. क. मध्य चीन के बहरान प्रांत में, ख. १ मीटर लंबी, वजन २ कि.ग्रा., ९. क. श्री श्रीलाल शुक्ल को, ख. पद्मश्री वीरेन्द्र प्रभाकर (१२,४५८ छायाचित्र (फोटो) खींचे), १०. मोजांबिक की मारिया मुटोला ने २ मिनट २१.२३ सेकेंड में, ११. मसरूम

रहस्य-रोमांच

समुद्रों के भयानक जल-राक्षस

• मुकुन्ददास माहेश्वरी

हमारी करोड़ों वर्ष पुरानी धरती पर मनुष्यों के अलावा भीमकाय जानवरों की मौजूदगी का भी बड़ा दिल दहला देनेवाला रहस्यात्मक – रोमांचक प्रामाणिक इतिहास है । ये जानवर धरती पर और समुद्रों की गहराइयों तक में जा पहुंचते थे । तब मनुष्य का कहीं अस्तित्व नहीं था । उन दिनों आकाश में उड़नेवाले विशाल पक्षियों, धरती पर एकछत्र दबदबा जमाये डायनासोरों, समुद्रों में आतंक मचाये विराट सील, व्हेल, शार्क मछलियों तथा आठ भुजाओंवाले जल-राक्षसों का ही प्रकोप था । सब एक-दूसरे को खा जाने के लिए आपस में धरती, आकाश व समुद्र में हलचल मचाते हुए लड़ते-भिड़ते, कटते-मरते रहते थे । जैसे-जैसे समय गुजरता गया वैसे-वैसे जल, थल और नभ में हुई उथल-पुथल एवं प्राकृतिक प्रकोपों (भूकंपों) से बहुत से अपने आप समाप्त हो गये । और ये समुद्रतलों और धरती की दरारों में समा गये । आज जहां-तहां की गयी खुदाइयों व खोजों में उनके अस्थिपंजर मिल जाते हैं, जिनसे उनकी विशालता का पता चलता है कि ये दो सौ फुट से हजार फुट तक लंबे-चौड़े होते थे ।

पहले जल-राक्षस का हमला

सन् १५५५ में ओलास मेग्नस नाम के एक ईसाई पादरी ने यूरोप के स्कैंडीनेविया प्रदेश की इतिहास पुस्तक में पहली बार ४३९ वर्ष पहले समुद्र में देखे गये अतिविशाल जल राक्षस का उल्लेख करते हुए लिखा है, 'समुद्र में जाते हुए पालवाले जहाज पर सांप के आकार के एक विशाल जल-जंतु ने समुद्र से उछल कर हमला किया और वह नाविकों को दबोचकर निगल गया । उसने सारे जहाज को भी तोड़-मरोड़कर समुद्र में डुबा दिया । वह लगभग ४०० फुट लंबा था ।'

युद्ध पोत डायेडालस से दिखा

विशाल पालोंवाला ब्रिटिश युद्धपोत डायेडालस जब सन् १८४८ में अंधमहासागर में अपने कैप्टिन के नेतृत्व में निरीक्षण परेड पर चला जा रहा था, तब पोत के सैनिक युद्धपोत के पास से गुजरते लगभग ३०० फुट लंबे,मोटे विशाल सर्पाकार जल दैत्य को देखकर भयभीत हो गये थे । उसका १४ फुट ऊंचा सांप-जैसा सिर रह-रहकर समुद्र से बाहर निकल रहा था । उसकी तैरने की रफ्तार लगभग २४ कि. मी. प्रति घंटा थी । गनीमत थी कि वह शांति से

जहाज के पास से अपने शरीर से पानी में उथल-पुथल मचाता हुआ निकलकर आगे बढ़ गया।

ब्राजील का भूरा दैत्य

सन् १९०५ में द. अमरीका के ब्राजील के समुद्र तट से गुजरते वल्हाला नामक भाप से चलते जहाज पर सवार मीडवाल्डो व माइकेल निकॉल नामक दो नाविकों ने एक विराट जल दैत्य को समुद्र में भयंकर उथल-पुथल मचाते देखा था। लगभग १०० फुट लंबे उस भूरे रंग के पहाड़-जैसे जलचर की बहुत मोटी गरदन और कछुए-जैसे सिर पर बड़ी-बड़ी चमकती आंखें बेहद डरावनी थीं। शायद उसकी भूख शांत थी वरना वह जहाज पर हमला कर सकता था। उसकी गरदन आदमी के शरीर-जैसी मोटी और ऊंट से दो गुनी लंबी थी।

कनाडा का हंगामा कैडी

ठीक इसी प्रकार कनाडा के वेसोवर समुद्र तट के पास सन् १९३९ में केप्टिन पॉल सोवर ने अपने जलयान से प्रत्यक्ष रूप से लगभग २४५ फुट लंबे व १० फुट चौड़े जल दैत्य को देखा था। बाद में डेविड बेब नाम के एक मछुआरे को भी वह मछली पकड़ने के दौरान अनेक बार सन् १९४१ में दिखायी दिया था। उसका सांप-जैसा सिर समुद्र से १५ फुट ऊपर आता था। वह अपनी मजबूत कांटेदार पूंछ से पानी को काटता व शरीर को ऐंठाता हुआ तैरता जाता था। सन् १९५० में उसी क्षेत्र में वैसा ही १५५ फुट लंबा-चौड़ा प्राणी जज जेम्स ब्राउन को भी अचानक दृष्टिगोचर हुआ था। उस प्राणी का नाम वैज्ञानिकों ने कैडी रखा था।

सन् १९७५ में ब्रिटेन के कोर्निश समुद्र तट पर मछुआरों ने काले रंग का हाथी और शेर-जैसा मिलता-जुलता १६० फुट लंबा व २० फुट चौड़ा हमले करता जल-राक्षस देखा था। बाद में जल सेना के अधिकारियों ने उसका नाम—मारगॉर रखा और उसे जीवित पकड़ने की बड़ी कोशिश की। हर बार वह मोटे-मोटे रस्सों से बने जालों को भी आराम से काई की तरह काटता हुआ समुद्र की गहराइयों में खो जाता था।

उत्तर अटलांटिक का हादसा

सन् १९१५ में एक जरमन यू बोट ने जब एक ब्रिटिश स्टीमर को टारपीडो से डुबाया, तब सारे जरमन अधिकारी विस्फोट से उफनते समुद्र के पानी को चीरकर ऊपर उठे एक १६० फुट लंबे घड़ियाल के आकार के भयानक जल-दैत्य को देखकर डर गये थे। उन्होंने गोलियों से ४ लंबे खूंख्वार पंजों वाले उस प्राणी को मारना चाहा, पर वह नहीं मरा और बहुत देर तक भागती हुई यू बोट का पीछा करता रहा।

गोताखोरों को निगला

अनेक बार ये भयानक जल-राक्षस अचानक समुद्र के ऊपर आकर आक्रमण करके आदमियों को निगल चुके हैं। सन् १९६२ में घने कोहरे के बीच एक मोटे पट्टे पर बैठकर अमरीकी वायु सेना के ५ गोताखोर फ्लोरिडा के समुद्र तट पर कुछ खोजबीन कर रहे थे। तभी अचानक १७० फुट लंबे एक भीमकाय जल-प्राणी ने उन पर हमला किया और ३ गोताखोरों को मुंह में दबाकर समुद्र में गायब हो गया।

—वल्लवदास पैलेस
हनुमानताल, जबलपुर



सोयी हुई सड़क

अंधे प्रकाश स्तंभों के साये में,
सो गयी सड़क सन्नाटे ओढ़कर ।
है, सुनसान, बस, सुनसान,
दूर के उस मोड़ तक ।
न, कोई पदचाप, न, घुमक्कड़ों का, शोर,
निस्तब्ध प्रकृति का शब्द शांत,
बुनता, सूनें पथ पर,
बोझिल एकांत ।
समेटे अंचल में,
अनगिन आशंकाओं के अन-अभिव्यक्त प्रश्न,
मौन है रात का पहला पहर ।
भयावह रात की, जिस कल्पना से
चढ़ गयी है, सांकलें द्वार पर,
दिन छिपे ही जिंदगी सींखचों में बंद है ।
अब ढूंढ़ना है अस्त्र,
जिसके वार से, जल जायें,
तिमिर की, यह डस रही परछाइयां ।
और,
खोलकर द्वार, आ सींखचों के इस पार,
हो, चेतना जीवंत रास्ते के एकांत पर ।
फिर न उभरें कल्पना में चित्र,
कि, अंधेरों से भयभीत, सोयी थी,
सड़क कभी सन्नाटे ओढ़कर ।

कृष्णस्वरूप मिश्र 'मदन'
'साहित्य-ज्योत्स्ना',
सुभाष नगर, बरेली-२४३००१

छाया

चिलचिलाती धूप में
चुभने लगें जब शूल से
सामने निसीम पथ हो
मन हो विचलित
तन हो बोझिल
श्वास लेना भी हो दूभर
भूल से भी न व्यथित हो
तू कभी मेरे मना
जननी अपनी याद कर
तब देखना यह तय हुआ कि
धूप तेरी छांह बनेगी
पुष्प तेरी राह पर आकर बिछेंगे
स्नेह भरा इक स्वर कहेगा
मेरे बच्चे क्या हुआ ?
मैं तेरी छाया हूं बेटा
सामने मंजिल है तेरी
सोच मत बस चलता जा

— शशि शर्मा
महानगर टेलीफोन निगम लि.
कनिष्क प्लाजा
१९, अशोक रोड
नयी दिल्ली-११०००१

हीरा

• डॉ. हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'



कभी-कभी, अचानक, क्या-का-क्या हो जाता है, कुछ भी समझ में नहीं आता। उस दिन भी कुछ ऐसा ही हुआ। बरात-स्वागत के ऐन वक्त पर, न जाने कैसे, एकाएक, एक गैस सिलेंडर के फट जाने से भयानक कानफोड़ू धमाका और शामियाने पर धू-धू करती आग की लपलपाती लपटें। बस, फिर क्या था, हर तरफ, अफरा-तफरी। धक्कम-धक्का। रेल-पेल। हो-हल्ला-गुल्ला। हड़कंप और भगदड़-सी मच गयी। कोई इधर, कोई उधर। सबको अपनी-अपनी जान के लाले पड़े थे और ऊपर से बिजली भी गुल। कहना ही क्या। कोई किसी के ऊपर, कोई नीचे। कोई किसी से टकरा गया तो किसी का पैर ही दब गया। हंगामा क्या, भयंकर बवंडर-सा मच गया। सबको फटाफट बाहर निकलने की होड़ा-होड़ी। हड़बड़ाहट और घबराहट की वजह से रास्ते में गाड़ियों का भारी जमघट। रास्ता बिलकुल बंद। यातायात ठप्प। ऐसे में भला, दमकल भी भीतर कैसे पहुंचता ?

लोग-बाग, जैसे-तैसे, बाहर निकलते रहे। इस बीच, शामियाना, कारपेट, दरियां सब जलकर स्वाहा हो गये। जैसे-तैसे, एक घंटे बाद दमकल पहुंचा, तब जाकर कहीं आग पर काबू पा सके। जो जल गया, जल गया, क्या

करते । होनी को कौन टाले । इतनी गनीमत समझिए कि सभी सही-सलामत बच गये । कोई जला-वला भी नहीं । दिल-ही-दिल में सभी, ऊपर नीली छतरीवाले का लाख-लाख शुक्रिया कह रहे थे । जान बची तो लाखों पाये ।

फिर झटपट, जैसे-तैसे, पास के ही एक होटल में व्यवस्था कर देनी पड़ी, लेकिन लड़केवाले न जाने क्यों एकाएक गिरगिट की तरह रंग बदलने लगे । बिलकुल अकड़-से गये । किसी भी कीमत पर शादी के लिए तैयार ही नहीं हुए । बेचारे लड़की के पिता बहुत गिड़गिड़ाये । हाथ-पैर तक जोड़े । घराती, सगे-संबंधी, नाते-रिश्तेदार, जान-पहचानवाले सभी ने जी-जान से उन्हें मनाने की भरसक कोशिश की, मगर वे तो टस-से-मस ही नहीं हुए । रूठे-के-रूठे । अकड़े-के-अकड़े । एक बराती तो, योंही, कस-कसकर, ताने मारने लगा लड़की के ग्रह तो बड़े उत्पाती गड़बड़ मचानेवाले हैं, पंडितजी ने पहले ही बता दिया था । लड़के के पिता भी बड़बड़ाने लगे—'ना बाबा ना, कल हमारे इकलौते बेटे को कुछ हो जाए । हम खामख्वाह कोई खतरा मोल लेना नहीं चाहते । वैसे भी, हमारी उम्मीदों पर इन्होंने देने-दाने के मामले में पहले ही पानी फेर दिया था । बस, कहते-कहते, आव-देखा-न ताव, सभी बराती अपनी-अपनी गाड़ियों में बैठे, बात-की-बात में, तीन-तेरह हो गये । लड़कीवाले बेचारे किंकर्त्तव्यविमूढ़, हक्के-बक्के, मुंहबाये, खड़े-के-खड़े, पशोपेश में, उखड़े-उखड़े । करते भी क्या ? अपने भानजे को एकाएक अलग बुलाकर पूछा—'राजू तुम्हारे ध्यान में है यहां कोई ऐसा अच्छा लड़का, जो झटपट, मतलब, इसी वक्त, मीनाक्षी से शादी करने के लिए राजी हो जाए । हमारी इज्जत भी रह जाएगी । नहीं तो इतना किया-कराया सब गुड़गोबर हो जाएगा । चौपट हो जाएगा ।'

राजू तो बरातियों के रंग-ढंग देखकर पहले ही उधेड़बुन में था कि कोई और रास्ता निकाला जाए । मामा की बात से एकदम उसकी नजर शेखर पर पड़ी । वैसे भी, हमेशा ही उसके दिल में, भीतर-ही-भीतर, यह बात कुलबुलाती-सी रहती थी—काश, मीनाक्षी का ब्याह शेखर से होता तो कितना अच्छा होता, लेकिन जिगरी दोस्त होने के नाते, वह कभी अपने मन की बात मुंह पर नहीं ला पाया और न शेखर की तरफ से ही कभी कोई ऐसा-वैसा संकेत ही मिला ।

'शेखर, तुमसे एक बहुत जरूरी बात करनी है । तुम तो मीनाक्षी को अच्छी तरह जानते हो ।' राजू ने साहस कर, उसे एक तरफ खींचकर कहा—'अगर यार, तुम्हें ठीक लगे और साथ-ही-साथ तुम्हारा मन भी करता हो तो तुम इस वक्त हमारी लाज रख लो । जिंदगीभर तुम्हारा ऐहसान नहीं भूलेंगे हम । अपने बाबूजी से भी पूछ लो । उनकी मन-मर्जी और हामी से ही यह रिश्ता होना चाहिए । अगर तुम्हें और तुम्हारे बाबूजी को यह संबंध ठीक लगे तो दोस्त, हम तो सचमुच तर जाएंगे ।

बस, फिर क्या था । थोड़ी ही देर में गाड़ी खुद पटरी पर आ गयी । फटाफट फेरे भी हो गये । शेखर और उसके बाबूजी की सभी तारीफों के पुल बांधने लगे । ऐसे भले लोग, भला, आज की दुनिया में कहां मिलते ?

मीनाक्षी भी मन-ही-मन फूली नहीं समायी। वह तो, वैसे भी, उसे बहुत पसंद करती थी। अब उसे लगा जैसे सचमुच ऊपरवाले ने उसकी सुन ली हो। उसका रोम-रोम पुलकित और प्रफुल्लित हो गया। एक प्रकार से, उसे, मन-चाहा मनमीत मिल गया।

कहते हैं—"भगवान जब देता है तो छप्पर फाड़कर देता है। पहले तो शेखर, दो बार, रात-दिन एक करके भी आई. ए. एस. में निकल नहीं पाया और इस बार, मतलब, आखिरी बार, बिलकुल मन न होने पर भी, मीनाक्षी के ही कहने पर, बहुत जोर देने पर, वह बैठा और एकदम साफ निकल गया। उसे खुद बेहद हैरानी हुई कि पहले तो, बाप-रे-बाप, उसने ऐड़ी-चोटी का जोर लगाया। कितनी जी-जान से मेहनत की थी, मगर फिर भी रह ही गया था। कहते हैं न कि हर सफल व्यक्ति के पीछे कोई-न-कोई नारी ही होती है।

वैसे भी, मीनाक्षी ने, चटपट, बड़े सलीके से, घरबार क्या संभाला कि ससुर भी एकदम बाग-बाग, गद्‌गद् हो गये थे। बिलकुल मंत्र-मुग्ध। यद्यपि हरीश जोशी सेवानिवृत्त हो गये थे, लेकिन आदत के अनुसार, दिनचर्या बिलकुल पहले ही जैसी घड़ी की सुई की तरह चलती ही रहती। सुबह ठीक पांच बजे चाय पीते। उसके बाद निबटकर सैर को निकल पड़ते। घूम-फिरकर घर लौटते तो फटाफट नहा-धोकर, थोड़ा पूजा-पाठ कर बागवानी में लग जाते।

मीनाक्षी उनकी एक-एक बात का पूरा-पूरा ध्यान रखती। सुबह ठीक पांच बजे उन्हें बढ़िया चाय पिलाती। ठीक नौ बजे नाश्ता



खिलाती। दिन में ठीक एक बजे खाना। शाम को चार बजे चाय, रात को आठ बजे खाना। नौ बजे गरम-गरम दूध का गिलास। खाने में में चपातियां और बढ़िया तरीदार एक सब्जी। उनकी हर चीज यथास्थान रखती। धुले-धुले कपड़े। साफ-सुथरे रुमाल। करीने से रखी किताबें और मेज पर अखबार, पत्रिकाएं। बैठक भी ताजे-ताजे फूलों से हरदम महकती रहती। बीच-बीच में कब उन्हें चाय चाहिए, कब क्या चाहिए, बस हर वक्त, हर छोटी-बड़ी बात का खयाल रखती। ससुर, जब-तब, मन-ही-मन, सोचते रहते न जाने कितने-कितने जन्मों के पुण्यों से ऐसी सुंदर, सुघड़, पढ़ी-लिखी, सलीकेदार बहू उन्हें मिली है। पत्नी को मरे पांच-छह साल हो गये थे। इतना भी उसने कुछ ही दिनों में मालूम कर लिया था कि बाबूजी को क्या-क्या पसंद है ? नाश्ते पर उन्हें करारे टोस्ट और दाल के भरे परांठे बेहद पसंद थे। लंच पर कढ़ी चावल और हरी सब्जी। शाम की चाय पर गरम पकोड़े या घर के बने ताजे चिप्स अच्छे लगते। रात के खाने में सुख तो, सचमुच, पहले कभी नहीं मिला। बहू तो, वैसे भी, बड़ी भाग्यशाली है। देवी है। साक्षात् सरस्वती। इतनी विलक्षण, इतनी बुद्धिमान और ऐसी कार्य-कुशल।

एक बार ससुर ने बहू को अपने पास

बुलाया और बड़े प्यार और दुलार से कहा—'बेटी, तुम इतनी होशियार हो, तुम भी आई. ए. एस. की तैयारी करो। तुम तो, बस, योंही, फट से निकल जाओगी। लो यह फार्म भर लो। बस, चुपके से मेरी बात मान लो। शेखर को कुछ नहीं बताऊंगा।'

'बाबूजी, पहले तो, ऐसे ही, बिना तैयारी के निकलना मुश्किल है और किसी प्रकार अगर आ भी गयी तो फिर नौकरी के चक्कर में घर-गृहस्थी कैसे संभलेगी ?'

'अरे बेटी, सब ठीक हो जाएगा। तुम फार्म तो भरो।

नीली छतरीवाले की माया, कहीं धूप, कहीं छाया। मीनाक्षी ने तो कमाल ही कर दिया। पहली ही बार में सफल हो गयी। अब कुछ महीनों तो लाल बहादुर शास्त्री एकेडमी मसूरी में ट्रेनिंग चलेगी, फिर पोस्टिंग हो जाएगी—यह सब कुछ सोच-विचारकर इस बीच उसने घर पर एक बाई और पहाड़ से आया हुआ एक गरीब लड़का, जो पढ़ाई भी करना चाहता था, रख दिया। दोनों को दो-तीन दिन के अंदर ही सब कुछ समझा-बुझाकर, सिखाकर, अपनी देख-रेख में काम करवाने लगी। बाबूजी को कब क्या देना है ? खाने पर क्या-क्या चाहिए। एक-एक बात को भली-भांति समझा गयी।

वक्त तो उड़ता परिंदा है। उड़ता ही गया। सालों के बाद दोनों की नियुक्तियां एक ही जगह हो गयीं। शेखर को डी. एम. के रूप में और मीनाक्षी की सिटी मजिस्ट्रेट के रूप में। बस, कुछ ही दिनों में सारे जिले में, जब-तब दोनों की ही बातें होती। पहली बार अपने जिले में ऐसे अधिकारी आये।

शेखर जोशी जिलाधिकारी के रूप में इधर क्या आये कि कुछ ही महीनों में जिले की काया पलट-सी हो गयी। शांति, सुरक्षा, कानून-व्यवस्था, अमन-चैन की बंशी बजने लगी। पहले तो आये दिन, अपहरण-फिरौती, चोरी-चपारी, लड़ाई-झगड़े, दंगे-फसाद आदि का बाजार गरम रहता। लाखों-लाखों क्या करोड़ों की फिरौतियां। अपहरण तो, एक प्रकार से उद्योग ही बन गया था। ऊपर से गुंडागर्दी और दादागिरी का बोलबाला। दादा क्या, नेताओं के चमचे कहिए, खुल्लमखुल्ला जहां से चाहें वहां से वसूली करते। मजाल है कोई थोड़ा-सा भी चूं-चपड़ करे। शेखर जोशी ने आते ही, जिले में सारा गड़बड़झाला बंद करवा दिया। एस. पी. और दूसरे सरकारी अधिकारियों को बुलाकर तुरंत कार्यवाही करने को कहा। लोगों को किसी भी प्रकार की ऐसी-वैसी तकलीफें नहीं होनी चाहिए। वह खुद वक्त की पाबंदी के कायल। ठीक दस बजे कलेक्ट्रेट में हाजिर। फटाफट ए. डी. एम., सिटी मजिस्ट्रेट, एस. डी. एम. सब अधिकारियों को बुलाकर आधे घंटे में बस समझा-बुझाकर फटाफट सरकारी काम निबटाने में लग जाते। उनके दफ्तर में कोई भी व्यक्ति ग्यारह और पांच बजे के बीच उन्हें मिल सकता है। अपनी परेशानी या दुखड़ा बता सकता है और फिर संबंधित विभाग से तुरंत मामले की कार्यवाही हो जाती। उनके बारे में कुछ ही दिनों में यह बात तो फैल गयी थी कि डी. एम. साहब पहले-जैसे जिलाधिकारियों की तरह तथाकथित बड़े लोगों के यहां दावत आदि पर भी कभी नहीं जाते और न किसी से, किसी भी प्रकार का

कोई उपहार ही स्वीकार करते । न किसी को सरकारी चीजों का गलत इस्तेमाल करने देते । खुद अपने निजी काम के लिए कभी भी सरकारी गाड़ी का उपयोग नहीं करते । क्लबों में भी वक्त बर्बाद करने के लिए नहीं जाते, जबकि उनके आते ही न-जाने कितने क्लबों ने उन्हें बुलाया । अपनी मजबूरी बता दी कि सरकारी काम से ही फुरसत नहीं है भाई । ये रॉटरी, लाइंस क्लब तो बड़े लोगों के लिए है । महीनों से उजड़े-उजड़े नेहरू युवक केंद्र में युवक-युवतियों के लिए संगीत, नृत्य, टाइपिंग, सिलाई-बुनाई आदि सिखाने की व्यवस्था कर दी । रंग-कर्मियों को नाटकों की रिहर्सल करने के लिए वहां अच्छा इतजाम करा दिया । और भी न जाने कितने-कितने काम कर डाले उन्होंने जन-जन के कल्याण के लिए । बस, जहां देखो वहां उन्हीं की वाहवाही और तारीफें । अगर देश में मुख्य चुनाव आयुक्त शेषन— जैसे लोग या खैरनार, अरुण भाटिया, शेखर जोशी— जैसे अफसर हो जाएं तो क्या-का-क्या हो सकता है ।

दरअसल, गले-गले तक, भ्रष्टाचार के दल-दल में, धंसे-डूबे, आज के इस सड़े-गले माहौल में, भला, कोई जिलाधीश, इतना ईमानदार, इतना स्वाभिमानी, इतना सच्चा और सही सरकारी अधिकारी भी हो सकता है । कभी कोई विश्वास नहीं करेगा । अरे । आज तो, जहां देखो वहां, ऊपर से नीचे तक, सारे-के-सारे मंत्री, अधिकारी, सत्ताधारी, उनके बेटे-बेटियां, रिश्तेदार, चमचे, सब-के-सब, मतलब, पूरा-का-पूरा तंत्र ही तो भीषण भ्रष्टाचार का भयावना भस्मासुर बना हुआ है । खुले



आम, सबकी आंखों में धूल झोंककर, दिन-दहाड़े सबको धता दिखाकर, खुल्लमखुल्ला, डंके की चोट पर, नेता लोग कितने-कितने घोटालों में, कितने-कितने करोड़ डकार गये । अरबों-खरबों खा-पी गये और फिर भी, जस-के-तस, मज़े से गद्दियों पर डटे-के-डटे । और ऊपर से उनके नवाबी ठाट-बाट, शाही शान-शौकत, गर्वीले [illegible] और चटकीले तड़क-भड़क देखकर, कौन कह सकता है कि ये जनता-जनार्दन के प्रतिनिधि हैं ? सब-के-सब सत्ता के दलाल । राजनीति के चालू चट्टे-बट्टे । कुरसी के काले-कलूटे भूत । एकदम भ्रष्ट और निकृष्ट । ऐसे परिवेश में भला, ऐसा अनोखा जिलाधिकारी । अद्भुत चमत्कार । सचमुच, आठवां आश्चर्य ।

वैसे, कहते हैं न, जैसा बाप, वैसा बेटा । अगर यह कहावत सही मायने में, सौ-फी-सदी, किसी पर लागू होती है तो जिलाधिकारी शेखर जोशी पर । उनके पिता भी, अपने वक्त के निराले अधिकारी थे, मगर बेचारे, इतने सालों की सरकारी नौकरी के बावजूद, अपनी सच्चाई, ईमानदारी और वक्त की पाबंदी के कारण परगनाधिकारी ही रह गये । मतलब, एस. डी. एम. के एस. डी. एम. । पदोन्नति ही नहीं हुई । वैसे, 'दूध का दूध और पानी का पानी' वाले उनके सही-सही फैसलों की चर्चा, आज भी,

जब-तब, जहां-तहां, इलाकेभर में होती ही रहती है । कहते हैं कि एक बार, गलती से गलत जगह, गाड़ी पार्क करने के जुर्म में, उन्होंने अपनी बीवी तक को नहीं छोड़ा । अदालत में बुलाकर फट से सौ रुपये जुर्माना कर दिया था । एक बार पुलिस ने चोरी के जुर्म में एक बेचारे को पकड़ लिया । वह अदालत में गिड़गिड़ाने लगा—'हुजूर, मैंने कभी चोरी-चारी नहीं की । इन्होंने जबर्दस्ती मुझे पकड़ा और हवालात में बंद कर दिया । मुझ गरीब पर, खामख्वाह झूठा इलजाम लगा रहे हैं । मैं तो गरीब मिस्त्री हूं, सरकार । कोई चोर-उचक्का नहीं ।'

जिस सिपाही ने उसे पकड़ा था, उसने बयान दिया, 'जनाब, मैंने इसे ऐन मौके पर ही रंगे हाथों पकड़ा है । यह सेंध लगाकर, चोरी का सामान उठाकर निकल ही रहा था अचानक मुझे देखकर सकपका गया और एकदम भागने लगा । इसी बीच चोरी का सामान इसने न जाने कैसे इधर-उधर सरका दिया या किसी को पकड़ा दिया । मैंने उसका पीछा किया और फट से पकड़ लिया ।

एस. डी. एम. हरीश जोशी ने बयान देनेवाले मोटे सिपाही को बड़े गौर से देखा और ऐलान किया—'देखो, मैं इसे जब भागने को कहूंगा तो तुम इसे फट से धर-दबोच देना ।'

और चोरी के जुर्म में पकड़े गये आदमी से कहा—'देखो जैसे ही मैं तुम्हें भाग जाने को कहूंगा तुम रफू-चक्कर हो जाना । भागने में कामयाब हुए तो, बच्चू, समझो बच गये नहीं तो चोरी के जुर्म में सजा काटनी पड़ेगी । समझे ! चलो भागो । बस, मिस्त्री तो ये भागा वो भागा । मोटा पुलिसवाला भला, कैसे उसे पकड़ पाता ? हांफता-हांफता खाली हाथ ही लौट गया । बस, फैसला । मिस्त्री साफ-साफ बच गया ।

एक बार जिले में एक तहसीलदार के बारे में उस इलाके के लोगों ने एस. डी. एम. के पास बहुत-सारी शिकायतें भेजीं कि तहसीलदार बहुत ही बदमिजाज और बदतमीज हैं । किसी की सुनता ही नहीं । अनाप-शनाप गालियां बकता रहता है । सीधे मुंह तो कभी बात ही नहीं करता । इलाके के सारे लोग बेहद परेशान हैं । एस. डी. एम. हरीश जोशी, कानों के कच्चे नहीं थे । बस, खुद एक सुबह कंबल ओढ़कर गांववाले के वेश में सीधे उस तहसील में पहुंच गये और लगे गिड़गिड़ाने, 'हुजूर, मेरी बात सुन लीजिए । बहुत दूर से आया हूं ।' तहसीलदार ने आव देखा न ताव, आग-बबूला होकर, भीतर से ही बड़बड़ाते हुए भद्दी-भद्दी गालियों की बौछार कर दी । साले, सुबह-सुबह आ जाते हैं मगज चाटने । उल्लू के पट्ठों को जैसे दुनिया में कोई और काम ही न हो...न जाने क्या-क्या । एस. डी. एम. ने कंबल हटाया तो तहसीलदार की सिट्टी-पिट्टी गोल । थर-थर कांपता ही रह गया । हक्का-बक्का । उसकी आड़े हाथों खबर लेकर, तुरंत डी. एम. से दूसरी जगह उसका तबादला करा दिया—यह हिदायत देते हुए, फिर कभी ऐसी हरकत की तो समझो, नौकरी से भी हाथ धोने पड़ेंगे ।

एक बार, जिले में प्रदेश के मंत्री का दौरा । वह इसी इलाके के विधायक भी । इसलिए डी. एम. वगैरह, सारे-के-सारे सरकारी कारिंदे, अपने पूरे ताम-झाम के साथ मंत्रीजी की अगवानी और आवभगत में पलकें बिछाये

खड़े, मगर हरीश जोशी अपने दफ़्तर में फाइलों में उलझे । मंत्री ने इधर-उधर से उनके बारे में बहुत कुछ सुन रखा था । बड़ा ही अक्खड़ अफसर है । अपने को बड़ा तीसमारखां समझता है । किसी को कभी घास ही नहीं डालता आदि-आदि । मंत्रीजी ने डी. एम. से ऐसे ही पूछा परगनाधिकारी जोशी कहां है ? वह यहां क्यों नहीं आया । डी. एम. ने बाद में जब उनसे पूछा तो कहने लगे—'मैं वहां क्यों आता । मेरी ड्यूटी तो अपने दफ़्तर में है, वहां नहीं । ऐसे न जाने कितने-कितने किस्से हैं उनके बारे में । अपने वक्त के एक ही अफसर । और अब बेटा ठीक उन्हीं के पद-चिह्नों पर चल रहा है ।

उस दिन शेखर जोशी खुद अपनी निजी कार में अपने बच्चे को स्कूल छोड़ने के लिए, घर से निकल ही रहे थे कि एक बूढ़े सज्जन गाड़ी के सामने, अचानक, अचकचाकर, खड़े हो गये । गिड़गिड़ाने लगे—'हुजूर, मैं बिलकुल बर्बाद हो गया । लुट गया । मेरी बेटी को इसी शहर में कल, उसके ससुरालवालों ने मार ही डाला था कि वह बेचारी, सुना है जैसे-तैसे भाग निकली । उसने अपनी चिट्ठी में एक हफ्ते पहले कुछ ऐसा ही लिखा था कि ससुरालवाले कुछ ऐसी ही साजिश कर रहे हैं । अब वह न-जाने कहां गायब हो गयी । बेटा तो बहू की काली करतूतों की वजह से पागलखाने में पड़ा है और अब एक बेटी भी, वह भी लापता हो गयी है । उसके ससुराली उसे मार डालेंगे । दिल्ली से जैसे-तैसे यहां पहुंचा हूं । लोगों ने कहा । सीधे डी. एम. साहब से मिलो । वह बहुत ही भले आदमी हैं । फटाफट छानबीन कर उसे ढूंढ़ निकालेंगे ।



इसी बीच, पति को योंही अचानक आते देखकर, मीनाक्षी जोशी बाहर निकली । बूढ़े आदमी को देखकर वह पहचान तो गयी थी, लेकिन उसने बूढ़े को इसका आभास होने नहीं दिया । पति से कहा—'शेखर, तुम इनका मामला, जैसे-तैसे भी हो, निबटा दो । बेचारे बड़ी मुसीबत में हैं । मनु को छोड़ने मैं चली जाती हूं । वहीं से सीधे दफ़्तर भी पहुंच जाऊंगी ।

शेखर जोशी ने तुरंत एस. पी. को फोन किया और कहा अगर आप अभी यहां आ सकें तो कृपया आ जाइए । एस. पी. के आते ही उन्हें तेजी से मामले की जांच-पड़ताल करने को कहा और खुद भी कार्यवाही में जुट गये । और देखिए उसी शाम एक होटल में लड़की मिल गयी । बूढ़ा तो कृतकृत्य हो गया । इसी बीच उसने उनके बारे में कुछ-कुछ पता भी कर लिया । धन्यवाद देने के लिए डी. एम. के घर गया तो मीनाक्षी जोशी को ध्यान से देखकर वह बिलकुल पानी-पानी हो गया—बस, फफक-फफककर, उनके पांव में पड़कर रोने लगा और मन-ही-मन पछताने भी लगा । उस दिन न जाने मेरी मति क्यों मारी गयी जो ऐसा अनमोल हीरा गंवा दिया ।

— शैल शिखर, मसूरी

वैज्ञानिक भी समझ रहे हैं प्यार को

प्यार क्या है ? क्या यह सौंदर्य की अभिव्यक्ति मात्र है अथवा वासना का एक हिस्सा । अमरीका के शोधकर्ताओं द्वारा 'प्यार' की परिभाषा जानने के लिए काफी शोध किया जा रहा है । कुछ लोग प्यार को रहस्य कहकर, इस विषय पर बहस ही नहीं करते । विज्ञान भी 'प्यार' को परिभाषित कर पाने में सफल नहीं हुआ है ।

प्यार एक ताकत है, जो मानवीय दूरियों को कम करता है तथा गठबंधन करता है । प्यार में कुछ मूलभूत बातें समाहित हैं । जैसे दूसरे के लिए चिंतित होना, उत्तरदायी होना, आदर करना और उसके बारे में जानना । उत्तरदायी होने से तात्पर्य है—अव्यक्त इच्छाओं को पूर्ण करना । आदर या सम्मान का मतलब डर के मारे ऐसा करना नहीं है, बल्कि व्यक्ति को वैसा ही देखना, जैसा कि वह है, उसके यथावत रूप में एक व्यक्ति जब दूसरे व्यक्ति को प्यार करता है तो गहराई में उतरने के लिए उसके बारे में अधिक से अधिक जानने की कोशिश करता है ।

प्यार—अर्थात बिना किसी गारंटी के साथ प्रतिबद्धता यानी हमारा प्यार, दूसरे में भी उतना ही प्यार पैदा करेगा, प्यार का दूसरा नाम 'विश्वास' भी है । जितना कम विश्वास, उतना कम प्यार, आज मनुष्य के अस्तित्व का एकमात्र सतोषजनक और पवित्र उत्तर है—'प्यार' । प्यार से जीवन में मिठास आती है । प्यारे लोगों को लिखा जाना आवश्यक है और लिखने के क्रम में, दिमाग में अपने आप कोमल भावनाएं और विचार आते हैं । वे लोग जो हमें प्यार करते हैं, उनके द्वारा बिताये लम्हे वर्षों पश्चात तक भी हमसे भुलाये नहीं भूलते । प्यारे संबंधों से हमें खुशी और शांति मिलती है ।

प्यार एक कला

प्यार करना एक कला है और किसी भी अन्य कला की तरह, इसे भी सीखा जा सकता है । विश्वास, आशा और प्यार तीन असाधारण बातें हैं, लेकिन इन तीनों में सबसे महत्त्वपूर्ण है प्यार । पुरुषों के अस्तित्व के लिए प्यार सबसे जरूरी शर्त है । प्यार में लंबे समय तक पीड़ा होती है और प्यार किसी से ईर्ष्या नहीं करता, घमंड नहीं करता, प्यार किसी का बुरा नहीं चाहता और प्यार जबर्दस्ती भी नहीं किया या कराया जा सकता । प्यार जीवन की कठिनाइयों और समस्याओं से आसानी से आत्मसात कर सकता है ।

आकर्षण क्यों ?

शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययनों से मालूम किया है कि, विपरीत लिंगवाले लोग एक-दूसरे से किन स्थितियों में आकर्षित होते हैं, संबंधों में कितना स्थायित्व होता है, मित्रता कैसे होती है



प्यार क्या है ? क्या यह सौंदर्य की अभिव्यक्ति मात्र है अथवा वासना का एक हिस्सा । अमरीका के शोधकर्ताओं द्वारा 'प्यार' की परिभाषा जानने के लिए काफी शोध किया जा रहा है ।

और बचपन के हमारे अनुभवों की भूमिका हमारे प्यार करने के तरीके पर कैसे होती है ।

मां और बच्चे के बंधन बहुत मजबूत होते हैं । अपनी मां के साथ रहकर बच्चा बहुत खुश रहता है । मां जब नहीं रहती है तो बच्चा मां के लिए रोता है । इसी तरह प्यार किये जाने की स्थिति में वयस्क कम परेशान रहते हैं । मां के संपर्क में बच्चा प्रसन्न रहता है और वयस्क, प्यार किये जानेवाले लोगों के साथ रहकर खुश रहते हैं । वैसे लोग, जिनके माता-पिता ने उन्हें प्यार किया है, वे प्यार में सुरक्षा देते हैं और जिन्हें बचपन में प्यार नहीं मिला है, वे प्यार में स्वयं को असुरक्षित महसूस करते हैं । ऐसे लोग निराशावादी हो जाते हैं और वे मानने लगते हैं कि प्यार कभी भी स्थायी नहीं होता ।
कभी-कभी तो ये लोग ईर्ष्यालु भी हो जाते हैं ।

स्वास्थ्य के लिए प्यार

सही मायने में खुश रहने के लिए तथा मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए हमें जीवन में प्यार की आवश्यकता होती है । मित्रता, पारिवारिक बंधन या रोमांस कर रहे लोगों का मानसिक स्वास्थ्य, दूसरों की तुलना में बेहतर होता है । प्यार करने की हममें जितनी अधिक क्षमता होगी, हम उतने ही ज्यादा स्वस्थ और मजबूत होंगे । हम चाहते हैं कि हमें कोई समझे, कोई हमारी चिंता करे तथा वह समझने और चाहनेवाला व्यक्ति हमारे पास रहे ।

प्यार के अनेक प्रकारों में एक है, भाई की तरह प्यार करना । इसका मतलब है कि प्राणीमात्र को प्यार करना । इसी तरह के प्यार की बात 'पवित्र बाईबल' में की गयी है ।
'अपने पड़ोसी को अपनी तरह प्यार करो ।'

पड़ोसी का मतलब होता है —जरूरतमंद व्यक्ति'। अगर हम ईश्वर को प्यार करते हैं तो हम जरूरतमंदों को प्यार करेंगे । मदर

टेरेसा कहती हैं, "जब मैं गरीबों के बीच रहकर उनकी सेवा करती हूं तो उस समय मैं यह महसूस करती हूं कि ईश्वर की सेवा कर रही हूं ।" इस तरह मानव मात्र को प्यार करके ईश्वर की सेवा की जा सकती है । भूखे एवं बिना छत के लोग, तथा बहिष्कृत लोगों को आवश्यकता है हमारे ध्यान की । दूसरों को प्यार और खुशी देनेवाला व्यक्ति हमेशा ही औरों की तुलना में ज्यादा खुश और प्रसन्न रहता है ।

विश्वास प्यार का आधार है । विश्वास पाने के लिए आवश्यकता होती है, साहस और जोखिम उठाने की क्षमता की । वैसे लोग जो सुरक्षा को जीवन की पहली शर्त मानते हैं, विश्वास कर नहीं सकते । प्यार किये जाने के लिए जरूरत होती है साहस की, कुछ निश्चित मूल्यों के आकलन की, जिनके आधार पर जोखिम उठाये जा सकें ।

दूरियां चाहिए

दूरियों व मतभेदों को पाटने में पुरुषों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है और इसमें सक्रिय भूमिका होती है प्यार की । प्यार जो दीवारों को तोड़ता है और लोगों को जोड़ता है । प्यार में सिफर दिया जाता है—पाने की उम्मीद के बिना । देने का मतलब उपहार नहीं, बल्कि प्यार देना है । वह अपनी सबसे कीमती चीज देगा, उसकी खुशियों और गमों को पाटेगा और दूसरों को उनके जीवित रहने का अहसास दिलाएगा ।

बहुत लोगों की कोशिश रहती है कि लोग उन्हें प्यार करें और पुरुषों को इसमें काफी सफलता मिलती है । हमारे यहां 'प्यार किये जाने' का मतलब निकाला जाता है—वैसा व्यक्ति जो लोकप्रिय हो और जिसमें सेक्स अपील हो । महिलाएं आकर्षक दिखने की कोशिश करती हैं । स्त्री और पुरुष प्यारी रुचियां विकसित करते हैं, वे एक-दूसरे की मदद करते हैं ।

चिकित्सा शास्त्रियों का विश्वास है कि पहली नजर में प्यार के लिए जिम्मेदार दिमाग की रासायनिक क्रियाएं हो सकती हैं । हम वैसे लोगों के प्रति आकर्षित होते हैं जो अच्छे हैं और जिनके साथ बातचीत किसी को पसंद नहीं और प्यार की लंबी जिंदगी के लिए उचित संप्रेषण का होना आवश्यक है ।

प्रस्तुति : सीमा

—डी. ७५३, सरस्वती विहार, दिल्ली-११००३४

रंग बदलनेवाला पानी

दक्षिण अफरीका में विश्व की एकमात्र ऐसी झील है जिसके पानी का रंग मौसम के अनुसार अपने आप बदलता रहता है । जून में उस झील के पानी का रंग हरा रहता है । अगस्त-सितम्बर में वह पानी दूध के समान गहरा सफेद हो जाता है । नवम्बर-दिसम्बर में वह पानी नीला हो जाता है । वर्ष के शेष महीनों में पानी साधारण बना रहता है । सबसे ज्यादा आश्चर्य की बात तो यह है कि वह पानी हमेशा स्वच्छ व पारदर्शक रहता है तथा उसके गुणों में कभी कोई परिवर्तन नहीं होता ।

—विनोद कुमार सोनी

कौन था जिसने हत्या का रहस्य सुलझाया ?

■ निधि जैन

आंध प्रदेश के पूर्वी तट पर एक छोटा-सा बंदरगाह—भीमलिपट्टनम है, जो विशाखापट्टनम से करीब २० कि.मी. दूर दक्षिण में स्थित है ।

एक बार सरदियों के दौरान कैसनाथ नामक सब-इंसपेक्टर की नियुक्ति भीमलिपट्टनम में हुई और उसे वही खाली बंगला रहने के लिए आवंटित किया गया । उस बंगले में पहली रात को जब कैसनाथ अपनी फाइलों में उलझा हुआ था तब करीब ११ बजे अचानक उसे अपने कमरे में किसी और के भी मौजूद होने का एहसास हुआ । उसने सर उठाकर देखा तो सफेद वस्त्रों में लिपटी एक छाया को पाया, वह छाया बहुत धीमी आवाज में बोली, "तुम्हारे माता-पिता स्वस्थ तथा सहृदय लोग हैं, उनके बारे में चिंतित होने की कोई वजह नहीं है । उनके यहां आने से पहले कृपया तुम वादा करो कि तुम मेरे अपने व्यक्तिगत मसले में मेरी मदद करोगे ।" इतना कहकर वह सफेद छाया हवा में लुप्त हो गयी । इस रहस्यमयी घटना से सब इंसपेक्टर बुरी तरह डर गया ।

अगली सुबह, वह छुट्टी की अर्जी देकर शहर चला गया और कभी लौटकर नहीं आया ।

इस घटना के कुछ दिन बाद एक उच्च पदस्थ अंगरेज अफसर सरकारी काम से भीमलिपट्टनम आये, उस शहर के अंगरेज नागरिकों ने उसके सम्मान में एक रात्रि भोज तथा नृत्य कार्यक्रम का आयोजन किया, स्थान था वही बंगला । जब यह कार्यक्रम चल रहा था, तभी अचानक वही बरफीली श्वेत छाया फिर प्रगट हुई, उसने सभी को आश्वस्त करते हुए कहा—"मुझसे डरो मत, मैं आपकी दोस्त हूं ।" अंगरेज अफसर जो अंधविश्वासी कहकर अकसर भारतीयों का मजाक उड़ाया करते थे, सिर से पांव तक कांपने लगे और वहां से भाग गये ।

उस दिन के बाद से वह बंगला 'भूत बंगले' के नाम से जाना जाने लगा । बहुत से पुलिस अफसर आये और चले गये परंतु कोई भी उस भूत बंगले के रहस्य को न पा सका ।

अंत में एक जवान, साहसी, कर्मठ इंसपेक्टर मलिक की नियुक्ति भीमलिपट्टनम में इस भूत की कहानी के रहस्य को सुलझाने के उद्देश्य से हुई । वह अपने पूरे आत्म-विश्वास के साथ इस शहर में आया, पुराने अधिकारियों तथा नागरिकों से मिला तथा शहर में फैली अफवाहों की जानकारी प्राप्त की । उसने आगे

की बैठक में अपना डेरा डाल दिया । उसने अपनी भरी हुई पिस्तौल मेज पर रख दी तथा उस सफेद पोशाकवाले भूत का इंतजार करने लगा । रात के करीब ११ बजे सफेद पोशाक में एक महिला भूत कमरे के कोने में प्रकट हुआ, एक क्षण को तो उस साहसी पुलिस अधिकारी का साहस भी डगमगा गया, वह पसीने से भीग गया, मगर कुछ क्षणों बाद ही उसने साहस बटोरकर अपनी पिस्तौल की तरफ हाथ बढ़ाने की कोशिश की ।

भूत ने स्पष्ट आवाज में कहा—"मैं यहां अपनी एक व्यक्तिगत उलझन को सुलझाने के लिए तुम्हारी मदद मांगने आयी हूं, पिस्तौल पर से अपना हाथ हटा लो, यह मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती । पिछले डरपोकों की तरह यहां से भागना मत । पता नहीं क्यों, मुझे लगता है तुम मेरी उलझन हल करने में सक्षम हो । मेरे पति के खिलाफ मेरे प्रतिशोध में मेरी मदद कर सकते हो जिसे मैं बहुत प्यार करती थी, पर उसने बर्बरतापूर्वक मुझे और मेरे बच्चे को गला घोंटकर मार डाला ।"

उसने इंसपेक्टर को अपनी दुःखभरी कहानी सुनानी शुरू की—"शादी के पहले मेरा नाम बसंती था, मैं अपनी मां की इकलौती बेटी थी, मेरी मां एक वेश्या थी, इसलिए मैं तुम्हें अपने पिता का नाम नहीं बता सकती ।" उसने कहानी जारी रखते हुए बताया—"मैंने अपनी सीनियर कैंब्रिज परीक्षा पास की—तुम मेरा व्यक्तिगत विवरण मेरे स्कूल से प्राप्त कर सकते हो । समय के साथ मैं एक सुंदर युवती में परिवर्तित हो गयी । मेरी ओर अनेक स्थानीय अमीर नवयुवक आकर्षित रहते । मैंने भिन्न-भिन्न प्रकार की पोशाकें पहनना सीखा, लोग अकसर मेरी पोशाकों की प्रशंसा करते और कहते कि मैं बहुत सुंदर लगती हूं ।" गरमी की एक सुहानी शाम, मैंने एक बहुत खूबसूरत गठीले जवान लड़के को एक सुंदर पोशाक में समुद्र तट के निकट टहलते देखा । मुझे पहली बार ही उसके प्रति आकर्षण हो गया । उसे भी मैं और मेरी पोशाक पसंद थी, कुछ दिन बाद उसने मुझसे दोस्ती का प्रस्ताव रखा । वास्तव में उसकी सुगठित देहयष्टि, सभ्य शिष्टाचार तथा बातूनीपन से मैं इतनी प्रभावित थी कि अगर उसने मेरे सामने शादी का प्रस्ताव रखा होता, तो मैं उसी समय हामी भर देती, मगर मैंने उस पर ऐसा प्रगट नहीं होने दिया ।

कुछ समय बाद उस नौजवान ने मुझसे शादी की इच्छा प्रकट की, मैंने उसे अपनी स्वीकृति दे दी । जब मां को इस निर्णय के बारे में बताया, तो उन्हें मेरा यह निर्णय पसंद नहीं आया । वह चाहती थी कि मैं भी उनके ही नक्शे कदम पर चलूं, जिससे मुझे सबसे ज्यादा नफरत थी । जितनी ज्यादा उन्होंने कोशिश की मुझे अपने-जैसा बनाने की, उतना ही मैं उनसे दूर होती गयी और उस नौजवान के करीब होती गयी, जो दिल्ली का एक अमीर व्यापारी था ।"

इस समय तक काफी रात बीत चुकी थी, इसलिए वह भूत पुलिस अफसर से अगले दिन फिर आने का वादा करके विलुप्त हो गयी । इंसपैक्टर ने उसका पूरा बयान एक कागज पर उतार लिया । अगली रात को जब उस इंसपैक्टर ने घर में प्रवेश किया, तो पाया कि भूत पहले से ही एक कोने में उपस्थित है जैसे वह उसके आने का इंतजार कर रही हो, अपनी



पिछली रात्रि की कहानी जारी रखते हुए उसने सुनाना शुरू किया—"मेरे पति का नाम नानाजी था । जिस इमारत में हम इस समय बैठे हैं वह उसी के द्वारा खरीदी तथा मुझे उपहार स्वरूप दी गयी थी । बार-बार मेरे द्वारा शादी की तथा मुझे उसके साथ रहने के लिए एक कानूनी आधार देने की मेरी प्रार्थना के बावजूद वह शादी स्थगित किये जा रहा था, उसकी पेशकश थी कि उसके अमीर पिता और उसकी पहली पत्नी दोनों शादी के विरुद्ध हैं और उसके पिता अपनी बहुत बड़ी जायदाद में से फूटी कौड़ी भी नहीं देंगे, यदि उसने मुझसे विवाह किया । मेरी मां तो पहले से ही इस विवाह के खिलाफ थी । काफी महीनों बाद नानाजी शादी के लिये तैयार हो गया तथा हमारी शादी को [illegible] के उप-पंजीकरण अधिकारी द्वारा मान्य किया गया । चार महीने पश्चात जब मैंने अपने पति को उनके जल्दी ही पिता बन जाने की खुशखबरी दी, तो मुझे लगा वह इस खबर से खुश नहीं थे, मेरी मां को भी मेरा गर्भधारण करना पसंद नहीं था, उन्होंने मुझे गर्भपात करा लेने का परामर्श दिया । पर मैंने इस बात से साफ इनकार कर दिया ।

"उस दुर्भाग्यपूर्ण रात को मैं न सो सकी । पूरी रात रोते-रोते गुजार दी । करीब दो बजे मैंने दरवाजे पर एक दस्तक सुनी । जब मैंने दरवाजा खोला तो मैं आनंद से चकित थी, मेरे पति मुसकराते हुए बाहर खड़े थे । मैं इतनी खुश थी कि मैं उन्हें कसकर बांहों में भरे बिना न रह सकी, मैंने उन्हें कई बार चूमा और प्यार से घर के अंदर ले आयी, मुझे इसकी भनक भी न थी कि कितना भयावह दुर्भाग्य मेरा इंतजार कर रहा था । "अचानक वह मुझ पर झपटे, मैं गहरे सदमे तथा डर की स्थिति में थी । वह शिकारी चीते की तरह बन गये थे, उन्होंने अपने मजबूत हाथों से मेरी गरदन को पकड़ लिया और सख्ती से एक चाकू से मेरे गले पर वार किया । मैं चेतनाशून्य हो गयी, उन्होंने मुझे पलंग से नीचे फेंक दिया और एक तौलिया कसकर मेरी गरदन पर बांध दिया ताकि मैं और मेरे गर्भ में पल रहा बच्चा, बच न पाएं ।"

इंसपेक्टर ने बीच में टोककर पूछा—"तुम्हारा मृत शरीर कहां है ?" भूत ने बताया—"तुम्हें मेरी लाश मेरे स्नानागार के फर्श के नीचे मिलेगी, यदि तुम खोदोगे तो तुम्हें मेरा कंकाल उन कपड़ों के साथ मिलेगा, जो मैंने मृत्यु के समय पहने हुए थे ।" इसके बाद भूत ने एक गहरी दुःख भरी सांस ली । अब वह अपने को हलका महसूस कर रही थी ।

कुछ क्षण बाद वह भूत फिर बोली—"महाशय मैं एक निष्कपट

भोली-भाली लड़की थी, बाद में मुझे पता चला मेरे पति के पिता बहुत पहले मर चुके थे तथा मेरे पति की पहले कोई शादी भी नहीं हुई थी। वह एक अमीर सैनिक था, जो अपनी खूबसूरत देहयष्टि, शिष्टतापूर्ण व्यवहार तथा बातूनीपन से भोली-भाली लड़कियों को शादी का झूठा सपना दिखाकर छलता था और बाद में उन्हें उनके भाग्य के सहारे छोड़ देता था।

"मैंने यहां आपसे पहले आनेवाले लोगों को अपनी दुःखभरी कहानी सुनाने की कोशिश की, मगर मेरे लिए यह बहुत आश्चर्य और निराशा की बात है कि वे सभी मेरी तरफ देखे बिना ही डरकर भाग गये। आज मैं अपनी दुःखभरी कथा कहने के बाद, अपने को मुक्त महसूस कर रही हूं। आप जब भी मेरी उपस्थिति चाहेंगे आप मेरे बारे में सिर्फ सोचें, मैं आपके सामने प्रगट हो जाऊंगी, मैं इस मुकदमे में आपकी सफलता की कामना करती हूं।" इतना कहकर वह हवा में विलुप्त हो गयी।

मलिक अपने उच्च अधिकारियों तथा विशाखापट्टनम के पुलिस सुपरिंटेंडेंट से मिला और भूत बंगले के भूत की करुण आपबीती के बारे में बताया। मलिक का वार्तालाप सुनने के बाद पुलिस सुपरिंटेंडेंट जो ब्रिटिश अफसर था—ने पूरे घटनाक्रम की गहन छानबीन करने तथा हर प्रकार का सहयोग देने का आश्वासन दिया।

मलिक भीमलिपट्टनम लौट आया। अगले दिन वह स्थानीय न्यायाधीश तथा मुख्य नागरिकों के साथ भूत-बंगले में गया और स्नानागार खोला। जहां पर उसने पाया कि फर्श की टाइलें अव्यवस्थित थीं। टाइलें हटाकर खोदने के बाद सबको आश्चर्य से भर देनेवाला डरावना कंकाल पाया। कंकाल की गरदन पर एक तौलिया बंधा हुआ था। कंकाल की चिकित्सकीय जांच के बाद उसके स्त्री कंकाल होने की पुष्टि हुई तथा उसकी मृत्यु का कारण गला दबाकर दम घोंटना था। एक धोबी—जो कंकाल निकालते समय वहां उपस्थित था—ने इस बात की पुष्टि की कि कंकाल ने जो वस्त्र पहने हुए थे, वे बसंती के ही थे। पुलिस अफसर मलिक ने अब जांच को गंभीरतापूर्वक लिया। उस भूत बंगले की तलाशी लेने पर उसके नानाजी के द्वारा बसंती को लिखे गये कुछ पत्र प्राप्त हुए।

अथक प्रयत्नों के बाद आखिरकार मलिक नानाजी को दिल्ली में ढूंढ़ने में सफल हो गया। पर जब नानाजी से इस विषय में पूछताछ की गयी, तो उसने किसी बसंती नामक लड़की को जानने से इनकार कर दिया।

मलिक ने नानाजी तथा बसंती की शादी के प्रमाणपत्र की एक प्रति, नानाजी द्वारा बसंती को लिखे गये पत्रों तथा बसंती द्वारा नानाजी को लिखे पत्रों के आधार पर भारतीय दंड संहिता की धारा ३०२ के अंतर्गत, नानाजी के विरुद्ध एक मुकदमा दायर कर दिया।

मुकदमे की सुनवाई के दौरान, बचाव पक्ष के वकील ने आक्षेप उठाया कि एक अदृश्य औरत के द्वारा किसी पुलिस अफसर के सामने इतना लंबा बयान देना असंभव है। पुलिस अफसर को बयान के नीचे उस औरत के हस्ताक्षर लेने चाहिए थे, जिसे उसने न्यायालय के सामने प्रमाणित दस्तावेज के रूप में प्रस्तुत किया है। एक अहस्ताक्षरित बयान प्रामाणिक

साक्ष्य नहीं माना जा सकता । पुलिस अफसर को अपनी गलती का एहसास हुआ, उसने न्यायालय से स्थगन आदेश ले लिया ।

पुलिस अफसर दुःखी मन से रात्रि में जब भूत बंगले में पहुंचा, तो उसने पाया कि भूत पहले से कमरे में मौजूद है । उसे दिनभर की कार्रवाई के बारे में सब-कुछ पता था, भूत ने पुलिस अफसर से एक सफेद कागज तथा एक पैन मेज पर रखने को कहा और पुलिस अफसर के द्वारा कागज तथा पैन रखे जाने के बाद एक अदृश्य हाथ ने लिखना शुरू किया—"मैं शपथ लेकर लिख रही हूं कि इससे पहले पुलिस अफसर को दिया गया बयान मेरा था, यह सच है कि मैंने उस दस्तावेज पर अपने हस्ताक्षर नहीं किये थे, परंतु उसकी अब दोबारा जांच करने पर आप उसके नीचे मेरे हस्ताक्षर पाएंगे । जोकि न्यायाधीश के सुरक्षित संरक्षण में है ।"

जब भूत के द्वारा लिखा गया हस्ताक्षरित बयान न्यायालय में प्रस्तुत किया गया, तो विपक्ष के वकील ने आक्षेप किया कि इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि प्रस्तुत किया गया बयान व हस्ताक्षर भूत के ही हैं । पुलिस अधिकारी के आग्रह पर न्यायाधीश ने अपनी संरक्षण पेटिका से पूर्व प्रस्तुत बयान निकाले, तो पाया कि पूर्व बयान पर हस्ताक्षर थे । इस घटना ने न्यायालय में उपस्थित लोगों को विस्मित कर दिया । भोजनावकाश के लिए न्यायालय की कार्रवाई स्थगित कर दी गयी । जब पुलिस अफसर भूत बंगले में गया, तो उसे वहां एक तार मिला, जिसमें नानाजी को अपने बीमार पुत्र को देखने के लिए दिल्ली बुलाया गया था तथा



स्वर्ण आभूषणों की खरीद की कुछ रसीदें प्राप्त हुईं, जो नानाजी के द्वारा बसंती के लिए खरीदे थे । रात में भूत पुलिस अफसर मलिक के सपने में प्रगट हुआ और बताया कि वह उसके हस्ताक्षर अस्पताल के रेकॉर्ड से प्राप्त कर सकता है, जो उसने अपनी मां को अस्पताल में भरती कराते समय किये थे । जब संबंधित रेकॉर्ड प्राप्त किये गये तथा सभी हस्ताक्षर जांच के लिए संबंधित विशेषज्ञ के पास भेजे गये, तो विशेषज्ञ ने वे सभी हस्ताक्षर एक ही व्यक्ति के होने की पुष्टि की । इस पुष्टि के बाद नानाजी, बुरी तरह घबरा गया । उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया । न्यायाधीश ने उसे मृत्युदंड दिया ।

मलिक के साहस से ही इस नृशंस हत्या का रहस्य खुल सका, नहीं तो यह रहस्य स्नानागार के फर्श के नीचे ही दबा रह जाता और अपराधी स्वतंत्रतापूर्वक आराम का जीवन व्यतीत करता रहता ।

यह कहानी (जिस पर पाठक शायद विश्वास न करें) उस मुकदमे के सच्चे तथ्यों पर आधारित है, जो बहुत पहले लड़ा गया था और जिसका विवरण पुलिस गजट में प्रकाशित हुआ था ।

—बी-५/२६३ यमुना विहार,
दिल्ली-११००५३

नयी कृतियां

सिविल सेवा परीक्षा : सफलता के सोपान : प्रतिवर्ष लाखों विद्यार्थी सिविल सेवा परीक्षा में बैठते हैं, जिनमें से छह-सात सौ लड़कों के सिर पर ही सफलता का सेहरा बंधता है । इस परीक्षा में कोई यह दावा नहीं कर पाता कि वह सफल होगा ही । कई सामान्य स्तर के विद्यार्थी सफल होते देखे गये हैं, तो कई कुशाग्र विद्यार्थी असफल होते । आखिर इसका कारण क्या है ? वस्तुतः इसका कारण है, सिविल सेवा परीक्षा की विशेष तकनीक के ज्ञान का होना । जो इस परीक्षा की तकनीक एक बार समझ लेता है, वह सफल हो जाता है, और न समझनेवाला असफल ।

आखिर क्या है सिविल सेवा परीक्षा की तकनीक, और क्या है उसकी सफलता का राज ? डॉ. विजय अग्रवाल ने इन सभी प्रश्नों पर इस पुस्तक में व्यापक रूप से विचार किया है । इसमें उन्होंने यह बताया है कि किस प्रकार प्रतियोगी परीक्षा सिविल सेवा परीक्षा से भिन्न होती है, किस प्रकार से परीक्षा की योजना बनानी चाहिए, विषय कैसे पढ़े जाने चाहिए, उत्तर कैसे लिखे जाने चाहिए तथा साक्षात्कार की तैयारी कैसे की जानी चाहिए ।

सिविल सेवा परीक्षा के तीन स्तर होते हैं—प्रारंभिक, मुख्य और साक्षात्कार । इन तीनों स्तरों की सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों को लेखक ने विस्तार के साथ व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत किया है । इतना ही नहीं, बल्कि सिविल सेवा परीक्षा के जो मुख्य विषय होते हैं, उनकी तैयारी के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी है । उन्होंने यहां तक बताया है कि परीक्षा में प्रश्न-पत्र किस प्रकार हल किये जाने चाहिए ।

इसके साथ ही साथ सिविल सेवा परीक्षा में भाषा को लेकर, विषय को लेकर तथा अपनी शैक्षणिक एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि को लेकर परीक्षार्थियों के मन में अनेक प्रकार के भ्रम रहते हैं । लेखक ने इन भ्रमों का निवारण यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है ।

पुस्तक की भाषा अत्यंत रोचक और प्रभावशाली है । चूंकि लेखक के पास स्वयं इस परीक्षा का व्यापक अनुभव रहा है, इसीलिए पुस्तक अत्यंत व्यावहारिक स्तर पर लिखी गयी है, जो किसी भी प्रतियोगी परीक्षार्थी के मार्गदर्शन के लिए 'लाईट हाऊस' की तरह है ।

प्रकाशक : किताब घर, २४ अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली ; मूल्य : ६७ रुपये ।

—पवन कुमार

श्री साईंदास बाबाजी एक आध्यात्मिक यात्रा : शीर्षक पुस्तक के १७वें अध्याय को पढ़ते हुए अकस्मात स्वामी विवेकानंद के शब्द

याद आते हैं—"गुरु को ब्रह्म जानो ।"

आध्यात्मिकता के स्रोत भारत की इस पवित्र भूमि पर समय-समय पर अनेक जाज्वल्यमान नक्षत्रों ने अवतरित होकर मनुष्य को आध्यात्मिक कर्मयोग का रास्ता दिखाया है । इस श्रृंखला में शीरडी साईं जी की प्रेरणा प्राप्त आध्यात्मिक युगचेता बाबा साईंदास जी शरीर के लुभावनेपन और आकर्षण में फंसे पड़े, पश्चिमी जीवन-मूल्यों के तरफ भाग रहे मनुष्य को बताते हैं कि साईं उसी से प्रेम करता है, जो मनुष्य अपने उत्तरदायित्वों को ईमानदारी से वहन करते हुए ईश्वर से प्रेम करता है । मनुष्य को कर्मयोगी बनने की ओर प्रेरित करनेवाली श्री साईंदास बाबा जी की सीखों को लेखक ने बखूबी सहज और सरल भाषा में पुस्तक के अट्ठारह अध्यायों में संकलित किया है ।

लेखक के दृष्टिकोण से भक्ति मार्ग में संवेदना का विशेष महत्त्व है । जब संवेदना जाग्रत होगी तो प्रेम का अंकुर प्रस्फुटित होगा और प्रेम के प्रकाश से आध्यात्म, प्रभु प्रेम, कर्त्तव्यपरायणता, क्षमा, दया, करुणा, साधना, उपासना, आराधना सभी सुगम हो जाएंगे । आज आवश्यकता है मनुष्य के हृदय से निष्ठुरता दूर करने की जो मनुष्य को दिन-प्रतिदिन संकीर्ण, स्वार्थी और पशु बना रही है । लेखक के अनुसार अनेक कार्य-कलेवरों में बिखरी हुई चेतना को एक सत्ता के रूप में देखने की दृष्टि 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' में परिवर्तित होती है और परिवार की सीमा से ऊपर उठ 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का भाव आदर्श बन आचार, विचार और व्यवहार से प्रदर्शित होता है ।

पुस्तक पढ़ने के पश्चात् अनुभूति होती है कि कैसे चेतना की बहुत गहरी परतों पर पड़ा हुआ एक बहुत नगण्य बीज एक भरा-पूरा, सब तरफ शाखाओं को फैलाये हुए, परोपकारी वृक्ष बन जाता है । ऐसा ही जीवन है युग-चेता श्री साईंदास बाबा जी का, जो 'सर्वे जनास्सुखिनो भवंतु' के लिए इस धरती पर अवतरित हुए हैं ।

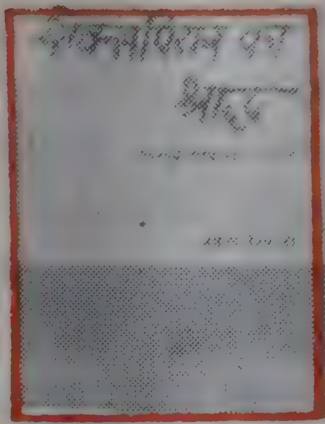
लेखक : डॉ. शंभूनाथ वर्मा ; प्रकाशक : कोणार्क पब्लिशर्स प्रा. लि., ए-१४९, मेन विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली ।

—भूपेंद्र सिंह कटारिया

शेक्सपियर का श्राद्ध : गुजराती हास्य-व्यंग्य कथाएं—१८८५ : साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में लिखनेवाली हिंदी की सुपरिचित लेखिका डॉ. भाग रानी कालरा ने इस पुस्तक द्वारा गुजराती साहित्य की खूबियों को हिंदी-पाठकों तक पहुंचाने का स्तुत्य प्रयास किया है । श्री बकुल त्रिपाठी गुजराती भाषा के प्रतिनिधि हास्य लेखक हैं । उनकी श्रेष्ठ रचनाओं का परिश्रमपूर्वक चयन करके पच्चीस रचनाओं का संकलन प्रस्तुत संग्रह में किया गया है ।

इस हास्य-व्यंग्य संग्रह की प्रत्येक रचना स्वतंत्र एवं विविधता लिए हुए है । विषयों की विविधता पर दृष्टि डालें तो इसमें पत्रकारत्व, राजनीति, कानाफूसी, छोटी-सी कटोरी को लेकर रहस्य कथा उपस्थित करना, गौरीव्रत की कथा में डिस्को गरबा, मस्को गरबा द्वारा भक्तिभाव का बदलता रूप दिखाना आदि समाविष्ट हैं । पंचतंत्र की कथाओं का वाक्छल नया रूप लेकर उपस्थित हुआ है । 'विनोद' सहज, शिष्ट तथा मार्मिक है, हास्य निर्मल, निर्दोष तथा निर्दंश है एवं कटाक्ष कभी









व्यक्तिगत नहीं रहा ।

प्रस्तुत संग्रह का अनुवाद ऐसी विदग्धतापूर्ण ढंग से किया गया है कि प्रथम बार पढ़ते ही भाव हृदयंगम हो जाते हैं ।

प्रकाशक : हिंदी साहित्य अकादमी, 'अभिषेक' तीसरी मंजिल सेक्टर-११, गांधी नगर ; (गुजरात) मूल्य : ६४ रुपये ।

—अमृत ग्रोवर

तब होता है ध्यान का जन्म : ध्यान भारतीय संस्कृति एवं जीवन शैली का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है । आचार्य महाप्रज्ञ की इस नवीन कृति में जीवन के हर पक्ष का स्पर्श है । समस्याओं का समाधान ध्यान के जरिए करने की दृष्टि से यह पुस्तक उपयोगी है । लेखक ने बहुत ही सहज एवं सरल ढंग से अपने विचार प्रस्तुत करते हुए ध्यान की विधियों एवं प्रयोगों की विवेचना की है ।

पुस्तक में २२ लेखों का संकलन है, जिनमें आज की प्रमुख समस्याओं का ध्यान के माध्यम से समाधान दिया गया है । समस्या चाहे पर्यावरण की हो या नशे की, समस्या चाहे तनाव की हो या आवेग की । प्रश्न चाहे सामाजिक ममता का हो या मानवीय संबंधों का, आज का मनुष्य इस पुस्तक की आवश्यकता और इसका महत्व जरूर पहचानेगा ।

यह पुस्तक समग्र पृष्ठभूमि में ध्यान के महत्त्व को उजागर करती है । असत् से सत् की ओर, मृत्यु से अमृत की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर जाएं, इसके लिए चित्त की शुद्धि जरूरी है और चित्त की शुद्धि के लिए ध्यान जरूरी है । जो लोग ध्यान के बारे में कुछ भी नहीं जानते, वे भी यह पुस्तक हाथ में उठाकर जो मन को भाये, वह पढ़ें और ध्यान की गहराई में सहजता से जाने का अभ्यास करें । यह किताब धर्म के जीवित/प्रायोगिक स्वरूप का उदाहरण है । आचार्य महाप्रज्ञ ने एक गहन एवं आत्मिक विषय को सरल एवं सहज ढंग से अभिव्यक्त किया है । यह किताब भीतर से ही नहीं, बाहर से भी सुंदर है । पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है ।

प्रकाशक : जैन विश्व भारती, पो.—लाडनूं (राज.) ; मूल्य : २५ रुपये ।

—ललित गर्ग

अंतर्यात्रा : हिमालय के रमणीय स्थल कौसानी पर श्री सुमित्रानंदन पंत ने अपनी अनेक रचनाओं का सृजन किया था । लेखक ने अपने मानस मंथन से संजोया उपन्यास इसी भूमि पर

लेखा है । जीवन के परिवेश में पात्रों एवं
टनाओं का सहभागी हो जाना सदा से होता
आ रहा है, इन्हीं के साथ मिलकर उपन्यास का
ाना-बाना अपनी लेखनी से रंगा है । लेखक
क हृदय की तरह पात्र भी संवेदनशील बन गये
 । वातावरण की मादकता ने अपनी रंगोली
स तरह बिखेरी है कि पाठक को उपन्यास
लचित्र की तरह अपने सामने दिखायी देता
 ।

समय के साथ राजनीतिक स्वार्थ एवं
टिलता आज के गांव-गांव में इतनी व्यापक
प से पहुंची है कि पाठक को इसका परिवेश
त्रों में दिखायी देता है । उपन्यास की भाषा
रल और सहज है । आवरण सुंदर और
स्तक की छपाई आकर्षक है ।

खक : श्री अमरनाथ शुक्ल ; प्रकाशक : विद्या काशन मंदिर, दरियागंज, नयी दिल्ली ; ल्य : १२५ रुपये ।

—डॉ. एम. एस. अग्रवाल

बिंद गाथा : भगवती शरण मिश्र का प्रस्तुत
पन्यास 'गोबिंद गाथा' पूर्व लिखित उपन्यास
कके लागू पांव' की दूसरी और अंतिम कड़ी
 । लेकिन, कथानक की दृष्टि से यह एक
तंत्र रचना है । सिखों के दसवें और अंतिम
रु की तरुणावस्था से निर्वाण तक के जीवन
ो समेटे यह गाथा जीवनी-परक उपन्यासों का
दर नमूना है । उपन्यासकार ने आकर्षक
ाषा-शैली में गुरु गोविंद सिंह जी के जीवन के
यक्तिगत, धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक
ायामों को इस कथा में समेटा है । ऐसे
थानकों में उपन्यासकार के सामने सबसे बड़ी
ठिनाई इतिहास और कल्पना के समन्वय को
लेकर उपस्थित होती है । उपन्यासकार ने बड़ी
कुशलता से इतिहास में औपन्यासिकता की
मांग पूरी की है । 'गोबिंद गाथा' के वे अंश,
जिनमें गुरु गोबिंद और राम राय के बीच
उत्तराधिकार-संबंधी संवाद हैं, इसका प्रमाण
हैं । ऐसे स्थल उपन्यास में दोहरी भूमिका
निभाते हैं क्योंकि वे कथानक को गति प्रदान
करने के साथ-साथ उपन्यास-नायक के चरित्र
की भव्यता को भी स्पष्ट करते हैं ।

प्रकाशक : राजपाल एंड संस, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली ; मूल्य : २०० रुपये ।

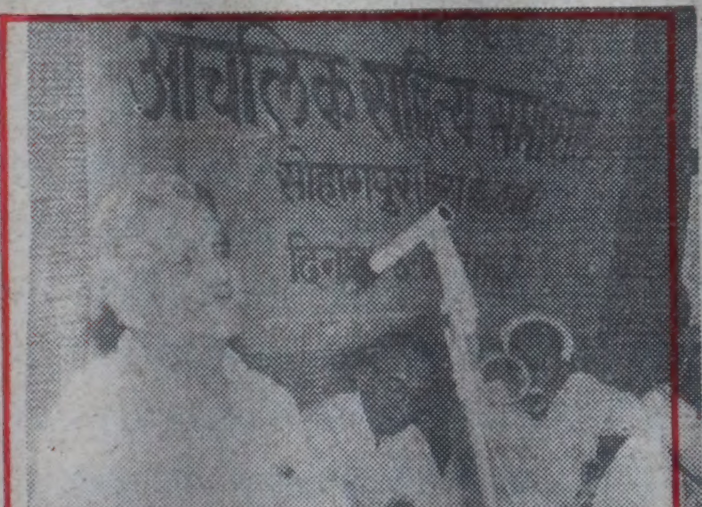
नारी तेरे रूप अनेक : 'पति परमेश्वर' और
'अबला आज की' के बाद भगवती प्रसाद
वाजपेयी 'अनूप' का नया उपन्यास 'नारी तेरे
रूप अनेक' भी समाज के उस अंग को प्रस्तुत
करता है, जो आदर्शों पर टिका हुआ है ।
ऐतिहासिक शैली में लिखे गये इस उपन्यास में
लेखक ने धार्मिक दुराग्रहों से मुक्त होकर अपने
पात्रों को बेहद मानवीय रूप में प्रस्तुत किया
है । डॉ. इरफाना, डॉ. लक्ष्मी, विवेक, गोल्डी
केवल इसी रूप में जनसेवा का कार्य करते
दिखायी देते हैं । उपन्यासकार ने समाज में
व्याप्त चिकित्सा-संबंधी कठिनाइयों और कुमारी
माताओं और उनके शिशुओं से जुड़ी समस्याओं
को उठाते हुए भी, उनका यथार्थ के धरातल पर
चित्रण ही नहीं किया वरन् अपने पात्रों के
क्रिया-व्यवहारों से उस आदर्श को प्रस्तुत किया
है, जिसे अपनाकर समाज का चेहरा ठीक किया
जा सकता है ।

प्रकाशक : एम. एन. पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, डब्लयू-११२, ग्रेटर कैलाश-१, नयी दिल्ली ; मूल्य : ९० रुपये ।

—डॉ. सुरेश धींगड़ा

निराला आंचलिक साहित्य समारोह

भोपाल। मध्यप्रदेश लेखक संघ, (भोपाल) की होशंगाबाद जिला इकाई के तत्त्वावधान में और युवा लेखक डॉ. गोपाल नारायण आवटे के संयोजन में एक ऐतिहासिक और निराला आंचलिक साहित्य समारोह सतपुड़ा वनांचल और नर्मदा कछार में संपन्न हुआ जिसमें मध्यप्रदेश भर से लगभग १०० रचनाकारों ने भाग लिया। समारोह का उद्घाटन प्रो. अक्षय कुमार जैन ने और अध्यक्षता की पत्रकार और लेखक अशोक मिश्र तरंगी ने की। तदुपरांत एक विचारोत्तेजक गोष्ठी 'युवा रचनाकारों की समस्याएं और उनके समाधान' विषय पर युवा लेखक श्री वेद हिमांशु की अध्यक्षता में हुई तथा मध्यप्रदेश लेखक संघ की प्रादेशिक इकाई की ओर से युवा लेखक डॉ. गोपाल आवटे को शॉल और श्रीफल भेंट कर अभिनंदन किया गया।



इस समारोह में प्रदेशभर के जिन रचनाकारों ने भागीदारी की, उनमें प्रो. अक्षय कुमार जैन, कुसुम जैन, अशोक तरंगी, लक्ष्मीकांत शुक्ला, बटुक चतुर्वेदी, कैलाश जायसवाल, राजेश चंचल, राजेश उपाध्याय, ऋषी शृंगारी, रघुवीर पतझड़, अशोक निर्मल, अशोक सक्सेना अनुज, अरविंद चतुर्वेदी (सभी भोपाल), प्रो. राधेश्याम शांडिल्य (हरदा), डॉ. गोपीनाथ कालभोर (खंडवा), श्यामसुंदर गौतम (सतना), यूसूफ परवेज (सीहोर), दर्द होशंगाबादी तथा राम चरण यादव (बैतूल), वेद हिमांशु (शुजालपुर), द्वारका प्रसाद हृदय (विदिशा), रामकिशन चौरसिया (बासौदा) प्रमुख थे।

— बटुक चतुर्वेदी

साहित्य समारोह का आयोजन

साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विकास के लिए प्रतिबद्ध अमर भारती संस्थान, गाजियाबाद द्वारा नयी दिल्ली स्थित गांधी शांति प्रतिष्ठान, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग में भव्य 'साहित्य-समारोह' का आयोजन किया गया। यह समारोह तीन चरणों में संपन्न हुआ जिसमें लोकार्पण, साहित्यकारों का सम्मान और कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। इस समारोह में दो कृतियों, 'भाव लहरियां' के बांग्ला रूपांतर 'अभिव्यक्ति' तथा 'कविता सहयात्रा' का लोकार्पण समारोह के मुख्य अतिथि श्री माधवकांत मिश्र, संपादक 'कुबेर टाइम्स' ने किया। समाज सेविका, शिक्षाविद् एवं वरिष्ठ कवयित्री श्रीमती लीला मंडल के कविता-संग्रह 'भाव लहरियां' का 'अभिव्यक्ति' के रूप में बांग्ला अनुवाद युवा कवयित्री सुश्री लेखा चंदा 'संध्या' ने किया है और दूसरी कृति 'कविता सहयात्रा' देश के कोने-कोने से चुने हुए रचनाकारों की रचनाओं का संकलन है जिसका संपादन डॉ. धनंजय सिंह ने किया है। 'अमर भारती संस्थान' के संस्थापक डॉ. धनंजय सिंह के अनुसार इसका प्रकाशन देश की युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने और उन्हें प्रकाश

में लाने के उद्देश्य से संस्थान ने किया है ।

इस अवसर पर जिन साहित्यकारों का सम्मान किया गया वे हैं— सर्वश्री मञ्जुष दासगुप्ता, श्रीमंत सिकदार, अरुण चक्रवर्ती (तीनों बांग्ला) तथा माधवकांत मिश्र, डॉ. अशोक लव एवं साधना चौधरी (हिंदी) ।

समारोह के तीसरे चरण में आयोजित कवि-सम्मेलन में सर्वश्री श्रीमंत सिकदार, लेखा चंदा संध्या, प्रभा किरण जैन, महेन्द्र शर्मा, सतीश सागर, राजगोपाल सिंह, दीपक गुप्ता, रेखा राजवंशी, निर्मला कुमार, डॉ. अशोक लव और डॉ. धनंजय सिंह ने अपनी प्रभावशाली कविताओं से वहां उपस्थित विशाल जन-समूह को मंत्रमुग्ध कर दिया । समारोह का संचालन श्री बलराम दुबे ने किया । कार्यक्रम में गाजियाबाद कादम्बिनी क्लब के संयोजक श्री महेन्द्र पाल शर्मा भी उपस्थित थे । संस्थान की महासचिव सुश्री वत्सला शर्मा द्वारा सरस्वती वंदना से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ । डॉ. धनंजय सिंह ने अंत में अपना धन्यवाद ज्ञापन देकर इस पावन साहित्यिक यज्ञ में पूर्णाहुति डाली ।

भगवान अटलानी को मीरां पुरस्कार

जयपुर । राजस्थान साहित्य अकादमी का सर्वोच्च सम्मान मीरां पुरस्कार जयपुर के महारानी कॉलेज सभागार में हिंदी व सिंधी के प्रसिद्ध लेखक भगवान अटलानी को दिया गया । वरिष्ठ लेखक डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षित ने उन्हें इक्कीस हजार रुपये का चैक और अकादमी द्वारा प्रकाशित चुनी हुई पुस्तकों का सेट भेंट किया । राजस्थान के शिक्षा मंत्री गुलाबचंद कटारिया ने कार्यक्रम की



अध्यक्षता की । इस अवसर पर विभिन्न विधाओं के लिए छह लेखकों को भी पुरस्कृत किया गया ।

नाटक मंचन

पटना में लगभग ढाई दशक के अंतराल पर विश्व रंगमंच दिवस के अवसर पर बिहार आर्ट थियेटर द्वारा कृष्ण नंदन त्रिवेदी के संस्कृत नाटक 'मानव : दानवश्च' का मंचन किया गया ।



डॉ. सिंघवी द्वारा लंदन विश्वविद्यालय में प्रतिमा का अनावरण

लंदन । ब्रिटेन में भारत के उच्चायुक्त डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी ने हाल ही में लंदन विश्वविद्यालय के स्कूल ऑव ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज (सोआस) के प्रांगण में भारत के महान संत-विचारक एवं कवि-मनीषी थिरुवल्लुवर की कांस्य प्रतिमा का अनावरण किया ।

स्कूल ऑव ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज के शासी बोर्ड के अध्यक्ष सर राबर्ट वेड गेरी ने डॉ. सिंघवी द्वारा इंडो-ब्रिटिश संबंधों के क्षेत्र में अपने अपूर्व योगदान से एक नया कीर्तिमान स्थापित करने के लिए उन्हें बधाई दी ।

डॉ. सिंघवी ने सोआस के प्रांगण में तमिल के महान संत कवि थिरुवल्लुवर की प्रतिमा का अनावरण करते हुए कहा कि सपने देखना तो उनकी एक आदत है किंतु यह उनका सौभाग्य रहा है कि उनके सपने साकार भी हो जाते हैं ।

मासिक बैठक

रांची । 'रांची जिला कादम्बिनी क्लब' की पिछले दिनों मासिक बैठक सह कवि-गोष्ठी संपन्न हुई । बैठक में श्री निर्मल मिलिंद, नरेश बंका, राजीव थेपड़ा, आलोक प्रियदर्शी, अशोक अंचल, आलोक आदित्य, दिलीप ठाकुर, मदन गुप्ता, राजेश कुमार, पुरुषोत्तम प्रसाद एवं रेहाना अली, मुक्ति शाहदेव आदि ने भाग लिया । उक्त अवसर पर क्लब द्वारा कविवर गंगा प्रसाद कौशल की स्मृति में वार्षिक काव्य प्रतियोगिता के आयोजन का निर्णय लिया गया ।

कवि-गोष्ठी संपन्न

शिवहर । कादम्बिनी क्लब तथा दिनकर साहित्य परिषद के संयुक्त तत्त्वावधान में अर्चना विकास विद्यालय के सभागार में कविवर गोपालसिंह नेपाली की पुण्य तिथि के अवसर पर विचार-गोष्ठी सह कवि गोष्ठी आयोजित की गयी । जिसमें जिले भर के अधिकांश वक्ताओं तथा कवियों ने भाग लिया । गोष्ठी की अध्यक्षता आकाशवाणी कलाकार श्री चंद्रशेखर विकल ने की जबकि संचालन साहित्यकार डॉ. सुभाष गुप्त ने किया । इस अवसर पर क्लब के संयोजक अधिवक्ता ओमप्रकाश मिश्र ने समाज में साहित्यकार की भूमिका पर व्यापक प्रकाश डाला ।

जिन वक्ताओं ने गोपालसिंह नेपाली के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर व्यापक प्रकाश डाला उनमें श्री सीताराम सिंह, चंदेश्वर प्रसाद सिंह, रामस्वरूप प्रसाद, जयप्रकाश मिश्र तथा अरविंद कुमार झा प्रमुख थे ।

गोष्ठी के दूसरे सत्र में जिन कवियों ने अपनी-अपनी कविताओं का पाठ किया उनमें श्री मदन साहित्य भूषण, जयप्रकाश मिश्र, डॉ. लक्ष्मीनारायण पांडेय, रामकिशोर सिंह 'किशोर', बलराम भूषण, नवल निराला, राकेश रंजन, मुरलीधर श्रीवास्तव तथा अजय कुमार आदि प्रमुख थे । गोष्ठी का समापन श्री ताराकांत झा के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ ।

'वसंत काव्य-संगोष्ठी' का आयोजन

पटना । 'कादम्बिनी क्लब' के तत्त्वावधान में इंदिरा नगर स्थित साहित्य-प्रेमी चित्तरंजन सिंह के निवास 'सीता-सदन' में 'वसंत-काव्य संगोष्ठी' का आयोजन किया गया । संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रसिद्ध रंगकर्मी एवं कवि परेश सिन्हा ने की एवं संचालन युवा कवि एवं पत्रकार आनंद रस्तोगी ने किया । इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में सहायक डाक महाध्यक्ष श्री अनिल कुमार भी उपस्थित थे ।

आरंभ में क्लब के संयोजक डॉ. शिवनारायण ने स्वागत-भाषण करते हुए भारतीय हिंदी काव्य परंपरा में वसंत के प्रभाव का प्रतिपादन किया । ऋतुराज वसंत के विभिन्न रंगों की रागात्मक अभिव्यक्ति तथा चैत एवं प्रेम के मादक फुहारों से जुड़ी कविताओं के द्वारा जिन कवियों ने बड़ी संख्या में उपस्थित श्रोताओं को रस-विमुग्ध किया, उनमें सर्वश्री विशुद्धानंद, राजकुमार प्रेमी, डॉ. शिवनारायण, रवी भूषण, हलधर भारती, नागेश्वर शर्मा, आनंद रस्तोगी, जनार्दन मिश्र, परेश सिन्हा प्रमुख थे । चित्तरंजन सिंह के धन्यवाद-ज्ञापन के साथ ही इस सारस्वत वसंत-काव्य संगोष्ठी का समापन हुआ ।

● आरती सिंह

परिचयात्मक काव्य-गोष्ठी संपन्न

जबलपुर । गत दिवस कादम्बिनी क्लब जबलपुर की परिचयात्मक काव्य-गोष्ठी युवा कवि श्री रवि प्रधान के संयोजन एवं डॉ. श्रीमती शकुंतला चौधरी की अध्यक्षता, नगर के समाज सेवी श्री लक्ष्मीनारायण पाठक के मुख्य आतिथ्य में तथा वरिष्ठ रंगकर्मी एवं साहित्यकार श्री बैरागी 'स्नेहिल' के निवास स्थान में संपन्न हुई ।